



“এক এব সহস্রর্শো নিধনেহপ্যনুযাতি যঃ ।
শরীরেণ সমং নাশং সর্বমন্যন্তু গচ্ছতি ॥”

“एक एव सहस्रर्शो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यन्तु गच्छति ॥”

৩য় ভাগ ।
৩৪ সংখ্যা ।

শকাব্দ ১৮০২ ।
প্রাবণ পূর্ণিমা ।

২য় ভাগ ।
২৪ শ সংখ্যা

শকাব্দ ১৮০২ ।
প্রাবণ পূর্ণিমা ।

রাম গীতা ।

(পূর্ব প্রকাশিতের পর)

বিবিক্ত আত্মীন উপরতেন্দ্রিয়ো
বিনির্জিতাত্মা বিমলান্তরাশয়ঃ ।
বিভাবয়েদেক মনন্যসাধনো
বিজ্ঞানদৃক্ কেবল আত্ম সংস্থিতঃ ॥ ৪৬ ॥

এক্ষণে তত্ত্বজ্ঞান সাধনের উপায় কথিত হই-

তেছে । জন সমাগম শূন্য স্থানে পদ্ম বা সিদ্ধাস-
নাদি উৎকৃষ্ট আসন বিশেষে উপবেশনপূর্বক চক্ষু-
রাদি জ্ঞানেন্দ্রিয় ও বাক্ পাণ্যাদি কর্মেন্দ্রিয়
সমূহকে বিষয় রুত্তি হইতে নিবৃত্ত ও প্রাণায়াম
সাধনাদি দ্বারা প্রাণ বায়ুকে বশীভূত করিয়া
নির্মলান্তঃকরণ হইতে হইবে । তদনন্তর অন্যান্য
সাধন বিধি পরিত্যাগ পূর্বক অহুভাবাত্মক জ্ঞান
বিশিষ্ট পুরুষ কেবল সর্বব্যাপি একমাত্র আত্মাতে
অবস্থিতি করিয়া সেই আত্ম স্ফারই পরিচিহ্নন
করিতে থাকিবেনা ।

রাম গীতা ।

(পূর্ব প্রকাশিতের আগে)

বিবিক্ত আত্মীন উপরতেন্দ্রিয়ো
বিনির্জিতাত্মা বিমলান্তরাশয়ঃ ।
বিভাবয়েদেক মনন্যসাধনো
বিজ্ঞানদৃক্ কেবল আত্ম সংস্থিতঃ ॥ ৪৬ ॥

অত্র তত্ত্বজ্ঞান সাধনকা উপায় বর্ণিত হৈ ।

জনসমাগম সে রহিত স্থানম্ কামল যা সিদ্ধা-
সনাদি কোই উত্তম আসন কর্তে উপবেশন পূর্বক
চক্ষু আদি জ্ঞানেন্দ্রিয় ও বাক্ পাণি আদি কর্মে-
ন্দ্রিয়ों को विषयव्यापार से निवृत्त औ प्राणायाम
সাধনাদিকে দ্বারা প্রাণবায়ুকে বশীভূত কর নির্মল
অন্তঃকরণ হীনা চাইয়ে । ইসকি অনন্তর অন্যান্য
সাধন বিধি পরিত্যাগ পূর্বক অনুভাবাত্মক জ্ঞান
বিশিষ্ট পুরুষ কেবল সর্বব্যাপি একমাত্র আত্মা
ম্ বিবাজ কর বহী আত্ম সত্ত্বাহীকো পরিচিহ্নন
করতে রহেগে ।

कोलाहल पूर्ण लोक समाज त्याग करिया
साधक यदि एकात्मे बसिया लोक समाज सम्पत्तीय
व्यापार समस्त मनोमत्त आन्दोलन करिते
थाकेन, तबे तैहार निज्जन भूमि मज्जन हईया
पड़े। विषय चिन्ता बञ्चित चिन्तै उरुकुटे निज्जन
क्षेत्र। निर्मल हृदय कमलामनई प्रकृत “पद्मा-
सनः” “मनोवृद्धि-निरोधई” प्रकृत प्राणा-
यामेर कार्य साधन करिया थाके, एतावद्यवस्था
योगीगणेर नितान्त अशुक्ल ।

विश्वं यदेतत् परमात्मा दर्शनं
विलापयेदात्मनि सर्व कारणे ।
पूर्णचिदानन्दमयोरतिष्ठते
नरेव वाच्यं नच किंचिदन्तरं ॥ ४१ ॥

परमात्मा प्रकाशित एई परिदृशमान विश्वके
समस्त अपक्षेर विवर्तोपादान कारण अरूप अ-
ज्ञाते नय करिते हईवे। अरूपेर अपरि-
त्यागे यद्द्वारा कार्योत्पन्न हय तैहार नाम विव-
र्तोपादान ; येरूप रज्जू रज्जूई थाके अथवा जम
बशां तैहा सर्प दर्शनेर कार्य भयादि उत्पन्न
करे। तद्रूप परमात्मा हईते एई विश्व का-
र्योत्पत्ति । तदनन्तर दैत वास्तव अभाव निव-
क्त गहन तनि चिदानन्द अरूपे विराज करिवेन
तखन आर तैहार वाचाभ्यन्तर बलिया किछुमात्र
अशुद्ध हईवे ना ।

पूर्व समाधेर स्थित विचिन्तये
दौकार मात्रं मन्त्राचारं जगत् ।
तदेव वाच्यं प्रणवो हि वाचको
विभाव्यतेऽज्ञानवशात् बोधतः ॥ ४८ ॥

अक्षणे परमात्मा-चिन्तनेर पथ प्रदर्शित हई-
तेछे। ये पर्याप्त समाधि सिद्धि ना हय, तावत्-
काल एई चराचरात्मक जगत्के उकाररूपे भा-
वना करिवे, (जगत्के उकार रूपे चिन्तार
प्रकृति किरूप तैहा मदगुरु कर्तृक उपदिष्ट ना
हईले साधक बुझिते पारिवेन ना) तावत्काल तद्र
ज्ञान उदय ना हय तावत्काल अज्ञान वशतः एई
चराचर जगत् वाच्य ओ प्रणव तैहार वाच्य बलिया
प्रतीति हय ; ज्ञानोदय हईले वाच्य, वाचक भाव
विनष्ट हईरा गीर ।

क्रमशः ।

कोलाहलपूर्ण लोकसमाजको त्याग करते साधक
यदि एकात्म स्थान पर बैठे हुए लोक समाज
सम्बन्धी व्यापारों मनमें आन्दोलन करते रहें, तो
उनकी निज्जन भूमि भी मज्जन हो जाती है। विषय
चिन्तामे रहित चिन्तहीको उत्तम निज्जन क्षेत्र
जानना चाहिये। निर्मल हृदय-कमलामन हीको
प्रकृत “पद्मासन”, मानना, श्री “मनोवृत्तिका
निरोधही प्राणायाम का कार्य साधन करता है,
इतनी व्यवस्था योगीयों के नितान्त अशुक्ल है।

विश्वं यदेतत् परमात्म दर्शनं
विलापयेदात्मनि सर्व कारणे ।
पूर्णचिदानन्दमयोरतिष्ठते
नरेव वाच्यं नच किंचिदन्तरं ॥ ४१ ॥

परमात्माके प्रकाशित यह परितृप्तमान विश्वको
ब्रह्म आत्मसत्ताके लय करने होगा, जो कि समस्त
प्रपंच के विवर्त-उपादान कारण अरूप है। (अरूप
को त्याग किये बिना जिसके कोई कार्य कि उत्पत्ति
होती है, उसही का नाम विवर्तोपादान, जैसा
रस्सी ने अपना रूप बदल बिना अक्षय मृत्तियोंको
सर्पदर्शन वा फल या भय आदि उत्पन्न करदिताहै,
वैसाही परमात्मा में यह विश्वरूप कार्य को उत्पत्ति
है। तदनन्तर तै वाचका अभाव होनेसे जब वे
चिदानन्द अरूप में विराजकरें तब उनके लिये
भितर बाहर आदि कुछ भी भेदन रहिगा ।

पूर्व समाधेर स्थित विचिन्तये-
दौकार मात्रं मन्त्राचारं जगत् ।
तदेव वाच्यं प्रणवो हि वाचको
विभाव्यतेऽज्ञानवशात् बोधतः ॥ ४८ ॥

अब परमात्म-चिन्तन का पथ देखायी जाती है।
जबतक समाधि सिद्ध नहीं, तबतक यह चराचरा-
त्मक जगत को ओंकार रूप से भावना करना (किम
रीति से जगत को ओंकार रूप चिन्तन करने होगा,
मन्त्रके उपदेश बिना साधक यह नहीं समझ सकेंगे)
यावत काल तत्त्वज्ञान उदय नहीं, तावत काल अ-
ज्ञान करके यह चराचर जगत वाच्य वो प्रणव ति-
थके वाचक यह प्रतीति होती है। ज्ञानोदय होने
पर वाच्य वाचक भाव विनष्ट हो जाता है।

• शेष आगे ।

(वैज्ञानिक रहस्य)

(वैज्ञानिक रहस्य)

৷ বিজ্ঞান তিন প্রকার, ১ম, “কল বিজ্ঞান,” ২য়, “প্রক্রিয়া-বিজ্ঞান, ৩য়, “হেতু বিজ্ঞান।” যাহার দ্বারা কাষের অবস্থা ও প্রয়োজন জানা যায় তাহার নাম “কল বিজ্ঞান।” যাহার দ্বারা কারণ সমূহের সংযোগক্রম জানা যায়, তাহা “প্রক্রিয়া বিজ্ঞান” বনিয়া থাকিবে এবং যাহা দ্বারা কারণের স্বভাব ও শক্তি জানা যায় তাহা “হেতু বিজ্ঞান” নামে অভিহিত। যথা—অগ্নি—কল, কাষাকল। ইহা শুষ্ক, ঘর্ষ, মৃদু, অগ্নিঃ প্রবিষ্ট জল যুক্ত এবং মন্দর ও মাদক এবং ইহা দ্বারা আশু। শরীরোচয় হয়, ইত্যাদি নিদেশকে “কল বিজ্ঞান” বলা যায়। উক্ত কাষের কারণ, দর্শন, অগ্নি, স্থলী এবং জলান্নি সংযোগের সময় ও ক্রম নিদেশকে “প্রক্রিয়া বিজ্ঞান” বলা যায়। অগ্নির সকারকতা ও দাবকতা, বস্তুর নাত্রেরই সজ্জিততা, দ্রবের লঘুতা ও উষ্ণতামান্যতা, উষ্ণবায়ুর ক্রমশঃ তরলতা ও অল্প চাপিততা এবং নিম্ন ক্রমশঃ ঘাঢ়িতাও অধিক চাপকতা, ইত্যাদি হেতু স্বভাব নিদেশকে “হেতু বিজ্ঞান” বলা যায়। এইরূপ সর্বত্র।

मनुष्यालोचन जिस किसीकार्यके फलाभिलाषी होतेहैं तत्कार्य जिस उपादानसे निश्चयहोगा सोभी यदि जानेरहें तो सहजमें कारणोंका संग्रह करके अपने मनोरथकी पुरा करें ; और उपादानोंकोबिन जान बड़ेयत्नसे विविध बन्धुओंकी शक्ति वा प्रकृतिकी पर्यालोचना ओपरीक्षा करते करी अपने अभिल पत कार्योंमें साधनकरने योग्य जिन बन्धुओंको ठहराया करते हैं उन्हींकी यथोचित प्रक्रियासे समाहार करके सातिशय हर्ष ओ यवत्साध काय फल पावे । या साधारणों के कार्यप्रारणाम अर्थात् कार्य फल प्रक्रिया ओ फल की प्रदर्शन कथा करें । उक्त प्रकार साहित्यिक साहित्य ज्ञाना लोचन सहज गवेषणाके फल जिनको साहित्य ओ प्रदर्शन करनेहैं उ लोचनों की स कार्योंपादानकी वस्तुओंमें किसका कानुन ओ साधने सह सब जातिका विशेष प्रतीयन नहीहोताहै इसी लिये उपदिशता “ कारण विज्ञानांश ” सफल नीरस वृक्षपुष्पसे निरादरहोके पुष्प परम्परासे अलश अविचार की विष्फुति सागरके गभीर गर्भमें लुप्तयित होजाताहै । केवल उसी “ प्रक्रिया विज्ञान ” ओ

विज्ञान तीन प्रकार है। पहला “फलविज्ञान,” दूसरा “प्रक्रिया विज्ञान,” तीसरा “हेतुविज्ञान” है। जिसमें कार्यकी अवस्था और प्रयोजन जाना जाता है उसे “फलविज्ञान” कहा है।—जिसमें कारणा का संयोग क्रम जाना जाता है उसे प्रक्रिया विज्ञान कहते हैं। ऐसे ही जिसमें कारण का स्वभाव और शक्ति जानी जाती है उसे हेतुविज्ञान कहा जाता है। यथा अन्न एव कार्य का फल है।—यह स्वितवस्य, सूक्ष्म, अन्तर्गत जलयुक्त, थोड़ा मधुर और मादक और इसमें शीत शीत शरीर का उपचय होता है। इत्यादि निर्देश ही “फलविज्ञान” कहते हैं—उक्त कार्यका कारण काष्ठ, अग्नि, स्थाली एवं जलादि संयोग के समय क्रमके निर्देश का “प्रक्रिया विज्ञान” कहा जाता है। अग्निका सञ्चारकत्व, द्रावकत्व, वस्तु भावकी सखिद्रता, द्रव्य की लघुता और ऊपर उठनेका स्वभाव, ऊँचे वायुका क्रम क्रम से तरलता और थोड़ी थोड़ी चापकता, और नीचे क्रम क्रमसे गाढ़ता और अधिक चापकता इत्यादि हेतु स्वभावके निर्देशको “हेतु विज्ञान” कहते हैं। ऐसे ही सर्वत्र वक्तव्य ।

উন্নতির চরমাবস্থার পর “হেতু বিজ্ঞানানুশ” সকল বিলুপ্ত হইয়া কাল ক্রমে উক্ত কার্য্য সকল যে সম্ভবতঃ এবং উহা আবিষ্কার করিতে যে অ-গাধ চিন্তা ও আয়াস লাগিয়াছিল এরূপ বিশ্বাসও থাকে না। কার্য্য গুলিও ক্রমশঃ অপূর্ণ হইতে থাকে, কতক গুলি বা সম্পূর্ণ বিপরীত হইয়া বিপরীত ফলদায়ক হইয়া উঠে। তখন আর পুনঃ পরীক্ষা ও অতি সূক্ষ্ম চিন্তা করিলেও কোন্ হেতু দ্বারা কেন কার্য্যের নিষ্পত্তি হয়, ইহা নিশ্চয় করা দুষ্কর হইয়া পড়ে।

আমাদিগের প্রচলিত অনেক কার্য্যের প্রতি লক্ষ্য করিলেই, উহা সুস্পষ্ট প্রতীত হইবে। উক্ত নিয়মেই আমাদিগের আৰ্য্য শাস্ত্র সকল ঘোরতর সংশয় বিপ্লবে পতিত হইয়াছে। আৰ্য্য শাস্ত্রের “হেতু বিজ্ঞানানুশ” সকল বিলুপ্ত-প্রায় হইয়া উঠিয়াছে। অনেক বিষয়ের “প্রক্রিয়া বিজ্ঞানও” লক্ষিত হয় না, কেবল মাত্র “ফল বিজ্ঞানানুশ”ই সমাজের অবলম্বন হইয়া পড়িয়াছে। এজন্য আমরা সাধারণের মতে আৰ্য্য শাস্ত্রাবলম্বী হইয়া অন্ধ নিদিষ্ট পথানুসারী অন্ধের ন্যায় ভ্রমণ অরণ্যে বা কণ্টক মধ্যে নিপতিত হইতে চাহি না। এতদ্বারা বিফল-প্রযত্ন ও কেবলমাত্র দুঃখ ভাগী হইয়া অন্ততঃ ও বিদেশীয় পণ্ডিতদিগের নিকট হাস্যাস্পদ হইতেছি। জগৎ প্রসূতি প্রকৃতিই যে আৰ্য্য শাস্ত্রের মূল বা জননী তাহাই কাল ক্রমে অমূলক বলিয়া পরিগণিত হইতে চলিল। ত্রিকাল প্রসিদ্ধ প্রকৃতিই যাহার আত্মা, তাহাই ইদানিং মিথ্যাত্মক বা কল্পনাত্মক হইয়া উঠিল। বিজ্ঞানই যাহার স্প্রশমল নেত্র, সেই আৰ্য্য শাস্ত্র সম্প্রতি অন্ধ হইয়া বিদেশীয় শাস্ত্রের নিকট পথ জিজ্ঞাসা করিতে লাগিল। বিশদ তর্কজালই যাহার পাদাশ্রয়, কাল মাহাত্ম্য তাহাই অধুনা আধুনিক তর্ক বাদীগণের হুতর্ক বষ্টি দ্বারা ভগ্নপদ হইয়া পঙ্গু হইয়াছে।

আৰ্য্য শাস্ত্রের কোনটাই প্রাকৃত স্বভাবকে উল্লেখন করিয়া কল্পনার অনুগমন করে নাই। প্রাকৃত স্বভাবের অনুগামী হইয়া তাহার প্রতিপাদন করাই আৰ্য্য শাস্ত্রের মুখ্য উদ্দেশ্য। প্রাকৃত স্বভাব হইতেই আৰ্য্য শাস্ত্রের অভ্যুদয়, আৰ্য্য শাস্ত্র প্রাকৃত স্বভাবের মৌলিক বিনির্গত। প্রাকৃত স্বভাবই আৰ্য্য শাস্ত্রের জীবন

ফল বিজ্ঞানানুশীকী আলোচনা জন্ম করতীহঁ আর উসীসে আবশ্যক মর কার্য্যফল সকল নিষ্পন্ন হি মর হী জাতা হঁ। ইসী ভাতি বিঘয় মান ক-চরমাবস্থাকি উন্নর “হেতু বিজ্ঞানানুশ” সকল লোপ পাकर উক্ত কার্য্য সব জী সন্তুক থে আ উনকে আবি-স্বার করনে মঁ জী অগাধ চিন্তা হী পরিশ্রম লগে থে সী কাল ব্রমসে এঁসা হী জাতা হৈ কি প্রতীতি মী নহঁ হীতী হৈ। কার্য্য সকল মী ক্রমশঃ অপূর্ণাঙ্ক জ্ঞে জাতি। যজ্ঞাতক কি সম্পূর্ণ ভল্টে হী বর ভল্টাফল মী দেনে লগতে হঁ।—তব আর ফির পরী-চাখী সূক্ষ্ম চিন্তা করকে মী যজ্ঞ নিশ্চয় করনা কঠিন হী পড়তা হৈ কি ইন্ কার্য্যোঁ কী নিষ্পত্ত কিসীহেতু সে জড় হৈ।

हम लोगों के प्रचलित कार्यों के ऊपर दृष्टि करने ही यह अच्छी भांति बूझ पड़ेगा। इसी नियम से हम लोग के आर्यशास्त्र सकल घोरतर संशय विप्लव में गिरा जाता है, आर्यशास्त्रका हेतु विज्ञानांश एकवार विलुप्त प्राय ज्ञा जाता है। वज्रतरोँ को “प्रक्रिया विज्ञान” भी ललित नहीं होता है। केवल “फल विज्ञानांश” ही समाजका अवलम्बन हो रहा है। इस लिये हमलोग साधारणों के बीच आर्यशास्त्रावलम्वी हो कर अर्थों के चलाये पथ में चलते अर्थों की नाई भयावने जङ्गल या काटे कुल्ले में गिरने नडा चाहते हैं। इससे सब प्रयत्न व्यर्थ होते, केवल दुःख मात्र के भागी हो कर पकिताने पता, जिस् पर विदेशीय पण्डितों के निकट हास्यास्पद भी होते। जो प्रकृति जगत की प्रसूति आ आर्यशास्त्रकी जननी अर्थात् मूल स्वरूप, सो ही काल क्रमसे अमूलक कहलाने लगी, चिकाल प्रसिद्ध प्रकृति ही जिसकी आत्मा, सो ही आज कल मिथ्यात्मक आ कहना होता चला। विज्ञान ही जिसके सुप्रसन्न नयन, सोई आर्यशास्त्र सम्प्रति अन्धा हो कर विदेशीय शास्त्रके निकट वाट पूछने लगा। विशद तर्क, वादही जिसका पादाश्रय, सोई अभी कालके प्रसाद आधुनिक तर्क वादियों की कुतर्क रूप यष्टि से भग्नपाद हो कर पङ्गु हो गया।

आर्यशास्त्रने किसी प्राकृत स्वभाव का उल्लेखन करके कल्पना का अनुगमन नहीं किया। प्राकृत स्वभावों के अनुगामी होकर उन्हीं का प्रतिपादन करना ही आर्यशास्त्र का मुख्य उद्देश्य है। प्राकृत स्वभावों-हूँ से आर्यशास्त्रका अभ्युदय, आर्यशास्त्र के वर्ण वर्ण से प्राकृत स्वभाव का सुगंध निकसता है।—प्राकृत स्वभाव ही आर्य शास्त्रका जीवन

অতএব তদ্বিরহে আৰ্য্য শাস্ত্র জীবিত থাকিতে
পারে না । অগিরা ইহার প্রমাণ স্বরূপ শিক্ষাদি
অষ্টাদশ শাস্ত্রেরই স্থূল উদ্দেশ্য ও তাই একটা স-
ন্দর্ভ ভাতি সংক্ষেপে নির্দেশ করিতেছি, যেতদ্দ্বা-
রাই পাঠকগণ আৰ্য্যদিগের মহত্ত্ব হৃদয়ঙ্গম করিয়া
আৰ্য্য শাস্ত্রের বহু মূল্যভার পরিচয় পাইবেন ।

ବର୍ଣ ବିଜ୍ଞାନ ।

১ শিক্ষা, ২ কল্প, ৩ ব্যাকরণ, ৪ নিকৃষ্ট, ৫ ছন্দ, ৬ জ্যোতিষ, ৭ ঋগ্বেদ, ৮ যজুর্বেদ, ৯ সাম বেদ, ১০ অথর্ক বেদ, ১১ মীমাংসা, ১২ ন্যায়, ১৩ ধর্ম সংহিতা, ১৪ পুরাণ, ১৫ আবু-র্বেদ, ১৬ ধনুর্বেদ, ১৭ গান্ধর্ববেদ ও ১৮ অশ্বশাস্ত্র, এই অষ্টাদশ আর্য্য শাস্ত্রের মধ্যে প্রথম শিক্ষা শাস্ত্রীয় বর্ণ বিজ্ঞান অদ্য আন্দোলন করিয়া উঠিয়াছে। কোন্‌ কারণে “অ” কারাদি বর্ণাত্মক শব্দের উৎপত্তি ও কোন্‌ স্থান হইতে কোন্‌ বর্ণের নিগম হয় এবং উহাদের পূর্ব-পরঃ ক্রম নির্ণয় এতাদেশ শিক্ষা শাস্ত্রে নির্ণীত হইয়াছে। এই তিনটি বিষয়ের ১ম ও ২য়টি যে বিজ্ঞান ঘটিত তাহা সহজেই বোধ হইতে পারে, অতএব কল্পনার সন্দেহ স্থল তৃতীয়টিই সংক্ষেপে বর্ণন করিতেছি, ফলতঃ প্রসঙ্গ ক্রমে ১ম ও ২য় বিষয়ও অনাঙ্গোচিত থাকিবে না।

শিক্ষা শাস্ত্রে “অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ঋ, ঌ, ঍, ঎, এ, ঐ, ও, ঔ, ঐ, ঐ, ক খ গ ঘ ঙ, চ ছ জ ঝ ঞ, ট ঠ ড ঢ ণ, ত থ দ ধ ন, প ফ ব ভ ম, য র ল ব, শ ষ স হ ক্ষ,” এই অকার বর্ণমালা পাঠের প্রথম অবধারিত আছে। এই বর্ণগুলির পূর্ব-পরতা ক্রম স্বেচ্ছাদান কম্পিত নহে, ইহা শারীর প্রকৃতির স্বভাবানুসারে শব্দ পরিষ্কারক যন্ত্র-ক্রিয়ার পূর্ব পরতানুযায়ী নির্ণীত হইয়াছে, শব্দ মাত্রেরই স্বার্থ এই যে দুইটি বস্তুর ক্রিয়া দ্বারা উৎপন্ন হইয়া থাকে। এই ধর্ম প্রযুক্তই উক্ত পঞ্চাশং বর্ণ দুই ভাগে বিভক্ত হইয়াছে।

১ম, “সংকোচ সঙ্ঘর্ষজ” বা স্বল্প, “* ২৩’.

* “স্বোভায়তে” এই-সংগত দ্বারা “স্ব” শব্দে “স্বাঃ” অনায়াসে উচ্চারিত হয়” এই অর্থ বুঝায়। আধুনিক বৈরাগ্য-গোষ্ঠী বলেন যে : “স্বঃ রাজতে ইতি স্বঃ”

स्वरूप है। अतएव ऊम्ने विरह होतपर आर्यशास्त्र
जो नहीं सकता। हम लोग इकी प्रमाण स्वरूप
शिक्षा आदि अष्टादश शास्त्रों के मूल उद्देश्य औ- दो
एक सन्धि अति संक्षेप से देखाते हैं। इसीसे पाठ-
कगण आर्यों के महत्वकी हृदयङ्गम करते आर्यशा-
स्त्रका वल्ल मूल्यताकी परिचय पविंगे।

वर्णविज्ञान ।

१ शिखा, २ कस, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ .
कन्द, ६ ज्योतिष, ७ ऋग्वेद, ८ यजुर्वेद, ९ साम-
वेद, १० अथर्ववेद, ११ मीमांसा, १२ न्याय, १३
धर्मसंहिता, १४ पुराण, १५ आर्षवेद, १६ धनुर्वे-
द, १७ गायत्रीवेद, १८ अर्थशास्त्र, इन अष्टादश
आचार्यों के नामों पर आज पद्धति तथा शास्त्रीय वर्ण
विज्ञान की आलोचना की जाय। किस किस का-
रणों से वे अकारणिक वर्णों के शब्दों की उ-
त्पत्ति को बस किस वर्णों से किन वर्णों का निर्गम
किये जाय, ऐसा है या उन्होंने का पूर्ण परमात्म
की भाँति, जहाँ जहाँ शास्त्रों में निर्णय, कि-
या गया है, उन वर्णों से पढ़िता ओ दूसरा जो
निर्णय किये हैं, वे सब ही जाना जा सकता
है। आचार्यों का काम यह है कि तीसरा
है, जो वेदों के अन्तर्गत है, फलतः इस प्रकार
काम पद्धति को दूसरा विषय विन आलोचन हुए
नहीं जाय।

शशांश 'अ. चा इ ई उ, ऊ ऋ, ॠ, ए, ऐ, ओ औ, ि िः । क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, ञ." इसी प्रकार वर्णमाला का पाठ कम अवधारण है। इन वर्णोंकी प्रब परना कम स्वेच्छाधन वा कल्पित नहीं है। यह शरीर प्रवृत्ति स्वभाव के अनुसार शब्द प्रसिद्ध क यत्न किया जा पूर्व परतानुयायी है। सो निर्णय किया गया है।—शब्दमात्र का स्वधर्म यही है कि दो वस्तुकी क्रिया में उत्पन्न ऊर्जा करता है। इसी धर्म के कारण ऊपरके कहे ५० पंचास अक्षर दो भागों में विभक्त हैं। १ प-हला "समुच्च संवर्षज," वा "स्वर" रय, "सम्पुट

* “स्वोरायते” इसी योगार्थ से. “स्वर शब्द उच्चार्य” जो आप उच्चारित हो “इसी अर्थको प्रकाश करता” “आजकल त वैयाक्य लोग कहते हैं।
स्वयं राजते इति श्वरः ।

“सम्पूट मञ्जुदज” वा “वाङ्मन” * । ग्राहारा स्त्रायर मञ्जुग जनिता मञ्जुग द्वारा आकृषित स्त्र उ०पत्ति स्थानेर (निर्गम्यमान आभ्यन्तरिक वायु कर्तृक) मञ्जुवर्ण मा०दे० उ०पत्ति हर, ताहादिगके “मञ्जोच मञ्जुवर्ज” आर ग्राहारा उक्त क्रमे अपरिच्छिन्न रूपे मञ्जुमिता स्त्र उ०पत्ति स्थानेर (निर्गमनशील आभ्यन्तरिक वायु कर्तृक) मञ्जुद द्वारा उ०पत्ति हर ताहादिगके “सम्पूट मञ्जुदज” बला गाय । उल्लिखित पञ्चाश० वर्ण मध्ये “अ” कारादि षोडशटी मात्र वर्ण प्रथमोक्त रीति० उ०पत्ति आर “क” ह०ते “क पर्याप्त चोद्विंशटी वर्ण द्वितीय रीति० मन्त्रिण ह०या थाके, ए० निमित्त प्रथम १७ टी “मञ्जोच मञ्जुवर्ज एव० द्वितीय ०४ टी सम्पूट मञ्जुदज” । ए० क्रियाद्वयेर मध्ये आदो (रसनिकादिर द्राघता ० सम्पूर्ण रूप क्रियाशक्ति ना ह०ते ह०ते०) प्रथमटी० अधिकार ० त०परे (क्रमशः रसनिकादिर द्राघता ० सम्पूर्ण क्रिया शक्ति जमिले) द्वितीयटी० सामर्थ्य जमे एव० प्रथम क्रियार सामर्थ्य ना ह०ले द्वितीय क्रियार सममता हर ना । कारण “मञ्जोचर” ह० चरनावस्था मन्त्रिलन स्त्ररा० “मञ्जोच” ना ह०ले “सम्पूट” (मिलन) ह०ते पा०रे ना एव० “सम्पूट मञ्जुद” अपेक्षा मञ्जोच मञ्जुवर्ज “अप्राप्तम साध ह०या आभाविक वा अतःसिद्ध, ए जन्म देखा गाय वे बालकेर वाङ्मन वर्ण परिष्कारेटर असामर्थ्यावस्थाय प्रथम “अ ! आ” आदि स्त्र वर्णेर उच्चारण क्रिया क्रन्दनादि करे । अतएव बालकदिगके प्रथमतः “मञ्जोच मञ्जुवर्ज” वर्णेर ० त०परे “सम्पूट मञ्जुदज” वर्णेर उपदेश दिवार नियम ह०या०ते ।

स्त्र वर्ण सकल ० परस्पर उ०पत्ति स्थानेर विभिन्नता हेतु क०थ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ऊ०थ्य, क०थ्य तालव्य ० क०थो०थ्य ए० सात प्रकारे, एव० एताव० आवार गूथा, गौण ० सक्रास्त्रर भेदे तिन प्रकारे विभक्त ह०या०छे । क०थ्य, उक्त प्रकारे आकृषित क०थ ० रसनिका वा आल जि-

सम्पूट, वा “व्यञ्जन” * जो स्त्रायके स-
स्त्रेग जनिता स-स्त्रेगसे आकृषित स्त्र उ०पत्ति-
स्थानके (निर्गम्यमान आभ्यन्तरिक वायु कर्तृ-
क) सङ्घर्षण होने की से उत्पन्न होते उन्हें “स-
ङ्घोच सङ्घर्षण” और जो उक्त क्रमसे अपरिच्छिन्न
रूप सङ्घलित स्त्र स्त्र उ०पत्तिस्थानों (निर्गमनशील
आभ्यन्तरिक वायु कर्तृक) सम्पूट से उत्पन्न होते हैं।
विन्हे “सम्पूट सम्पूटज” कहा जाता है। ऊपर
के लिखे हुए पञ्चाश वर्णों के बीच “अ” कारादि
सोलह वर्णोंको पहली रीति से उत्पन्न और “क”
से क्ष पर्यन्त चौत्तीस अक्षरों की दूसरी रीति से
उत्पन्न हुए कहते हैं। इसी लिये पहले १६ सो-
लहोंको “सङ्घोच-सङ्घर्षण” ओ दूसरे चौत्तीसों को
“सम्पूटसम्पूटज” बोला करते हैं। इसी दोनो
क्रियाके बीच (रसनिका आदिकी दृढ़ता ओ अ-
भांता क्रिया शक्तिके हो०के पहले की) पहले से अ-
धिकार और तब (क्रम क्रम से ह० आ पूर्ण क्रि-
या शक्ति उत्पन्न होने पर) दूसरे में सामर्थ्य होता
है, ए०ही पहली क्रिया को सामर्थ्य न हो०से
दूसरी क्रियाकी सममता ना होता है। कारण
यह है कि “सङ्घोच” की की चरमावस्था मन्त्रिलन,
स्त्ररां सङ्घोच न हो०ले “सम्पूट” (मिलन) हो०
नहीं सकता है। एवं “सम्पूट सम्पूटज” से स-
ङ्घोच सङ्घर्षण अल्प आयाम से साध्य है यह स्वाभा-
विक अर्थात् स्वतः मन्त्र जानना। इसी लिये देखा
जाता है कि लड़के लोग व्यञ्जन वर्णों के फुटने “के
पहले की अ आ” आदि स्त्र वर्णोंका उच्चारण कर-
के क्रन्दनादि कर्म करते हैं। इसी कारण बालकों
को पहले सङ्घोच सङ्घर्षण (स्त्र) वर्णोंका उपदेश
दिया जाता है, तब कहीं “सम्पूट सम्पूटज (व्य-
ञ्जन) वर्णोंका उपदेश दिया जाता है। ए०ही
नियम है। स्त्रवर्ण ओ व्यञ्जनवर्णोंकी उत्पत्तिके
स्थानोंमें विभिन्नता होने के कारण कण्ठ, तालव्य,
मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ, कण्ठ तालव्य, ओ कण्ठोष्ठ
लगाके सात प्रकार हुए। फिर मुख्य, गौण ओ
सन्ध्यक्षरके भेदसे तीन प्रकार विभक्त हैं।—कण्ठ
वर्ण उक्त रीति से कण्ठके आकृषित होने पर रस-

* “वाङ्मन” ए० योगार्थ द्वारा वाङ्मन शब्द “ग्राहारा
परस्परर स्त्रवर्ण वा मन्त्रिलन द्वारा उ०पत्ति हर” ए० अर्थ
देखा । आधुनिक वैयकरणवेर बोलन, “वाङ्मनान्य-
वाङ्मनि ।”

* व्यञ्जन से इसी योगार्थ से व्यञ्जन शब्द हुआ
“जो परस्पर मिलने से उत्पन्न हो”—यही अर्थ होता
है, आज कलके वैयाकरण कहते हैं, “व्यञ्जनान्य-
वाङ्मनि” ।

হ্রস্ব সংঘর্ষণ জাত অ, আ, ঐ, ঔ, তালব্য, উক্ত
রূপে আধুক্ষিত তালু ও রসনাভ্যন্তরের সংঘর্ষণ
জাত ই, ঈ, মূর্দ্ধন্য উক্ত রাতিতে আধুক্ষিত
রসনোপাস্ত বা মূর্দ্ধাদেশের সংঘর্ষণে উৎপন্ন ঋ,
ঌ; দন্ত্য উক্ত প্রণালীতে আধুক্ষিত দন্ত ও
রসনাগ্ৰের সংঘর্ষণে নিম্পন্ন ঞ, ঞ্ণ, ঃ, ঔ, উক্ত
নিয়মে আধুক্ষিত ওষ্ঠঘ্রয়ের সংঘর্ষণে জাত ঊ,
ঔ; কণ্ঠ তালব্য এ, ঐ; কণ্ঠেষ্ঠ্য ও, ঔ।
অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ইহারা মুখ্যস্বর; ঋ, ঌ,
ঞ, ঞ্ণ, ঃ, ঔ, এ, ঐ, ও, ঔ; ইহাদের আং-
শিক ব্যঞ্জনতা নিবন্ধন ইহারা গৌণ স্বর; ই-
হারা নিতান্ত সন্নিহিতে উচ্চারিত ২ বা ৩
বর্ণের সমষ্টী স্বরূপ এই জন্য ইহাদিগকে সন্ধ্য
ক্ষর কহা যায়। দেখা যায় যে অ, আ, ইহা-
দের একতর এবং ই, ঈ, ইহাদের একতরের
নিতান্ত সন্নিধান উচ্চারণে “এ” আর হ, ঙা,
ইহাদের একতরের এবং “এ”র নিতান্ত সন্নি-
হিতোচ্চারণে ঐ, এই রূপ ‘হ,’ ‘আর’
অন্যতর সন্নিহিত উ, ঊর একতরের উচ্চারণে
“ও” এবং “ও”র উচ্চারণে “ঔ” এইরূপ
হইয়া থাকে। কথিত প্রকারে সপ্তধা বিভক্ত স্বর
বর্ণ মধ্যে কণ্ঠ্যাদি ক্রমে উত্তরোত্তর উচ্চারণ
ক্ষমতা হইয়া থাকে, কেন না যে সমস্ত মাংস
পেশীর ক্রিয়া দ্বারা আভ্যন্তরিক নিঃশ্বাস বায়ু
বেগবান হয়, সেই পেশী হইতে কণ্ঠ্যাদি স্থান
সমূহের উত্তরোত্তরই দূরবর্তিতা হেতু উত্তরো-
ত্তর স্থানেই নিঃশ্বাস বায়ু ক্রমশঃ দুর্বল, এ-
জন্য ঐ বায়ুর কণ্ঠ ও তালু বা তালু ও মূর্দ্ধাতে
একটি সমান ক্রিয়া করিতে হইলে উত্তরোত্তর
অধিক বেগে নিঃসৃত হওয়া আবশ্যিক; অতএব
উত্তরোত্তর স্থানের কার্য অপেক্ষাকৃত আরাম-
সাধ্য এবং রসনিকাদির মধ্যে ও শরীরোপচয়ের
নিয়মানুসারে রসনিকা হইতেই ক্রমে পরপর
দৃঢ়তা হওয়ায় উত্তরোত্তরই উক্ত কার্যক্ষমতা
হইয়া থাকে, অতএব কণ্ঠ্যাদি ক্রমেই স্বরবর্ণের
সন্নিবেশ হইয়াছে। এতন্মধ্যে আবার গৌণ স্বর
আংশিক সম্পূর্ণ সন্তোদজতা নিবন্ধন মুখ্য স্বর অ-
পেক্ষা দুর্বল কার্য এবং সন্ধ্যক্ষর দ্বিত্রিবর্ণায়কতা
হেতু গৌণ স্বর অপেক্ষাও দুর্বল কার্য, এই নি-
মিত্ত মূর্দ্ধ-জিহ্বোপাস্ত ও দন্ত-জিহ্বাগ্র স্থানীয়
“ঋ, ঌ, ঞ, ঞ্ণ, ঃ, ঔ” বর্ণের পক্ষেই ওষ্ঠ স্থানীয় মুখ্য

निका अर्थात् जीभके संघर्षणसे उत्पन्न ऊँचा करते है। यथा अ, आ, ० अनुस्वार, : विसर्ग। तालव्य वर्ण उक्त रीति तालुके सङ्घर्ष होनेपर रसनाभ्यन्तर के सङ्घर्षणसे होते है यथा इ, ई। मूढन्यभी व सही रसनोपान्त के आकुञ्चित होने से या मूँ देश-के सङ्घर्षणसे उत्पन्न होते है, यथा, ऋ ऋ। दन्त्यवर्ण उक्त नियम से दन्त के आकुञ्चित होने पर रसनायके सङ्घर्षणसे निष्पन्न होते है, यथा ल, लू। ओष्रावर्ण उक्त रीतिसे आकुञ्चित ओष्ठद्वयके सङ्घर्षण से होते है यथा उ, ऊ;। कण्ठ तालव्य ए, ऐ; कण्ठोष्ठा ओ ओ। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ये मुखव्यवर है। ऋ, ऋ, ल, लू, ए, ऐ, ओ, औ ० अनुस्वार, विसर्ग इनमें औषिक व्यञ्जना है, ये गौण स्वर है नितान्त सन्निहित उच्चारित कविक वर्णोंके सप्तष्टि स्वरूप है। इसी कारण इन्हें मन्ध्य-स्वर कहा जाता है देखा जाता है कि अ अथवा आ, इ अथवा ई का नितान्त सन्निधान हो कर उच्चारण होने से 'ए' हो जाता है। फिर अ अथवा आ "ए" का नितान्त सन्निहित होकर उच्चारित होनेसे "ऐ" हो जाता है। ऐ से ही अ, आ में से एकतर उ, ऊ, इनमें से एकतर का सन्निहित हो कर उच्चारित होनेसे "ओ" तथा ओ के उच्चारण में ओ भी मिली है। उक्त रीतिसे सप्तधा विभक्त स्वरवर्णों के बीच कण्ठदि क्रमसे उत्तरोत्तर उच्चारणकी क्षमता ऊँचा करती है। क्योंकि जिस सांमपेशी की क्रियासे आन्तरिक निःश्वास वायु वेगवान होता है, क्रमसे कंठादि स्थानों का उत्तरोत्तर दूरवर्तिता होनेके कारण उत्तरोत्तर स्थानमें निःश्वास वायु क्रमशः दुर्बल, ओ इसी लिये उस वायुका कण्ठ, तालु, ओ मूँदारो कोउ एक समान किया करने पड़नेसे उत्तरोत्तर अधिक वेग से निकलना आवश्यक होता है। अब उत्तरोत्तर कार्य अपेक्षाकृत आयास साथ एवं रसनिका आदिके भी बीच शरीरोपचय के नियमालुसार रसनिकाही से क्रमसे दृढ़ता आदिके होनेमें उत्तरोत्तर ही उक्त कार्य क्षमता ऊँचा करती है। इसी लिये कण्ठ आदि के क्रमसे स्वरवर्णोंका सन्निवेश ऊँचा है। गौण स्वर का आंशिक सम्पुट सन्निवेश निबन्धन मुख्य स्वर की अपेक्षा दुर्बलार्थ-एवं सन्निधर दो तीन वर्णों के है इस हेतु गौण स्वर सभी दुर्बलार्थ है। इसी निमित्त मूँ जिह्वा ताल ओ दन्त जह्वाग्रस्थानीय "ऋ" ओ "लू" पड़ ही

स्वर “उ” वर्णের এবং সন্দ্যক্ষরের পূর্বে গৌণ স্বরের সন্নিবেশ হইয়াছে। “অন্যস্বা” ও বিসর্গগৌণ স্বর হইলেও সন্দ্যক্ষরাণ্যেচ্ছা দ্রুত চ্যাত্তা নিবন্ধন সর্বশেষে উহার সন্নিবেশ হইয়াছে।

স্বর বর্ণের ন্যায় ব্যঞ্জন বর্ণও কণ্ঠ রসনিকাদি পঞ্চ স্থান জাত। যথা ক, খ, গ, ঘ, ঙ, হ, কণ্ঠ ও রসনা স্থানীয়; চ, ছ, জ, ঝ, ঞ, য শ তালু ও রসনার মধ্য স্থানীয়; ট, ঠ, ড, ঢ, ণ, র, ষ, মূর্দ্ধা ও জিহ্বোপান্ত স্থানীয়; প, ফ, ব, ভ, ম, ন, ওষ্ঠ স্থানীয়। কিন্তু যদিও ইহারা ঠাণ্ডী করিয়া একই স্থান ভাগী বটে তথাপি তন্মধ্যেও স্থান বিভাগ আছে অর্থাৎ যে প্রকার একটী বেগুর কতকগুলি রক্ষা থাকে এবং উহার একই রক্ষা হইতে ষড়্জাদি একই স্বর উৎথিত হয় অথচ উহার মূল, মধ্য ও অগ্রভেদে বিভাগ করা যাইতে পারে, তদ্রূপ মুখ নালিকারও মূল হইতে অগ্র পর্যন্ত পৃথকই স্থান হইতে একই স্বর উৎথিত হইতে পারে। ফলতঃ কণ্ঠের প্রথম ভাগ আর রসনিকার প্রথম ভাগের মিলন দ্বারা মধ্য নালিকা অবরুদ্ধ হইয়া নির্গম্যমান আভ্যন্তর বায়ু কটকটে মিলনের সন্তোদ হইলে “ক” বর্ণ উৎপন্ন হয়, এই কণ্ঠ রসনিকার বিচার ভাগের মিলন সন্তোদ দ্বারা “খ” তৃতীয় ভাগের মিলন সন্তোদ দ্বারা “গ” চতুর্থ ভাগের মিলন সন্তোদ দ্বারা “ঘ” এবং পঞ্চম বা শেষ অবয়বের মিলন সন্তোদ দ্বারা “ঙ” উচ্চারিত হয়। এই প্রকার তালু ও রসনা মধ্যাদির অবয়ব ভেদে “চ” বর্ণাদির পরিষ্কার হইয়া থাকে অতএব স্থান ভেদ অনুসারে স্বর বর্ণের ন্যায় ব্যঞ্জন বর্ণেরও যথা বৎ সন্নিবেশ হইয়াছে। কণ্ঠাদি ত্রৈণীক পাঁচই বর্ণের ঐদৃশ পূর্ণাপরতার কারণান্তরও কথিত হইতেছে। ক, খ, গ, ঘ, ঙ, এই পাঁচটি বর্ণ ক্রমশঃ মূর্দ্ধ, তীব্র ও মূর্দ্ধ সম্মেগজ বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে অর্থাৎ “ক” মূর্দ্ধ সম্মেগজ, “খ” তীব্র সম্মেগজ, গ মূর্দ্ধ সম্মেগজ, ঘ তীব্র সম্মেগজ, ঙ মূর্দ্ধ সম্মেগজ। (যদি পাঠক মহোদয়গণের ইহাতে সন্দেহ উপস্থিত হয় তবে অনায়াসে পরীক্ষা করিয়া দেখিতে পারেন। এক মিনিট সময়ে

আমি, স্থানীয় মন্ত্র স্বর “উ” বর্ণের সন্নিবেশ আর সন্নিবেশের পক্ষে গৌণ স্বরকে সন্নিবেশ জ্ঞাত হই। অনুসার আ বিসর্গ গৌণ স্বর হই, তথাপি সন্নিবেশের জন্য উহার দৃষ্টার্থতা হইলে কারণ সব কে উপস্থাপন সন্নিবেশ হইবে।

স্বরবর্ণের ন্যায় ব্যঞ্জনবর্ণেরও কণ্ঠ রসনিকা অদি পাঁচ স্থানোপস্থিত হইতে হইবে - যথা ক, খ, গ, ঘ, ঙ, হ এই কণ্ঠ আ রসনা স্থানীয়; চ, ছ, জ, ঝ, ঞ, য, শ, তালু আ রসনার মধ্যস্থানীয়; ট, ঠ, ড, ঢ, ণ, র, ষ, মূর্দ্ধা আ জিহ্বোপান্ত স্থানীয়; প, ফ, ব, ভ, ম, ন, ওষ্ঠ স্থানীয়; পরন্তু যদ্যপি ইন্মে এক সাত কর্ত্তে; এক এক স্থানীয় হই সী ঠীক, তথাপি উসমে মী স্থান বিভাগ হই অর্থাৎ উসম প্রকার এক ঠীক কিতন এক ঠীক রহি হই। আর উসম এক এক রম্মে পড়জ আদি এক এক স্বর নিকম হই অথচ উসম মূল, মধ্য, আ অগ্রকে মেরে বিভাগ মী কিয়া জা সেকতা তৈসাহী মুখ, নাসিকা আ মী মূল মে অগ্র পর্যন্ত পৃথক পৃথক স্থান এক এক বর্ণের আ উদ্ভে হীতা হই। উসম পর মী অপর অপর বর্ণের অনুসারে পাঁচ প্রকার বিভাগের উত্তর জাত বিভাগ কথ্য যথা হই।

ফলতঃ কণ্ঠের প্রথম ভাগ আর রসনিকা কে প্রথম ভাগের মিলন সে মুখ নাসিকা অবরুদ্ধ হী জাতী কির তিসমে নির্গম্যমান আভ্যন্তর বায়ু কটকট উস মিলনজা সম্মেদ হইনে “ক” বর্ণ উৎপন্ন হীতা হই। দ্বিতীয় ভাগ আ রসনিকা কে দ্বিতীয় ভাগের মিলনকে সম্মেদ সে “খ” তৃতীয় ভাগের মিলনকে সম্মেদ সে “গ” চতুর্থ ভাগের মিলনকে সম্মেদ সে “ঘ” আর পঞ্চম অর্থাৎ শেষ অবয়বের মিলনকে সম্মেদ “ঙ” উচ্চারিত হীতে হই। উসী ভাৱে তালু আর রসনা মধ্য আদি অবয়বের মেরে চ বর্ণ আদিকা পরিষ্কার হীতা হই। অতএব স্থান মেরে অনুসারে স্বর বর্ণের ন্যায় ব্যঞ্জন বর্ণেরও যথা বৎ সন্নিবেশ জ্ঞাত হই। কণ্ঠ আদি ত্রৈণীক পাঁচ পাঁচ বর্ণের কী জা এসী পূর্ণাপরতা হই, তিসকা আর মী কারণ হই। ক, খ, গ, ঘ, ঙ, রম্মেগজ, মূর্দ্ধ, তীব্র, মূর্দ্ধ, তীব্র আ মূর্দ্ধ সম্মেগজ কহীলা হই। যথা, “ক” মূর্দ্ধ সম্মেগজ, “খ” তীব্র সম্মেগজ, “গ” মূর্দ্ধ সম্মেগজ, “ঘ” তীব্র সম্মেগজ “ঙ” মূর্দ্ধ সম্মেগজ হই। যদি পাঠক মহোদয়গণের ইহাতে সন্দেহ উপস্থিত হয় তবে অনায়াসে পরীক্ষা করিয়া দেখিতে পারেন। এক মিনিট সময়ে

“क” कतवार ओ “ख” कतवार उच्चारित हय । यदि “क” अपेक्षा “ख” उच्चारण मंथ्या अल्प हय ताहा हईते “ख” अपेक्षा “क” ये गूछ मस्वेगज ई । बुबिबार बिलस हईवे ना ।

प्रकृति मात्रैरई स्वभाव एई ये, ईहार यथन ये कोन क्रिया हईते থাকे, उह! पूर्वतन क्रियासुत्तरैर प्रतिक्रिया स्वरूपे स्फुरित हईते । अना प्रतिक्रिया द्वारा अभिभूत हईया । पढ़े एव तत्परे निज प्रतिक्रियाके प्रतिकार पूर्वक स्फुरित हईया उठे । (प्रतिक्रियाके क्रियार प्रीतिम वना वाईते पावे) एव ईहाओ त्रि सिद्धांत ये क्रिया ओ प्रतिक्रिया परस्पर नूनाधिकारमात्र परस्पर नूनाधिका हईया থাকे । * एई स्वभाव वंशतः “लघुमस्वेगज” “क” उच्चारणेर “लघु प्रतिमस्वेग” कालीन “तीव्रमस्वेग” अनायास माध, अतएव “क” पर तीव्रमस्वेगज “ख” नियमित हईयाहै ; तीव्रमस्वेगज “ख” उच्चारणेर “तीव्र प्रतिमस्वेग” कालीन पुनस्तीव्रमस्वेगज वर्णोच्चारण अधिकतर आयास कर, अजना “ख” पर अन्त्यायान मध्ये “लघुमस्वेगज” “ग” एव “ग” उच्चारणेर लघु “प्रतिमस्वेग” कालीन अनायास माध “तीव्रमस्वेगज” “घ” उच्चारणेर पर आवार “लघु” “मस्वेगज” “ङ” नियमित हईयाहै । एईरूप तानु आदि स्थानीय चवर्गादिओ उक्त नियमैर अधीन निहित हईयाहै । एईरूप क हईते म पर्याप्त शिक्षित हईले बल्लभान तात एव दूर-छारणीय “र” हईते “ह” पर्याप्त आठिटी वर्णैर ओ उदन्तुर संयुक्त वर्ण “रु” मन्निवेशित हईयाहै ।

पाठक महोदय ! बोध करि एक्के बुबिते पारिलेन ये आर्यगण क ख, आदि शिक्षा दान मयेओ प्रकृतिर स्वभाव रसे मड हईया वान प्रकृतिर आश्चर्य पूर्वक वर्णमाला मन्निवेश ।

* प्रकृतिर एई प्रकार स्वभाव ना থাকिले आमरा एकटा लोष्ट उक्केप करिया आर ताहाके भूमिष्ठ दर्शन करि दान ना । प्रकृत अनाथा उहार गति निवृत्तिरई कारण बन्धित हय ना । पृथिवीर माध्याकर्षण ओ वायवीय क्रियाई उक्केपेर प्रतिक्रिया, तद्वारा लोष्टैर उदगति शक्ति अभिभूत हईले, उक्त प्रतिक्रिया द्वाराई तन्नि संयुक्त हय । एई स्वभाव द्वाराई आमादेर जागरणनंतर निद्रा ओ निद्रानंतर जागरण हईतेहै । जगत्

मिनिट भर समयमे “क” कै वर और “ख” कै वर बोला जा सकता है । यदि “क” से “ख” की संख्या न्यून हो तब यह समझने में कुछ बिलंब नहीं होगा “ख” के अन्तर्गत “क” बहुत स्वर्गज है ।

प्रकृति मात्र ही का स्वभाव यह है कि उसका जब जो क्रिया ऊँचा करती सो पूर्वतन क्रियाकी प्रतिक्रिया रूपमें स्फुरित होती होती दूसरी प्रतिक्रिया में ‘अ’ अभूत हो जाती है । एवं अपनी प्रतिक्रिया का प्रतिकार कर स्फुरित हो उठती है । (प्रतिक्रिया को चियाका विषय भी कहा जा सकता है) और यह भी स्थिर सिद्धांत है कि चियाओ प्रति क्रियाके परस्पर न्यूनाधिकार ऊँचा करता है * । इसी स्वभावके कारण लघुमस्वेगज “क” के उच्चारण “लघुमस्वेग” कालीन “तीव्रमस्वेग” अनायास माध्य है । इसी नियम “क” के बाद तीव्रमस्वेगज “ख” नियमित किया गया है ; तीव्रमस्वेगज “ख” के उच्चारण का “तीव्रमस्वेग” कालीन फिर तीव्रमस्वेगज वर्णका उच्चारण अधिकतर आयास कर जाता इस लिये “ख” के पर अल्प आयास माध्य “लघुमस्वेगज” “ग” और “ग” उच्चारण का “लघुमस्वेगज” कालीन अनायास माध्य तीव्रमस्वेगज “घ” के उच्चारण के बाद फिर लघुमस्वेगज “ङ” नियमित हुए हैं । इसी प्रकार तानु आदि स्थानीय चवर्ग आदि भी उक्त नियमके अधीन निहित हुए हैं । ऐसी क संम पर्यन्त सिखाया जानिके उत्तर बल्लभान तथा दुरुच्चारणीय “य” “ह” पर्यन्त आठों अक्षर आतुत्तर संयुक्त वर्ण “रु” संनिवेशित हुए हैं । पाठक महोदयगण ! बोध होता है अभी शुरूमें कि आर्यगण क, ख आदिके ज्ञान के समय भी प्रकृति स्वभाव रसे म ड होकर बालप्रकृतिका

* प्रकृतिका ऐसा स्वभाव न रहता तो हमलोग एक टोको फेरकर फिर उसे धरतीपर गिरने नहीं देखते । बल्कि अथवा उसकी गति आ निवृत्ति ही का कारण लक्षित नहीं होता है । पृथिवीका माध्याकर्षण ओ वायुकी क्रिया ही उत्तम की प्रतिक्रिया है । तिससे जले की उद्गमन शक्ति जब अभिभूत हो जाता है तब उक्त प्रतिक्रियावत् भूमि संयोग होता है । इसी स्वभावसे हमलोगका जगने के अनन्तर निद्रा ओ निद्रा के अनन्तर जागरण होता है । जगत् से जितनी वस्तु है सो सर्वथा इसी कभा की अधीन है ।

झाहनेन एवम् प्रकृतिर प्रति प्रगाढ प्रेमेन परि-
चय दियाह्वेन । तौहारा इह९२ शास्त्र प्रणयन
काले कथनै प्रकृतिके विस्तृत इहैया कम्पनार
अनुवर्ती वा अनुरागी ह्येन नहि । पाण्डिताभि-
मानि कतक गुलि जन्माक कर्तृकहि आर्या शास्त्रे
वर्तमान विषम छुद्दिशा ओ दुर्गम इहैयाह्वे ।

भगवान श्रीरामचन्द्र अश्वमेध यज्ञ । *

महोदयगण ! भगवान श्रीरामचन्द्र कनक ल-
ङ्कार दुर्धर्ष वीर दशाननके सवशे विनिपातित
करिया रावणापहता निज वनिता सीताके उद्धार
करिलेन । विश्वविजयी वीर अयोध्या पुरीते
प्रत्यारुत इहैया अप्रतिहत प्रभावे राज्य करि-
ते२ राजनैतिक नियमेन वशवर्तीता प्रयुक्त गर्भ-
वती जनक-तनयाके जनवासिनी करिते बाध
इहिलेन । राजश्री कत्रिय धर्म, तेजस्वीता, वीर-
प्रताप, विपुल विक्रम प्रभृति गुणराशि तौहाके
'अश्वमेध' महा यज्ञे ब्रती करिल । यज्ञभूषा-
नेन अवश्यावश्यकिय द्रव्य समभार आदि तावद्वि-
मयेरइ आहरण इहिल । यज्ञीय अश्वके धूर्जय, धूर्जा
आदि दिग्विजय चिह्ने चिह्नित ओ तौहार
ललाट फलके 'विजय पत्र' आवद्ध करिया दे-
ओइ इहिल । अश्व स्वाधीन भावे दिगदेश पर्याटने
गमन करिल एवम् दुर्जय वीर समिद्राह्वार ता-
हार रक्षक इहैया सजे२ चलिलेन ।

सुलङ्गक्रान्त अश्व ग्रहण करिवार जन्य दर्शक
मात्रेइ स्पर्हा जन्मिते लागिल किन्तु यখন अ-
श्वेन ललाट फलके आवद्ध विजय लिपि 'पाठे
विदित इहिलेन ये यदि केह एहि यज्ञीय तुरङ्ग
धारण कर अथवा इहार गति रोध कर तवे
राजाधिराज चक्रवर्ती श्रीरामचन्द्र सह तौहाके
सम्युक्त समर समुद्रे अवगाहन करिते इहिवे ।
तौहारा निज२ सुदृढ बल विक्रम विदित आह्वेन
ओ अप्रमत्त हृदय तौहारा एहि दुःसाहसिक कार्ये
प्ररुत इहिलेन ना । अश्व अनिवार्य वेगे नाना
देश, प्रदेश, वन, प्रान्तर अतिक्रम करिया अव-
शेमे बाह्यीकिय तपोवने आसिया प्रवेश क-

आवाहन करते वर्णमात्राका सन्निवेशन कर गये हैं ।
ओ प्रकृतिमे प्रगाढ़ प्रेमका परिचय दे गये हैं । वो
बड़े बड़े शास्त्रोंके प्रणयन कालमे प्रकृतिको भूलकर
कल्पनाके अनुवर्ती वा अनुरागी नहीं हुए थे । पा-
ण्डित्याभिमानी किाने एक जन्माश्रयी करनी
केवल आर्यशास्त्रोंका वर्तमान विषम दुर्दशा ओ
दुर्गम कहा है ।

श्रीरामचन्द्र भगवान्का अश्वमेधयज्ञ ।*

महोदयगण ! श्रीरामचन्द्र भगवानने वर्णमय
लङ्काधिप दुर्धर्षवीर रावणको सवशे विध्वंस कर राव-
णापहता निज वनिता सीताका उद्धार किया । यह
विश्वविजयी वीर अयोध्यापुरीमे आकर अप्रतिहत
प्रभावसे राज्य करते करते राजनैतिक नियमोंके वश-
वर्तीता प्रयुक्त गर्भवती सीताको वनवास देने को बाध्य
हुए । राज्यश्री, क्षत्रियधर्म, तेजस्वीता, वीरप्रताप,
विपुलविक्रम प्रभृति गुणराशिने सहाय्य "अश्व
मेधमे ब्रती किया । यज्ञानुष्ठानके अवश्य आवश्य-
कीय द्रव्यसम्भार आदि सवस्त विषयका आहरण
हुआ । अश्वको धूर्जय, धूर्जादि दिग्विजयेके
चिह्नोंमे अङ्कित करके उसके ललाट फलकमे 'विजय
पत्र' बांध दिया गया । अश्वस्वाधीन भावसे दि-
गदेशके पर्याटनके निमित्त चला—और उसके रवक
हो कर साथ साथ दुर्जय वीर चन्द्रकेतु भी चले ।

अनन्तर सुलवण अश्वको लेने की दर्शकमात्र ही
को इच्छा हुई । परन्तु जब अश्वके ललाट फलकमे
बांधे विजयपत्रको पढ़ कर अवगत हुए कि "जो
कोई इसयज्ञ तुरङ्गको पकड़ेगा या इसकी गति
की रोध करेगा तो उसे राजाधिराज चक्रवर्ती
श्रीरामचन्द्रके सम्युक्त समर समुद्र मे डूब देने पड़े-
गा । जो लोग अपने अपने लुद्ध बलविक्रमसे अवगत
ओ अप्रमत्त हृदय थे वे इस दुःसाहसिक कार्यमे प्र-
वृत्त हुए । अश्व अनिवार्य वेगमे नाना देश, प्रदेश, वन,
प्रान्तर का अतिक्रम करके अन्तमे बालीकि क्षेत्रयो
वनमे आ पड़ा । लव, कुशने बालसम्भाव प्रयुक्त अ-
श्वको सुन्दर देखकर पकड़ लिया, अपने भुजबलसे

दिल । लव कुश बाल अभाव प्रयुक्त हुनर अश्व धारण करिलेन ; निज भुजवीर्यो जित्बुध पराजय करिते पारि । এই रूप स्त्रि ज्ञाने अश्वारोहणे क्रीडा करिते लागिलेन । श्रीराम सेनासह महा-समर आरम्भ हईल । क्रमेत् सैन्य रामाभुजद्वय समर सायी हईलेन । श्रीरामचन्द्र स्वयं निज पुत्र-बोधे अनेक बुझाईयाँ ताहादिगके, निरुद्ध करिते पारिलेन ना । अवशेषे तौहार मरण भू-च्छाय महारणेर अवसान हईल । लव कुश रक्तान्त गात्रे प्रफुल्ल चिते अश्व ओ समराग्रने निहत रामाञ्जकारि हनुमानके लईया जननी समीपे गमन करिलेन । सीता तदर्शने कपाले करा-यात करिया रौदन करिते २ लव कुशके पितृ-हस्ता आदि बगिया हिरकार करिते लागिलेन । इत्यवसरे वाल्मीकि आदिमिया सैन्य श्रीराम आ-दिर चैतना सकार करिलेन । लव कुश पितृ परि-चय पाईया भक्तिमह तत्पदे प्रणाम करिलेन । यज्ञीय तुरङ्ग सह रामचन्द्र अयोध्या प्रति नि-रुद्ध हईया अश्वेर मेध द्वारा यथाविध यज्ञ समापन करिलेन ।

आर्य धर्मावलम्बिगण । आदि कवि वाल्मीकिर लिपि नैपुण्य, रस माधुर्य ओ कवि-रस-शौरभ विषयी, मुमुक्षु ओ भुक्त एतद्विध श्रेणीर लोक-केइ बहु दिन हईते विमोहित करिया आदि-तेछे । वाल्मीकि महाराजायण एव केवल विषयी दिगेर चित्त विनोदनेर जन्यइ लौकिक राम चरित्र लिखियाइ परिहृष्ट हन नाई । मुमुक्षु ओ भुक्त मण्डीर ग्रहणोपयोगी उपचारैर ओ ईहाते अभाव नाई । ईहा द्वारा अस्मादृश मृदु एवं अन्यान्य तद्बानुसन्दिग्ध महाज्ञागणके ज्ञानोपदेश देओ-याई तौहार अभिप्राय । अद्य এই रामायणोक्त विवरणरीर लोकसाधारणेर भार बहिर्भूत नि-गूढ रहस्य भेदे प्रबुद्ध हईलाम ।

यिनि सर्वभूते सर्वदा अभिरमण करिया था-केन तिनिई रामचन्द्र ; युद्ध विग्रह शून्य अथवा निर्दन्द पुरी वा आनन्द धामई तौहार राजधानी अयोध्या । भगवान्-स्त्रीय शुद्ध सहाय अधिष्ठित हईया এই व्रक्षाणेर सृष्टि, स्थिति ओ नाश रूप एक महा अंशमेध यज्ञ आरम्भ करिलेन । अश्व এই यज्ञेर प्राण । अहंकारइ अश्व बगिया वर्णित हईयाछे अहंकारेइ जगतेर सृष्टि एवं अहं

विभूवनको जीत सकेंगे, ऐसही समझ करके अश्व पर चढ़कर क्रीडा करने लगे । श्रीरामचन्द्र जीके सैन्य के साथ महा संग्राम आरम्भ हुआ । क्रम क्रम श्रीरामचन्द्र जीके तीनों भाई समसायी हुए ।

श्रीरामचन्द्र अपना पुत्रसमझके वृद्ध प्रकार बूझा कर भी उन्हेंको निवृत्तकर न सके । अश्वमें उनको मूर्खा आदि होनेसे महारण का अवसान हुआ । रक्तान्त गात्र लवकुश प्रफुल्लितसे अश्व ओ समराग्रणमें निहतरामाञ्जकारि हनुमानको लेकर माताके निकट गये । यह देखते ही सीता माया पीटकर रोदन करी ओ लवकुशकी पीट हुता आदि कहकर तिरस्कार करने लगी । इतनेमें वाल्मीकि आकर ससैन्य श्रीराम आदिको सचेतन किया । लव कुश भी पिताका परिचय पा कर भक्तिपूर्वक उनके चरणों पर गिर । श्रीरामचन्द्र महाराज यज्ञके अश्वको लिये हुए अयोध्यामें पहुँचकर अश्वके मधमे दद्याविधि यज्ञको समाप्त किया ।

आर्य धर्मावलम्बिगण । आदि कवि वाल्मीजी की लिपि की निपुणता इसकी मधुरता आ कविल कुसुम की सुरमिता मुक्त मुमुक्षु विषयी एत-द्विध श्रेणीके लोगोंका वृद्धत दिनोंसे विमोहित करी आती है । वाल्मीकि जी इस महा "दाय" रामायणको केवल विषयजनक चित्र रचन करने अर्थ लौकिक रामचरित्र का स्वरूप रचित करके परिहृत नहीं हुए । मुक्त मुमुक्षु लोगोंके भी लेने योग्य उपचारोंकी कमतीनहीं है । यह मेरेसे मृदु ओ अन्यान्य तन्त्रानुसंधित, महात्माओंको आ-नोपदेशही देनेका उनका अभिप्राय था । आज इसी रामायणोक्त विवरण का लोकसाधारणोंके भाव बहिर्भूत निगूढ रहस्यके भेदमें प्रवृत्त होता है ।

जो सर्वदा सर्वभूतमें अभिरमण करते हैं वही रामचन्द्र । शुद्धविग्रह वर्जित वा निर्दन्द जो पुरी वही अयोध्या कहती है । वा आनन्द ही को राम कहते हैं, जिनकी पुरीका नाम अयोध्या ।

भगवान् अपनी सत्तामें अधिष्ठित ही कर इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि, स्थिति, उलय रूप महायज्ञ आर-म्भ किया । प्राण वा अश्व ही इस यज्ञका अश्व ठहराया गया है । अहंकार ही से जगत् की

विनष्ट होइलेइ ताहार मेध वा तत्संस्कारभूत आश्रय
ज्ञान उदय হয় এবং তদ্বারাই যজ্ঞ পূর্ণ বা স্থিতি
প্রাপ্ত হয়ইয়া থাকে। অর্থাৎ জন্ম, মৃত্যুরূপ সংসার
নিবৃত্ত হইয়া যায়। অহংকার বিজয়পত্র ললাটে
ধারণ করিয়া ভ্রমণ করিতেছে অথবা অহংকারী
লোক আপনাকে সর্বাপেক্ষা প্রধান বলিয়া বি-
শ্বাস করে। জ্ঞান, বৈরাগ্য, বিবেক আদি কেহই
অহংকারকে স্পর্শ করিল না। “আমি আত্মা
নহি” এই ভ্রম জ্ঞানকে লব বলা হইয়াছে।
(লব আপনাকে শ্রীরামায়জ বলিয়া বিশ্বাস করি-
লেন না,) এবং “ দেহাত্ম-জ্ঞান ” রূপে ব্যা-
খ্যাত হইল, লব ও রূশে যেমন মৌসাদৃশ্য আছে,
“ অনাত্ম-জ্ঞান ” ও “ দেহাত্ম জ্ঞান ” তাৎপ-
র্য্যবিকল্প আছে। ইহারাই দুই যমজ ভ্রাতা ;
এই দুইটিই জীবের পরিচারক ; অর্থাৎ মৃত জীব
অহংকারকে হৃদয়ে রক্ষা করিল। যে অশ্ব ধারণ
করিল তাহাকে ক্রীড়াম সহ সমরে প্রবৃত্ত হইতে
হইল পক্ষাতরে অহংকার বশতঃ জীব ঈশ্বর-
বিরোধী বা অব্যবহারী মহা পাষণ্ড হইয়া উ-
ঠিল। রামের দুর্ভাগ্যের সৈন্যগণ বিপক্ষ পক্ষ
দলন করিতে লাগিল অর্থাৎ ভগবৎ পরাধীন
জীবকে শোক, রোগ, তাপ, বেদনা, ক্রেশ, বিষ,
বিপত্তি, আদি সদাই পীড়ন করিতে লাগিল কিন্তু
প্রকৃতির নিয়মে (মীতার আশীর্বাদে) লব কুশ
(ভীম) বিজয় লাভ করিল অর্থাৎ “ ঈশ্বর নাই ”
অহংকারী জীবের এইরূপ দৃঢ় বিশ্বাস জন্মিল।
অতঃপর জীব, প্রকৃতি জাত প্রত্যক্ষ পরিদৃশ্যমান
জড় জগতে (জগৎ প্রকৃতি মীতার দুর্গীরে)
অশ্ব (অহংকার) ও হনুমান (আত্মানাত্মা বি-
চার) বহিয়া গমন করিলেন। প্রকৃতি নিজ পুত্র
জীবকে ঈশ্বরের অস্তিত্বে অস্বাকার করিতে দে-
খিয়া কাতর স্বরে স্থিতি, স্থিতি, লয়, কার্য্য, কা-
রণ ঘটনা আদি একত্রে অশ্রু বিন্দু বিসর্জন ক-
রিয়া মৃত্যুরে কহিতে লাগিলেন, রে জীব ! তুই
অবোধ শিশু, না জানিয়া না বুঝিয়া আজ পিতৃ
বধ করিলি, তোর এই বিজয় জীবনের এক
মহাকলঙ্ক হইয়া উঠিল, তুই যে মাতৃ বরের বলে
বিজয়ী হইলি আজ তোর সেই মাতাও পাতি-
প্রত্য নিবন্ধন ভর্তৃচিহ্নানলে প্রাণ ত্যাগ করিবে,
অর্থাৎ ঈশ্বরের সহায় না থাকিলে জগতের সহায়
থাকিতে পারে না, প্রকৃতি কাদিতে কাতর

সৃষ্টি স্বী অহংকার সে বিনষ্ট হইতে উল্কা সার-
ভূত আত্ম জ্ঞানকা উদয় হইয়াছে। এখং সেই
যজ্ঞ রণে অর্থাৎ সৃষ্টি লয় জ্ঞান ধারণ হৈ ভাব
যজ্ঞ হৈ কি জন্ম মৃত্যু রূপ সংসার নিবৃত্ত হই জায়া
হৈ। অহংকার হৈ বিজয়পত্র ললাটে ধারণকার
ভ্রমণ করতা হৈ। অথবা অহংকারী লোকহী সর্ববি-
দ্যা অপনকৌ প্রধান জান মান রাখতে হৈ। জ্ঞান বৈ-
রাগ্য, বিবেক আদি কে কিসীনে অহংকারকা রূপে নি-
খা। সে আত্মা নহী জ্ঞান ইসী ভ্রামিক জ্ঞানকৌ
লব কহা गया है। (लवने अपनेको रामात्मज मन
कर विश्वास न किया।) ऐसही देहात्म ज्ञान कूश-
रूप विख्यात किया गया है। लव श्री कृष्ण जैसा
रूस हुआ है “अनात्म ज्ञान” “नैराही ज्ञान” में
एनावय वता है देहात्म ज्ञान यमज भ्राता । मीदानों
जीवोंके पारधायक है। अर्थात् मृत जीव अहंकारी
हृदयमें रखे हैं। जिनने अपनी धर्म विरोधी
मार्ग प्राप्त होने पर मृत्यु के अहं-
कार दशतः जीव ईश्वर विरोधी श्री
महा पापक हो गया। श्रीरामका दुर्भाग्य सैन्य-
गण विपक्ष का दलन करने लगा अर्थात् भगवत्
पराधिन जीवको शोक, रोग, ताप, वेदना, क्रेश,
विघ्न, विपत्ति आदि सदा ही पीड़ा देने वाला प-
रम प्रकृति के नियमों में। (मीता के आशीर्वादे से)
लव कुशों (जीव) विजय लाभ किया। अर्थात् “ई-
श्वर नहीं है” अहंकारी जीवको ए सहो ज्ञान विघ्न
जन्मा। इसको अनंतर जीव, प्रकृति जगत प्रत्यक्ष
दृश्यमान जड़ जगत में (जगत प्रकृति सीताकी कु-
टीमें, अश्व (अहंकार) और हनुमान (आत्मानात्म-
विचार) को लेता हुआ गया। अब प्रकृति अपने
पुत्र जीवकी ईश्वर की अस्तित्व न मानते देखकर
कातर स्वरसे सृष्टि, स्थिति, लय, कार्य, कारण घ-
टना आदि रूप एक एक अश्रु बिन्दु विसर्जन करके
मृदु स्वरसे कहने लगी, रे जीव ! तू अवोध बालक
है, आज तूने विन जाने विन बुझे पितृवध कि-
या, तेरा यह रणविजय जीवनका एक महान् क-
लंक स्वरूप हुआ। तू जिस माताके वरके प्रसाद मि-
जयी हुआ वही तूरी मा आज पातिव्रत्य रक्षार्थ
स्वामीके चिताग्निमें पड़कर प्राण त्याग करेगी अर्थात्
ईश्वरकी सहाय ही रहने से जगत कभी नहीं टहर
सकता, यों प्रकृतिने रादन करती ऊई जीवको बुझा
दिया, अर्थात् जड़ जगतकी अस्तित्व ही ईश्वरकी

श्वरे जीवके এইরূপ বুঝাইয়া দিলেন। অথবা
জড় জগতের অস্তিত্বই ঈশ্বরের অস্তিত্ব বুঝাইয়া
দেয়। এইরূপে জীব প্রকৃতি কর্তৃক প্রবুদ্ধ হইয়া
পশ্চাত্তাপগ্রস্ত হইলে মদগুরু (বাল্মীকি) জ্ঞা-
নোপদেশ (অমৃতভাষ্য) দ্বারা জীবের সমক্ষে
ঈশ্বরের পূর্ণ মহা দেখাইয়া দেন তখন জীবও
ঈশ্বরের পদে ভক্তি বিনয় চিত্তে প্রণাম করিয়া
অহংকার (যজ্ঞায় অশ্ব) পরিহার করিয়া থাকে।
ভগবান অহংকারকে সংহার করিলেই এই সং-
সার প্রলয় সাগরে ডুবিয়া যায় এবং অশ্বের
মেষ বা অহংকারের সার হৃত আশ্রয় মহা দ্বারা
যজ্ঞের পূর্ণাঙ্গিতি বা সংসারের পরি সমাপ্তি হইয়া
থাকে।

বন্ধগণ! আমরা সকলেই সব হুশের ন্যায়
না বুঝিয়া যজ্ঞায় অশ্ব ধারণ করিয়াছি, এই জ-
নাই শোক রোগ তাপাদি ভগবানের তীব্র বাণে
হৃদয় ক্ষত বিক্ষত হইতেছে। যতক্ষণ না অশ্ব
ছাড়িয়া দিব ততক্ষণ এই দুর্নিপত্তি হইতে পরি-
ত্যাগ নাই। যদি কেহ নিজ গৃহে অশ্ব বাঁধিয়া
রাখিয়া থাকেন (যদি গৃহাদি আমার বনিয়া
বোধ থাকে) তবে এখনই উহা পরিত্যাগ করুন
যদি কেহ উদ্যানে তুবঙ্গ বাঁধিয়া থাকেন (যদি
উদ্যানাদি সম্পত্তিতে মমতা থাকে) তবে এখনই
উহা পরিত্যাগ করুন; যদি অস্ত্রপুর মধ্যে কেহ
উক্ত তুরঙ্গ লুকাইয়া রাখিয়া থাকেন (যদি স্ত্রী
পুত্রাদিতে মমতা থাকে) তবে এখনই উহা পরি-
ত্যাগ করুন; যদি কেহ হস্ত উহার রবাও ধা-
রণ করিয়া থাকেন (যদি শরীরাদিতে অহংবুদ্ধি
থাকে) তবে উহা এখনই পরিত্যাগ করুন; যদি
কেহ মনে মনেও উহাকে স্থান দিয়া থাকেন
(যদি ভবিষ্যাদি থাকে) তবে এই মুহূর্তেই
উহা পরিত্যাগ করুন। উহাকে স্পর্শ করিবেন
না, উহার নিকটে যাইবেন না, উহার সংকল্পও
করিবেন না। রামসহ মহারণে প্রবৃত্ত হইয়া স্ব
জীবনকে কলঙ্কিত ও ভ্রাণহ যুক্ত করিবেন না।
ভগবানের মহামজ্জ নির্কিষেও স্চারুক্রমে পরি
সমাপ্ত হউক।

হিন্দু ও ব্রাহ্মগণের সম্মিলন।

(৪৩২ পৃষ্ঠার পর)।

আমি যে সকল সমাজকে বন্ধ করি তাহা নিম্নের চা-

অস্থিকো বুঝা দেয়। জব্ব ইহা ভাতি জীব-
তি কলংক প্রবৃত্ত হই কর পশ্চাত্তাপগ্রস্ত জ্ঞে তব ম-
দুহ (বাল্মীকি) জানোপদেশ রূপ অমৃতভাষ্য
করকে জীবকে সাহা ই স্বরকে পূর্ণ স্বা দেখা দিয়া
করতে হই। জীবমী ইশ্বরকে চরণারবন্দে ভক্তি বি
নয় চিত্ত হই প্রণামকর অহংকাররূপ যন্ত্রকে অশ্বকো
ছাড় দিয়া করতাই। ভগবান অহংকার কা ম-
হার করতে হই যজ্ঞ সংসার প্রলয়সমুদ্রে ডুব जाता
হই, এবং অশ্বকো মেষ বা অহংকারকে সার হৃত আশ্রয়
দ্বারা যন্ত্রকে পূর্ণাঙ্গিতি বা সংসারকে পরিসমাপ্তি হই
জাতাই।

ভাইয়ো! हमलोग सही लवकुशको नाई यत्र
को अश्वको पकड़ा है इसी लिये शोक रोग ताप आदि
भगवान्‌के तीव्र बाणीसे हृदय क्षत, विक्षत होता है।
जबतक घोड़ेको छोड़ न देंगे तबतक इस दुर्वि-
पत्तिसे परिणाम नहीं होगा। जो किन्हींने अश्वको
घरमें बांध रखा हो (जो गृह आदि द्वारा उसे ऐसा
समझ किसीका हो) तो अभी तुरंत छोड़ दें।
यदि किन्हींने उद्यानमें अश्व बांध रखा हो।
(यदि मोड़ उद्यान आदि सम्पत्तिमें ममता, र-
खते हैं तो अभी उसे छोड़ दें। यदि किन्हींने
उक्त अश्वको अस्त्रपुर में लुका रखा हो (यदि स्त्री
पुत्र आदिमें ममता रहै तो अभी छोड़ दें। यदि
किन्हींने उसका लगाम हाथमें धरा हो यदि शरीर
आदिमें अहंस्वबुद्धि रहै) तो अभी उसका परित्याग
कर दें। यदि किन्हींने मन मन रखा हो (यदि
अभिमान आदि रहै) तो इसी मुहूर्त छोड़ दें।
उसका स्पर्श मत कीजिये, उसके निकट मत जाइये,
उसका संकल्प भी मत कीजिये। रामके साथ यु-
द्धमें प्रवृत्त हो कर जीवनको कलंकित औ दुराग्रह
युक्त मत कीजिये, भगवान्‌का महायज्ञ की अश्वकी
भांति निर्दोष परिसमाप्ति हो।

(हिनदुओं ओ ब्राह्मों का मेल)

(४३० पृष्ठा के आगे।)

मैं ब्राह्मसमज की वक्तता सुनने नहीं चाहता

हिना, हरि सभार केवल महिम सुब सुनियाई वा आमार कि हईवे। आमादिगेर आर्या शास्त्रे वथार्थ धर्म याहाते साधारण्ये हृदयसम करिते पाऐन ताहारई उपाय करा आदौ कर्तव्य। आत्मगण ये भावे धर्म प्रचार करिया-हेन से भाव परित्याग करिया देशीय भाव अवलम्बन करुन, प्रचारकेर परिवर्त एक जन शास्त्रवेत्ता नियुक्त करुन। ताँहारा आङ्गवर पूर्ण वक्तृता त्याग करिया यदि साधारणके शास्त्रज्ञान शिक्षा देन ताहा हईलेई ताँहारा भारतेर वथार्थ उपकारी। याहाते लोककेर मन धर्म-भावे आर्द्र हय ताहाई करिते हईवे। मत प्रचार अपेक्षा धर्म प्रचारई भारतेर कल्याण-कर। कठोर निराकार आत्मकेर उपासनाय आपा-वर साधारणकेर मन आर्द्र हईते पाऐन ना, ए सम्बन्धे इतिपूर्व आर एवटी अवस्था आमार मन्तव्य प्रकाश करियाहि सुतरां से विषये ए-कण्ठे आर किछु बलिता चाहि ना। अधिकार भेदे सकलके उपदेश देया उचित। एकथा साधारण आत्म समाज अनुमोदन कबिते पाऐन; येहेतु “तत्त्व कौमुदी” पत्रिकार २२ भाग तृ-तीय संख्याय “उदारता” शीर्षक अवस्था एरूप उदारता परित्यग पाइयाछि एवं एरूप कार्य उन्नतमनी हिन्दूगणकेर अनुमोदित। आमादेर प्रकृति दोषे आमरा सनातन धर्मके विकृत भावे दर्शन करितेछि, सेई भाव संस्कृत करिया लोया प्रत्येकेर कर्तव्य। आत्मगणकेर प्रतिमा पूजाके रणना करा उचित नहे केन ना यत दिन ना तत्त्वज्ञानोदय हय तत दिन स्रष्ट प्रकृति भेदे साधकेर मनोरञ्जनकर भगवन्मूर्ति आराधना करा मनुष्यकेर अवश्यावती। स्त्रीय उपास्य देव-तार प्रति भक्ति ओ आकाई क्रमेन नैतनगिक नि-रयमे साधकके निर्मल सत्ताभिमुखे आकर्षण क-रिते थाके अवशेषे साधकेर मनोवाञ्छा पूर्ण हय। आवार साधक यथन निर्मलचित्त, तत्त्वज्ञ, ओ आत्म दर्शी हईया कर्म काण्ठादि परित्याग पूर्वक परमात्माके ध्यान करेन तथन ताँहाके विषयी लोककेर मान्य ना करिया नास्तिक बलिया अद्वय करी अतीव अकर्तव्य। शास्त्रे प्रकृत धर्मभू-भिन्नताई इहार विशेष कारण। उपसंहार काले एई बलिया विद्वान लईतेछि, ये कि आत्म

ई वा हरिभाका केवल महिम सुब सुनियाई वा आमार कि हईवे। आमादिगेर आर्या शास्त्रे वथार्थ धर्म याहाते साधारण्ये हृदयसम करिते पाऐन ताहारई उपाय करा आदौ कर्तव्य। आत्मगण ये भावे धर्म प्रचार करिया-हेन से भाव परित्याग करिया देशीय भाव अवलम्बन करुन, प्रचारकेर परिवर्त एक जन शास्त्रवेत्ता नियुक्त करुन। ताँहारा आङ्गवर पूर्ण वक्तृता त्याग करिया यदि साधारणके शास्त्रज्ञान शिक्षा देन ताहा हईलेई ताँहारा भारतेर वथार्थ उपकारी। याहाते लोककेर मन धर्म-भावे आर्द्र हय ताहाई करिते हईवे। मत प्रचार अपेक्षा धर्म प्रचारई भारतेर कल्याण-कर। कठोर निराकार आत्मकेर उपासनाय आपा-वर साधारणकेर मन आर्द्र हईते पाऐन ना, ए सम्बन्धे इतिपूर्व आर एवटी अवस्था आमार मन्तव्य प्रकाश करियाहि सुतरां से विषये ए-कण्ठे आर किछु बलिता चाहि ना। अधिकार भेदे सकलके उपदेश देया उचित। एकथा साधारण आत्म समाज अनुमोदन कबिते पाऐन; येहेतु “तत्त्व कौमुदी” पत्रिकार २२ भाग तृ-तीय संख्याय “उदारता” शीर्षक अवस्था एरूप उदारता परित्यग पाइयाछि एवं एरूप कार्य उन्नतमनी हिन्दूगणकेर अनुमोदित। आमादेर प्रकृति दोषे आमरा सनातन धर्मके विकृत भावे दर्शन करितेछि, सेई भाव संस्कृत करिया लोया प्रत्येकेर कर्तव्य। आत्मगणकेर प्रतिमा पूजाके रणना करा उचित नहे केन ना यत दिन ना तत्त्वज्ञानोदय हय तत दिन स्रष्ट प्रकृति भेदे साधकेर मनोरञ्जनकर भगवन्मूर्ति आराधना करा मनुष्यकेर अवश्यावती। स्त्रीय उपास्य देव-तार प्रति भक्ति ओ आकाई क्रमेन नैतनगिक नि-रयमे साधकके निर्मल सत्ताभिमुखे आकर्षण क-रिते थाके अवशेषे साधकेर मनोवाञ्छा पूर्ण हय। आवार साधक यथन निर्मलचित्त, तत्त्वज्ञ, ओ आत्म दर्शी हईया कर्म काण्ठादि परित्याग पूर्वक परमात्माके ध्यान करेन तथन ताँहाके विषयी लोककेर मान्य ना करिया नास्तिक बलिया अद्वय करी अतीव अकर्तव्य। शास्त्रे प्रकृत धर्मभू-भिन्नताई इहार विशेष कारण। उपसंहार काले एई बलिया विद्वान लईतेछि, ये कि आत्म

কি হিন্দু আমাদের শাস্ত্রের যথার্থ মর্ম বাহ্যতে
/ আপামর সাধারণের হৃদয়ঙ্গম হয় তৎ সাধনে
সকলেই দৃঢ়ত হউন ।

শ্রীদীননাথ গঙ্গোপাধ্যায় ।

২য় বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার ।

শ্রীযুক্ত বাবু বিপিন মোহন সেন কলিকাতা	৩১/৮
এ হরপ্রসন্ন ঘোষ " মিরাত	৩১/৮
এ প্রশান্তচন্দ্র মুখোপাধ্যায় আলিগড়	৩১/৮

৩য় বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার ।

শ্রীযুক্ত বাবু মহেশচন্দ্র চৌধুরী কলিকাতা	৩১/৮
এ নারায়ণচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় এ	৩১/৮
এ শ্যামাচরণ ভট্টাচার্য বহরমপুর	৩১/৮
এ চিরঞ্জীবী সর্বাধিকারী ভগলপুর	৩১/৮
এ গঙ্গাধর বন্দ্যোপাধ্যায় এ	৩১/৮
এ হরপ্রসন্ন ঘোষ " মিরাত	৩১/৮
এ প্রিয়তমনারায়ণ সিংহ ভাগলপুর	৩১/৮
এ গোলোকচন্দ্র ধর " " " " " " " "	৩১/৮
এ গঙ্গাপ্রসাদ মহাজন মুন্সের	৩
এ বুলাকীলাল এ	৩
এ রাম সহায় লাল এ	৩
এ মহেন্দ্রনাথ রায় এ	৩
এ গণপতি প্রসাদ ভগলপুর	২১/৮
এ সূর্য্যসুন্দর গঙ্গোপাধ্যায় এ	২১/৮
এ কালীদাস রায় দামুকদিয়া	২১/৮
এ কালীপতি মুখোপাধ্যায় ভগলপুর	২১/৮
এ হরিনাথ ঘোষ " " " " " " " "	২১/৮
এ বংশীলাল ভগলপুর	২১/৮
এ পার্শ্বভীচরণ রায় রায়নগর (শ্রীহট্ট)	২১/৮
এ রামচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায় পাটকেবাড়ী	২১/৮
এ মহেন্দ্রনাথ ঘোষ " " " " " " " "	২১/৮
এ তারাপ্রসাদ রায় চৌধুরী এ	২১/৮
এ মাধবচরণ চৌধুরী প্রতাপগড় (শ্রীহট্ট)	২১/৮
এ গোপালগোবিন্দ চৌধুরী ইন্দু নগর	২১/৮
শ্রীহট্ট	২১/৮
এ প্রতাপচন্দ্র রক্ষিত কলিকাতা	২১/৮
এ দীননাথ প্রামাণিক ভদ্রেশ্বর	২১/৮
এ শশধর বসু ভগলপুর	২১/৮
এ রথীনাথ সহায়	২১/৮
এ কবিরাজ লাল দোবে কাঁহাল গাঁ	২১/৮
ভবানীপুর	২১/৮

লিগোঁকে শাস্ত্রের কা যথার্থ মর্ম জিজ্ঞাসা আপামর
সাধারণের হৃদয়ঙ্গম হই উল্লীকে সাধনেনে সব
কোই হৃদয়ত হইবে ।

শ্রীদীননাথ গঙ্গোপাধ্যায় ।

২য় বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার

শ্রীযুক্ত বাবু বিপিনমোহন সেন কলিকাতা	২ =
এ হরপ্রসন্ন ঘোষ " মিরাত	২ =

৩য় বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার ।

শ্রীযুক্ত বাবু মহেশচন্দ্র চৌধুরী কলিকাতা	২ =
এ নারায়ণচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় " " " "	২ =
এ শ্যামাচরণ ভট্টাচার্য বহরমপুর	২ =
এ চিরঞ্জীবী সর্বাধিকারী ভগলপুর	২ =
এ গঙ্গাধর বন্দ্যোপাধ্যায় " " " "	২ =
এ হরপ্রসন্ন ঘোষ " মিরাত	২ =
এ প্রিয়তমনারায়ণ সিংহ ভাগলপুর	২ =
এ গোলোকচন্দ্র ধর " " " " " " " "	২ =
এ গঙ্গাপ্রসাদ মহাজন, মুন্সের	২ =
এ বুলাকীলাল " " " " " " " "	২ =
এ রামসহায়লাল " " " " " " " "	২ =
এ মহেন্দ্রনাথ রায় " " " " " " " "	২ =
এ গঙ্গাপতিপ্রসাদ " " " " " " " "	২ =
এ সূর্য্যসুন্দর গঙ্গোপাধ্যায় " " " " " " " "	২ =
এ কালীদাস রায় " " " " " " " "	২ =
এ কালীপতি মুখোপাধ্যায় ভগলপুর	২ =
এ হরিনাথ ঘোষ " " " " " " " "	২ =
এ বংশীলাল " " " " " " " "	২ =
এ পার্শ্বভীচরণ রায় " " " " " " " "	২ =
এ রামচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায় পাটকেবাড়ী	২ =
এ মহেন্দ্রনাথ ঘোষ " " " " " " " "	২ =
এ তারাপ্রসাদ রায় চৌধুরী " " " " " " " "	২ =
এ মাধবচরণ চৌধুরী প্রতাপগড় (শ্রীহট্ট)	২ =
এ গোপালগোবিন্দ চৌধুরী ইন্দু নগর	২ =
শ্রীহট্ট	২ =
এ প্রতাপচন্দ্র রক্ষিত কলিকাতা	২ =
এ দীননাথ প্রামাণিক " " " " " " " "	২ =
এ শশধর বসু " " " " " " " "	২ =
এ রথীনাথ সহায় " " " " " " " "	২ =
এ কবিরাজ লাল দোবে কাঁহাল গাঁ	২ =
ভবানীপুর	২ =

हरिभक्ति प्रदायिनी सभा” प्रतिष्ठित होइयाहै। कलिकाताय ओ बांगला देशेर स्थाने स्थाने एही रूप हरिसभा अनेक स्थापित होइयाहै, ताहोदर मध्ये अधिकांशेरही कार्यप्रणाली वैभव सम्पुदा-याभूगत। कोन सम्पुदाय विशेषेर अशुभान प्रणाली अवलम्बन पूर्वक कार्य करिले वर्तमान भयङ्कर विप्लवराशिपूर्ण भारतीय धर्मसमाजेर कोन उपकार होइवे एरूप बोध होय ना। आम्हरा आशा करि उक्त सभा यथन काशीधामे स्थापित होइयाहै, तखन सदाशिवेर न्याय उदार प्रकृतिही ताहार अशुकरणीय होइवे। उक्त सभा संकीर्ण भाव परिहार पूर्वक वेद, वेदान्त, योग ओ भक्ति शास्त्रादिर बहल आन्दोलन करिया सकल सम्पुदाय-केही मित्रभावे समादर करिवेन ओ सकलके भक्ति, विश्वास, ज्ञान, योग आदि शिक्षा दिया उपकृत करिवेन। ७ विश्वेश्वर ओ अन्नपूर्णर कृपाय सभाही स्थायी होइया साधारणेर मने धर्मभाव उद्भेजित करे होइया आमादर एकांत प्रार्थनीय। अशुक्रुद्ध होइया निम्ने तत्रसभाय श्रद्धास्पद त्रिभुक्त पण्डित नवीनचन्द्र बन्द्योपाध्याय महाशय कर्तृक बाध्यात एकटी उपदेश प्रकटन करिनाम।

नमः शिवाय शान्ताय कारणत्रय हेतवे।

निवेदयामिचात्मानं गतिस्तं परमेश्वर ॥

यिनि शान्ति-निकेतन, अनादि, सर्वव्यापी, स्थिति संहार-कारणेर कारण स्वरूप, यिनि अहीष्ट फलदाता, सेही आशुतोष देवादिवेव महादेवके नमस्कार। आम्हरा एही विश्वेश्वर धामे “हरिहर” एकात्मा होइया विश्वास करिया एथाने “हरिभक्ति प्रदायिनी सभा” संस्थापन करियाहि; सेही जगद्गुरुही एही सभार एकमात्र अधिनायक। तिन आमादिकके भक्ति ओ ज्ञान प्रदान करुन।

श्रीमद्भागवतेर एकादश स्कन्धे मिथिलाधिपति विदेह निमि राजा नव योगेन्द्रेर (१) प्रति प्रश्न करितेछेन।

अथ भागवतं ब्रूत यद्वर्ण्यं यादृशो नृणां।

यथाचरति, यद्वृत्ते, यैर्लोकैः भगवत् प्रियः ॥

राजा जिज्ञासा करिलेन, हे महाभाग! भागवतगणेर धर्म किरूप, ताहारा कि प्रकार आचरण

(१) हरि, कवि, अश्वरीज, प्रवृक्त, निपुणायन, आविर्हो-
द, जमिन, चमस, ओ कद भाजन।

में ऐसी हरिसभा अनेक स्थापित ऊई उन्हीमें अधि-
कांशही की कार्य प्रणाली वैभव सम्पदाय का अनु-
सार है। किसी सम्पदाय की अनुष्ठान प्रणाली अवलम्ब-
न पूर्वक कार्य करनेसे वर्तमान भारतीय धर्मसमाज
का जो ने भयंकर विप्लवराशि से पूर्ण है, कुछ उपकार
होगा ऐसा बोध न होता है। हम आशा करते हैं
कि उक्त सभाने जब काशीधाम में स्थापित ऊया-
तब सदाशिवका न्याय उदार प्रकृतिही को वहु अनु-
करण करेगी। उक्त सभाने संकीर्ण भाव परिहार
पूर्वक वेद, वेदान्त, योग ओ भक्ति शास्त्रादि का व-
ञ्जल आन्दोलन कर सब सम्पदायही को मित्र
भावसे समादर ओ भक्ति विश्वास, ज्ञान, योग आदि
का उपदेश कर सबको उपकृत करेंगे। विश्वेश्वर ओ,
अन्नपूर्णजी की कृपासे यह सभाने स्थायी होकर सा-
धारण जनोके मनमें धर्म भाव उत्तेजित किया
करें यही हमारे एकांत प्रार्थनीय है। उस सभाम
ग्रहासद श्रेयुक्त पण्डित नवीनचन्द्र बन्द्योपाध्याय म-
हाशय का व्याख्यात किया ऊया एक उपदेश नीचे
प्रकट किया गया।

नमः शिवाय शान्ताय कारणत्रय हेतवे।

निवेदयामिचात्मानं गतिस्तं परमेश्वर ॥

जो ने शान्तिका निकेतन है, अनादि, सर्वव्यापी सृष्टि
स्थिति संहार कारणके भी कारण है, वही आशु-
तोष देवादिव को मैं नमस्कार करता ऊ। हमने
यह विश्वेश्वर धाममें “हरि ओ हर” की एकात्मा
समझकर यहां हरिभक्ति प्रदायिनीसभा संस्थापित
करी है। वही जगद्गुरुही इस सभाके एक मात्र
अधिनायक हैं। वे हमको भक्ति ओ ज्ञान प्रदान
करें।

श्रीमद्भागवतका एकादश स्कन्ध में यह उपदेश
है कि मिथिलाधिपति विदेह निमि राजा नव योगे-
न्द्र (१) के प्रति प्रश्न करते हैं।

अथ भागवतं ब्रूत यद्वर्ण्यं यादृशो नृणां।

यथाचरति यद्वृत्ते यैर्लोकैः भगवत् प्रियः ॥

राजाने पुछा, हे महाभाग! भागवतोके धर्म
कैसा है, वे किस प्रकार आचरण किय करते हैं, उन्ही

(१) हरि, कवि, अश्वरीज, प्रवृक्त, निपुणायन
आविर्होद, जमिन, चमस ओ कद भाजन।

करिग्रा थाकेन ओ ताहादेर लक्षणादिहै वा कि रूप
अत्र ग्रह पूर्वक एतावत् उपदेश करुन ।

• सर्वभूतेषु पश्याद्भगवद्भावमात्मनः ।

भूतानि भगवत्यात्मन्येव भागवतोत्तमः ॥

हरि कहिलेन, हे राजन् ! विनि सर्वभूतेर
अन्तरात्मा मध्ये भगवान्के दर्शन करेन एवं
भगवत् सत्ता मध्ये सर्वभूत इति करितेहे
अर्थात् समस्त वस्तुतेहै भगवान्के अंतःस्थातिभावे
अवलोकन करेन, तनिहै भागवतोत्तम ।

अथरे तदधीनेषु बानिषेणु द्विषत्सुच ।

प्रेम मेची कपोपेक्षा यः करोति न मध्यमः ॥

विनि अथरेर अति प्रेम, भक्तगणेर अति
मित्रभाव, मुक्त विनयीवर्गेर अति कृपा एवं घृष्ट
गणेर अति उपेक्षा अकाश करिग्रा थाकेन तनि
मध्यम अक्षरीर भागवत बलिहै हईवे ।

अर्चायामेव हरये पूजां यः अहरे हते ।

न तद्भक्त्युत्तमो नान्यो न भक्तः प्राकृतः स्मृतः ॥

विनि भगवानेर अतिभक्ति स्थापन पूर्वक अक्षा
मह पूजा करेन एवं भगवद्भक्तगणेर मध्ये भेद
वर्द्ध पोषण करिग्रा थाकेन, तनि “प्राकृत भ-
क्त” बनिग्रा कथित हईवेन ।

गृहीतापोन्द्रियैरर्थान् मोनोषेष्टि न कथति ।

विकल्पाभासादिना पश्यन् स तैव भागवतोत्तमः ॥

विनि इन्द्रिय भोग्य विषय समस्त आशु हईया ओ
ताहाते लाभालाभ वृद्धि वा हर्ष खेदादि अकाश
करेन ना अर्थात् इन्द्रिय विकार ओ विषय स्पृहा
वाहाके उन्नेजित करिते पावेर ना एवं विनि
समस्त वस्तुहै वैषण्वी मायासे रचित मिथ्या समझकर
बोद्धे ताहाते आसक्त हईवेन ना तनिहै भक्त-
श्रेष्ठ ।

देहेन्द्रिय आणमनो विद्यां यो

जयाप्ययद्भयतर्ष कृच्छ्रैः ।

संसार धर्मेभिरविग्रहमान

मृत्या हरै भागवत प्रधानः ॥

विनि भगवानेर शरणागत हईया देह, इन्द्रिय,
आण मन, बुद्धि, जन्म, मृत्यु, क्लृप्ता, दुःखा, भयादि क्ले-
शे विग्रह बन ना अर्थात् विनि तावधिकार वञ्चित
तनिहै परम भगवद्भक्त ।

परिशेषे हरिनामैर एहैरूपं मन्त्रिणा कीर्तन
पूर्वक उपसंहार करिलेन ।

हे भगवन् ! हरिहै मन्त्रेण एकमात्र गति

के लक्षणादि कैसा है, अनुग्रह पूर्वक इतना मुभके
उपदेश कीजिये ।

सर्व भूतेषु यः पश्यद्भगवद्भावमात्मनः ।

भूतानि भगवत्यात्मन्येव भागवतोत्तमः ॥

हरिमे बोला, हे राजन् ! जो पुण्यने भगवान्
को सर्वभूतके अन्तरात्माके मध्यमें दर्शन करता है
औ भगवत् सत्ताका मध्यमें जो सब भूत स्थिति क-
रते है अर्थात् समस्त वस्तुही में भगवान्को अंतः
प्रोत करके अवलोकन किया करते है वही भागवतो-
त्तम है ।

ईश्वरे तदधीनेषु बानिषेणु द्विषत्सुच ।

प्रेम मेची कपोपेक्षा यः करोति न मध्यमः ॥

जो ने ईश्वरके प्रति प्रेम, भक्तोंके प्रति मित्रभाव,
भूक्त विषयीयोंके प्रति कृपा औ द्वेष करनेवालोंके प्रति
उपेक्षा प्रकाश करता है उनको मध्यम श्रेणीके भा-
गवत करके जानना ।

अर्चयामेव हरये पूजां यः अहये हते ।

न तद्भक्त्युत्तमो नान्येषु भक्तः प्राकृतः स्मृतः ॥

जो ने भगवान्की मूर्ति स्थापनकर अर्चापूर्वक
पूजा की करती है औ भगवद्भक्त जनोंके मध्यमें भेद
बुद्धि रखी करती है, वह प्राकृत भक्त करके प्रसिद्ध है ।

गृहीतापीन्द्रियैरर्थान् यो न हृष्यति ।

विकल्पाभासमिदं पश्यन् सैव भागवतोत्तमः ॥

जो ने इन्द्रियोंके भोग प्रिय विषय सब प्राप्त होकर
भी उनमें लाभलाभ की बुद्धि वा हर्ष खेदादि प्रकाश
न करते है अर्थात् इन्द्रियोंके विकार वी विषयकी स्पृहा
जिमको उन्नेजित न कर सकता है औ जोने समस्त
वस्तुही की वैषण्वी मायासे रचित मिथ्या समझकर
उनमें आसक्त न होता है सोही भक्तोंके मध्यमें
श्रेष्ठ है ।

देहेन्द्रिय प्राण मनो धिया यो

जमाप्ययद्भयतर्ष कृच्छ्रैः ।

संसार धर्मेभिरविग्रहमान

मृत्या हरै भागवत प्रधानः ॥

जोने भगवतके शरणागत होकर देह, इन्द्रिय,
प्राण, मन, बुद्धि, जन्म, मृत्यु, क्लृप्ता, दुःखा, भयादि
क्लेशोंसे विमोहित न होता अर्थात् जिनका किसीही
प्रकार का विकार न रहता है उसहीको परम
भगवद्भक्त करके मानना ।

परिशेष में भक्तोंने हरिनामकी मन्त्रिणा कीर्तन
करके वक्तृताका उपसंहार करी ।

हे भाईयो ! हरिही सब जनोंकी एकमात्र गति

हरिनामही भयानक भवार्णव पारनेर एक मात्र महा-
तरणी। यत्काले जीव “हरि” एहि देवदु-
र्लभ नाम उच्चारण करिले मोक्षधाम प्राप्त হয়।
हरिनामের গুণে শমন শঙ্কা দূর হয়, हरिनामের
মহিমায় সর্বত্র বিজয় লাভ হইয়া থাকে। দেখ
করাধুহমার हरिनामের গুণে যত্নকে পরাজয়
করিলেন। অস্ত্র তাঁহার শরীর ছেদে সমর্থ হইল
না, পর্তত হইতে পতিত হইয়াও তাঁহার আঘা-
ত লাগিল না, বিষপানেও যত্ন তাঁহাকে স্পর্শ
করিতে সাহস করিল না, সমুদ্রজল তাঁহার পা-
ষণবন্ধ দেহকে মগ্ন করিতে অক্ষম হইল, এই
हरिनामের গুণেই নৃসিংহ রূপধারী ভগবান প্রহ্লা-
দকে দর্শন দিয়া ভক্তের সম্মাননা পূর্বক রাজ-
সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত করিলেন। পঞ্চানন हरि
গুণ গানে উন্মত্ত, हरिनामই সারাংসার। অতএব
সকলে আনন্দ পূর্বক हरि हरि ধ্বনি কর।

স্ত্রী স্বাধীনতা ও শিক্ষা।

(মৈয়দপুর উন্নতি বিধায়িনী সভা হইতে প্রাপ্ত)

আমরা সম্প্রতি জনৈক নিজ ব্যক্তির প্রমুখাৎ
এই দুইটি ভাব প্রবণ করিয়া কিছু বিস্মিত হইয়া-
ছি। তদ্ব্যথা—

১ম। ইউরোপ বাসীদিগের স্ত্রীগণ স্বাধীন
ভাবে নিজ নিজ স্বামীর সহিত গমন করিতে পা-
রে বলিয়া পুরুষগণ তাহাদের অজ্ঞাতসারে ব্যভি-
চার করিতে পারেন না। হুতরাং রমণীগণকে
স্বাধীনতা দেওয়া উচিত।

২য়। এতদেশীয় রমণীগণ অশিক্ষিতা বলি-
য়া তাহাদের স্বামীদিগের বিদ্যা, বুদ্ধি, ক্ষু-
র্তি পায় না। বিদ্যালয়ে থাকিতে যে জ্ঞানলাভ ক-
রেন, তাহা ক্রমে হীনপ্রভ হইয়া যায়।

স্ত্রী স্বাধীনতা ইংরাজদিগের মধ্যে কতদূর প-
র্যাপ্ত অনিষ্ট সাধন করিতেছে তাহা প্রথমে প্রতি-
পন্ন করিতে চেষ্টা পাইব, পরে আমাদের মধ্যে
ইহা বাঞ্ছনীয় কি না তৎপক্ষে কিঞ্চিৎ আলোচনা
করিব।

ইউরোপীয় যৌষিধর্গ পুরুষের বশ্যতা স্বীকা-
রে অসম্মত, স্বামী স্ত্রীকে নিজের অবহাঙ্গুগত ক-
রিয়া রাখিতে পারেন না। রমণীর প্রকৃতির অ-

হি, हरिनामही इस भयानक भवार्णव पारकी एक
मात्र महातरणी है। मरणका समय यदि जोव
‘हरि’ यह देवदुर्लभ नाम उच्चारण करें तो मोक्ष
धामको प्राप्त होता है। हरिनामका प्रताप से श-
मन शङ्का दूट जाती है, हरिनामकी महिमा कर-
के सर्वत्र विजयलाभ होता है। देखिये कयाधु-
क्तापार (प्रह्लाद) हरिनामही का प्रतापसे मृत्युको
परास्त किये। अस्त्रने उनका शरीर छेद करनेमें
समर्थ न हुआ, पर्वत परसे गिराया गया तब भी
चोट न लगा, विष पिलाया गया तब भी मृत्यु उनको
स्पर्श न कर सका, पातथर बंधकर समुद्र जलमें व-
हाय गया तबभी न डूबा। यह हरि नामहीका
प्रतापसे भगवानने नृसिंहमूर्ति धारण कर प्रह्लाद
को दर्शन दिया औ भक्तकी मर्यादा रख कर राज-
सिंहासन पर बैठाया। पंचानन हरिगुण गानसे
मन्त रहें, हरिनामही सारासार है। अतएव सब
जनने आनन्दपूर्वक हरि हरि ध्वनि करते रहो।

स्त्री स्वाधीनता औ स्त्री शिक्षा।

(मैयदपूर उन्नति विधायिनी सभासे प्राप्त हुआ)

हम सम्प्रति एक बिन्न पुरुषका मुहने यह दोबातें
सुन कर बड़े आश्चर्य हुए। तद्व्यथा—

१म। यूरोपवासियोंके स्त्रीगण स्वःधीनभाव से
निज निज पतिके सहित जहां तहां जा सकती,
इस लिये पुरुषगण उन्होंके अज्ञातसार काइ व्यभि-
चार कर नहीं सकता है। सुतरां रमणीयोंको
स्वाधीनता देनी चाहिये।

२य। यहां के रमणीगण सुशिक्षिता नहीं,
तन्निमित्त उन्होंके पतियोंकी बिद्या बुद्धि कुछ स्फूर्-
ति नहीं पातो है। बिद्यालयमें सीखकर जो कुछ
ज्ञान पाये थे सो भी मलीन हो जाता है।

यूरोपके मध्यमें स्त्री स्वाधीनता जो कदांतक
अनिष्ट साधन कर रही है पहिले सोही प्रतिपन्न
करनेकी चेष्टा पाठंगा, अनन्तर हमारे मध्यमें यह
बांछनीय है या नहीं तिस पर भी थोड़ी आलोच-
ना करंगा।

यूरोपके औरतोंने पुरुषकी अधीनता स्वीकार क-
रने नहीं चाहती है। स्वामीने अपनी स्त्रीकी निज
अवस्थाके अनुगत न रख सकता है। रमणी की

भूगत हईया। ताँहाके तँसह यथायथ बावहार करिंते हईवे। स्वाधीनतार प्रभावे नारीगण एतँ विलास प्रिय हईयाछे ये, ताँहादेर बायलार बहन करिंते अक्कम हईया। कत पुरुष विवाह करिंते अग्रसर हयैन ना। स्त्री समागम बानना पूर्ण करिबार जन्य अनेके किछु दिनेर जन्य (अर्थात् यतदिन ना ताँहारा धन सम्पन्न हई-न) अविवाहिता युवतीर सहित जूठपूमीत प्रणये आवद्ध थाकेन, एवं पाछे ए कार्य जनसमाज निन्दित बलिया लोके अपयश कीर्तन करे, एजना ईहाके आइन बद्ध करिबार प्रस्ताव हईयाछिन। ईहाकेई बले “Temporary Marriage Bill”। ये समाज एतदूर पर्याप्त कदाचार कलुषित हईयाछे, ये समाजके आदर्श करिया भारतवर्षे स्त्री स्वाधीनता प्रवर्तित करिबार प्रयास पाँठरा नागान्य विम्वर कर नहे। स्वाधीनतार सहित एकत्रे जमण करिंते पाँठरे बलिया ये पुरुषगणेर बायलार निवारण हय, एवढ आश्चर्य कथा। ये बायल अत्याचारी ये निज निकृष्ट वासना चरितार्थ करिबार जन्य कत उपाय उद्भावन करे ताँहा बला बाय ना। पुरुषगण नाँना विषय कार्य ब्यस्त, कोथाय कथन थाकेन ताँहा के निर्णय करिंते पाँठरे? एवं सकल समये रमणीर स्वाधीन सहित थाका कथनई संभव पर हईते पाँठरे ना। अपर दिके देखिले एकेबारे चमकिया उठिंते हय। रमणी गण अनायासे परपुरुषेर सहित जमण करिया थाकेन। ईहा हईते कि कथन अफल कलिंते पाँठरे! कय जन पुरुष रमणीर सहित कथोपकथनकाले छिदिन निज भाव ओ दृष्टिके बिभुक्त राखिंते पाँठरेन?

कोन शास्त्रप्रणेता लिखिया गियाछेन—“युत दूस्त समानारी, तण्डाजार समपुमान्। तस्मात् युत-तण्डा बह्निष मेकत्र स्थापयेद्बुधः” एई उपदेशति कि सारवान! नारी युतपूर्ण दूस्त सदृश पुरुष तण्डा-जारवत् अर्थात् उभये एकत्र हईलेई रमणीर मन बिगलित हईते पाँठरे एवं नारी यदि पुरुषे स-ज्जता हय तवे युताहतिते पुरुषेर छिड चड्डुण प्रख्यलित ओ उतेजित हईते पाँठरे। एई जन्य बुधगण एतद्वय कदापि एकत्र राखिबेन ना। राजा राममोहन राय इंग्लण्डे अवस्थितिकाले यथन त-त्र अह महिलागणेर सहित कथोपकथन, करिंतेन,

प्रकृतिके अनुगत होकर स्वामीकी स्त्रीके साथ यथा-यथ व्यवहार करे पड़ता। स्वाधीनताके प्रतापने स्त्रीतों एतना विलास प्रिय हो उठी है, जो उन्हों के व्यवहार दृष्टन करनेमें असमर्थ हो कर कितना पुरुष विवाह करनेमें अग्रसर नहीं होते हैं। स्त्री समागम की बासना पुरानेके लिये बल्लतेरे लीग थोड़े दिनके निमित्त (अर्थात् जब तक ना बद्ध धनाय हो) अविवाहिता युवतीके सज्जित निन्दित गुप्त प्रणय करने लगते और जनसमाजमें इस कार्य के निमित्त कुयश न विस्तार हो इसका उपाय विधानार्थ एक कानून भी चलानेका प्रस्ताव केंडा था। इसीको कहता हैं, “Temporary Marriage Bill”। जो समा-जने यद्वांतक कदाचार से कलुषित हो चुकी, उस समाजका दृष्टान्त देखकर भारतवर्षमें स्त्री स्वाधीन-ता प्रवर्तित करेकी प्रयास करना कुछ सामान्य आश्चर्यका विषय नहीं है। स्वामीके साथ ए-कट्टे होकर स्त्रीतों जो जहाँ तहाँ फिरी करती है इस हेतु करके जो पुरुषोंका व्यवहार बन्ध होता है यह बड़ी आश्चर्य बात है, जो व्यक्ति दुर्धरित हो-ता वह निज निकृष्ट वासना चरितार्थ करणार्थ कि-तना उपाय निकालता है सो कहनेके योग्य नहीं। पुरुषगण विविध विषय कार्यमें व्यस्त रहते हैं, किस वकत कहाँ रहते हैं, की तिसका निर्णय कर सके? और सर्वदा स्वामीके साथ रमणीकी रहना कभी संभव नहीं। दूसरे ओर देखनेसे एक बारही च-मक मालूम देता। रमणीयोंने अनायास परपुरुषों के साथ जहाँ तहाँ फिरा करते हैं। इस रीतिसे कभी क्या सुफल फल सकता है। कितना पुरुष रमणीके साथ बात चीतके समय चिरदिन निज भाव वो दृष्टिको पवित्र रख सकता है?

कोइ शास्त्रकारने लिखा है। “युतकुम्भ समानारी तन्मांगार समपुमान्। तस्मात् युतंच बह्निष-मेकत्र स्थापयेद्बुधः।” यह उपदेश कैसा सारवान है। नारीने युतपूर्ण कुम्भके समान है, पुरुषको अग्निके न्याइ जानना अर्थात् इन दोनों एकत्र हो-ती है रमणी का मन बिगलित हो जा सकता है और यदि नारी पुरुषसे संगता होय तो युतके आ-कृतीके न्याई पुरुष काचित चार गुण प्रख्यलित हो उन्नेजित हो सकता है, इस निमित्त बुधगण इन दोनोंको कदापि एकट्टे नहीं रखते हैं। राजा राममोहन रायने इंग्लण्डमें रहते समय जब व-

तिनि ईश्वर के निकट ऊँहारे जना कृपा प्रार्थना करितेन । ईश्वर के रमणीयता ठाँहारे असामान्य बलि बलि जा नितेन । ठाँहारे अन्तःकरणे ये पाप स्पर्श करिते पावे, ठाँहारे ईश्वर विनाम छिन ना । सुतराँ ठाँहारे एकदा विमलेश्वर सहित जिखि जा करिया छिलेन, महात्मन ! आपन मर्कदा ए प्रकार ईश्वर समीपे कृपा प्रार्थना करिबारे कारण कि ? राजा उत्तर करिलेन मने रुचिहार उदय हय बलिजा ईश्वर के निकट कृपा प्रार्थना करिया थाकि । रमणीयता प्रश्न करिलेन आपन न्याय महात्मार मने कि रुचिहार उदय हईते पावे ? राजा उत्तर करिलेन रुचिहार मने मने उदित हईते पावे । अतएव श्री गुरुदेव एकत्र अवस्थिति कर्माग्राह नहे । महात्मा चैतन्य श्रीलोक मन्त्र के किरण भाव शिखर ठाँहारे समक्ष करिलेन ए कथा श्री आर्य विशद रूपे प्रतीयमान हईवे । तिमि कोन मने ईश्वर की श्रीलोक के मन्त्र के थाकि तेन ना । अर्थात् मने कोन श्रीलोक के मन्त्र के उपस्थित हईलेन ठाँहारे नेत्रियामात्र अति वेगे पनायन करितेन । कथित आहै जैमिनी ठाँहारे प्रतीत धर्मग्रन्थ लिखि जा छिलेन ये माधव बलि ये कोन अवस्थाय प्राप्त ना केन, ठाँहारे धर्मबल प्रभाव रमणीयता को अतिरिक्त करिते पावेन । मानव प्रकृति तत्त्वज्ञ श्रीमद्गुरु वेदव्यास देखिलेन ये महात्मा अन्तःकरणे मोह ओ अहंकार के मकार हईराहे, ईश्वर अपनोदन करा उचित विवेचनाय योग बल अग्र्य सृष्टि सम्पन्न रमणीयता परिग्रह पूर्वक दिवावसाने अनामिनी न्याय जैमिनीर कृतिरे उपस्थित हईलेन । महात्मा ठाँहारे मनादर पूर्वक आश्रमे आश्रय दान करिलेन । कथोपकथन करिते करिते श्रमि मन बिचलित हईन । ईश्वर देखि जा वेदव्यास निज आभाविक मूर्ति धारण करिया ठाँहारे रचित शास्त्रेन तिरस्कार करिते लागिलेन । श्रमि लज्जित हईलेन ओ कृपा प्रार्थना करिलेन । ईश्वर द्वारा स्पष्ट प्रमाण हईतेछे ये, नारीगण के सहित पवित्रभावे आलाप करिते पावेन ए रूप पुरुष अति विरल । पुरुषदिगेर चरित्र मर्कदा विरल हईराहे उचित, तबे तहाँहारे रमणीयता अवस्थिति करिबारे ये मने । बलि ते कि—कि पुरुष कि श्री सकल-

हंकी महिलागण के साथ कथोपकथन किया करता था, वेने ईश्वर के निकट चुटी के निमित्त सर्वदा समा प्रार्थना की करती थी इंग्लैण्ड की रमणियों ने उनको असाधारण पुरुष करते जानता था । उनके अन्तःकरण में जो पाप छुई कर सकता है यज्ञ भी उन्होका विश्वास न था । सुतराँ वेने एक दिन आश्चर्य छवे पूछा कि हे महात्मन ! आपने जो सर्वदा ईश्वर के समीप समा प्रार्थना की करती है इसका कारण क्या ? राजा उत्तर किया जो मन में बुरी चिन्ता उठती है, तन्निमित्त मैंने ईश्वर के निकट समा चाहा करती हूँ । रमणीयता ने पूछा आपके सहज महात्मा के मन में क्या बुरी चिन्ता उठ सकती है ? राजा उत्तर किया कि चिन्ता सबकी के मन में उदय हो सकती है । अतएव श्री पुरुष इन दोनों के एकत्र रहने से कल्याण नहीं । महात्मा चैतन्य स्त्रीयों को जिस भाव से देखते थे सोभी यदि गमना जाय तो उस बात की प्रतीति श्वर भी दृष्टि जायगी । वे किसी तरह से युवती की के संग संश्रम न ना रहो थे । अतएव यदि कोई स्त्री के सामने उपस्थित होते तो उसके देखने की भय भाग जाते थे । कथित है कि जैमिनी ने निज रचित धर्मग्रन्थ में लिखा था, जो साधु पुरुष जिस किसी अवस्थामें न रहें उनका धर्म बलका प्रभाव करके रमणीयता प्रत्येक को तुच्छ समझ सकते । मानव प्रकृति तत्त्वज्ञ श्रीमद्गुरु वेदव्यास ने देखा महात्मा के अन्तःकरण में मोह और अहंकार का संचार छड़ा । इतना मिटा देना उचित विचार कर योग बल से समा की समय अनामिनी की तरह होती छई जैमिनी के कुटिर में पड़चों । महात्मा उनको समादर पूर्वक आश्रम में आश्रय दान किये । कथोपकथन करते करते श्रम का मन चंचल हो आया । एतना देखकर वेदव्यास जीने निज आभाविक मूर्ति धारण करके उन्होके रचित शास्त्र को बज्जत तिरस्कार करने लगे । श्रमिने लज्जित छड़ा और समा प्रार्थना करी । इससे स्पष्ट प्रमाण होता है जो नारीयों के साथ पवित्र भाव से वात्सल्य कर सकें वैसा पुरुष अति विरल है । पुरुषों के चरित्र सब से पहले विशुद्ध होना चाहिये, तब तो वे रमणीय समाज में रह सकेंगे । चाहे पुरुष हो चाहे स्त्री हो सबकी को शासन के अधीन रहना उचित है । वज्जते लोग यह कह कर रहे हैं जो किसी की स्वाधीनता पर हस्तक्षेप करना न चाहिये । वर्त-

কে শাসনে রাখা উচিত । অনেকে কহিয়া থাকেন যে, কাহারও স্বাধীনতাতে হস্তক্ষেপ করা উচিত নহে । বর্তমান শতাব্দীর এই উপদেশটিই ত মর্কশাসন করিতে বসিয়াছে । অবশ্য তাঁহারা প্রকৃত মনুষ্য পদবীর যোগ্য তাঁহাদের স্বাধীনতার উপর হস্তক্ষেপ করা উচিত নহে । তাই বলিয়া অজ্ঞ ও বালকগণকে শাসন করা কি অন্যায় ? আমাদের বালকের অপেক্ষা জ্ঞান কোথায় ? সুতরাং আমাদের শাসনে রাখিতে হইবে । পুরুষগণ স্বাধীন হইয়া কি পর্য্যন্তই না অত্যাচার করিতেছে ! তাহারা অকুতোভয়ে ও অসঙ্কুচিত চিন্তে পরস্ত্রী সমাগমে প্রবৃত্ত হইতেছে । সমাজ তাহাদের জঘন্য কার্য্য দেখিয়া ও দেখিতে ছেন না । প্রত্যুত যদি তাঁহারা ধনাঢ্য বা পুস্তক রাশি পাঠে পণ্ডিত অথবা কোন উচ্চ পদাধিকারী হইতেন, তবে তাঁহাদিগকে স্পর্শমণির স্বরূপ সমাদর করিয়া থাকেন । ইহা অপেক্ষা স্বাধীনতার ব্যভিচার আর কি হইতে পারে ? বড় বড় বৈজ্ঞানিক দেখিলাম, বড় বড় কবি দেখিলাম, বড় বড় শাস্ত্রবেত্তা দেখিলাম, কিন্তু তাঁহাদের মধ্যে কয় জন জিতেন্দ্রিয় ব্যক্তি দেখিতে পাইলাম ? এক জনকে দেখিতে পাইলে ও আপনাকে কৃতার্থ জ্ঞান করিতাম । যখন স্বাধীনতা পুরুষগণকেই স্বেচ্ছাচারে প্রবর্তিত করিল, তখন আর রমণীগণকে স্বাধীনতা দিবার জন্য এত ব্যগ্র হইবার প্রয়োজন কি !

আমার সামান্য বিবেচনায় পুরুষগণের স্বাধীনতাকে থর্ব্ব করা উচিত । তাহাদিগকে শাসন করা কর্তব্য । চুরিচরিত্রা রমণীর পক্ষে যেমন দণ্ড বিধান আছে, পরদারগামী পুরুষের প্রতি সেই প্রকার নিয়ম নির্ধারিত হওয়া উচিত । পুরুষগণ প্রথমে বিশুদ্ধ চরিত্র হউন, তবে তাঁহারা রমণীগণকে স্বাধীনতা দিবার জন্য প্রয়াস পাইবেন । স্ত্রীগণ যে পরিমাণে স্বাধীনতা পাইয়াছেন তাহাই তাঁহাদের পক্ষে কল্যাণপ্রদ । পল্লির মধ্যে এক গৃহ হইতে গৃহান্তরে যাইবার পক্ষে তাঁহাদের কোন বাধা নাই । আজীবন স্বজনের সহিত স্নান বা তীর্থাদি দর্শন করিতে তাঁহারা অতি দূরদেশ পর্য্যন্ত গমন করিতে পারেন । পুরুষগণের সহিত সমবেত না হইলে কি স্বাধীনতা হয় না ? ইহাকে আমরা স্বাধীনতা বলি না ;

মান শতাব্দীকা যত্ন উপদেশ ছী তো সর্ব্বনাশ করনে লগা । জো লোগ প্রকৃত মনুষ্য পদবীকে যোগ্য হৈ অবস্থ্য উন্হোকে স্বাধীন ভাব কে উপর হস্তক্ষেপ করনা উচিত নহী । তন্নিমিত্ত অন্ন আর বালকোঁকো শাসন করনা মী ক্যা অন্যায় হৈ ? বালকোঁ সে অধিক জ্ঞান হমারা কহাং হৈ ? সুতরাং হমকোমী শাসনমেনে রাখনে হোগা । পুরুষগণ স্বাধীন বন কর কহাং তক ন অত্যাচার কর রহে হৈ । বে নে বড়র জুয়ে আর অসংকুচিত চিন্তমে পরাই স্ত্রীকা সং করনে মেনে প্রবৃত্ত হৌ রহা হৈ । সমাজ নে উন্হোঁকা জঘন্য কার্য্য দেখ কর মী নহী দেখতি হৈ । সবমুখ যদি বে লোগ ধনাঢ্য অথবা পুস্তক পড় পণ্ডিত কিংবা কোঁই উচ্চ পদস্থ হৌয় তব উন্হোঁকা স্পর্শ মণিকে সম্মান সমাদর কি করতি হৈ । ইম্মে স্বাধীনতা কা আর অধিক ক্যা । ব্যভিচার ছী মক্কা হৈ ? বড় বড় বিজ্ঞান শাস্ত্রবালোঁকোঁ দেখা, বড় বড় কবীকোঁ দেখা, বড় বড় শাস্ত্র জানে হোঁকোঁ দেখা কিন্তু উন্হোঁকে মন্থনে কিনে পুরুষ জিতেন্দ্রিয় দেখনেমেনে আয়া ? এক জন কী মী যদি পাতে তো অপনে কী কৃতার্থ মানতে । জব স্বাধীনতা পুরুষগণ ছী কী স্বেচ্ছাচারমে প্রবর্তিত কী, তব রমণীকোঁ কী ফির স্বাধীনতা দেনে নিমিত্ত ইতনী ব্যগ্রতা কা প্রয়োজন ক্যা হৈ !

মেঁরী সামান্য বুজ্জিমেঁ তো যত্ন আতী হৈ জো পুরুষগণকী স্বাধীনতা কী স্বর্ব্য করনা চাহিযে । উন্হোঁ কী শাসন করনা কনৈয্য হৈ । দুষ্টা নাগীকোঁ কী জৈসা দণ্ড দিয়া জাতা হৈ বৈসাহী পরদার মেনে আসক্ত পুরুষকী প্রতি নিয়ম হোনা চাহিযে । পুরুষগণ তো পহনে স্বয়ং বিশুদ্ধ চরিত্র হাঁয় তিসকে অনন্তর বে নে রমণীকোঁ কী স্বাধীনতা দেনে কী নিমিত্ত প্রয়াস পাবে । স্ত্রীকোঁ জিস পরিমাণ স্বাধীনতা পাই, তনো ছী উন্হোঁকে কল্যাণ কর হৈ । অপনে মন্থনে কী মীতর এক গৃহ মে গৃহানন্তর মেনে জানা উন্হোঁকী মন্য নহী হৈ । অপনে জনোঁ কী সাথ মজ্জাস্থান বা তীর্থাদি দর্শন করনেকোঁ বে নে অনায়াস অতি দূরদেশ পর্য্যন্ত জা সক্তি হৈ, পুরুষকোঁ সাথ বিন মিলে ক্যা স্বাধীনতা নহী ছীতী হৈ ? ইক্কোঁ হম স্বাধীনতা নহী কহতে হৈ ; হমারী সমাজ কী বর্তমান অবস্থা মেনে ইক্কোঁ

आमादेंद्र समाजेंद्र वर्तमान अवस्थाते ईहाके स्वेच्छाचारिता बला याय । ताल, रमणीगण ई कि ए प्रकार स्वाधीनता प्रार्थना करेन ? कथ-
नई ना । तवे, अनुरोध उपरोध द्वारा तौहा-
देंद्र तत्पक्षे प्रवृत्ति दिवार प्रयोजन कि ?
ए प्रकार स्वाधीनता ना पांया तौहादेंद्र पक्षे
मङ्गलेंद्र हेतु ।

एई जन्यई तौहारा अनेक परिमाणे विशुद्ध
भावे आछेन, एई जन्य तौहादेंद्र मध्ये सती
पांया याय । पुरुष गण अनेक परिमाणे
ज्ञानी ओ कृतविद्या, तथापि तौहारा स्वाधीनता
पांयाछेन बलिया अत्याचारेंद्र एकशेष करि-
तेछेन । यथन पुरुषगणेंद्र मध्ये स्वाधीनता
परिणाम एई हईल, तंथन कोमल प्रकृति रमणी-
गण तौहार प्रभावे कि पर्याप्तई ना अत्याचार
करिवे ?

क्रमशः

आमादिगेंद्र ईउरोपीय भाषाप्रिय शिक्षित
युवकगण स्त्री दिगके स्वाधीनता दिवार जन्य
अतिशय व्यग्र । तौहारा ये किरूप स्वाधीनता
चाहेन, तौहा आगरा एथनओ वृत्तिते पारि-
तेछि ना । ईउरोपीय ललना वर्गेंद्र नाय
भारतीय स्त्रीदिगके यथेच्छागामिनी कराई कि
तौहादेंद्र अभिप्रेत ? अस्तुःपुरवासिनी कामिनी-
गणके स्वेच्छाक्रमे यथाय तथाय याईते दिया,
यार तार सङ्ग आलाप करिवार अधिकार दिया
एई अल्पदिनेर मध्येई स्थाने स्थाने
ये ये द्रव्यकर व्यापार संघटन हईया गियाछे,
तौहा कि केह जानेन ना । दमयन्तिर नाय
कि कोन कुलाग्रनार मनैर तेज जन्मियाछे ये
अकस्मात् पुरुष पिशाचेंद्र घणित आक्रमण हईते
आत्मरक्षा करिते पावे ! स्त्री प्रकृति कि एत
भय शून्य हईयाछे ये तौहारा अस्तुःपुर परि-
हार पूर्णक एकाकिनी सकलेंद्र सहित विशुद्ध
ओ अविकृत चित्ते सद्दालाप करिते पारिवेन !
मुसलमान राजेंद्र पर एमन कि सामाजिक ओ
धर्मभाव सम्बन्धी परिवर्तन ओ उन्नति हई-
याछे ये आर्यानारीगण एथनई राजरथाय वि-
चरणे साहस करितेछेन ! सहसा एमन कि
समयेंद्र गति फिरिल ये युवकगण लज्जाशीला

“स्वेच्छाचारिता” कही जाती है । भला, रमणी
गण ही क्या इस प्रकार की स्वाधीनता चाहती है ?
कभी नहीं । तब अनुरोध उपरोध करके उन्हीं
की इस विषय की प्रवृत्ति देने में क्या प्रयोजन है ?
इस प्रकार की स्वाधीनता न मिलना उन्हींके लिये
मंगल है । इसही हेतु करके वे ने अनेक परिमाण
विशुद्ध भावते रहा है, इसी लिये उन्हींके मध्यमें
सती पायी जाती है । पुरुषगण अनेक परिमाण
ज्ञानी और विद्यावान भी है, तथापि उन्हींने स्वा-
धीनता पा कर अत्याचार का एक शेष कर रहे हैं ।
जब पुरुषोंके मध्यमें स्वाधीनता का परिणाम यही
ऊँचा, तब कोमल प्रकृति रमणीयोंने उस्का प्रभावसे
कदांतक न अत्याचार करेंगे ?

शेष आगे ।

हमारे शिक्षित युवकगण जो ने सुरापिय भाव को
बड़े प्यार समझते हैं, स्त्रियों को स्वाधीनता दानार्थ
अत्यन्त व्याग्र है । वे ने जो किस भांति स्वाधीनता
चाहती है सो अवतक हम समझ नहीं सकें । यूरोप की
ललनायें के न्याय भारतीय स्त्रियों को यथेच्छागामिनी
करनाहीं क्या उन्हीं का अभिप्राय है ? अन्तःपुरवा-
सिनी कामिनीयों को स्वेच्छा अनुसार जहां तहां
जाति दे कर, जिस्का तिस्का संग में बात चीत कर-
ने का अधिकार देके इतना अल्प दिनहीं के मध्यमें
जगह जगह में जो जो घृणित घटनाये हो गये सो
क्या किसी का विदित नहीं ! दमयन्ती की न्याई
क्या कोई कुलकामिनीका मनका तेज जन्मा जो
अकस्मात् कोई पिशाचरूप पुरुष का घृणित आ-
क्रमणसे आत्म रक्षा कर सकती है ! स्त्री-प्रकृति
क्या इतना वेडर ऊँई जो वे लोग अन्तःपुर परि-
त्याग पूर्वक अकेला सबके सङ्गमें विशुद्ध औ अविद्वत
चिन्त से सद्दालाप कर सकेगी ! मुसलमानों के राज्य
के आगे समाज और धर्म भाव सम्बन्धी ऐसी कौन
परिवर्तन और उन्नति ऊँई है जो आर्य नारीगण
अभी सड़क पर विचारने का साहस करती हैं ! अक-
स्मात् समाजकी गति ऐसी किस भांति बदली जो
युवकगण लज्जाशीला रमणीगण को सभा मंडप वा
नाट्यशालामें जहां बड़े तीरे पुरुष मंडली उपस्थित

रमणीगणके बहुविध पुरुषमण्डली पूर्ण सभागुणे वा नाट्यशालाय लईया गिया स्त्रीके पवित्रभावे गुंहे अनिते पारिवेन । स्त्री शिक्षिता हईते पारैन, तिनि अन्यके पवित्र चक्षे देखिलेओ देखिते पारैन, किन्तु पुरुषमण्डलके दृष्टि एतनओ परिष्कार हय नाई । मुसलमानगणेर राज्ये वास करिया कोन प्रकारे स्त्रीदिगेरु सतीत्व रक्षा हईराछे बटे, किन्तु बिलासप्रिय यवनगणेर सजे थाकिया स्त्रीगण अपेक्षा आमादेर दृष्टि अधिकतर दूषित हईया गियाछे । आगरा शिक्षित हईयाओ प्रबलतर जातिर सहवास तौहादेर रीति नीति समस्त अनुकरण ना करियाओ अनेक कुसंस्कार शिक्षा करियाछि । प्रतापशाली इन्द्रियपरायण जातिर मज्ज ओ दास्य, एवम् नीति ओ धर्मशिक्षा अभाव दोषादि वशतः साधारण लोक एतनओ स्त्रीदिगके पवित्र चक्षे देखिते शिक्षा करे नाई । तौहै बलि शत शत कलुषित चक्षुः दूषित ये कमनीय कामिनीर अप्पे पतित हईवे तौहार पवित्र थाकिवार आशा कोथाय ? वर्तमान समये अनेके आचार धर्मचर्चा मनीषिनिवेश करितेछैन सते, किन्तु एतनओ तौहारा अविशुद्ध इन्द्रिय संयम उद्वेग-रूप शिक्षा करिते पारैन नाई । तौहादेर एगन दुर्बल अवस्थाय यदि सर्वदा परनारी सम्दर्शन संघटन हय, तवे आचार दुर्बल मन शिथिल हईया पड़वे । शास्त्रपाठे विदित हओया याय ये, अनेक ध्यानशील तपस्वगुणुनिगणेरओ स्त्री दर्शने तपोविघ्न हईत ; अतएव भद्रगणेर कल्याणेर जन्यओ अन्ततः स्त्री स्वाधीनता आपाततः बद्ध राखिते हईराछे । विडालेर सम्मुख पोवा पाथीर पिङ्गरमुख करिओ ना । नीति ओ धर्म-शिक्षाद्वारा यथन साधारणेर दृष्टि विशुद्ध हईवे, स्त्रीगणओ यथन प्राचीन आर्यानारी-वर्गेर प्रकृति लाभ करिवेन, यथन पर स्त्रीपुरुष माता ओ पुत्र, कन्या ओ पिता, भ्राता ओ भगिनी, ईदृश कोन भावे परस्पर दृष्टि करिते शिथिवेन ; यथन शासन कर्तृवर्ग आमादिगके पश्चादि मने ना करिया असमभावे सहाय्य करिते थाकिरेन ; तथन स्त्री स्वाधीनता कथा उत्थापन करिओ । एकणे आमादिगेर गुहर्क्षणी अन्तःपुर उज्ज्वल करिया सतीत्व-मुकुट शिरे धारण पूर्वक देवलोक पर्यस्त आन-

रहते है ले जाकर स्त्रीको पवित्र भावसे गृहमें ला सकेंगे ? स्त्री विद्यावती हो सकती है, वह दूसरे को पवित्र दृष्टिसे देख भी सकती है, किन्तु पुरुष समाज की दृष्टि अवतक परिष्कार न ऊई । मुसलमानोंकी राज्यमें रह कर किसी तरह से स्त्रियोंकी सतीत्व रक्षा ऊई थी किन्तु यवनगण के, जो लोग बड़ा बिलासके प्यारे थे, संग में रहकर स्त्रीगणकी अपेक्षा हमारी दृष्टि अधिकतर दूषित हो गई । हमलोग शिक्षित ऊये भी प्रबलतर जातिके संग करके उन्हींकी रीति नीति यद्यपि सब अनुकरण न किया तथापि अनेक दूषित भाव सोख चुके । प्रतापशाली इन्द्रिय परायण जाति के संग औ दासत्व और नीति औ धर्म शिक्षाका अभाव आदि दोष करके साधारण जनोने अवतक स्त्रियोंको पवित्र दृष्टिसे देखने न सिखा । सोइ कहते है कि शत शत कलुषित चक्षुकी कुदृष्टि जिम कमनीय कामिनी के अंग पर पड़ेगी उसकी पवित्र रहनेकी आशा कहाँ ! वर्तमान समय में वज्रतेरे जन धर्म चर्चा में मन लगाये यह सत्य है, किन्तु अवतक भी वे लोग ऋषियोंके समान इन्द्रिय संयम करना उत्तम रूप से न शिख सकें उन्हींकी ऐसी दुर्बल अवस्थामें यदि सर्वदा परनारी दर्शन हो तब फिर दुर्बल मन शिथिल हो पड़ेगा । शास्त्र पढ़ कर जाना जाता है जो अनेक ध्यापशील तपस्वियोंको भी स्त्री दर्शन में तपस्या का विघ्न हुआ था ; अतएव भद्रगणके कल्याणके निमित्त भी स्त्री स्वाधीनता अब बन्ध रखने होगी । विडालके सामने पाली ऊई विहंगी की पित्रा मत् खोली । नीति औ धर्मशिक्षा करके जब साधारण जनोकी दृष्टि विमुक्त होगी, स्त्रीगण भी जब पुरानी आर्य नारीयोंकी प्रकृति लाभ करेंगी, जब पराई स्त्री औ पुरुष माता औ पुत्र, कन्या औ पिता, भ्राता औ भगिनी इस भाँति कोइ भाव से परस्पर देखने शिखेंगी, जब हमारे वर्तमान देश शासन करनेहारोने हमको पण आदि ना समझ कर अपना समान जातिय भावने सद्व्यवहार करते रहेंगी ; तब स्त्री स्वाधीनताकी बात कहियो । अब हमारी यह लक्ष्मी अन्तःपुर की उज्ज्वल करके सतीत्वका मुकुट शिरपर धारण पूर्वक देवलोक पर्यन्त आनन्दित करत रहै ! भारत ! अब कुलनारीयोको घरका बाहर आनेकी इत्सा मत करो । इसका विषमय फलसे तुमको अन्तमें पश्चात्ताप करने पड़ेगा । क्या तुम नहीं जानते है

न्दित करিতে থাকুন। ভারত! এক্ষণে কুলা-
জনা বর্গকে গৃহের বাহিরে আসিতে ইঙ্গিত
করিও না : ইহার বিষময় ফল পরিণামে তোমা-
কে পশ্চাৎপাশ্রস্ত করিবে। তুমি কি জান না
যে পুরুষ জাতির কলুষিত ব্যবহারও অত্যাচারই
অন্তঃপুর বিধানের এক প্রধান কারণ ? সাধারণ
পুরুষজাতি সংপ্রকৃতিই না হইলে তুমি অন্তঃপুর
দ্বার উন্মুক্ত করিয়া বিপন্ন হইও না বাহাতে
সমাজের সর্বসাধারণে ধর্মনীতি ও জ্ঞান লাভ
করিতে পারে, তাহার যত্ন কর। তুমি স্বয়ং নীতি,
ধর্ম জ্ঞান শিক্ষা কর, ও অন্তঃপুরে যোগিদর্শকেও
ধর্মনীতি বিস্তারচার আদি শিক্ষা দান কর।

ধঃ প্রঃ সং ।

ধর্মার্থ বিচার ।

ব্রাহ্মধর্ম প্রচারক মান্যবর শ্রীযুক্ত শিবনাথ
শাস্ত্রীর মতিহারীতে অবস্থান কালে ব্রাহ্মসম্পদ
বল্লী ফণীন্দ্র স্বামী প্রমুখ তত্রস্থ আর্থধর্ম প্রচা-
রিত্রী সভার সভ্যগণের সহিত তাঁহার অনেক তর্ক
বিতর্ক হইয়াছিল, এতাবৎ সংবাদ গত ১৬ই আ-
গের “তত্ত্বকৌমুদী” নামক একখানি ব্রাহ্মসমাজ
পত্রিকায় প্রকাশিত হয়, তৎপাঠে আমাদিগের
মতিহারীস্থ মান্যবর শ্রীযুক্ত বাবু দরবারীলাল ম-
হাশয় “তত্ত্বকৌমুদীর” অযথোচিত বিবরণ প্রকা-
শে চ্যুত হইয়া ধর্মপ্রচারকে প্রকাশার্থে আমা-
দিগকে একখানি পত্র পাঠাইয়াছেন, তাহার মার
মর্ম এই যে, “বাবু শিবনাথ শাস্ত্রী মতিহারীতে
উপস্থিত হইলে আমাদিগের সহিত যে সকল তর্ক
বিতর্ক হইয়াছিল তাহার যেখানে যেখানে তিনি
উত্তর দিতে সমর্থ হন নাই, অথবা বিচারের প্র-
কৃত বিবরণ গোপন করিয়া নিজ মতামত বৃত্তা-
ন্ত তত্ত্বকৌমুদীতে প্রকাশ করিয়াছেন, তিনি স্বী-
কার করুন আর নাই করুন কিন্তু বিচারে তাঁহার
পরাজয় অত্রস্থ হিন্দু মুসলমান, খৃষ্টান ও ব্রাহ্ম-
(যিনি অপক্ষপাতি) আদি সকলেই বিদিত আ-
ছেন।

১ম দিন। বার্তালাপছলে শাস্ত্রী মহাশয় ব-
লিলেন যে “ধর্মসমাজের খুব উন্নতি, শুনিলাম
তুই একজন ব্রাহ্ম ও উক্ত সমাজভুক্ত হইয়াছেন।”
আমি বলিলাম যে অন্য ধর্মাবলম্বীগণকে লইয়া
সমাজের বৃদ্ধি করা আমাদের বিধি নহে। সমস্ত

কি পুষ্ণীকে কলুষিত ব্যবহার ও অত্যাচার ছাড়া
পুরম্বে ব্যবস্থা এক প্রধান কারণ হৈ ? অবতক সা-
ধারণ পুষ্ণগণ সত্যকৃতি ন লাম করিও তব তক
তুমি অন্ত পুরকা দ্বার খুলকর বিপদগ্রস্ত নছো।
জিস রীতিহে সমাজকে সর্বসাধারণ লোগ ধর্মনীতি
বোদ্ধান লাম কর সকে, তিসকা থল কহো। তুম
স্বয়ং নীতি, ধর্ম, জ্ঞান শিখো ও অতঃপুরকী স্ত্রীযো
কী মী ধর্ম নীতি বো বিবৃত্ত আচার আদি শিখা
রছো।

ধঃ প্রঃ সং

ধর্মার্থে বিচার ।

ব্রাহ্মধর্ম প্রচারক মান্যবর শ্রীযুক্ত শিবনাথ
শাস্ত্রীজী কী মতিহারীম্বে স্থিতি কালম্বে অত্রাস্ত
যতি ফণীন্দ্র স্বামী ও বহাংকী আর্থধর্ম প্রচারিত্রী
সভাকী সম্মেলনী সহ জো অনেক তর্ক বিতর্ক শাস্ত্রা-
র্থ জ্ঞা থা বহ সহ সমাচার ১৬ আবগণ কী
“তত্ত্বকৌমুদী” নাম জো পত্রিকা ব্রাহ্মসমাজ মে প্র-
কাশিত ছোতী হৈ उसमें छप गया उस पत्रको पाठ
कर हमारे मतिहारीस्थ मान्यवर श्रीयुक्त बाबू दर-
बारीलाल महाशयने तत्त्वकौमुदीमें प्रकाशित हुई
अयथोचित बिबरणसे दुःखित होते हुए धर्मप्रचा-
रकमें प्रकाशार्थ हमको एक पत्र भेजे उसका सारार्थ
नीचे प्रगट किया जाता है।

বাবু শিবনাথ শাস্ত্রী মতিহারীম্বে উপস্থিত
হোনে পর হমারে সাথ জেতনা তর্ক বিতর্ক জ্ঞা থা
उसमें जहां जहां उनसे उत्तर न बना अथवा बिचार
की प्रकृत बिबरण छिपा कर निज मतानु कुलवृत्ता-
न्त “तत्त्वकौमुदीमें प्रकाश किया है। वे स्वीकार
करें और न करें किन्तु वे जो बिचारमें परास्त ऊये
सो यहां के हिन्दु मुसलमान, छष्टान और ब्राह्म (जो
पक्षपात न करते हैं) आदि सबकी बिदित है।

১ম দিন। বার্তালাপকী রীতিপর শাস্ত্রী মহা-
শয়নে বোলা কি যহাংকী ধর্মসমাজকী খুব উন্নতি
হৈ, শুনা কি उसमें दो एक ब्राह्म भी मिल गया।
मैं ने बोला हमारे समाजकी यह विधि, नहीं है
जो अन्य धर्मवालेको ले कर समाजकी वृद्धि करें।
ब्राह्मसमाज तो इसी कारण स्थापित हुई जो समस्त

द्वितीय दिन। हिन्दु मुसलमान ख्रीष्टियान और ब्राह्म आदि बहुरंगी लोग धर्मार्थ विचार करने के निमित्त ब्राह्मसमाज के सम्पादक का भवन में एकत्रे जुड़े। उसी दिन नेपालसे आये जुड़े श्रीमन्त स्वामी फणीन्द्र यति मध्यासी भी वहाँ उपस्थित थे। शास्त्री और स्वामी ईन दोनोंमें तर्क आरम्भ हुआ। शास्त्री जिने बोला बिना युक्ति वी बुद्धिसे तो वेदार्थ भी स्थिर ना होता है। यहाँ दे-दसे युक्ति वी बुद्धिका गौरव अधिक हुआ। उसर स्वामी जिने बोला वेद अभ्यास और त्रिकाण्ड (कर्म, उपासना और ज्ञान) विशिष्ट है। देदवि-हित कर्मानुष्ठान किये बिना वेद मंत्रका सूक्तार्थ और गम्भीरता की व्याख्या करनेकी वा समझाने की निम्नला बुद्धि उदय न होती है। कर्म वर्जित लोगीका वेदार्थमें अम हुआ करता है। कोई एक वैदने किसिको एक औषध का व्यवहार यत्र (रुसका) लिख दिया था, उसमें “गुण्टी पिप-लि मरीच” इतका औषधका नाम लिखा रहा; मूर्ख पाठक केतना दोकानमें जा जाकर गुण्टीपि, पलिम और रिच औषधका नाम ईस रीति पढके

करिया राखिल। तद्रूप वेदे याहा लिखित आछे, वैदिक क्रियाभूतान विहीन अन्न बुद्धिगण अर्थेन व्यभिचार करिया वेदेन दोष प्रदर्शन करितेछे; कि मूढ़ता! वैदिक कर्म, ब्रह्मचर्य, उपवासनादि भिन्न वैदिक अर्थ सदगत हईवार अन्य सहज उपाय नाई। अतःपर शास्त्री बलिलेन ये “ब्रह्म निर्गुण किन्तु वेदे ब्रह्मके सगुण ओ बलेन। निर्गुण पदार्थ ई नित्य, जीव ईहाके मन ओ बुद्धि ओ बले। आमीजी बलिलेन “सृष्टिकाले मन बुद्धि बिलय प्राप्ति हय, उहारा नित्य निर्गुण पदार्थ कि रूपे हईवे बुद्धिहयानि” शास्त्रीजी निरुत्तर हईलेन एवं उपासना सभय हईयाछे बलिया सभा भङ्ग करिलेन।

३य दिन। शास्त्रीजी बुद्धिके सहकारी शास्त्र बलिया स्वीकार करिलेन एवं शास्त्र मध्ये परस्पर विरोध प्रदर्शन द्वारा बुद्धिके श्रेष्ठ प्रमाण करि वार जन्य “वेदा विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना” ई तयारक श्लोकके प्रथम तिन चरण बलिलेन। आमीजी बलिलेन चतुर्थ चरणे (महाजनो येन गता स पन्था) उहार उत्तर वा समाधान रहियाछे। वेद ओ स्मृति भिन्न भिन्न हईलेन ओ परस्पर विरुद्ध नहै। शास्त्रीजी ताहा स्वीकार करिया लज्जित हईलेन। अतःपर शास्त्रीजी वेदोक्त “माहिंसात् सर्वभूतानि” आदिके एकटे विरोध बलिलेन। किन्तु आमीजी विचारार्थी हईले ताहाते अग्रसर हईलेन ना। शास्त्रीजी तत्पूरुष दिन एकटे श्रुतिर विपरीत अर्थ कराय आमीजी ताहा खण्डन करिया अकृतार्थ व्याख्या करियाछिलेन; अद्य बोध करि सेई भये शास्त्री विचारार्थी हईलेन ना। अव-शेषे बलिलेन आज थारु काल अन्धेद आनयन करिवेन आमी विरोध देखाईव। एही समये बाबू पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय आमीजीके समोधन करिया बलिलेन ये, “ये व्यक्ति उभय शास्त्रके से व्यक्ति भिन्न एकाग्रदशी कथन ओ विरोध देखा-इते पावे ना। एकजन मन्त्र युद्धकाले यथन दे-खिल ये आर जराशा नाई तथन बलि ये आछा काल आसि ओ आमी तोमार पराभूत करिव; शा-स्त्रीजी ओ सेई अवस्था। एही कथाटी बला हईया-छिल बलिया तत्कालीन लिखित हईयाछे ये, “आर्यामन्त्राज्ये कोन कोन मन्त्र क्रोधे अधीन

अनेक अनुसन्धान किया किन्तु औषध कहीं न मिला; अंतमें इतना स्थिर किया की वैद्यका लिखनेहि में भूल है। तद्रूप वैदिक क्रिया वर्जित स्वल्प बुद्धि जनोने वेद में लिखि ऊई वाणियोंका उलटा पुल्टा अर्थ कर देद पर दोष लगा रहै है; कैसी मूढ़ता? वैदिक कर्म, ब्रह्मचर्य, श्रुकी सेवा और मगवतकी उपासनादि किया बिना वेदका अर्थ समझने का दुसरा सहज उपाय नहीं है। इसका अनन्तर शास्त्रीजी बोला जो “ब्रह्म निर्गुण है, किन्तु वेदमें ब्रह्मका सगुण करके भी बानाया। निर्गुण पदार्थहि नित्य है, जीव इसको मन औ बुद्धि करके भी, मान लेता है।” स्वामी जिने बोला “कि मन बुद्धिने तो सृष्टि कालमें लय प्राप्त होता, वह सब नित्य निर्गुण पदार्थ कैसे दोनों से आप समझा दिजिये।” शास्त्रीजी निरुत्तर ऊये और उपासना का समय ऊ आ, इतना कह कर सभा विसर्जन किया।

तृतीय दिन। शास्त्रीजी ने बुद्धिको सहकारी शास्त्र करके स्वीकार किया और शास्त्रमें जो परस्पर विरोध है सो देखा कर बुद्धिकी बड़ा प्रमाणार्थ “वेदा विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना” इत्यादि श्लोकका प्रथम तीन चरण का उच्चारण किया स्वामी जीने बोला इस श्लोकका चतुर्थ चरणमें (महाजनो येन गता स पन्था) इसका उत्तर वा समाधान रहा है। वेद औ स्मृति भिन्न भिन्न होने पर भी परस्पर विरुद्ध नहीं। शास्त्रीजीने इतना स्वीकार कर सरमा गये। अनन्तर शास्त्रीजी वेदोक्त “माहिंसात् सर्वभूतानि” आदि पर एक विरोध उठाया किन्तु स्वामीजी विचारार्थी होने पर वेने आगुया नाऊया। उसका पूर्व दिन शास्त्री जीने एक श्रुति वचनका उल्टा अर्थ करनेसे स्वामी जीने उसका खण्डन कर प्रकृतार्थ व्याख्या करिथी; बोध होता है आज उ-स समय शास्त्री विचारार्थी नहीं ऊये। अन्तमें बोले आज रह दीजिये, काल ऋग्वेद मांगाइयेगा, मैं विरोध देखाउंगा। इस समय बाबू पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्यायने स्वामीजीको समोधन कर बोला कि जो पुरुष तीनों शास्त्र ही वह छोड़के एकांग दार्शिकी विरोध न देखा सकेगा। एक मन्त्रे युद्ध कालमें जय देखा जो और मेरा जय कि आशा नहीं है तब बोला कि, अच्छा काल आवना मैं तुम्हको सारा दुंगा; शास्त्री जीकी भी अब ही अवस्था है। इतनी बातें पर “तत्कालीन लिख गया

है। टीकाकारों और चालनादि आरम्भ करि-
लें” । किन्तु तब बालिचार !

शास्त्री महाशय बलिलेन “धर्मधर्म विचार म-
नुष्येण स्वाभाविक” इहाते शान्तीजी जिज्ञासा क-
रिलेन ये, यदि एकटी मनुष्या शैशव इहाते ५०
वर्ष वयस्क पर्यन्त कौन मानव समाजम शून्य स्थाने
आवृत्त থাকे, तबे ने पशुवत् है। वाय; आ-
पनि धर्मधर्म विचार कि रूप स्वाभाविक मानेन?
येमन जन स्वाभाविक द्रवीभूत ओ शीतल किम्बा र-
क्षेण शाखा पल्लव ये रूप स्वाभाविक उद्भिन्न हय
अथवा येमन समय उपस्थित है। शिशु आदि नि-
र्गत हय, सेई रूप? एई प्रश्नेर चर्चा शेष है-
ल ना; भोजनेन निमग्न आछे, विलम्ब है।
याहैवे” बलिया शास्त्री अदल सह उठिया गेलेन।
आर्यधर्मावलम्बीगण अमनि “जय आर्यधर्मिक जय,
जय आर्यजीकि जय” बलिया आनन्द पत्नी करि-
लागिलेन। एई स्थले तद्वक्तृमुदी बलियाहेन
“तत्परे अपर एक विषयेर किमंकाल विचार
है। विचार विकल बोधे सकले उठिते चा-
हिलेन। छत्थेन विषय आक्रमणजेर कौन कौ-
न मत्त ताहाते असहिष्णुता प्रकाश करिलेन।”
केवल असहिष्णुता प्रकाश नहे ईराजितेओ व-
लिलेन “Let the dogs bark” उह! आक्रमणागणेर कि
अहंकार।—कि अभिमान!! आहंकार! धर्मसाधन
करिते है। शीतल मत्तक हय। चाई—मनः
संयम ओ वाक्संयम प्रथमेई प्रयोजन। केवल
“ब्रह्म निराकार” बलिया बेड़ाहैले कि है।
शास्त्रीजी उक्त कटुक्तिगुलि एकमात्र “असहिष्णुता”
शब्देर अन्तराले लुकाईया अपर समर्थन करिया-
हेन।

शेष दिन शास्त्रीजीर वर्णभेद ओ पौंड्रिकतार
विरुद्धे वक्तृता है। एई वक्तृता ये हि-
न्दूगणेर अवश्यै प्रति कटु ओ हृदयनादायक है-
हैवे ताहा आर काहाकेओ बुझाईवार प्रयोजन
नाई। वक्तृता स्थले इहार प्रतिवाद जन्य यখন
आर्यधर्मावलम्बी श्रियुक्त बाबू युगोल किशोर द-
ण्डमान है। तখন ताहाके एई बलिया मा-
ना कर। है। ये, “आज धर्म करिते पाईवे

जो “आर्यसभाके कोई कोई सभ्य ने क्रोधने अधीर
हो कर चित्कोर ओ अंग चालनादि आरम्भ किया।”
क्या सत्यका व्यभिचार है !

शास्त्री महाशयने बोला “धर्मधर्मिक विचार
मनुष्यमें स्वाभाविक है” इस पर स्वामी जिने पुका
जो कोई मनुष्यको बालकपनसे पचाश वरस उमेर
तक कोई एक स्थानमें बन्ध रखा जाय, जहां मनुष्य
का गमनागमन नहीं, तब वह पशुके समान हो जा-
ता है; आपने जो धर्मधर्म विचार कहा सो किस
प्रकार स्वाभाविक मानते हैं, सो बताइये। जैसा
कि जल स्वाभाविक द्रवीभूत ओ शीतल है अथवा
वृक्षके शाखा पल्लव जैसा स्वाभाविक निकल आता
है किंवा जसा समय पाकर मनुष्यके दाढ़ी मोच नि-
कालता है, क्या उसी प्रकार स्वाभाविक है? इस
प्रश्नकी चर्चाका शेष ना ऊया; “भोजनका निमग्न-
न है, विलम्ब हो जागा” इतना कहकर शास्त्रीजी
आपने साथियोंके संग उठ चुल दिये। आर्यधर्म
वाले उसी समय “जय आर्यधर्मिकी जय,” “जय
स्वामीजीकी जय” इस रीतिसे आनन्द ध्वनि करने
लगे। इस जगहका हाल तत्त्वकामुदीमें इस भांति
लिखा है “अनन्तर और एक विषय पर थोड़ा दूर
विचार चला किन्तु विचार निष्कल समझते सब को-
ई उठने चला। दुःख का विषय यह है जो द्वाष्ट्र
समाजके कोई कोई सभ्यने इसमें असहन शीलता
प्रकाश करि यि।” केवल “असहन शीलता” प्र-
काश नहीं, अंगरेजीमें भी बोला “Let the dogs bark”
ओ: ब्रह्म भाईयोंका क्या अहंकार! क्या अभिमान!!
भाइयों! यदि धर्म साधन करना चाहो तो शीतल
मस्तिष्क होना चाहिये, मन संयम ओ वाक् संयम
प्रयोजन हैं। “ब्रह्म निराकार” केवल इतना कह
फिरनेसे क्या होगा! शास्त्री जिने उक्त कटु वचनों
को एक मात्र “असहन शीलता शब्दके आड़में
छिपा कर अपना पक्ष समर्थन किया।

शेष दिन। बर्ण भेद और मूर्ति पूजाके वि-
रुद्ध शास्त्री जीने एक वक्तृता करी। ऐसी वक्तृता
जो आर्यधर्म वालेको अवश्यही सुनेमें घूरी और
दुखदायी होगी सो और किसीको समझा देनेको प्र-
योजन नहीं। वक्तृताका स्थानवर इसका प्रतिवा-
द करणार्थ जब आर्यधर्मावलम्बी श्रियुक्त बाबू यु-
गलकिशोर खड्गे ऊए तब उनको इतना कहके
मना किया जो आज खण्डन न करना, केवल सुन

ना, केवल शुनिय़ा याँ" । ईहाते आमरा व-
लिनाम ये यदि केवल आमादेर धर्मेरई निन्दा
करिबे ओ आमादेर प्रतिवाद शुनिबेना श्चिर हिल
तबे आमादिगके ना आह्वान करिलेई हईत । के-
न ना धर्म निन्दा शुनिले छूरी तरवारि चलाओ लो-
केर पक्के किछू आश्चर्य नहे । एई विषयटी अ-
न्य प्रकार करिया तत्कौमुदीते प्रकाशित हई-
याहे । यथा "हिन्दू हानीरा बलिबे लागिल आ-
मादेर विश्वासेर विरुद्धे कथा बला आरगले छूरी
देओरा समान । आज तलवार चलिबे ना हय
लाठी चलिबे ना हय आदालत चलिबे ।" अव-
शेषे सत्येर अनुरोधे एई मात्र लिखियाहेन
"मतिहारीते आर्यसमाजटी (उक्त समाजेर नाम
"मतिहारी आर्यधर्मप्रचारिणी सभा") स्थापित
हईरा उपकार हईयाहे, एतद्वारा उक्त सहरें
धर्म चर्चा प्रबल हईयाहे किन्तु छूथेर विषय त्रा-
कममाजटीर नितास्त दुर्लभ अवस्था" ।

"सत्यमेव जयते नावृतम्" ।

धर्मप्रचारकसंक्रान्त नियमावली ।

१ । यदि कौन धर्माया आर्य धर्मेर प्रतिष्ठा रक्षा ओ प्र-
चार निमित्त बाङ्गाला अथवा हिन्दी-भाषाया वा उभय भाषातेई
कौन विषय लिखिया प्रेरण करेन, तबे लिखित विषयटी सार-
वान विवेचना हईले आनन्द ओ उन्माह सहकारे धर्मप्रचारके
प्रकाश करिब ।

२ । धर्मप्रचारकेर मूल्य ओ एतत् संक्रान्त पत्रादि मुद्देर
"आर्यधर्मप्रचारिणी सभा," आमार नामे पाठाईते हईबे ।
पत्र विगारिह ईहेले गृहीत हईबे ना ।

३ । मूल्य साधारणतः पोष्टल मनिगर्डारे पाठाईबेन ।
डाक टिकिटे मूल्य पाठाईते हईले अर्क आना मूल्येर टिकिट
प्रेरण करिबेन ।

४ । धर्मप्रचारक १म भाग, १७३ संख्या हईते डाकमागुल
सह अग्रिम वार्षिक मूल्येर नियम तिन प्रकार हईयाहे ।

उत्तम कागजे,	वार्षिक	३।००	प्रतिगु १।००
महान	ई	२।००	१।००
साधारण	ई	१।००	०।००

मुद्देर आर्यधर्म- } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन ।
प्रचारिणी सभा । } सम्पादक ।

एई प्रति प्रति पुर्णिमाते मुद्देर आर्यधर्म प्रचारिणी सभा उन्माहे श्रीकृष्णप्रसन्न सेनकर्तृक प्रकाशित हईरा थाके ।

जम्मी । इसपर हमने बोला कि यदि केवल हमारे
धर्मकी निन्दा करना और इसको खण्डन ना करना
अभिप्राय थी, तो हमकी ना बोलाना उत्तम था
क्योंकि धर्मकी निन्दा सुनकर छोरी, तलवार चला
नाभी मनुष्यके लिये कुछ आयुष्य नहीं है । इस
विषयको "तत्त्वकौमुदी" में दूसरी शीतिवे प्रकाश
किया गया । यथा "हिन्दुस्थानी लोग कहने लगे
कि हमारे विश्वासके विरुद्ध बातें बोलना और गले
में कुरी देना दोनों बराबर है । आज तलवार च-
लगा नहीं तो लाठी चलेगा नहीं तो "अदालत हो-
गा ।" अन्तमें सत्यके अनुरोधसे एतनाही लिखा
"मतिहारी की आर्यसमाज (इस समाजका नाम
"मतिहारी आर्यधर्मप्रचारिणी सभा") स्थापित हो-
नेसे उपकार ऊँचा, इससे उर्ल शहरमें धर्मकी चर्चा
प्रबल ऊँच किन्तु दुःखका विषय यह है कि ब्राह्म-
समाजकी बड़ी दुर्बल दशा देख पड़ती है" ।

"सत्यमेव जयते नावृतम्" ।

धर्मप्रचारकसम्बन्धी नियमावली ।

१ । यदि कोई धर्माया आर्यधर्मकी प्रतिष्ठा
रक्षा और प्रचार करनेके निमित्त बङ्गला अथवा
देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओं में कोई
प्रस्ताव लिख की भेजे तो लिखित विषय सारवान
ज्ञात होय तो आनन्द आ उन्माह सहित धर्म-
प्रचारक में प्रकाश करेगा ।

२ । धर्मप्रचारक पत्रका मौल और इस पत्र-
सम्बन्धी पत्रादि मुंगेर आर्यधर्मप्रचारिणी सभा के
ठिकाने से मेरे पास भेजने हूंगा । पत्र बैरिड छोतो
नहीं लिया जायगा ।

३ । मौल साधारणतः पोष्टल निगर्डारि क-
रके भेजियेगा । डाक टिकिट में मौल भेजे तो आध
आने का टिकिट भेजियेगा ।

च प ४ । १म भाग १२ संख्या से धर्मप्रचार
का डाकमहसूल सहित अग्रिम वार्षिक मूल्य का
नियम तीन प्रकार का ऊँचा ।

उत्तम कागजमें	वार्षिक	३। = ०	प्रतिसंख्या। =
मध्यम	२। = ०	१।०	
साधारण	१। = ०	०।०	
मुद्देर आर्यधर्म- } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन । प्रचारिणी सभा । } सम्पादक ।			



“ एक एव सुहृद्दर्शी निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यतु गच्छति ॥ ”

“ एक एव सुहृद्दर्शी निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यतु गच्छति ॥ ”

३ र भाग । } शकाब्द १८०२ ।
७३ संख्या । } आश्विन पूर्णिमा ।

३ य भाग } शकाब्द १८०२ ।
३६ संख्या } भाद्र पूर्णिमा ।

रामगीता ।

(पूर्व प्रकाशितेन पर ।) •

एवं परिच्छात परात्म-भावनः
आनन्द-तुष्टः परिविमुक्तोऽखिलः ।
आत्मे स नित्यात्मसुख-प्रकाशकः

मात्माविमुक्तोऽचल वारिसिन्धुवत ॥ ५२ ॥

विनि এইরূপে আত্ম চিন্তা করিয়া থাকেন,
তিনি এই প্রপঞ্চ মায়া পরিভাষিত পদার্থ পুঞ্জ
বিমুক্ত হইয়া আত্মানন্দোপভোগে নিরন্তর পরি-
ভূত থাকেন । অতঃপর তিনি মায়া ও মৃত্যু, যথঃ
প্রকাশ আত্ম সুখরূপ হয়েন এবং চতুর্কিধ বিমুক্ত
(লয়, বিক্ষেপ, কষায় ও রসাধ্বাদ) বিমুক্ত হইয়া
প্রশান্ত পয়োধির ন্যায় অক্ষয় ভাবে অবস্থিত
করিতে থাকেন ।

ধীমান পাঠক বগের বোধ-সুগমার্থ বিমুক্ত
হইতেই বিশেষ লক্ষণ কথিত হইতেছে । অথও

রাম গীতা ।

(পূর্বে প্রকাশিত কে অর্থে)

এবং পরিচ্ছাৎ পরাत्म भावनः ।
स्वानन्दतुष्टः परिविमुक्तोऽखिलः !
आत्मे स नित्यात्मसुख प्रकाशकः
मात्माविमुक्तोऽचल वारिसिन्धुवत ॥ ५२ ॥

জোনে इस भांति आत्मचिन्ता की करती, उन्होने
इस प्रपञ्च मायासे भासित चैतन्य पदार्थ पुञ्जको
विकृत होकर स्वात्मानन्दोपभोगसे निरन्तर परिहृत
रहता है । अनन्तर साक्षात् सत्य, स्वयं प्रकाश,
आत्म-सुखस्वरूप होते हैं वो चार प्रकारके विम्ल (लय,
विक्षेप, कषाय वो रसाध्वान्) से विमुक्त होकर
प्रशान्त पयोधिके समान अक्षय, भावसे विराज
किये करने हैं ।

धीमान पाठकोंके बोधसुगमार्थ चारप्रकार
विम्लका विशेष लक्षण लिखा जाता है । सुख

ये अन्तःकरणेन निद्रावस्था उपस्थित इहेयां थाके ताहाके “लय” कहै । अथउ त्रकके अवलम्बन करिते अपारग इहेया सूर्या, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्रादि अन्तर पदार्थके अवलम्बन पूर्वक लोके ये उपासना करे ताहार नाम “विकल्प” । लय ओ विकल्पेन अभावे अन्तःकरण-वृत्ति यदि स्वाभाविक शक्त থাকिया अगत्या त्रकावलम्बने धावित हय ताहाके “कमाय” कहै । प्रकृत योग साधने असमर्पता प्रयुक्त अथवानन्दस्वरूप त्रकके अवलम्बन करिते अपारग इहेया वृद्धि वृद्धि कल्पित सुखस्वरूप सविकल्पावस्थामे त्रकानन्द अमे आसादन करीके “रसास्वाद” बना वाय ।

एवं सदाभ्यस्य समाधि योगीनो
निरुद्ध सर्वेन्द्रिय गोचरमाह ।
विनिर्जिता शेष रिपोरहं सदा
दृश्याभवेयं जित पङ्गुणात्मनः ॥ ५७ ॥

एहे प्रकारे ये योगी निरुद्ध समाधि अभ्यास करेन सेह विषयविनिर्मुक्त-चित्त वाङ्मन निकट आगि (रामचन्द्र) काम कोपादि वैरीवर्ग विजयी ओ कथ, हृष, शोक, मोह, जरा, मरण एहे सङ्गुनी कारण ओ सच्चिदानन्द स्वरूप आत्मा रूपे मरुदा अनुभूत इहै ।

धाटैव मां ज्ञानमहर्निशं मुनि
स्थिते सदा मुक्त समस्त बन्धनः ।
प्रारब्धमग्नमभिमानं वज्जिते
मयैवमात्मनः प्रविशीते ततः ॥ ५८ ॥

मननशील पुरुष उक्त प्रकारे अपारोक्षानुभूत आत्माके अहर्निश ध्यान करत काम, क्रोध, शोक, संशय, आदिपरभेद वृद्धि आदि हृदय ग्रहि छेदन पूर्वक जीवन्मुक्त इहेया अवस्थिति करेन । तदनन्तर सेह देहाभाभिमान वज्जित वाङ्मन प्रारब्ध कर्म भोग करिया अवशेये त्रक स्वरूप आमातेहै विलीन इहेया वाय ।

जीव पूर्वजन्मकृत पाप ओ पुण्य फलरूप पशु, कीट, मनुष्यादि देह प्राप्त इहेया थाके । ये पर्याप्त प्राप्त देहोपभोग्य कर्म कल राशिर शेषना हय, तावत् जीवेन देहपात हय ना । कर्मवर्तमान इहेले व्याधि, विग्रहादि कोन एकटी हेतु अवलम्बन करिया काल जीवके संशय

अन्तःकरण की-जो निद्रावस्था आ जाती है उसहीको “लय” कहा जाता है । अखण्ड ब्रह्मको अवलम्बन करनेमें असमर्थ होकर मूर्ख चन्द्र ग्रहनक्षत्रादि कोई पदार्थको अवलम्बन पूर्वक मनुष्योंने जो उपासनाकी करती है उसका नाम “विकल्प” करके जानना । लय वो विकल्पका अभावसे अन्तःकरणकी वृत्ति यदि स्वतः ही स्वस्थ रहकर अगत्या ब्रह्मको अवलम्बन करने पर धावे तब उसहीको “कमाय” करके जानना । प्रकृत योगसाधनकी असमर्थताके हेतु अखण्डानन्द स्वरूप ब्रह्मको अवलम्बन करनेमें अपारग होकर सविकल्पानन्दको जोकि बुद्धिवृत्तिका कल्पित सुख है, ब्रह्मानन्द समझके आसादन करनेको “रसास्वाद” कहा जाता है ।

एवं सदाभ्यस्य समाधि योगीनो
निरुद्ध सर्वेन्द्रिय गोचरस्य हि ।
विनिर्जिता शेष रिपोरहं सदा
दृश्याभवेयं जित पङ्गुणात्मनः ॥ ५७ ॥

इस रीतिसे जो योगी निरन्तर समाधि अभ्यास करते हैं, उसही विषय-विनिर्मुक्त-चित्त पुरुषके निकट में (रामचन्द्र) कामकोपादि वैरीयोंके जितनेहार वो क्षुधा, तृष्णा, शोक, मोह, जरा, मरण, यही पङ्गुनी-निवारण वो सच्चिदानन्दस्वरूप आत्मा करत प्रतीत पड़ता है ।

धात्वैवमात्मानमहर्निशं मुनि
स्थिते सदा मुक्त समस्तबन्धनः ।
प्रारब्धमग्नमभिमानं वज्जितो
मयैवमात्मानं प्रविशीते ततः ॥ ५८ ॥

मननशील पुरुष उक्त प्रकारसे आत्माको, जोकि अपरोक्ष अनुभव करके जान जाते हैं, दिवा निशि ध्यानकर काम, क्रोध, शोक, संशय, आत्म, परभेद बुद्धि आदि हृदय ग्रन्थियोंको छेदन पूर्वक जीवन्मुक्त हुए विराज करते हैं । तदनन्तर वह देहाभिमान शून्य पुरुषने प्रारब्ध कर्मफल भोग करके अन्तमें ब्रह्मस्वरूप मुक्तहीमें विलीन होजाता है ।

जीव पूर्वजन्मकृत पाप वो पुण्यफलका अनुरूप पशु, कीट, मनुष्यादि देह प्राप्त होता है । जवतक पाया हुआ देहका भोगके योग्य कर्मफल राशिका शेष न होता, तत्कालतक जीवका देह पुनर्जन नहीं होता है । कर्मका अवधान होनेसे व्याधि, विग्रह आदि कोई एक हेतु अवलम्बन करके काल जीवको

विचार करे न, धनी, दरिद्र, मूढ़, पण्डित, बलवान वा दुर्बल आदिका तारतम्य दृष्टि करे न। कर्म-फल-भोग मत्त कालेन अवशधिकार नाई। कठोर तपस्या करिने ७ पूर्वकृत कर्मफल विनाभोगे शेष हर ना। आत्रा ज्ञानलाभ पूर्वक क्रिया वर्जित हईले पुनरावृत्ति आशङ्का थाके नी बटे किन्तु उक्त तत्त्व ज्ञान पूर्वकृत कर्मके विनष्ट करिते पावे ना। भोगेन दाराई कर्मकर्म हईरा थाके। ऐहिक शान्त सत्ताव ग्रहण ७ समये समये नानाप्रकार उपद्रवग्रस्त हईरा छैन। किन्तु तत्त्वज्ञ पूर्वकृत कर्मफल हिन करिया अक्षुब्धचित्त महा करिया छैन। माध्यादि गुणीर जीवन चरित ईश्वर माफ्य प्रदान करिते छे। शुभकर्म सुखभोग ७ अशुभ कर्म दुःखभोग दारा कर्म हईरा थाके। शुभाशुभ कर्मतागी पुरुषेन पुनर्जन्म पथ रुद्ध हईरा बाय एव ७ तीहारे परम पवित्रात्रा अक्षयज्ञान विनय प्राप्त हई।

क्रमः

तत्त्वज्ञान ।

तत्त्वज्ञान ! आगि तौनाके बड़ भान बासि ? तौमार ललित अक्षर प्रति अधिकक्षण दृष्टि करिया थाकिले नयन शीतल हर। तौमार एई कोमल ७ कमनीय शोभा अनेक विशाल वृक्ष-शोभाके ७ पराजय करिया छे। तौमार गठन प्रणाली ये निर्मातार सृष्टिकर्ता निष्पन्न नैपुण्य परिचय दिते छे आगि तीहारे सकारण करण सहित नमस्कार करि। तौनाके देखिले अनेक भावेन उदय हर। से सकल यदि मानवके बलि तरे ताहारा आमाके निर्यातन करिबे। तौनाके एकान्त स्थाने पाईराह, तौमार सहित छई एकटी कथा कहिया प्राण शीतल करिब।

तत्त्वज्ञान ! तूमि कि जन्य जन्म लईले ? जन्मिया तूमि सुखी हईले कै ? तूमि जगत न आगिलेह तौमार पुण्य परिचय हईत। तूमि कीट पतङ्ग पक्षी आदि पद विनलित तृण मृगली मध्ये जन्मग्रहण करियाह ? तूमि निज धर्म ७ तौनाके शीर्ष सीमा अतिक्रम

आदि विचार न करताह ; दरिद्र, धनी, मूढ़, पण्डित बलवान, दुर्बल आदिका तारतम्य कालको दृष्टि न आतीह। कर्मफल भोगनका समय बीतने विना कालका प्रवेशाधिकार नहींह। कठोर तपस्या करि परभी विना भोगे पूर्वकृत कर्मफलका शेष नहीं होता। आत्मज्ञानलाभ पूर्वक क्रिया वर्जित होनेसे यदि पुनरावृत्ति आशङ्का न रहतीह, किन्तु उक्त तत्त्वज्ञान पूर्वकृत कर्मको विनाश नहीं करसक्ताह। भोगहीन दारा कर्मक्षय हो जाताह। इस निमित्त शान्त स्वभाव महापुरुष भी समय समयमें नानाप्रकारसे उपद्रव ग्रस्त हईले, किन्तु तत्त्वज्ञान पूर्वकृत कर्मफल, इतना विचारके अनुगुण चित्तसे मध्य किये। माण्डव्यादि मुनियोंके जीवन-चरित इस विषयका साक्ष्य दे रहाह। सुख भोगसे शुभकर्म वो दुःखभोगसे अशुभ कर्म क्षय हो जाताह शुभाशुभ कर्मत्यागी पुरुषके पुनर्जन्मका पथ रुद्ध हो जाताह औ उनका आत्मा जो परम पवित्र रहा सो ब्रह्म सत्तामें विलय प्राप्त हो जाताह।

क्रमः

तत्त्वज्ञान । (सकपेचा)

तत्त्वज्ञान ! मैं तुम्हको बड़ा प्यार करता हूँ। तेरे मनोहर अङ्गोंपर कुछ कालतक दृष्टि किये रहता हूँ तो नयन शीतल होताह। तेरी यह कोमल ७ कमनीय शोभामें वज्रतरे विशाल विशाल वृक्षोंकी भी शोभाका भीत लियाह। तेरी गठन प्रणाली जो निर्माताको सृष्टिकर्ता शिल्प-निपुणताका परिचय देतीह मैं उसे सज्जित करण नमस्कार करता हूँ। तुम्हको देखने वज्रतरे भावोंका उदय होताह, मैं सब जो मनुष्यसे कज्ज वे तुम्हको निर्यातन करेगा। तुम्हको एकान्त स्थानमें पायाह, तेरे साथ दो एक बात कहकर प्राणको शीतल करूँगा।

तत्त्वज्ञान ! तूने किसलिये जन्म लियाह, तू जन्म ले सुखिनो कहाँ छई ; तू जो जगतमें नहीं आत, तभी तेरे पुण्यका परिचय होता। तू कीट, पतङ्ग, पक्षी पक्षी आदिके पदसे विदलित दण्डमण्डलीके बीच जमी, तू अपनी प्रकृतिके बलसे उन्ही मरुत सीमाका

किन्तु ताहाते तोमार गौरव कि ? तूनि तो अग्र्य दण्डायमान थाकिते पार ना, एकटी अवलम्बन ना पाईले तोमार कल्याण नाई ; आश्रयदातार चरण धारण करिया क्रमे ताहार कक्ष बक्ष अतिक्रम करिया उठिते थाक ; यदि प्रबल वायु विताड़ने अवलम्बनटी भूमिमां हय, तबे तन्मह तोमार सेई दशा हईया थाके ; अथवा वात्याघाते तूनि एकाई छिन्न भिन्न हईया पड़िले किन्ना आश्रय ना पाईलेओ भूमिते लुटाईले ; शृगाल, बूकुर, गौं ओ गर्दभेर पदाघात सह्य करिते लागिले ; ताई बलि तोमार जग्गिया फल कि, ? बाँटिया सुख कि ? मध्ये मध्ये तोमार एक एकटी सुन्दर फूल फूटे सत्ता किन्तु कै ताहार सेई गन्ध तो सुश्रवण रजनीगन्ध, सुधि आदिर न्याय दिङ्मण्डल आनोदित करिते पारे ना ? ताहार सौन्दर्या तोमारई कमनीय देह अशोभित करिया परिनमांष्ट्र हय मात्र । अलाव, कुशां, आदिर न्याय कोनओ फलओ प्रसव करिते पार ना । मेघमाला यत्तदिन आकाशके शीतल करिया तोमार अक्षे बारि वर्षण करिबे, तूनि सेई कयैकदिन मात्र आपनार दुर्लभ अम्भार अन्येर कक्षे रक्ता करिया जीवित थाक मात्र ; अवशेने हिमकर स्पर्शे मलिन हईया तनुताप कर । ताई बलि ए जीवने तोमार प्रयोजन कि ? यदि तूनि अग्र्यई आधीनतावे थाकिते पारिले ना, तबे नलिनीर सुगल ओ सुन्दर रत्नेर न्याय सरसीर जले डुबिया मरिले ना केन ? तोमार आकार प्रकार भाव भङ्गिते भाल ना वासिया थाकिते पारि ना, ताई तोमाके भाल वासि ; किन्तु तोमार अवस्था देखिया नयन बाप्ताहल हय । तोमार कीर्ण देह, अल्प परमायु, पराधीन जीवन दर्शने हृदये निर्वेद उपस्थित हय । यदि बल “भगवान आमाके एहेरूप सृष्टि करियाछेन, आमा कि करिव” तबे तूनि पुष्पोद्यानेर पुष्पोद्यानेर अन्तरा दुर्लभ देह दोलाइया कि अथे नृत्य करितेछ, तोमार हासिते, खेलिते वा नृत्य करिते लज्जा बोध हय ना ? तोमाके यदि एकटी शिशु टानिया हिडिया फेले, तूनि आश्रयका करिते पार ना, एकटी छागे कवलित करिले तूनि ताहा रोध करिते पार ना ; तबे सकलैर

सङ्गी, तिसरे तेरी क्या बड़ाई ऊई ? तू आपतो खड़ी भी न हो सकती—कुछ अवलम्बन दिन मिले तेरा कल्याण हो नहीं । आश्रय देने हारिका पांवधरके क्रमसे उस्की कक्ष, वक्षका अतिक्रम कर उठा करती है । यदि कभी प्रबल वायु वेगसे वह अवलम्बन टूट गिरातो उस्की साथ तेरीभी वही दशा होजातीहै ; अथवा वायुके आघातसे तू अपनीभी गिर पड़ती आ किन्न भिन्न हो जातीहै, किन्ना आश्रय न मिलनेसे भी तू भूमिपर लोटतीहै । शृगाल, बूकुर, गौ, गर्दभोंके पदाघातोंको मध्य करतीहै ; इसीलिये कहता ऊँ कि तुम्हे जन्मका क्या फल ! जीनेसे क्या सुख ! बीच बीचमें तेरा एक एकक सुन्दर फूलता भरहै—पर उस्का गन्धसे शुभ्रवर्ण रजनी गन्ध (गुलसबों) पुष्पिका आदि की नाई दिङ्मण्डलकी आमोदित तो नहीं कर सकती है । उस्की सुन्दरता केवल तेरे कमनीय देहको शुशोभित कर परिसमाप्त होती है । अलाव, कुशाण्डकी नाई किसी फलका प्रसव तो कर नहीं सकती है । जबतक मेघमाला आकाशको शीवल कर तेरे अङ्गोपर जल वरसाता सोही कयैक दिनोंतक अपने दुर्बल अङ्गोंके भारको आनके स्वल्पपर रखकर जीती मर रहतीहै, फिर अब शेषमें दिन किरणके स्पर्शसे शरीर त्याग करतीहै । इसीलिये कहता ऊँ तेरा इस जीवनमें क्या प्रयोजनहै ? जों तू आप स्वाधीन होकर रह नहीं सकती तो नलिनीके मृणाल ओ कुमुद वृत्तकी भांति ‘सरसीके जलमें डूब क्यों न मरती ? तेरे आकार प्रकारको भाव भङ्गीमें प्यार बिन किये नहीं रह सकताहै, इसीलिये तुम्हको प्यार किया तरफा ऊँ पर तेरी अवस्था देखकर आखेंमें आंशु भर आती है ! तेरी क्षीण शरीर, पराधीन जीवन देखकर हृदय फटताहै । यदि तू ऐसा कहै कि भगवानने तुम्हे ऐसीही बनाई है मैं क्या करूँगी, तब तू पुष्पोद्यानका द्वार द्वार अपने दुर्बल अङ्गको डोलाती ऊँइ किस् सुखसे नृत्य करती है । तुम्हको क्या हसने, खेलने वा नाचते लाज नहीं लगता है ? तुम्हको एक लड़काभी नोच उजाड़ डालता है तु वचा नहीं सकती ; तुम्हको एक बकरी भांगभी कवलित कर जाता है—तू उस्का रोध तो नहीं कर सकती है,—तब सबके समुख क्यों जाती है—अच्छा कोई जन कीककी गतिविधि न हो नहीं सकती आ-सारा वन-

गतिविधि नई तथायचलिया याँ, वेथाने नवबल्ली सकल निवृत्त स्थाने एक एकटी रुक्के आश्रय करिया मनोर झुंके कालहरण करितेछ, सेई गलीर बने चलिया याँ ; तथाय कूद्र कूद्र बिहङ्ग-नालार सहित ज़ीङ्गा करिते थक । तूगि जन-पदे थाकिवार नितांत अनूपयोगी । गहनबने तेजस्वी तपस्वीगण बास करेन, आश्रय मण्डप रचना करिया । ताँहादेर सेवा कर ; यदि कथन ताँहादेर दया लाभ करिते पार, तवे जनपदे जगग्रहण करिओ ; ताँहारा तरुलताके “तड़ि-रता” करिते पारेन ; विद्यालतार अङ्ग स्पर्श करे काहार साध, तखन तोमार रुक्-विकाशे जगत् चमकिया उठिबे ; दिग्दश दीप्ति-मालाय मोहित हईबे । आवश्यक बोधे अट्ट-हासानह गङ्गीर निनादे परत चूड़ा चूर्ण करिते पारिबे । अतएव तरुलते ! आर विलस करिओ ना, आमार कथित मन्त्र आपनार जीवनर उन्नति साधन कर । अङ्गणे विद्यार लईलान ।

स्त्री स्वाधीनता ओ शिक्षा ।

(मैसूरपुर उन्नति विधाविनी सभा इहेते प्राप्त)

(पूर्व प्रकाशितके आगे)

२२ । “ एतद्देशीय रमणीगण अशिक्षिता बलिया ताँहादेर आगीगणेर विद्या बद्धि स्फूर्ति पाय ना । विद्यालये ताँहारा से ज्ञान लाभ करेन ताँहा-क्रमे हीनप्रभ हईया नार” ।

आमादिगेर मध्य कृषिदिदा व्यक्तिगण ईउ-रोपीयदिगेर कार्यप्रणाली देखिया सकल विष-येर मिमांसा करेन । भल, देखा याँक, रमणीगणेर विद्यार प्रभावे ईंग्लेज्जरा कतदूर पर्याप्त उन्नति करियाछेन । ईउरोपीय महिला-गणेर लेखा पढ़ार सीमा कि ? उपन्यास पाठ करियाई त ताँहारा समय अतिबाहित करिया थाकेन । ताँहादेर मध्ये कयजन रमणी उच्च-भावेर ग्रन्थ पाठ ओ ताँहार भाव संग्रह करिया आलोचना करेन ? ताँहारा विद्यार विशेष पारदर्शिता लाभ करियाछेन, ताँहारा हय कोन उपन्यास अथवा कविता रचना करिया विद्यार परिचय दियाछेन । एवम्प्रकार विद्यार प्रभावे, उक्तमना ज्ञानी स्वामीर कि उपकार दर्शिया थाके ?

मनके सुखसे कालयापन करती है, उसी गभीर वनमें चली जा ; और वहाँ छोड़ी बिहङ्ग वालाओं के संग खेलना, तू जनपदमें रहनेकी नितान्त अयोग्य, गहन वनमें तेजस्वी तपस्वी लोग रहते हैं जिन्होका आश्रय मण्डप बनाकर सेवा करनी-और यदि उन्हेकी कृपा पा सकेगी, तो फिर जनपदमें जन्म लेना, वे तरुलताकी तड़िलता (बीजली) बना सकते ; तब विद्युत्ताकी कूनीका किस्सा साध्य है-तेरे जगविकासे जगत् चमक् उठेगा-दशोदिश दीप्तिमालामे मोहित हो जावगी, आवश्यक होनेसे अत्रह्वाश शब्द कर्तृक पर्वतचूड़ाकी चूर्ण कर सकेगा । अतएव है तरुलते ! अब विलम्ब मत करना, मेरे कह अनुसार जीवनकी उन्नति साधन कर । अभि विदा लेता हूँ ?

स्त्री स्वाधीनता औ शिक्षा ।

(मैसूरपुर उन्नति विधाविनी सभासे प्राप्त छया)

(पूर्व प्रकाशितके आगे)

२३ । “ यहाँके रमणीयोंने अशिक्षिता होने का कारण उन्हेके स्वामीयोंकी विद्या, बुद्धि, स्फूर्ति न पाती है । उन्हेने विद्यालयमेंभी जो ज्ञानलाभ किया करता है सोभी प्रभाशून्य हो जाता है । ”

हमारे कृतविद्य व्यक्तिगण युरोपीयोंकी कार्य-प्रणाली देखकर हरवातकी मिमांसा कर लेते हैं । अच्छा, अब देखा चाहिये, रमणीगणकी विद्याका प्रभावसे अंग्रेज लोगोंने कितना दुरतक उन्नति करी है । युरोपीय महिलागणकी विद्याशिक्षाकी सीमा कहाँतक है ? उपन्यास आदिकी पाठ करके समय व्यतीत की जाती है । उन्हेके मध्यमे कितनी स्त्रीय उच्च भावपूर्ण ग्रन्थ पाठ बी उक्ता भाव संग्रह कर आलोचनाकी करती हैं । जितनी स्त्रीयोंने विद्याकी विविध रूप पढ़ता लाभ करी है, उन्हेमें कोईर उपन्यास अथवा कविता रचकर विद्याका परिचय दिया होगा । इस प्रकारकी विद्याका प्रभावसे उन्नत मना ज्ञानी स्वामीका क्या उप-कार होता है ? दिकन, निडलन, मिल, बी एडिसन आदिके न्याय असाधारण प्रयत्नोने क्या

অসামান্য ব্যক্তিগণ কি তাঁহাদের রমণীর উৎসাহে উৎসাহিত হইয়া এতদূর প্রতিভা সম্পন্ন হইয়াছিলেন ? ভারতবর্ষেরদিকে দৃষ্টিপাত করিলে আমরা কি দেখিতে পাই ? হয়ত এমন দৃশ্য নয়ন-গোচর হয় যে, যে রমণী, কথ পর্যান্ত জানেন না, তাঁহার স্বামী একজন প্রভূত প্রতিভা-শালী গ্রন্থকার । আমাদের মধ্যে যে কয়জন কৃতবিদ্য আছেন, তাঁহারা কি তাঁহাদের স্ত্রীগণের উৎসাহে এত উন্নত হইয়াছেন ? ডাক্তার রাজেন্দ্র লাল মিত্র, রেভারেণ্ড কে, এম্ বন্দ্যোপাধ্যায়, বাবু কেশবচন্দ্র সেন, রেভারেণ্ড লালবিহারি দে, অনা-রেবল্ কৃষ্ণদাস পাল প্রভৃতি কৃতবিদ্য ব্যক্তিগণ কি শিক্ষিতা রমণীর অভাবে এতদূর পর্য্যন্ত বিদ্যা ও জ্ঞান সম্পন্ন হইয়াছেন ? আমরা স্ত্রী শিক্ষার বিরোধী নহি, প্রকৃত শিক্ষা সর্ব্বমতে বাঞ্ছনীয় । যেরূপ শিক্ষা অভাবে রমণীগণ বিলাসবতী হইবে, যেরূপ শিক্ষা অভাবে তাহারা স্বামীকে ও অত্যাচারক জনকে ভুল তাচ্ছিল্য করিবে, যেরূপ শিক্ষা অভাবে তাহারা পর পুরুষের সহিত যথা তথা ভ্রমণ করিবে, যে শিক্ষা অভাবে তাহারা লজ্জায় জলাঞ্জলি দিয়া ব্যাপিকা হইয়া উঠিবে, এবং যে শিক্ষা অভাবে তাহারা গৃহকার্য্য অবহেলা করিয়া হাস্য পরিহাসে, ক্রীড়া কোতুকেসময় অতিবাহন করিবে, আমরা সে বিদ্যা শিক্ষার পক্ষপাতী নহি । কিন্তু প্রকৃত শিক্ষা বাঞ্ছনীয় হইলেও তাহা কি আমাদের বর্ত্তমান অবস্থায় প্রদান করা সম্ভব ? পুরুষগণই ত রমণীগণকে শিক্ষা প্রদান করিবেন ! কিন্তু তাঁহারা আপনারা শিক্ষকের উপযুক্ত হইলে তবে ত অবলাগণকে শিক্ষা দিতে পারিবেন !!

আমাদের মধ্যে অনেক কৃতবিদ্য ব্যক্তি আছেন সত্য, কিন্তু তাঁহারা কি যথার্থ শিক্ষালাভ করিয়াছেন ? তাঁহারা বিদ্যাভিজ্ঞানে পরিপূর্ণ হইয়া একথাও বলিয়া থাকেন যে, স্বর্ণের আর কর্দ্দমে কি কখন মিলন হইতে পারে ? অর্থাৎ তাঁহারা স্বর্ণ হইয়া কি কর্দ্দম স্বরূপ মূর্খা রমণীর সহবাসে কালযাপন করিতে পারেন ? মনে করুন এক কৃতবিদ্য পুরুষ অমিত ব্যয়ী, অত্যাচারী, ব্যভিচার দোষাসক্ত, ঘোর পায়ণ্ড ও নাস্তিক হইয়া উঠিলেন আর অশিক্ষিতা স্ত্রী লজ্জাশীলা, শাস্তপ্রকৃতি, গৃহকার্য্য-সৌন্দর্য্যশীলী, দয়াবতী, পরহিতৈষিনী,

নিজ নিজ রমণীকা উৎসাহে উৎসাহিত হীকর এই প্রতিভা-সম্পন্ন জ্ঞে ? ভারতবর্ষে আর দৃষ্টি করন্থেই যদ্বী দেখন্থে আসা হৈ, জো রমণী ক, খ তক্ ন জানতী হৈ, উসকে স্বামী একজন প্রভূত প্রতিভাশালী গ্রন্থকার জ্ঞে । হমারে মধ্যমে জিতনা কৃতবিদ্য পুরুষ হৈ, বহু সব ক্যা अपनी अपनी স্ত্রীকা উৎসাহে কৃতনা উন্নত জ্ঞে ? ডাক্তার রাজেন্দ্রলাল মিত্র, রেবারেণ্ড কে, এম, বন্দ্যো-পাধ্যায়, বাবু কেশবচন্দ্র সেন, রেবারেণ্ড লালবিহারী দে, অনরবল কৃষ্ণদাস পাল, আদি কৃতবিদ্য ব্যক্তি-গণ ক্যা শিক্ষিত রমণীকা প্রভাব করকে কিসমতি বিদ্যা আে জ্ঞান-অম্পন্ন জ্ঞে ? হম স্ত্রী শিক্ষাকা বিরোধী নহী হৈ, কিন্তু প্রকৃত রীতিকী শিক্ষা সব প্রকারসে বাঞ্ছনীয় হৈ । জিসমতি শিক্ষাকা প্রভাবমে রমণীগণ বিলাসবতী হোগী, জিসমতি শিক্ষাকা প্রভাবমে উন্থানে স্বামী আে অন্যান্য গুরুজনকী তুচ্ছ সমজোগী, জিসমতি শিক্ষাকা প্রভাবমে উন্থানে অন্যান্য পুরুষকে সাথ জচাঁ তচাঁ ফিরা করগা, জিসমতি শিক্ষা কা প্রভাবমে বে লজ্জা বিসর্জন কর ব্যাপিকা হী উঠেই আে জিসমতি শিক্ষাকা প্রভাবমে বে গৃহকার্য্যমে অবহেলা কর হাশ্ব পরি-হাসমে, দ্রীড়া কৌতুকে সময় অতিবাহন করগী, হম উসমতিকী বিদ্যাশিক্ষাকা পক্ষপাতী নহী হৈ, কিন্তু প্রকৃত শিক্ষা যদিচ বাঞ্ছনীয় হৈ তোমো বহু ক্যা হুমারী বর্ত্তমান অবস্থামে দেনা সম্ভব হৈ ? পুরুষগণহী তো রমণীকী শিক্ষাদান করগে !! কিন্তু উন্থে তো পছলে স্বয়ং শিক্ষককে যোগ্য বনে তব তো নারীকী শিক্ষা দে সকেগে !!

মৈ মানলিতা জ হম লোগকে মধ্যমে অনেক কৃতবিদ্য পুরুষ হৈ, সোহী কিন্তু উন্থানে ক্যা যথার্থ শিক্ষালাভ কিতা হৈ ? উন্থানে বিদ্যাভিজ্ঞানে পরি-পূর্ণ হীকর যদ্বাতমী কহী করতী হৈ জাে সুবর্ণ আে মিটী ইন দোনাঁমে ক্যা কমী মেল হীতা । অর্থাৎ উন্থানে সুবর্ণ হীকর মটীরূপা মুখী রমণীকা সহ-বাসমে কাল অতীত কর সক্তা হৈ ? বিচারিয়ে কি এক কৃতবিদ্য পুরুষ জো অমিতব্যয়ী, অযথাচারী, ব্যভিচার দোষাসক্ত, ঘোর পায়ণ্ড, বো নাস্তিক হী উঠা আে অশিক্ষিতা লজ্জাশীলা শাস্তপ্রকৃতি, গৃহ-কার্য্যপারদর্শিনী, দয়াবতী, পরহিতৈষিনী ধর্ম

दशगण এখন আপনাদের জিজ্ঞাসা করি, এরূপ রমণী-রত্নের স্বামী হওয়া কি প্রার্থনীয় নহে? তবে, যে পুরুষের চিত্র আমরা চিত্রিত করিলাম, সে পুরুষ কখনই এপ্রকার রমণীর স্বামী হইতে চাহিবেন না। যে রমণী লেখা পড়া শিখিয়া উপ-ন্যাস কি নাটক নাটিকা প্রেরণাপ ও রসালাপ হৃদয়ঙ্গম করিয়া রজনীতে স্বামীর সহিত তৎপ্রসঙ্গে কথোপকথন করিতে পারিবে, যে রমণী যান-রোহণে স্বামীর সহিত বায়ু সেবন করিতে স্ফুটিত হইবে না, যে রমণী তাঁহার স্বামীর বস্তুগণের সহিত একত্রে বসিয়া আলাপ ও ক্রীড়া করিতে পারিবে, সেই রমণীই পূর্ববর্ণিত কৃতবিদ্য ব্যক্তির কণ্ঠের হার বলিয়া আদরনীয় হইবে। তাই বলি প্রথমে পুরুষগণ প্রকৃত শিক্ষান্নত করুন, তবে তাঁহারা স্ত্রী শিক্ষার কথা লইয়া আন্দোলন করিবেন। পুস্তকগত বিদ্যাকে আমরা প্রকৃত-বিদ্যা বলিয়া গণ্য করি না। যখন বিদ্যা দ্বারা পুরুষগণের চরিত্র বিশুদ্ধ হইবে, যখন ইহার প্রভাবে সমাজ সংস্কৃত হইয়া উঠিবে, যখন তাঁহারা সচ্চরিত্রা রমণীকে সমাদর করিতে প্রস্তুত হই-বেন; তখন যদি তাঁহারা রমণীগণের বিদ্যা-শিক্ষার কথা উত্থাপন করেন, আমরা তাঁহাদিগকে তদ্বিষয়ে উৎসাহ প্রদান করিব এবং বন্ধপরিচর হইয়া স্ত্রী শিক্ষার উন্নতির জন্য যত্নবান হইব।

বর্তমান সময়ে স্ত্রী শিক্ষা, স্ত্রী স্বাধীনতা, ইত্যাকার শব্দ গগন ভেদ করিয়া উঠিতেছে। যে ব্যক্তির নিকটে গমন করি, তাঁহার নিকটেই ইহার প্রতিপোষক বাক্য শ্রবণ করি, যে সভায় গমন করি সেখানেই ইহার আন্দোলন। এ সকল দেখিয়া শুনিয়া আমরা জ্বালাতন হই। কিন্তু কি করিব! বড় বড় লোকের মুখে বড় বড় কথা শুনিয়া লোকে আর বিরুদ্ধিতা করিতে সক্ষম নহে। আমাদের কথায় কে বা কর্ণপাত করে? তথাপি দেখা যাউক কিয়ৎ পরিমাণে যে স্ত্রী শিক্ষা প্রচ-লিত হইয়াছে, তাহার দ্বারা কি ফল উপন্ন হই-তেছে। বিদ্যার প্রভাবে এ কালের রমণীরা গর্বিতা হইয়াছে। তাহারা গুরুজনকে অবজ্ঞা করিয়া থাকে। লজ্জাশীলতা ও বিনম্রতা তাহা-দের প্রায় দেখা যায় না। স্বার্থপরতা তাহাদের মধ্যে বিশেষরূপে দেখা দিয়াছে। স্বামীও পুত্র-কন্যা বাসীক অপার কাছাকাছি পরিবার ভুক্ত বলিয়া

গণ্যকো অব মৈ পুচ্ছতাড়' কি এসী রমণী-রমকা স্বামী ছীনা কথা প্রার্থনীয় নহী? তব জো পুরুষকা পিত্র কিয়া গয়া, বহু পুরুষ কমীছী এসী রমণীকা স্বামী ছীনে নহী চাহতা ছোগা। জো রমণীনে লিখন পঠন মিখকর উপন্যাস বা নাটক নাটিকা প্রমালাপ বো রসালাপ হৃদয়ঙ্গম কর রজনীকাল স্বামীকে সঙ্ঘিত তত্প্রসঙ্গে কথোপকথন কর সকেছী জো রমণী শকটপর সবার জুএ স্বামীকা মাথ জহা তহা বায়ুমেবনার্য জাতেমে সঞ্চার ন মানিগী, জো রমণী স্বামীকে মিচ-মণ্ডলীকে সাথ একই বৈঠে আলাপ বো ক্রীড়া কর সকেগী, বহী রমণী পূর্ব-বর্ণিত কৃতবিদ্য পুরুষকা কণ্ঠহারকে সমান আদর-ণীয়া ছীগী। তদ্বিমিত্ত হুম কহিত হৈ কি প্রথমমে পুরুষগণ তী প্রকৃত শিক্ষালাভ কর লে তব স্ত্রী-শিক্ষাकी वाते उठावे। पुस्तकगत विद्याकी हूम प्रकृत विद्या करके न मानते, है। जब विद्या करके पुरुषोंके चरित्र विशुद्ध होगा, जब इसका प्रभावसे समाज संस्कृत हो उठेगी, जब पुरुषोंने सच्चरित्रा रमणीको समादर करने लगेंगा, उस समय यदि उन्होंने रमणीयोंकी विद्याशिक्षाकी वाते उठावे हूम उन्हांके तद्विषयमें उत्साह देखें औ बद्धपरि-कर होकर स्त्री-शिक्षाकी उन्नतिके निमित्त यत्नवान् होंगे।

वर्तमान कालमें “स्त्री-शिक्षा” वी “स्त्री-स्वाधीनता” इत्याकार शब्द गगण भेद कर उठ रहा है। जिस किसकी निकट गमन करूं उन्हीके पास इस विषयकी पोषक वाक्यो श्रवण करता हूं, जिस सभामें गमन करूं वहां ही इसको चर्चा देखी जाती है। इतना देख सुनकर हमने दिक हुआ। किन्तु क्या करें! बड़े बड़े लोगोंकी बड़ी बड़ी वाते सुनकर दूसरा किसकी द्विरुक्ति करनेकी शक्ति न रहती है। हमारी बातोंपर कोन् कर्ण पात करे? तथापि देखना चाहिये, किहिदपि जो स्त्री-शिक्षा चली है, उससे क्या फल होता है। विद्याका प्रभावसे आजकलकी रमणीयोंने गर्विता होती हैं। उन्होंने गुरुजनोंकी अवज्ञा की करती हैं। लज्जाशीलता वी बिनम्रभाव उन्हेमें प्राय देखा नहीं जाता है। स्वार्थपरता उनके मध्यमें विशेषरूप देख पड़ती है। स्वामी औ पुत्र कन्या कोढ़के और किसकी परिवारमें नहीं मिलने चाहता है।

गण्य करिते प्रसूत नहै। स्वामी पुत्रके अन्न व्यञ्जनादि रक्षन करिया देওয়া तौहारा भारबह विवेचना করেন। सौखीन ভাবেर দুই একটা বেশ বিন্যাসের কার্য করিলেন, অথবা স্ত্রী পুরুষের প্রণয় ঘটিত কোন উপন্যাস বা কাব্যগ্রন্থ পাঠ করিলেন; স্বামী দেখিয়া আফ্লাদে পরিপ্লুত হইলেন। আপনা আপনি ধন্য বিবেচনা করিলেন। এখন কাহার সাধ্য এ প্রকার বিদ্যাবতী রমণীকে কোন কথা বলে। যদি স্বামী পুত্রের নিত্য ব্যবহারোপযোগী সামগ্রী প্রস্তুত করিতে শিখিতেন, তাহা হইলেও কিয়ৎ পরিমাণে উপকার দর্শিত। আমরা দেখিতেছি যে, এমন দিন আগত প্রায়, যে দিনে পুরুষগণকে হয় স্বয়ং রন্ধন করিয়া খাইতে ও লক্ষ্মীকে খাওয়াইতে হইবে। অথবা যদি কোন উদ্যমশীল পুরুষ অন্ন ব্যঞ্জনের দোকান খোলেন, তথা হইতে ক্রয় করিয়া উদর পূর্ণ করিতে হইবে। বাইরা প্রচুর অর্থ উপার্জন করেন, তঁহারা সৌখীন স্ত্রীকে লইয়া পুতুল খেলা দেখিতে পারেন। কারণ তঁহারা পাচিকা নিযুক্ত করিতে সক্ষম। কিন্তু মধ্যবিত্ত গৃহস্থগণ অনন্য-গতি হইয়া পড়িয়াছেন। সুতরাং তঁহাদের বিবেচনা করিয়া চলিলে প্রাচীন ধারা অবলম্বন করিতে হইবে।

যতদূর দৃষ্টিয়া করিবেন, তবে কি স্ত্রী শিক্ষা রহিত করা উচিত? আমরা বিবেচনা করি আশাদের কর্তব্য অবস্থায়, করা উচিত। পুরুষগণ যখন বিগত চরিত্র হইবে, সমাজ যখন সংকৃত হইবে, তখন স্ত্রী শিক্ষা প্রয়োজনীয় বলিয়া প্রত্যত জন্মবে। আমরা দেখিলাম যে অল্প শিক্ষার কণ বিঘ্নের, এখন বাহাতে তঁহারা প্রকৃত শিক্ষা লাভ করিতে পারেন তৎপক্ষে প্রয়াস পাওয়া কর্তব্য। কিন্তু সে আশা কোথায়? পুরুষগণ নিজে সুশিক্ষিত হইলে তবেত সম্ভব হইতে পারে। প্রকৃত শিক্ষালাভ না করিলে, তঁহাদের মনো-প্রকৃতি পরিবর্তিত হইবে না। যতদিন জ্ঞানের সহিত ধর্ম সন্মিলিত না হইবে, যতদিন জ্ঞানের উন্নতি অপেক্ষা আত্মার উন্নতি অধিক বাঞ্ছনীয় বলিয়া প্রভাবমান না হইবে, ততদিন পুরুষগণ রমণীকে ক্রোধার বস্তু বলিতে স্থিতি হইবেন না। আপনারা যেমন সুশিক্ষা প্রভাবে বিগত চরিত্র ও ঈশ্বর পরায়ণ হইবেন, তঁহাদের সঙ্গধর্মিনীকেও

স্বামী পুত্র আদিকে নিমিত্ত রহু বালানামী উ-
ল্লেনি বড়া ভারী সমস্ততা হৈ, বৈশ্ব বিন্যাসকে দৌ এক
বংগিলি কাম ক্রিয়া অথবা স্ত্রী পুরুষকা প্রণয়
সূচক কীছু উপন্যাস বা কাব্য পড়া, স্বামী ইতনা
দৈবকে বড়া আনন্দিত জন্মা বৌ আপনেকো ধন্যমানা।
অব কিসকা সামর্থ্য হৈ জো এনৌ বিদ্যাবতী রমণীকী
কুছ কহে। যদি স্বামী পুত্র আদিকী সদা ব্যবহার
যোগ্য সামগ্রী বানানে শিখতা তৌমী কুছ উপকারে
আতা। হুম দেখতে হৈ জো এনা দিন আনিবালা
হৈ জিন দিনে পুরুষকী স্বয়ং রহু বনা লেনা স্ত্রী
স্ত্রীকী খিলানে পড়িগা অথবা যদি কোই উদ্যম-
শীল পুরুষ পকাএ জ্ঞান অন্ন ব্যঞ্জনকী দীকান খুতে
তৌ বহুমে মৌল লেকর উদর পূর্ণ করনে হোগা। জো
লোগ প্রচুর অর্থ উপার্জন কর রহে হৈ, উল্লেনে স্ত্রী
লেকর পুতলিকা খেল কর সক্তা হৈ, কণেকী পাচিকা
নিযুক্ত করনে তনকা সামর্থ্য হৈ, কিন্তু মধ্যবিত্ত
গৃহস্থগণে অনন্যগতি হৌ পড়ি হৈ, সুতরাং বহু যদি
সীচ বিচারকে চলে তব উল্লেকৌ প্রাচীন রীতি অব-
লম্বন করনাহী উচিত সমস্ত পড়িগা।

যহুধী কোই পুচ বৈটেগি কি স্ত্রী-শিক্ষা রহিত
করনাহু ক্বা উচিত হৈ? উত্তর, হুমারী বর্তমান
দশমে ইসকৌ উচিত সমস্ত পড়তা হৈ। পুরুষ-
সমাজকী জব বিশুদ্ধ চরিত্র হোগি, সমাজ জব সংকৃত
হোগি, তব স্ত্রী-শিক্ষা প্রয়োজনীয় করকে সমস্ত
জাগি। হুম দেখ লিয়া জো অর্থ শিক্ষা কা ফল
বিঘ্নময় হৈ। অর্থ जिस रीतिमे उल्लेने प्रकृत शिक्षा
लाभ करसके उसकी चेष्टा करना चाहिये, किन्तु यह
आशाभी अब कहाँ है। पुरुषगण स्वयं तो सुशि-
क्षित हने, तब ना यह सम्भव होगा। प्रकृत शिक्षा
लाभ बिना उल्लेकी मनोप्रकृति न बदलेगी। जबतक
ज्ञानिके साथ धर्म बुद्धि न उपजेगी, जबतक ज्ञान
की उन्नति की अपेक्षा आत्माकी उन्नति अधिक
वाञ्छनीय करके प्रतीति न होगी, तबतक पुरुषोंने
रमणीयोंको झीड़ाकी सामग्री कहनेमें संकुचित न
होगा, अब जो जो सुशिक्षाका प्रभावसे, विशुद्ध
चरित्र औ भगवत परायण हौते ओहीनो व्यो व्यो सङ्-
धर्मिण्योंकीभी तदनुगामिनी करनेकी दिशे

आमरा इतिपूर्वे प्रमाण करियाहि ये, श्रीगण मूर्था हउन अथवा लेखा पड़ा जानून, ताहाते पुरुषगणेर विद्यार उन्नति मध्ये कोन असुराय वा विशेष आनुकूल्या हईते पावे ना । किन्तु ईहा अवस्था स्वीकार करिते हईवे ये, श्रीगणेर धर्मभाव पुरुषगणेर हृदयके अनुरजित करिते पावे । ताहादिगणेर आध्यात्मिक उन्नति विधान करिते पावे । प्राचीनकाले आर्य समाजगणेर कि चमत्कार भाव छिल ! ताहादेर मध्ये श्री पुरुष आध्यात्मिक प्रेमे बद्ध थाकितेन । एकत्रे ईश्वरोपासना, एकत्रे परोपकार त्रुत ओ याग यज्ञादि धर्मकार्य सम्पादन करितेन । ऐज्जुई श्रीर नाम सहधर्मिनी स्थापित छिलेन । तत्काले रमणीगण कतदूर पर्याप्तुई ना उन्नति लाब करिया छिलेन ! ताहा एकवार हृदयस्पर्श करिले मन आनन्दे नृत्य करिते थाके । से उच्छ्वास कोन काले से आमादेर मध्ये पुनर्कार देखा दिवे एमन आशा करा याय ना । कोन कोन आर्य-रमणी वेद जानितेन, एवम् शिष्यगणके ताहा पढ़ाईतेन । ताहारा आपनापन श्रीगण सहित धर्मेर गूढ-तत्त्व सकल लईया आलोचना करितेन । स्वर्गनाम एकेजन रमणी दशन शास्त्र उन्नत रूपे जानितेन । आधेदीय श्रोत्रमालाय अत्रिबन्शीय छईजन आर्य नारीर नाम देखिते पाओरा याय । गार्गी नामी एकजन रमणी ओ जनक राजार मन्त्रालय उपस्थित हईया राजवत्सल्य शिष्य सहित तर्क वितर्क करिया छिलेन । केना बलि-वेन ये, एमन रमणीर त्रु लाब पुरुषेर पक्षे मोलागेर विषय । ताई बलि, आमादेर मध्ये प्रकृत शिक्षा प्रणाली अवर्धित हउक । कि श्री, कि पुरुष, ज्ञान शिक्षार सहित ताहादिगणके धर्म शिक्षा प्रदान करिते हईवे । ताहा हईले आर कृतविद्या युवकगणके पशु न्याय आचरण करिते देखिब ना । शिक्षिता रमणीके ओ विलास-प्रिया देखिते हईवे ना । धर्मज्ञानेर सहित वे शिक्षा ताहाई प्रकृत शिक्षा । सेई शिक्षार अभावहई आमादेर मध्ये एत अवनतिर कारण लक्षित हई-तेछे । ताहाते सेई शिक्षा प्रणाली अवर्धित हय, तत्पक्षे विशेष रूपे ब्रह्मचर्य हउरा भार-तेर हितचिकीर्षु व्यक्ति माद्वारे उचित । यतदिन पर्याप्त ए प्रकार शिक्षा प्रणाली अवर्धित ना हउताछे, यतदिन श्री शिक्षा ग्रहित करा

हमने इसका पूर्वी प्रमाण कर चुका ओ स्त्री-गण मूर्था हों अथवा विद्यावतीहों उससे पुरुषोंकी विद्योन्नतिके विषयमें कोई बाधा वा विशेष आनु-कूल्य न हो सक्ता है । किन्तु यह अवस्था स्वी-कार करने पड़ेगा । कि स्त्रियोंका धर्मभाव पुरुष-गणके हृदयको अनुरजित और उन्नोंकी आध्या-त्मिक उन्नति विधान कर सकती है । प्राचीन काल में आर्य ऋषियोंको वैसा चमत्कारी भाव था ! उस समय स्त्री पुरुष आध्यात्मिक प्रेमे बद्ध रहतेथे, एकट्ठे ऊए ईश्वरोपासना, एकट्ठे परोपकार मत वो याग यज्ञादि धर्मकार्य किये करते थे । इसही निमित्त स्त्रीका नाम सहधर्मिणी रखा गया था । तत्कालमें रमणीगण कदांतक न उन्नतिलाभ करी थी ! उस बातोंकी एकवार समझनेभी मन आन-न्दसे नृत्य करता है । वैसा उवभाव किसही काल में जो फिर हमारे मध्यमें आया जायगा, ऐसी आशाही न की जाती है । कोई कोई आर्यरमणी वेद भी जानती थी और शिष्योंको पढ़ाती थी । उन लोगोंने अपना अपना स्वामीके सहित धर्मका गूढ़ तत्व आदि विषयोंमें बर्षा की करती थी । सुलभा नाम काके एक रमणी दर्शनशास्त्र उत्तम जानती थी । ऋग्वेदीय स्तोत्रमालाके मध्यमें दो आर्यनारियेका नाम, जोने अति वंशीयथी, देखा जाता है । गार्गी नामी रमणीने जनक राजाकी सभामें उपस्थित हो कर याज्ञवल्क्य ऋषिके साथ तर्क वितर्क किताश । कौन कहेगा जो ऐसी रमणी बल लाभ करना पुरुषके भाग्य है । सोई मैं कहता हूँ कि हमारे मध्यमें इसभाति प्रकृत शिक्षाप्रणाली प्रवर्धित हों । स्त्री होय अथवा पुरुष होय सभीको ज्ञान शिक्षाके सहित धर्मनीति मिखाना चाहिये । ऐसा होनेपर हम फिर कत ब्रह्म युवक गणको पशुके समान आचरण करने न देखेंगे । शिक्षिता रमणी-कोभी विलासप्रिय न देखने पड़ेगा । जो शिक्षाके सहित धर्मज्ञान मिला रहता है उसहीको प्रकृत शिक्षा कही जाती । वही शिक्षाका अभावहीसे हमारे मध्यमें इतनी अवनतिके कारण लक्षित होते हैं ! अब भारतके हित चाहनेहारे हरकिसीके यह उचित है कि जिस रीतिसे उस भाति शिक्षाप्रणाली प्रवर्धित होय तत्पक्षमें विशेष यत्न किया करे । जबतक इस प्रकारकी शिक्षाप्रणाली प्रवर्धित न

सम्पादकेर भ्रमनावशेष ।

(पूर्व प्रकाशिते पर)

आलीगढ़ हईते बराबर बाड़ फ़ैसनमें पौछि-
साहिलाम । त७परदिन बाप्पीयजलयाने गंगा पार
हईया त्रिह७ राजकीय लोहबन्धोय शकटे आरो-
हण पूर्वक मोजाकारपुरे उपस्थित हईलाम ।
मतिहारी हईते कोन प्रकार यान आसिया
फ़ैसन थकिवार सञ्जावना छिल, किन्तु ताहा
देखिते पाईलाम ना । अगत्या तथाय आना-
हारादि समापन पूर्वक एकथानि एक्का भाड़ा
करिया मतिहारी वाड़ा करिलाम । तथा हईते
मतिहारी ५२ माइल पथ । छई पार्श्व ई अतीव
विस्तृत हरितक्षेत्र । नीलकरदिगेर प्रतापे
ताहाते अन्य शस्य हईवार प्राय अवसर नाई ।
भूमधिकारीगण अर्थलोभे प्रजादिगके शस्योत्प-
पादने वक्षित करियाछेन । सहस्र सहस्र बिघा
भूमि एहेरूपे शस्योत्पादन विहीन थकिले
प्रजापूज छुंथी हईवे ना केन ? एकरुप इतभागा
देशके परित्याग करिया छुंथि आर कोन
प्रदेशके आश्रय करिवे ! मतिहारो पथ
अतीव दुर्गम ; मध्ये मध्ये छुराबागणेर हस्त
प्राण नाशेर आशङ्का आछे । स्थाने स्थाने नील-
कूटी ओ सामान्य सामान्य जनपद दृष्टि हर । आहार
सागरी भद्र भोजनोपयोगी किछुई पाओरा पाय
ना । साधारण पथिकवर्गेर गोवान वा अश्वान
राजपथेर उपर दिया बाईते पाय ना । सर्वदा
पथ नष्ट हईया बाईवार आशङ्कार, तथाय एहेरूप
राजकीय आदेश प्रचारित आछे । राजकर्म-
चारीवर्गेर शकटुलिर केवल राजपथ दिया बाई-
वार अधिकार आछे । एकस्थाने एकजन राजकीय
पथ प्रहरी आमाके एहे आदेश सुनाईया आमाके
निम्नपथ अवलम्बन पूर्वक बाईते बलिल, आमा
बलिलाम ये आमा राज राजेश्वरेर एकजन कर्म-
चारी, राजकीय कार्यो (धर्म प्रचारार्थ) मतिहारी
बाईव ताहाते से आर किछु बलिल ना, आमा
चलिया गेलाम । त७परदिन दिवा तृतीय प्रहरा-
वशने मतिहारीते पौछिलाम । एहे पथटूह
बाईते आमार येरूप कुंश हईयाछिल, बोध
करि आमार जीवने कथन येरूप हर नाई मति-

सम्पादकका भ्रमनावशेष ।

(पूर्व प्रकाशितके आगे)

आलीगढ़से बराबर बाड़ फ़ैसनमें आ पड़बा ।
पर दिन बास्वीयान (छीमार) पर गङ्गातीरे पर
उतरकर विस्तृत राजकीय लोहमार्ग (रेलवे) की
गाड़ी पर आरोहण पूर्वक मजापर परमे उपस्थित
छामा । मतिहारीकी सवारी आकर फ़ैसनमें खड़ी
रहनेकी सम्भावना थी, परन्तु सो देखनेमें न आयी,
सुतरा वहां कानाहारादि सम्पादन पूर्वक एकापर
सवार होकर मैं मतिहारीको यात्रा किया । मति-
हारी वहांसे ५२ मील दूर है । दो किनारे अतीव
विस्तृत शस्य भूमिसे सुशोभित है । नीलवानिका
प्रतापसे वहां दुसरी भांति अनाज उपजनेका अवसर
नहीं ! भूम्यधिकारीयोंभी धनलोभसे प्रजाओंको
शस्योत्पादन करनेमेंसे वञ्चित किये । सहस्र
बिघा भूमि विन अनाज उपजायी रहने पर प्रजाओं
ने दुखी क्यों न होगी ? दुर्भिक्ष ऐसा इतभाग्य
देशको परित्याग पूर्वक फिर कोन देशको आश्रय
करिग, मतिहारी जानेकी मार्ग अतीव दुर्गम है ।
बीच बीचमें दुरात्माओंके हात प्राण विनाशकी आ-
शङ्का रहती है । जगह जगहमें नीलकुटी औ सा-
धारण गावें देखनेमें आती है । आहार सामग्री
भद्र-भीजनोपयोगी कुछ नहीं मिलती । साधारण
राष्ट्रीयोंकी गो-यान वो अश्व-यान राजमार्ग परसे
चल नहीं सकती । सर्वदा पथ नष्ट होनेका डरसे
वहां इसभांति राजकीय आदेश प्रचारित है । केवल
राजकर्मचारीयोंकी उत्तम उत्तम शकट अनाज
की अधिकार दिया गया । एक जगहमें कोई एक
राजकीय मार्ग रहक दुम्भको यही आदेश सुनाकर
किनारे किनारे जाने कहा, मैंने बोला जो “मैं
राजराजेश्वरका कर्मचारी ‘ऊ’, सरकारी काममें
(धर्म प्रचारार्थ) मैं मतिहारी जाउंगा ” इतना
सुनकर वह फिर कुछ न बोला, मैं चला गया ।
अपराधमें मतिहारी पड़बा । इतनी दूर एकापर
जानेसे मेरा जैवा क्रोध ऊँचाया, जस भरम मैं कभी
ऐसा क्रोध न पाया । मतिहारीके अनन्तर शासनप्रकृति

शरुच्छ्रुत भूखोपाध्याय महाशय कर्तृक सादरे गृहीत
हईया। तथाय तिन दिवस यान करिशाहिलाग।
तथाय गिया। शुनिलाग ये आमार जन्य गजाफर-
पुरे स्थानीय उद्यम यान (नाम्पनी) प्रेरित हई-
याछे अथच आमार सहित साक्षात् हय नाई
देखिलाग आमार अथे आगमनेर जन्य गानवेर
व्यवस्था कार्याकारी हईलना ऐसी व्यवहार बनावडी
हईया छुःथके अथज्जाने आसिया पोछिलाग।
जानिलाग, “हरेरिछा गरियसी”।

श्रीयुक्त बाबू दरबारीलाल प्रभृति तथाकार
सहाय्य व्यक्तिगण क्रमेः सत्कार ओ अभ्यर्थना करिते
आसिलेन। तथाकार धर्मोत्साहिवर्गेर अनु-
रोधे तत्परदिन “सनातन आर्यधर्मेर कलङ्क-
मोचन” विमयिनी एकटी हिन्दी भाषा वक्तृता
करिलाग। এই वक्तृताय राष्ट्रीय ओ ब्राह्म समाज
आर्यधर्मेर गूढ मर्मस्थानवगतिजन्य ये ये कथा
ओ विज्जगणेर हार्मोदीपक दोषारोप करिया
पाकेन तत्त्वव्युक्ति, प्रमाणादिसह खण्डन करा
हईल। এই वक्तृता श्रोतृवृन्दके द्वितीय वक्तृता
अवगार्थ उद्भूत ओ उद्देश्ययुक्त करिया तुलिल।
आगिओ श्रीकृत हईलाग। तत्पर दिन तिन क्रोश
दूरवर्ती “तुरकुलिया” नामक स्थान दर्शनार्थ गमन
करियाहिलाग। एथाने पत्नीश्रीमतेर दृष्टातिरिक्त
किछुई नाई। तथाकार नीलकुटीर देवयान मान्य-
वर श्रीयुक्त बाबू श्यामाचरण घोष महाशयेर
मित्रोचित सत्कारे अनुगृहीत हईलाग। तिन
अति उदार, सरलचित्त ओ जनरञ्जन। ताहार
आश्रये अनेकगुलि लोक आछे। सकलेर
अनुरोधे तथाय एकटी आर्यभावोदीपनी वक्तृता
करिलाग। श्यामाचरण बाबुर व्याये, बत्ते ओ उद्-
साहे तथाय एकटी नाट्यशाला निर्मित हईयाछे।
तिनि এই छुःथ छुर्दिने भारतेर कल्याणार्थ संस्कृत
भाषा उद्कर्ष नाधन ओ आर्यधर्मेर पुनरुद्दीपना
द्वारा आर्यभाव प्रतिष्ठा करिबार उद्देशे आमा-
देर प्रस्तावित मूलधन एक लक्ष टाका संग्रहे
यत्नवान हईयाछेन, एजन्य समस्त भारत समस्तरे
ताहाके धन्यवाद दान करिवेन ताहाते सन्देह
नाई। तत्पर दिन मतिहारीते अन्त्यागत हईया
अपराह्णकाले “भारतेर उन्नति” विमयिनी
एकटी वक्तृता करिलाग। वक्तृतावसाने श्रोत-

पाध्याय कर्तृक समादर पूर्वक गृहीत छए वहां
तिन दिवस रहा। वहां यह सुननेमें आया, जा
वहां मेरे लिये मजाफरपुरमें सम्पनी गाड़ी भेजी
गयीथी, परन्तु मुझसे भेट न हुआ। देखा कि मेरा
आराममें आनेके लिये मानव की करी हुई व्यवस्था
नकाज हो गयी, ईश्वरकी व्यवस्था बरहोते छए
दुःखकी सुख मानकर जा पड़या। विचार लिया
कि “हरेरिछागरीयसी”।

श्रीयुक्त बाबू दरबारीलाल साहब आदि वहांके
प्रधान प्रधान पुरुषोंने क्रम क्रम करके सत्कार ओ
सम्बर्धना करने आये। वहांके धर्मोत्साहीयोके
अनुरोधसे तत् परदिन मैंने भाषामें एक वक्तृता करी
जिस्का आशय यह था कि “सनातन आर्य धर्मका
कलङ्क मोचन”। खीटीयान ओ ब्राह्म समाजवाले
आर्यधर्मका गूढ मर्मार्थ बिना जानें हथा ओ बिना
जनोके हार्मोदीपक जितना दोष लगाने रहते हैं,
वह सब युक्ति ओ प्रमाणादि सहित इस व्याख्यान
करके खण्डन किया गया। यह वक्तृता सुनकर
श्रोताओके इतना उत्साह हुआ कि दूसरी ओरभी
वक्तृता सुनें। मैंभी खीकार किया। तत् परदिन
वहांसे तिन क्रोश “तुरकुलिया” नाम स्थान देख-
नेको गये। यहां पत्नीश्रीमका दृष्टसे अधिक कोई
नवीन पदार्थ नहीं देखा। वहांकी नीलकुटीके देवान
मान्यवर श्रीयुक्त बाबू श्यामाचरण घोष महाशयका
मित्रोचित सत्कारसे अनुगृहीत हुआ। उनका
चरित्र आत उदार, सरल आ जनरञ्जन है। वक्तृ-
तेरे लोग उनका आश्रयमें रहा है। सबके अनु-
रोधसे मैंने वहां एक आर्यभावोदीपनी वक्तृता करी।
श्यामाचरण बाबुके व्यय, यत्न ओ उत्साहसे वहां
एक नाट्यशाला बनी। इस दुःख दुर्दिनमें भारत-
भूमिका कल्याणार्थ संस्कृत भाषाका उत्कर्ष साधन
ओ आर्यधर्मकी पुनरुद्दीपना करके आर्यभावकी
प्रतिष्ठा करनेके लिये जो हम एक प्रस्ताव केंडा है
यदर्थ एक लक्ष रुपये संग्रह होना चाहिये, उक्त
बाबू अब तन्निमित्त अर्थ संग्रहमें यत्न कर रहे हैं;
इस हेतु सारे भारतभूमि उनको उच्चो खरसे नि-
सन्देह धन्यवाद देते रहेङ्गे। तत् परदिन फिर
मतिहारीमें लौटकर अपराह्न समय “भारतकी उ-
न्नति” इस आशयपर मैंने एक वक्तृता करी।
वक्तृताकी अन्तमें श्रोताओने अत्यन्त सन्तोष प्रकाश
किया ओ बाबू दरबारीलालने वक्तृताकी पीयकता

বারিলাল বাবু বক্তৃতার পোষকতা করিয়া ধন্য-বাদাদি দিলেন। তাঁহারা আমাদিগের কার্যের বিশেষ সহানুভূতি প্রকাশ করিয়া অনেকেই সেই স্থানেই “ধর্ম প্রচারকের” গ্রাহক শ্রেণীভুক্ত হইলেন ও “ধর্ম প্রচারার্থ” ধনদানে স্বীকার করিলেন। অবশেষে দত্তবারিলাল বাবু অর্থ ও নূতন বস্ত্রাদি দ্বারা আমার সংকল্প করিলেন। এই উদ্বেজনার পর তথায় “মতিহারী, আর্ষ্যধর্ম প্রচারিণী” নামী একটি সভা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। পাঠকগণ শুনিয়া অবশ্যই সন্তুষ্ট হইবেন, যে উক্ত সভার কার্য এ পর্য্যন্ত উত্তমরূপে নির্বাহ হইতেছে, ও সভার যত্নে কতকগুলি বালক সংস্কৃত শিক্ষা করিতেছে। তথা হইতে প্রত্যাগমনকালে বারা, মতিপুর ও কাঁটা হইয়া মজাফারপুরে উপস্থিত হইলাম। মজাফারপুরে মুন্সেফ সাধনদয় শ্রীযুক্ত বাবু দ্বারকানাথ ভট্টাচার্য মহাশয়ের অনুরোধে তথায় একদিন অবস্থিতি করিয়া ভগবৎ রূপায় নির্বিকল্পে মুগ্ধের আদিয়া পৌছিলাম।

“ভগলপুর হইতে আমাদিগের কএকজন বন্ধু
লিখিয়াছেন”—উনবিংশ শতাব্দীর শেষাবস্থায়
প্রাচীন আৰ্য্যধর্ম পুনঃ প্রচার হইতে আরম্ভ হই-
য়াছে দেখিয়া আমাদের আত্মাদের আর পরিশ্রম
নাই। ভারতের পশ্চিম প্রান্ত হইতে পূর্ব প্রান্ত
পর্যন্ত ভারতীয় প্রাচীন ধর্মগান এক তন্ত্রে গাঁত
হইতেছে। দেশ হইতেছে যে, ভারতের সুপ্র-
ভাত সন্নিকট। আৰ্য্যধর্মের মাসিক পত্র নিয়মিত
বার্ষিক হইতেছে; মনে স্থানে ধর্মসভা সংস্থাপিত
হইতেছে, পশ্চিম দেশবাসী, বেহারবাসী, বাঙ্গালী
আজি এক তন্ত্রে ও উৎসাহে পরস্পারে মিলিত
হইতেছে। সমগ্র আৰ্য্যধর্ম প্রচার জন্য অর্থ
সংগ্রহ হইতেছে। ধর্ম একতা বন্ধনের মুখ্য উপায়
বলিয়া যাহাদের বিশ্বাস, না জানি তাঁহাদের মনে
কতই কঠোর আশা বসবতী হইতেছে।

সম্পাদক মহাশয় ! বিগত গ্রীষ্মকালে আপনি এখানে আগমন করিয়া এখানকার রাজকীয় ইন্সটিটিউট বিদ্যালয়ে হিন্দী ভাষায় ভারতের ধর্ম রক্ষা বিষয়িনীদের একটা বক্তৃতা করেন তাহা বোধ হয় আপনার স্মরণ থাকিবে। বক্তৃতা শুনি বনান্তে অত্যন্ত আনন্দিত ও উৎসাহিত হইয়া বেহারবাসী শ্রোতৃ-বর্গ কলিকাতা ভাগলপুরে একটা ধর্মমন্ডা সংস্থাপন করিবার ইচ্ছা করেন। অতঃপর এ বিদ্যালয়ের

विशेष सहानुभूति देखाकर वज्रतेरे महात्मा उसही स्थानमें “धर्म प्रचारक” के पद पर उठे और “धर्म प्रचारार्थ” अर्थ दान करनेमें स्वीकृत हुए। अतःमें दरबारीलाल बाबूने धर्म और नवीन वस्त्रादिसे मेरा विदाय-सत्कार किया। इसही उत्तेजनाके आगे वहाँ “मतिहारी आर्यधर्म प्रचारिणी सभा” नाम एक धर्मसभा स्थापित हुई है। पाठकगण इतना सुनकर अवश्यही सन्तुष्ट होंगे कि उक्त सभाका कार्य अवतक उत्तम रीतिसे निर्वह होता जाता है और सभाका प्रयत्न करके कितने विद्यार्थी संस्कृत भाषा सिख रहे हैं। मतिहारीसे लौटते समय वारा, मतिपुर और कांठी होते हुए मज्जापुरमें आ पड़ेंगे। वहाँके सुन्दर साधुहृदय श्रियुक्त बाबू द्वारकानाथ भट्टाचार्य महाशयका अनुरोधसे वहाँ एक दिन विश्राम कर भगवत् कृपासे आनन्द पूर्वेक सुस्तरमें आ पड़ेंगे।

भगलपुरसे हमारे एक मित्रने लिखा है “शता-
ब्दी जनधीसकी अन्त अवस्थामें आर्यधर्मका पुनः
प्रचार होना आरम्भ हुआ देखके हमारी आनन्दकी
कुछ सीमा न रही। भारतवर्षकी पश्चिम प्रांतसे
लेकर पूर्वप्रांततकमें भारतीय प्राचीन धर्म गाथा
समान स्वर मिलाये गाई जाती है। ऐसा बोध
होता है कि भारतकी सुप्रभात अति निकट हुआ
है। आर्यधर्मका मासिक पत्र नियमित प्रकाश हो
रहा है। स्थान स्थानमें धर्मसभा बनती जाती है,
पश्चिमीतर देशवासो, वेदारी औ वङ्गदेशी आज एक
तन्त्र वो उत्साहसे परस्पर मिल रहे हैं, सनातन
आर्यधर्म पुनः प्रचारार्थ धन एकट्ठा हो रहा है
जिन्होंने यह विश्वास है कि धर्मही मनुष्योंकी
एकता बन्धनका प्रधान उपाय है, न जाने उन्हेकि
मनमें कितना सुखकी आशा बलवती होती होगी !

सम्राटक महाशय ! आपने जो विगत बीसकाल में यहाँ आ कर अनख राजकीय चंदेजी विद्यालयमें एक बक्तृता करी थी, जिस्का आशय यह था कि “भारतवर्षीय धर्मरक्षा” को आपका स्मरण रहा होगा। आपकी बक्तृता सुनकर यहाँके बेहारी श्रोताओंने अत्यन्त आनन्दित और उत्साहित हुए धर्मसभा स्थापनको इच्छा की। जिस्के आपने एक विद्यालयमें द्वितीय प्रसिद्ध मोनारर सम्मेलन

শয়ের প্রবেশে ছটকটী তলাও নামক স্থানে একটি সভা হইয়াছে। প্রথমতঃ রক্ততলেই সভার (১) সংস্থাপন হয়। পরে সভাগণের উৎসাহে ও যত্নে একটী সভাগৃহ নির্মিত হইয়াছে। উহার নাম আপনাদিগের যুগ্মের সভার নামানুসারে “ভাগল-পুর আর্থ্যধর্ম প্রচারিনী সভা” রাখিত হইয়াছে। এতি রবিবার অপরাহ্নে ভক্তি শাস্ত্রাদি পাঠ হইয়া থাকে। অবকাশভাবে আমি সকল সভায় উপস্থিত হইতে পারি না। মধ্যে একদিন গিয়া সভার কার্য বিবরণ দেখিয়া যার পর নাই প্রীতি লাভ করিয়াছি আমি যেদিন তথায় গমন করিয়াছিলাম, দেখিলাম সভার কার্য শেষ হইবার পর সভারই ব্যয়ে কতকগুলি সন্ন্যাসীকে পরিভোজন পূরক আহার করান হইল। উপরোক্ত পণ্ডিত মহাশয় ও সভার অপরাপর কতকগুলি সভাদিগের সহিত আমার কথোপকথন হইল। তাহাদের নিত্যই ইচ্ছা যে মহাশয় মধ্যে মধ্যে এখানে আগমন করিয়া বক্তৃতা করুন। আপনার প্রতি ইহাদের বিশেষ ভক্তি ও বিশ্বাস দেখিলাম। উত্তরঃ সময়ে সময়ে আপনার আগমন (২) হইলে উক্ত সভার বিশেষ উপকার হইবার সম্ভাবনা তাহা লেখা বাহ্যিক মতে।”

ভারতীয় গ্রন্থাবলী। ১ম খণ্ড।

(সমালোচনা)

অনেক দিন হইল এই পুস্তক আমি সমালোচনার্থ আমার হস্তগত হইয়াছে। যথা সময়ে সমালোচনা করিতে না পারিয়া গ্রন্থকারের নিকটে লিখিত আছি। গ্রন্থখানি ত্রিযুক্ত বাবু রাজেন্দ্র নাথ দত্ত প্রণীত কলিকাতা মোদ প্রকাশ যন্ত্রে উত্তম কাগজে ও উত্তম অক্ষরে মুদ্রিত, মূল্য ১, টাকা মাত্র। ইহাতে প্রাচীন ভারতবর্ষের গ্রন্থাবলীর

(১) আর্থ্য ধর্মদিগের ধর্ম প্রথমতঃ গিরিগুহা, নদীতট, ও রক্ততলে হইতেই বাখ্যাত ও বিস্তৃত হইয়াছিল।

ধঃ প্রঃ সং

(২) মধ্যে মধ্যে বিদেশীরা আর্থ্যধর্মের মায়ায় লিপ্ত হইয়া লোভ করা আমার একান্ত ইচ্ছা। অন্যান্য অনেক দেশে হইতে ও এইরূপ আত্মা পন্থাদি প্রাপ্ত হই। জৈন ধর্ম প্রচার কার্য আরম্ভ হইলেই আমরা মহাশয় গণের সহযোগিতা সহায়তা করিতে পারিব।

লাব” পর এক সভা স্থাপিত জুই হই। সভাকা কার্য প্রথম প্রথম এক জনকী কায়ামে জমা করতা ধা(১)।

ইসকা অন্তর সম্মুখি উল্লাহ ও যত্ন করে যাছ এক সভা হুই বনী হৈ। মুংগরমে জী আপলোগীকী সভা হৈ উমছীকা নামানুসারে ইস সভাকা নাম “মগলপুর আর্থ্যধর্ম প্রচারিনী সভা” রাখা गया। ছা রবিবার অপরাহ্নে যছা ভক্তি শাস্ত্রাদিকা ব্যাখ্যান জমা করতা হৈ। অবকাশ কম রচনে পর মৈ ছা রবিবার সভামে উপস্থিত ন হো সক্তা জ। থোই ছী দিন বীতা মৈ এক দিন সভাকা কার্য বিবরণ দেখিত পরম প্রীত হো আয়া। জিস দিন মৈ বছা गया था, देखा कि सभा विसर्जन होनेपर सभाका व्ययसे कितने माधुसदासीको भरणे मित्र भोजन कराया गया। उपरोक्त पण्डित महाशय औ कितने सम्योकि साथ मेरी वज्जत बातचित ऊइ। उन्होकी एकांत इच्छा यह है जी आप बीच बीचमें यहाँ आगमन पूर्वक व्याख्यानदि दिया करें। मैं देखा कि वर लोग आपपर वही विश्वास बोध रा रखते हैं। सुनरां बीच बीचमें आपका शुभागमनसे (२) उक्त सभाका विग्रह उपकार होनेकी सम्भावना है, सो लिखनाही वाञ्छल्य मात्र।

প্রাপ্ত পুস্তককী সমালোচনা।

ভারতীয় গ্রন্থাবলী। ১ম খণ্ড।

বজ্জত দিনোমে যছ পুস্তক সমালোচনার্থ মৈ পাস ধরা জমা হৈ। যথাসময় পর জী মৈ সমালোচনা ন কর সক্তা ইসলি প্রথকারে নিকট বড়া লজিত জ। অধিক্ত বাবু রাজেন্দ্রনাথ দত্ত মহাশয় ইম গ্রন্থ বনায়া কলকাতা সীমাক্ষয় যত্নে উত্তম পত্রপর বঙ্গাধরে মুদ্রিত জমা; মূল্য ১, মাচ হৈ। ইসমে “প্রাচীন ভারতবর্ষীয় গ্রন্থাবলী

(১) আর্থ্য ঋণিয়োকী ধর্ম পছন্দ পর্বত-গুহা নদী-কিনারে, তরুতল আদি পবিত্র স্থানহীমে অঙ্কুরিত হোকার চারোদর फैलाया।

ধঃ, প্রঃ, সং,

(২) बीच बीचमें देशदेशान्तरीय आर्थ्यधर्मोंके सही महात्माओंके प्रागमन-सुल्लभ करना मेरी भी एकांत इच्छा है। अन्यथा अनेक दूरदेशवर्षी इस भांति आदेश पत्र पाया जाता है। मारायणकी रूपाने “धर्मप्रचार” कार्य आरम्भ होनेसे ही पर हम उक्त महात्माओंके अनुरोध सम्यक् रीतिसे रखा कर

कः प्रः सं।

विवरण, ताहादेर काल निर्णय ओ संक्षिप्त समा-
चना प्रकाशित हईयाछे ।

एई ग्रन्थानि आद्यापाठ पाठ करिले
लेखकेर अधवसाय, वस्त्र, परिश्रम ओ बहुदर्शीताय
प्रशंसा ना करिया थाका वाय ना, पुस्तकेर उप-
क्रमिका ४१ पृष्ठाय समाप्त हईयाछे । तंपरे
गीतगोविन्द ओ कृष्ण प्रेमसागर, कादम्बरी, हर्म-
चरित, चण्डिका शतक, रामायण, महाभारत, पात-
ञ्जल, महाभाष्य, भोजचम्पू, नीतिरत्न, वैराग्य
शतकादि कतिपय संस्कृत ग्रन्थ समालोचित
हईयाछे । ग्रन्थकारेन ग्रन्थावलीर समालोचना
पाठे संस्कृतविद् शास्त्ररहस्य-रस-प्रवीण पण्डित
पूज्य ये पारितोष प्राप्त हईयाछेन एरूप बोध
हय ना । समालोचनार संक्षिप्तता वशतः ई हटुक
अथवा अन्यान्य गुरुतर कारणे ई हटुक समालोचित
ग्रन्थुनिर माधुर्या, लालित्य, भाव ओ रसादिरूप
अमृतेर मोरत यथायोग्यभावे विस्तारित हय
नाई । संस्कृत ग्रन्थेर समालोचना करिते हईले
वरु संस्कृतभाषाय करि, अतीव चिन्ताशील ओ
महापण्डित हओरा आवश्यक । वर्तमान भारत
तान्त्रिक पूरुष अति विरल, एजना भारत हितैमि
संस्कृत ग्रन्थ समालोचक रुन्द यथेष्ट चेष्टा करिया ओ
आमादिगेर मनोभिलाष पूर्ण करिते पारितेहेन
ना किन्तु ताहादिगेर साधु चेष्टाके आग्रा शत-
वार धन्यावाद दितेछि । भारतीय ग्रन्थावलीर समा-
लोचना काले लेखक ग्रन्थ ओ तत्प्रणेतृवर्गेर
नमस्कार निरूपन जन्य ईउरोपीय पण्डित पूजेर
साहाय्य लईते बाध्य हईयाछेन । भारतवर्षेर
ऐतिहासिक विवरणेर विशुद्धता जन्य ई ग्रन्थकार
भारतेर कथा जिज्ञासा करिबार निमित्त भारत
त्याग करिया ईउरोपे गमन करियाछेन । उप-
क्रमिका भाग लिखिबार समये ओ तिनि परकीय
साहाय्य ना लईया कृतकार्य हईते पाऐन नाई ।
याहा हटुक ग्रन्थकार महाशयेर महायत्न प्रसूत
पुस्तकथानि ये भारतेर समादरेर धन हईयाछे
ताहाते सन्देह नाई, केन ना एतए पाठे भार-
तेर अनेक पुरातन तरेर विषय विदित हओरा
वाय ; एतावए विविध ग्रन्थ हईते संगृहीत हईले ओ
विविध महामुल्य विषयेर एकत्र समावेश प्राप्त
नई ।

का विवरण, उस सबोका काल निरूपण ओ संक्षिप्त
समालोचन लिखे गये हैं ।

इस ग्रन्थका आदिसे लेकर अन्ततक पाठ करने
पर लेखकका अध्यवसाय, यत्न, परिश्रम ओ वज्ज-
दर्शीताकी प्रशंसा किया बिना रहा नहीं जाता है ।
पुस्तककी उपक्रमिका ४१ पत्रमें समाप्त हुई ।
तिसके आगे गीतगोविन्द ओ कृष्णप्रेम-सागर, काद-
म्बरी, हर्मचरित, चण्डिकाशतक, रामायण, महा-
भारत, पातञ्जल महाभाष्य, भोजचम्पू, नीतिरत्न,
वैराग्यशतक आदि के एक संस्कृत ग्रन्थकी समा-
लोचना करी गयी । ग्रन्थकारने जो ग्रन्थावलीकी
समालोचना करी है, सो पठनानन्तर संस्कृतवित्
शास्त्ररहस्य-रस प्रवीण पण्डितपुंज जो परितोष
प्राप्त हुए होंगे ऐसा बोध नहीं होता है । चाहे
समालोचनाकी संक्षिप्तता करके होय अथवा अन्यान्य
गुरुतर हेतुही करके होय समालोचित ग्रन्थोंके मा-
धुर्य, लालित्य, भाव ओ रसादि रूप अमृतका सुगन्ध
यथायोग्य रीतिमें विस्तारित नहीं हुआ । संस्कृत
ग्रन्थकी समालोचना करनेमें प्रवृत्त होनेपर स्वयं सं-
स्कृत भाषामें कवि, अतीव चिन्ताशील ओ महा-
पण्डित होना चाहिये । वर्तमान भारतवर्षमें ता-
दृश पुरुष अति विरल है, इसलिये भारत-हितार्थी
संस्कृत ग्रन्थ समालोचक मङ्गली यथेष्ट चेष्टा करके
भी हमारा मनोभिलाष पूर्ण नहीं करके है, परन्तु
उन्हींकी जो साधु चेष्टा है, तन्निमित्त हम शतवार
धन्यवाद देते हैं । भारतीय ग्रन्थावलीकी समालो-
चनके समय लेखकने ग्रन्थ ओ उसका रचनेहार ह-
टुक समय आदि निरूपणके निमित्त यूरोपीय प-
ण्डित पुञ्जकी सहायता लेना अंगीकार किया । भा-
रतवर्षके ऐतिहासिक विवरणकी विशुद्धताके
लिये ग्रन्थकारने भारतकी बातें जिज्ञासार्थ भारत-
कोड़कर यूरोपमें चला गया । उपक्रमिका भाग
लिखनेके समयभी लेखकने परकीय साहाय्य बिना
कृतकार्य न हो सका । जोही, ग्रन्थकार महाशयका
महा यत्नसे प्रकाश किया हुआ पुस्तक जो भारतका
समादर का धन है तिसमें सन्देह नहीं, क्योंकि इस
पुस्तक पठनसे भारतके अनेक प्राचीन तल विदित
हुआ जाता है । एतावत विविध ग्रन्थोंसे संगृहीत
हुआ है, किन्तु इसभांति विविध महामुल्य विषयका
समावेश समालोचनाकी संक्षिप्तता के कारण नहीं हो सका ।

पाठुवार सम्पूर्ण उपयुक्त ताहार आर सन्देह नाई । तनि क्रमे क्रमे आरओ समालोचना प्रकाश करिवेन विदित हईया आमरा । परम सुखी हईलाम । १म खण्ड अपेक्षा २म खण्ड आमादिगेर आशाभूत रूप अधिकतर फलदान करिया । सुखी करिवे, जेधरेर निकट ईहार एकान्त प्रार्थना रहिन । भारत गौरव प्राथो पाठक महोदय गणेर पाठार्थ उपक्रमनिका भाग हईते निम्ने कियदंश उद्धृत करिलाम ।

अद्य उनविंश शताब्दीते महात्मा उइलियाम जेम्स गार्न सहकारे ये माहित्यके ग्रीक हईते सम्पादित, लाटीन हईते विस्तृत एवं अन्यान्य सकल भाषा हईते अमिष्टे बलिया गियाछेन, सेई मनोहर माहित्यशास्त्र एही भारतवर्ष बहकाल पूर्वे प्रसव करियाछेन ; अधुनातन विज्ञानविद् महत्प्रतीक्षा पण्डितगण सतत अमिष्ट आलोचन करिया ये समुद्र विज्ञान सूत्राविकार करितेछेन, अन्वेषण करिले सेई समस्त वा तदभूत आविष्कारा पर्ण कूटरे अवस्थान करिया फलमूल भोजी भारतीय महवीर्गण बहकाल पूर्वे करिया गियाछेन । गेलिया, डेल्टिया प्रभृति प्रतीक्ष राजनैतिकगण ये सकल नीति अमिष्टेकरे ईउरोपीय राज सभाय विवृत करेन एवं याहा अधुनातन प्राय समस्त ईउरोपीय राजनीतिर भिन्न स्वरूप हईयाछे । सेई समस्त कथा अति विशद रूपे बहदिन पूर्वे दूर अग्निक उद्धृत करिया गियाछेन एहीरूप यावकीय विषय धैर्यद्वारे पुष्कर पुष्कराणे अतुलमान करिले अमिष्टे देखा बाय, एक्के ये समस्त एकटी प्रतीक्षा मेधारी लोकेर नवप्रसूत बना हय, ताहा अना सकलेर पक्षे नूतन हईलेओ भारतेर पक्षे कदापि नूतन नहै ; ईहा बहकाल पूर्वे प्राच्य भारतीयगण ग्रन्थमध्य समिवेशित करिया गियाछेन ।

“ भारतेर महिमा निबिडतमसाक्षर । भारत भूमि मानव समाजेर कि कि महान उपकार साधन करियाछेन, भारत सन्तानेराओ भाविया देधेन किना सन्देह । आमरा जानि ये वर्तमान समुद्रा ईउरोपीय जातिगण गिहदी देश । हईते धर्म, रोगेर निकट हईते व्यवस्था ओ राजनीति एवं आशेर निकट हईते विज्ञान, माहित्य, इतिहास दर्शन, ओ गिम्पे प्राप्ति हईयाछेन । किन्तु दोष करि अनेकेह जानेना ये कि सकल जाति प्राचीन

साह पनिका सम्पूर्ण योग्य है, तिसमें सन्देह नहीं । उन्होंने कम क्रमसे और भी समालोचना प्रकाश करेगी इतना विदित होकर हम परत सुखी हुए । ईश्वर के निकट हमारी यही प्रार्थना रही कि द्वितीय खण्ड प्रथम खण्डवी अपेक्षा हमारी आशाके अनुसार अधिक फल देगी । इस ग्रन्थकी उपक्रमनिका भागसे कियदंश नीचे प्रकाश किया जाता है, जिसे हमारे भारतके गौरव चाहनेवाले पाठक महीदयगण पाठ करेंगे ।

“जिस साहित्यकी जनवीश गताब्दीमें महात्मा सरविलिम जोनस ग्रीकसे सुसमादित, लाटिनसे विस्तृत आ अन्याय भाषाओंमें सुमधुर कह गये, भारतवर्ष वही मनोहर साहित्य शास्त्रकी बहकाल पूर्वही प्रसव करी है, वर्तमान कालके विज्ञानवित्त महत् प्रतीक्ष पण्डितगण सर्वादा मस्तिष्क आलोचन कर कितना विज्ञानमूल आविष्कार कर रहे हैं, अन्वेषण करने पर तत् समस्त अथवा तत् समान आविष्कारिया पाई जाती है जितना के फल मूल भोजन करनेवाले भारतवर्षीय महर्षिगण पर्याकुटिरमें विराजते छे बहकाल पूर्वही का गये हैं । सेलियावेकी, वालटियर, प्रभृति प्रतीक्ष राजनैतिक पण्डितगण जितनी नीति युरोपकी राजसभा में विवृत किया औ जिन सबकी अधुनातन प्राय समस्त युरोप राजनीतिकी भित्ति करके मानली गई वह समस्त बातें बहदिन पूर्वही हमारे कुरुकुलमन्त्री कणिक वितार करके कह गये हैं इस रीतिसे हरक विषय धैर्य सहित पुंखानुपुंख रूपसे अनुसंधान करने पर स्तब्धही देखा जाता है कि आज काल युरोपके कोई मेधारी पुरुष जिस बातकी नयी करके प्रकाश करते हैं वह अन्यके लिये नूतन हो सकी, किन्तु भारतके लिये कदापि नूतन नहीं ; क्योंकि बहकाल पूर्वही भारतवर्ष वासीने उस बातकी ग्रन्थमें प्रकट कर गये ।

पर्याकुटिरमें विराजते छे बहकाल पूर्व ही कर गये हैं । सेलियावेकी, वालटियर प्रभृति प्रतीक्ष राजनैतिक पण्डितगण जितनी नीति युरोपकी राजसभा में विवृत किये औ राजन सबकी अधुनातन प्राय समस्त युरोप राजनीतिकी भित्ति करके मानली गई, वह समस्त बातें बहदिन पूर्वही हमारे कुरुकुलमन्त्री कणिक वितार करके कह गये हैं । इस रीतिसे हरक विषय धैर्य सहित पुंखानुपुंख रूपसे अनुसंधान करने पर स्तब्ध ही देखा जाता है, कि आजकाल युरोपके कोई मेधारी पुरुष जिस बातकी नयी करके प्रकाश करते हैं वह अन्यके लिये नूतन हो सकता किन्तु भारतका लिये कदापि नूतन नहीं ; क्योंकि बहकाल पूर्वही भारतवर्षवासीगण उस बातकी ग्रन्थमें लिख गये ।

“भारतवर्षकी महिमा निबिडतमसाक्षर है । भारतभूमीने मनुष्य समाजका क्या क्या महान उप-

आर्या वंशोद्भव हिन्दूगुरु शिष्य, साहित्य, संगीत, विज्ञान, दर्शन, ज्योतिष, सकल शास्त्रों में भारतभूमि ही है। प्रथम जन्मग्रहण करिष्य। भारतवासी हिन्दू दिग्वेग चरण सेवा करत अन्यान्य देशों विस्तृत होइया पड़े। यथन पाण्डित्याभिमान ग्रीस और रोम अतल-जलधि-तलशायी छिल, यथन समुदाय जगदानी अज्ञाने समाच्छन्न छिल, तथन हिन्दूगणों में पणित, दर्शन, न्याय, इतिहास, साहित्य, संगीत, चिकित्सा, वाणिज्य, शिल्प, राजनीति, दण्डनीति, विज्ञान, ज्योतिष, एवं वार्त्ता और शस्त्र आपना देव उन्नति पराकाष्ठा दर्शन करिष्य। एवं अपर जाति समूहों में असंभाव्य अवलोकन करिष्य। उन्मेषरे हासिते छिल। यतदिन उत्पन्न, सूर्य विराजित थाकिवे, यतदिन पृथिवीत विद्यार मोहिनी मूर्ति थीवत थाकिवे, यतदिन मत्तों अपलाप करिते केहई समर्थ होइवेना। ततदिन आमादेव पित्रपुरुषों दिग्वेग अक्षय कीर्ति एवं यशोराशि धरि परिमाणे अहरह जगतीतले घोषित होइते थाकिवे। एकजन करुणी पणित बलिग्राहेन ये भारतवर्ष मनुष्यजाति प्रथम प्रधान आवास छन। वेग्रीमें अख्याति ईउरोपीय पणितदिग्वेग मत्त धरेना मेई ग्रीस भारतवर्ष छाय। मात्र। ग्रीकेरा याह किछु शिष्यग्राहेन तन्निमित्त ताहारा भारतवर्ष निकट बगोछिलेन। मक्केटीस प्रवृत्ति तद्विषय भारत वयोदिग्वेग ग्रह पाठ करिष्य। याह किछु करिते समर्थ होइया छिलेन; पृथिवीर यजन अवधि धर्म और अन्यान्य विषय मत्त याह किछु लिखित होइया छे, ताहार आदि छन भारतवर्ष। पृथिवीर मत्त वास्तविक एकटी मात्र भाषा रहिग्राछे, वेटी संस्कृत, आर वावतीर भाषा संस्कृत होइते उन्नत होइया छे। हिन्दूगण पृथिवीर आदिम जाति, आर सकल ताहारे शाखा मात्र। ईउरोपे यत अधिक संस्कृत अन्वेषण होइते छे; ततई पणित हिन्दू दिग्वेग सम्मान करिते छे। एकजन जर्मनीर पणित बलिग्राहेन ये हिन्दू धर्म आर उन्नत धर्म आर नाई। आर सकल धर्म ताहार नकल नाई। तनि बलिग्राहेन ये आश्चर्य

कार साधन किया है, उस बात पर मात संतान भी ध्यान देता है या नहीं सो भी सचेष्ट रहल है। हमारे पास यह प्रगट है कि वर्तमान समस्त युरोप जातिगणने यंजदी देश में धर्म रोमके निकटने व्यवस्था वो राजनीति और ग्रीसके निकटने विज्ञान साहित्य इतिहास दर्शन वो शिल्प सीखे हैं किन्तु बोध होता है बज्जतेरे मनुष्य यही विदित नहीं कि यह सब जाति प्राचीन आर्य कुलके हिन्दू गुरुके शिष्यो थे। साहित्य, संगीत, विज्ञान, दर्शन ज्योतिष आदि जितना शास्त्र है सब ही भारतभूमिने प्रथम जन्मग्रहण कर भारतवासी आर्यलोगोंके चरणसे वा पूर्वक अन्यान्य देशों बिहार छये जिस दिनमें पाण्डित्याभिमान ग्रीस और रोम अतल-जलगीतल शायो थे जिस दिन सारी जगतवासी अज्ञान तम साच्छन्न थे, उन दिनोंमें हिन्दूगण गणित, दर्शन, न्याय, इतिहास, साहित्य, संगीत, चिकित्सा, वाणिज्य, शिल्प, राजनीति, दण्डनीति, विज्ञान, ज्योतिष और स्मृति वो शस्त्रशास्त्र अपनीकी अपनी उन्नतियों पराकाष्ठा दर्शन कर वो और और जातियोंकी असम्यक् अवलोकन करके उंची स्तरमें चंसती हैं। जितना दिन चन्द्र सूर्य वने रहेंगे जितना दिन पृथिवी पर विद्याकी मोहनी मूर्ति जीवित रहेंगी, जितना दिन सत्यका अपला करन में कोई समर्थ न होया ततना दिनतक ह्यो पित्रपुरुषोंकी अत्य कीर्ति और यशोराशि भर परिमाणने दिन पर दिन संसारमें विरोधित होती रहेंगी। एक जन फारसी पणित ने कहा है, जो भारतवर्ष मनुष्य जाति का प्रथम प्रधान निवासके स्थान है। जिस ग्रीस देश की सुनाम युरोपीय पणितगण सर्वदा किया करते हैं, वही ग्रीस भारतवर्ष की छाया भाव है। ग्रीक मण्डलीने जो कुछ सीखा, तन्निमित्त उन लोग भारतवर्षके निकट गणी थे। मक्केटीस प्रवृत्ति तत्त्वज्ञ गने जो कुछ करनेमें समर्थ होया था, सो भारतवर्षके ग्रह पठनसे होया; पृथिवी के दृष्टिकाल से धर्म वो अन्यान्य विषय जो कुछ जहाँ कहीं लिखित है, भारतवर्षको उसका आदिस्थान जानना। पृथिवीके मध्यमें वास्तविक एक मूल भाषा है उसका नाम संस्कृत; और यावतीर भाषा संस्कृत से उत्तपन्न हुई है। आर्यगणने पृथिवीके आदिम जाति था, और सब कोई उनकी शाखा मात्र। युरोपमें जितना अधिक संस्कृतकी चरचा बढ़ती जाती है, उतनाही पणितगण हिन्दूओंकी मर्यादा भटति जाति है। एक जन जर्मनीर देशीय पणितने कहा है जो आर्यधर्मके समान उन्नत धर्म नहीं है, अन्यान्य धर्म उसका नकल मात्र। उन्होंने और भी कहा है जो ब्राह्मणके निकट पृथिव



“एक एव स्रष्टुर्धर्मे निधनेहपाश्रूयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्तु गच्छति ॥”

“एक एव स्रष्टुर्धर्मे निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्तु गच्छति ॥

३ य भाग । } शकाब्द १८०२ ।
३१ संख्या । } कार्तिक पूर्णिमा ।

३ य भाग । } शकाब्द १८०२ ।
३० संख्या । } कार्तिक पूर्णिमा ।

राम गीता ।

(पूर्व प्रकाशिते पर) .

आदौ च मध्ये च तथैव चास्त्यते
भवं विदित्वा भयशोक कारणं ।
हिंसा समस्तं विधिवादचोदितं
भजेत् स्वमात्मानं मया खिलामनां ॥ ५५ ॥

जीवन्मुक्त पुरुष संसारके आदि, अन्त और मध्ये
सर्व प्रकार भयशोक के हेतु जानिया विधि बोधित
समस्त कर्म-मार्गके परित्याग पूर्वक अखिल जीव
स्वरूप भूत आमाके निज स्वरूप सदासह अमेदि
बोधे चिन्ता करिया थाकेन ।

এই পরিদৃশ্যমান সংসারকে ত্রক্ষ হইতে বিভিন্ন
ভাবে চিন্তা করিলেই এতাবৎ ভয়ের কারণ হইয়া
থাকে । দৈতবুদ্ধিই সমস্ত বিপত্তির মূল । ত্রক্ষই
সমস্ত বস্তুর বীজ, অজ্ঞানতা বশতঃ এই জগৎকে
ত্রক্ষ হইতে পৃথক পদার্থ বলিয়া অনুভূত হইয়া
থাকে মাত্র । যখন তাবৎ বস্তুর সত্যকে ত্রক্ষ

राम गीता ।

(पूर्व प्रकाशित के आगे)

आदौ च मध्ये च तथैव चान्ततो
भवं विदित्वा भयशोक कारणं ।
हिंसा समस्तं विधिवादचोदितं
भजेत् स्वमात्मानं मया खिलामनां ॥ ५५ ॥

जीवन्मुक्त पुरुषने संसारको आदि अन्त वो मध्य
में सर्व प्रकार भय वो शोक के हेतु समझ कर विधि
बोधित समस्त कर्म मार्गको परित्याग पूर्वक अखि-
ल जीवके स्वरूप-भूत मुझको निज स्वरूप सत्ता से
अभेद बुद्धि करके चिन्ता की करती है ।

इस परिदृश्यमान संसारको ब्रह्मसे पृथक बु-
झने हीसे एतावत भयका कारण ऊझा करता है ।
दैतबुद्धिही सारी विपत्ति का मूल है । ब्रह्मही स-
मस्त वस्तुका बीज है, अज्ञानता प्रवृत्त इस जगतको
ब्रह्मसे पृथक पदार्थ करके अनुभव होता है । जब
तावत्ब्रह्मकी सत्ताको ब्रह्मसत्ता करके प्रतीति ऊझा

महा बलिया। प्रतीति जगिबे, तखनई मनुष्य
छाच्छदा संसार-बन्धन हईते मुक्त हईबेन ।

आज्ञानाभेदेन विभावयन्निदं

जानातृभेदेन मयाज्ञानमुदा ।

यथा जलं वारिनिधौ यथापयः

क्षीरे विद्योन्मूलानिले यथानिलः ॥ ५७ ॥

केनना वे समये तिनि एई समस्त जगत्के
निज सत्तामह अवेद वृद्धि ते चित्ता करेन तखन
पयोधिते प्रविष्टे नद्यादिर जल, दुग्ध राशिते
मिश्रित दुग्ध, महाकाशे घटाकाश, महावायुते
भद्रादि वस्तु निर्गत वायुर ग्याय येरूप आत्मा ओ
जगत् अवेदभावे प्रतीयमान हय तद्रूप परमात्मा
स्वरूप आमार सहित तौहार आत्मा-महाके
अभिन्नभावे विदित हयेंन ।

इत्थं यदिक्षेत्तहि लोक संस्थितो

जगन्मृषैवेति विभावयेन्मुनिः ।

निराकृतवाङ्मृति वृद्धि मानतो

यथेन्द्रभेदो दिशि दिग्भ्रमादयः ॥ ५९ ॥

लोकमण्डली मथास्थित मुनिपद वाच्य आनि
वाङ्मृति यदि एई प्रकारे जगत्के दर्शन ओ करेन,
तथाच तिनि एई जगत्के असत्य बलिया विदित
हयेंन, केनना श्रुतिवृद्धि प्रमाण द्वारा जगत्के
सत्यता आनि निराकृत हईयाछे । येमन दृष्टि
विभ्रम जना चक्षे विचक्षेत्र, उडरादि दिग्गुले
दिगन्तर आन्ति एवं डेक्के नीलवर्ण कटाह तुल्य
पदार्थ आकाशेर आच्छादन रूपे प्रतीत हईया
थाके तद्रूप आनीर निकट एई जगत् भ्रमदृष्टि
मिथ्या बलिया बोध हय ।

वावन्मपशेदगिलं मदात्मकं

तावन्मदाराधनातत्परो भवेत् ।

अस्मान्मरतुर्जित भक्ति लक्षणो

यस्तस्य दृश्येऽमहर्निशं हृदि ॥ ६० ॥

महदिन पर्याप्त एई समस्त जगत्के आमार
(डेक्केर) स्वरूप वृद्धि ते दर्शन ना करिबे, तावत्-
काल सेई परमोपादेय भाव लाभार्थ आगाके
दृष्टि, स्थिति ओ प्रलय-कर्ता ईश्वर-स्वरूप आनिना
माधक आराधना करिबे । सेई माधनाय वे वाङ्मृति
दृष्ट दिश्यामी हईया प्रेमलक्षणा (कथन रोदन,
कथन हासा, कथन वा नृता, कथन वा गानादि)

वही तबही मनुष्य : ये संसारबंधनसे मुक्त
होगी ।

आत्मस्य मे न विभावयन्निदं

जानात्य मे न मयात्मनस्तदा ।

यथाजलं वारिनिधौ यथापयः

क्षीरे विद्योन्मूलानिले यथानिलः ॥ ५८ ॥

क्यों कि जब उन्होंने समस्त जगतको निज स-
त्ताके साथ अभेद वृद्धि करके चत्ता की करती है उस
समय उनकी ऐसी प्रतीति होती कि जैसा सस्र में
प्रविष्ट नद्यादिका जल, दुग्ध राशिमें मिला हुआ
दुग्ध, महाकाश में घटाकाश, महावायुमें भद्रादि
से निकलता हुआ वायु है । इस प्रकार मुझमें (प-
रमात्मा में) निज आत्म सत्ताको अभिन्न भावमें वि-
दित होगी ।

इत्थं यदिक्षेत्त हि लोक संस्थितो

जगन्मृषैवेति विभावयेन्मुनिः ।

निराकृतवाङ्मृति वृद्धि मानतो

यथेन्द्र, भेदो दिशि दिग्भ्रमादयः ॥ ५९ ॥

लोक मण्डलीके मथास्थित मुनिपद वाच्य आनिपु-
रुष यदि इस रीति में जगत दर्शन करते रहै, तथाच
उन्होंने इस जगतको असत्य करके मानता है, क्यों
कि श्रुति श्रुति प्रमाण में जगतको मिथ्या करके स-
मझ लिया । जैसा दृष्टि भ्रम में चन्द्रमाको द्विचन्द्र
मालूम पड़ता, उत्तर आदि दिशाको और कोई दि-
शा बोध होती, उपरमें नील रं की कड़ाई का न्याय
जैसा किसी पदार्थने आकाशको आच्छादन रखा है
ऐसी प्रतीति होती है, तद्रूप इस जगत भ्रम दृष्टिके
समान ज्ञानीके निकट मिथ्या अनुभव होता है ।

यवन्न पश्येदखिलं मदात्मकं

तावन्मदाराधनातत्परो भवेत् ।

अस्मान्मरतुर्जित भक्ति लक्षणो

यत्सस्य दृश्येऽमहर्निशं हृदि ॥ ६० ॥

जबतक इस सारे जगतकी मेरा (ब्रह्मका)
स्वरूप करके दर्शन न करेगा तावतकाल उन पर-
मोपदेय भाव लाभार्थ साधकने मुझको दृष्टि स्थिति
प्रलय करनेहारे ईश्वर स्वरूप जानकर आराधना
करते रहेंगे । उस साधना पर ध्यान पुरुषों ने दृढ़
विश्वासी होकर प्रेम लवणा (कभी रोदन, कभी
हास्य, कभी नृत्य, कभी गानादि) से भक्ति युक्त होता

ভক্তিয়ুক্ত হয়, আমি তাহার হৃদয়ে জ্ঞান স্বরূপে দিবানিশি প্রকাশিত হইয়া থাকি ।

মুখ্য পুরুষ প্রথমতঃ সাধুচেষ্টা বিগর্হিত কার্য্য পরিত্যাগ পূর্ব্বক পবিত্র কার্য্য, শাস্ত্রপাঠ, সংস্কারাদিকরিবে ; নিঃসংশয়-চিত্তে গুরু বাক্যে বিশ্বাস স্থাপন করিয়া প্রেমার্ত্ত হৃদয়ে ঈশ্বরের প্রতি ভক্তি যুক্ত হইবে । ভক্তি সাধনা দ্বারা সর্বদা ঈশ্বর সঙ্গার মহানুভব বশতঃ ত্রুষ্ণ দৃষ্টির অভ্যুদয় হইবে, এই অবস্থাই ঘনীভূত হইলে আত্ম সম্বন্ধে বিনোদ হইয়া একত্র প্রাপ্ত হইয়া যাইবে ।

ক্রমশঃ

ধর্ম প্রচারকের ৪র্থ বর্ষ ।

কাল সাগরের প্রবল তরঙ্গ রাশি ভেদ করিয়া ধর্ম প্রচারক ৩য় বর্ষ অতিক্রম করিলেন । সামগ্রী সকল যতই কেন সুখদ ও প্রিয় হউক না, চিরদিন আমাদেয় অধিকারে থাকে না । ধর্ম প্রচারকের সহিত অনুগ্রাহক গ্রাহক ও পাঠক মহাত্মাগণের তৃতীয় বর্ষের পরম সুখকর সম্বন্ধের শেষ হইয়া গেল । এক্ষণে পুনর্নবায়ুপ্রাণে সমুদ্বিজিত হইয়া তাঁহাদের সহিত আত্মীয়তা বর্ধনে ৪র্থ বর্ষের নিমিত্ত ধর্ম প্রচারক উৎসাহ যুক্ত চিত্তে প্রবৃত্ত হইলেন । ভারতভূমি বহুদিন হইতে বিজাতীয় রাজ শাসনাধীন থাকিয়া, বিজাতীয় ভার পূর্ণ শত ২ আর্ষ্যধর্ম বিদ্রোহের মুখ বিনির্গলিত অনার্য্য উপদেশ আকর্ষণ করিয়া, সামাজিক, রাজনৈতিক ও ধর্ম সম্বন্ধীয় বিবিধ বিপদের তাড়নায় বিপদগ্রস্ত হইয়া, সময় স্বভাব-স্বলভ নানাবিধ অনার্য্য কার্য্যাদি অনুষ্ঠান করিয়া মেরুপে কদাচার পূর্ণ ও পুণ্যপথ পরিভ্রষ্ট হইয়াছে তাহাতে প্রাচীন ভারতের পরমাদরণীয় ও সর্ব ধর্মের মূল, মতের ভাণ্ডার স্বরূপ সনাতন আর্ষ্যধর্মের পুনঃ প্রচারাণ ভারতীয় ভাষায় প্রকাশিত “ধর্ম প্রচারক” যে এক বৎসরও সুস্থ দেহে জীবিত থাকিয়া ভারতীয় শ্রীচরণ সেবা করিতে পারিবে, এ আশা ছিল না । ব্রহ্মগণের নিশ্চেষ্টতা, নব্য সভ্যগণের চঞ্চল প্রকৃতি প্রথমতঃ আমাদিগকে যে রূপে নিরুৎসাহ প্রদর্শন করিয়াছিল, তাহাতে নীরাস হওয়াও বিস্ময়ের বিষয় নহে ; কিন্তু ভারতের বর্তমান দুরবস্থা

হৈ, উনকে হৃদয়ে জ্ঞানস্বরূপ জ্ঞান মৈ দিবানিশি প্রকাশিত হই রহিতা জ ।

জো পুরষনে মুক্তি চাহতি হৈ, উনকা পহলা যত্ন করনা চাহিয়ে কি সাধু চেষ্টাকা বিরুদ্ধ কার্য্য পরি-
ত্যাগ পূর্ব্বক পবিত্র কার্য্য, শাস্ত্র অধ্যয়ন, মত্মসং-
গীর্দিকের, নিঃসংশয়চিত্ত জ্ঞেয় গুরুকী বচনো পর
বিশ্বাস কর প্রেমার্ত্ত হৃদয় মে ভক্তিয়ুক্ত হোব ; ভক্তি
কী সাধনামে সর্বদা ঈশ্বর সত্বাকা সং বোধবশতঃ
ব্রহ্মদৃষ্টি উপজোগী ; ইহ অবস্থা অব ঘনীভূত হোগো
তবহী আত্মসত্বা ব্রহ্মসত্বামে বিলীন হোকর একত্ব
প্রাপ্ত হই জায়গী ।

ক্রমশঃ

ধর্ম প্রচারক ৪র্থ বর্ষ ।

কাল সমুদ্র কে প্রবল তরঙ্গ সমূহ ভেদ কর ধর্ম প্রচারক ৩য় বর্ষ অতিক্রম করিয়া । দ্বিতীয় সামগ্রী জিতনাহী ক্যোন সুখদ ও প্রিয় হোয় উনহোনে চিরদিন হামারে অধিকার মে ন রহিতা হৈ । ধর্ম প্রচারককে সহিত অনুগ্রাহক গ্রাহক ও পাঠক মহাত্মাশ্রীকে তৃতীয় বর্ষকা জো সুখকর সম্বন্ধ যা সব অন্ত হই গয়া । অব ফির নবানুরাগ মে সমুদ্র জিত হো কর উনহোকে সং আত্মীয় ভাব বর্ধনার্থ চতুর্থ বর্ষমে ধর্ম প্রচারক উৎসাহযুক্ত চিত্তে প্রবৃত্ত হইবে । ভারতভূমি বহুদিনমে বিজাতীয় রাজশাসনাধীন রহকর, বিজাতীয় ভার মে পূর্ণ শত শত আর্ষ্যধর্ম বিদ্রোহীকে মুখবিনির্গলিত অনার্য্য উপদেশ স্বপ্নাকর, সামাজিক, রাজনৈতিক ও ধর্ম সম্বন্ধী বিবিধ বিদ্রোহকা তড়পনমে বিপদগ্রস্ত হো কর, কাল স্বভাব-স্বলভ নানাবিধ অনার্য্য কার্য্য আদি অনুষ্ঠান করকে জিস ভাতি কদাচার পূর্ণা বো পুণ্যপথ পরিভ্রষ্ট হো চুকী, উমমে যত্ন আশা ন থী কি ধর্ম প্রচারক, জোনে প্রাচীন ভারতকে পরমাদরণীয় বো সর্ব ধর্মকা মূল সত্বকা মণ্ডারস্বরূপ সনাতন আর্ষ্য ধর্মকা পুনঃ প্রচারাণ ভারতীয় ভাষা মে প্রকাশিত হো রহা হৈ, এক বর্ষা নীরোগ শরীর মে জীবিত রহকর ভারতী কী শ্রীচরণ সেবা কর সকেগা । বৃদ্ধীকী নিশ্চেষ্টতা বো নব্য সম্বন্ধ-
লীকী চঞ্চল প্রকৃতি জমকো জিস ভাতি নিরুৎসাহ দেখার্ত্ত থী উমমে নীরাস হোনা নী কুছ আশ্রয় নহী ; কিন্তু ভারতকী বর্তমান দুর্দশা আনন্দ

आर्त्तनाद-सह आमादिगके “धर्म प्रचारक” प्रकाशार्थ बारम्बार उत्तेजना करिल। दुर्बल मन नीराश हईयाँ भोग्यादयम हईल ना। भारते सनातन आर्य धर्मर पुनः प्रचार जीवनेर प्रधान त्रतमालार मध्यमणि करिया लईलाम। विघ्न विनाशन विधातार अन्न चरण अरण करिया शुभकार्ये प्रवृत्त हईलाम। धर्म विवेक वर्गेर वाक्य मिथ्या करिया, भारतेर भावी आशा-पथ विमोचन करिया धर्म प्रचारक श्रुत उद्देश्य साधन जन्य भगवान् श्रयः सहायता करिते लागिलेन, अतः धर्मानुरागी अनुग्रहक आहकगणेर संख्या वृद्धि हईते लागिल। ताहार अन्नपद सेवनेर अने धर्म-प्रचारक अनुग्रह पत्रावलिर नाय ये अकाले अन्नित हईवे ना ताहार पूर्ण आशा हईयाछे। भारतेर दिगेशे ईहार येरूप समादर देखा नाय, समालोचकगणेर निकट ईहार येरूप भावगतीरता रक्षित हईयाछे, आहक ओ पाठकगण येरूप प्रीतिपूर्ण-हृदये ईहाके अहण करिया थाकेन ताहाते आर्य धर्मोत्साहि मात्रेई परमानन्दित हईवेन सन्देह नाई।

मानव समाजेर एकमात्र कल्याणकर सनातन धर्म प्रचार ओ अदेश हित साधनई धर्म प्रचारक गुरु उद्देश्य, एई जन्यई भगवान् श्रयः निज मङ्गल-मय हस्त द्वारा सर्वप्रकार विघ्न विपत्ति हईते ईहार कोमल मस्तक रक्षा करितेछेन। सेई सर्वभूतानुराग्यार एकांत प्रेरणा ना हईले देश विदेशीय साधु हृदय महोदयगण कथनई धर्म प्रचारक प्रति सरल आक्षेप-सह समादर करितेन ना। धन्य ताहार महिमा !!! ताहार कृपाय शुक मरु-भूमिते पयोधि प्रवाह बहिते थाके, पाषाणे ओ बीज अकुरित हय। तिनि अन्नद्वार द्वारा अतीव महं कार्य ओ साधन करिया लयेन। “धर्म प्रचारक” निज बहुल प्रचार द्वारा एवं निज भावानुल सामयिक पत्रादिर साहाय्य कयेक वर्षेर मध्येई भारतेर एकटी अवस्था परिवर्तनेर अभिनय दर्शने समर्थ हईयाछेन। स्पष्ट देखा याईतेछे ये आर्यगणेर विशेष विवरण जानिवार जन्य, आर्य धर्मर निगूढ तत्त्व आयत करिवार जन्य अक्षणे शत शत आर्य सन्तान व्याकुल हृदय हईया उठिया-

कर हमको धर्म प्रचारकका प्रकाशार्थ बारम्बार उत्तेजनाई। दुर्बल मन नीराश हो कर भी उत्तमको न छोड़ा। भारतवर्ष में सनातन आर्य धर्मका पुनः प्रचाररूप महत्त कार्यको मैंने मेरे जीवनकी प्रधान त्रतमालाका मध्यमणि कर लिया। विघ्न विनाशन विधाताके अभयचरण स्मरण पूर्वक मैंने इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुआ। धर्मका हर्ष करनेहारोकी बचने मिथ्याकर, भारतकी भविष्यत आशाकी पथ सुक्त कर, धर्म प्रचारकका शुभ उद्देश्य साधनार्थ भगवान् ने स्वयं सहायता करने लगी। धीरे धीरे धर्मानुरागी अनुग्रहक आहकको संख्या बढ़ने लगी। उनके अभयपदकी सेवा का फल से धर्म प्रचारक जो अनुग्रह पत्र समूह के न्याय अकालमें अन्नित न होगी तिसकी पूर्ण आशा हुई। भारतवर्षके देश देशान्तरमें जिस भांति समादर देख पड़ता है, समालोचकों के निकट भी इसका जिस भांति भावगतीरता रक्षित हुई है, आहक वो पाठकोने जिस भांति प्रीति पूर्ण हृदयसे इस पत्रका ग्रहण किया करते हैं इससे निःसन्देह बोध होता है कि हर एक आर्य धर्मी तसही परमानन्दित होगी।

मानव समाजके एक मात्र कल्याणदायक सनातन धर्म प्रचार वो निज देश हित साधन ही धर्म प्रचारक का गुरु अभिप्राय है, इस लिये भगवान् ने निज मंगलमय हस्तके द्वारा सर्व प्रकार विघ्न विपत्तिसे इसका कोमल मस्तक को रक्षा कर रही है। वही सर्वभूतानुराग्यार की एकांत प्रेरणाविना देश विदेशीय साधु हृदय महोदयगण कभी धर्म प्रचारक के प्रति सरल आक्षेप पूर्वक समादर न करते। धन्य उनकी महिमा !!! उनकी कृपा होने पर जलहीन उधरभूमिमें समुद्रकी धारा बहा करती है, पथेर पर भी बीज अकुरित हुआ करती है। उन्होंने सामान्य क्षुद्र व्यक्तिके द्वारा अत्यन्त महत्त कार्य भी साधन कराय लेते हैं। धर्म प्रचारक ने निज बहुत प्रचारके द्वारा और उन पत्रों की सहायता से जितना ने धर्म प्रचारकका अनुकूल भाव युक्त है कई ही वर्षके मध्यमें भारतवर्षकी एक अवस्थाके परिवर्तनका अभिनय देखने में समर्थ हुआ। स्पष्ट देखा जाता है जो आर्य लोगोंकी विषय विवरण बिदितार्थ, आर्य धर्मका निगूढ तत्त्व आयत्न करनेके निमित्त आज काल शत शत आर्य सन्तानों ने

हैन। आर्यविज्ञान, आर्यदर्शन, आर्यधर्म आदि आन्दोलनर तन्त्र समूह राशिर उन्नत तन्त्र-मालाके पदाघात करिरा पृथिवीर तावत् सभा समाजके श्रद्धा आकर्षण करिराछे। धर्म आर्य-गण ! तोमरा कबे धराधाम परित्याग करिराछ ताहार निर्णय नाई किछ तोमादेर साधु पवित्र जीवन देगिवार जन्य आज जगत् चकल हईराछे। हा ! तोमादेर आश्चर्य योग-विज्ञान रहस्य तोमादेर सन्नेई बुझि परिसमाप्त हईल ! तोमा-देर प्रकृति देव दुर्लभ। तोमादेर गौरव श्रुति ते भारत जाग्रत हईतेछे। धर्मप्रचारक तोमादेर उच्चतम पवित्र भावेर विज्ञापन पत्र। तोमादेर उन्नतजना, तोमादेर बलवीर्य, तोमादेर तपोमर्यादा, तोमादेर दूरदर्शी तद्वि-ज्ञानादि द्वारा धर्मप्रचारकेर अक्ष सुदृढ़ करिरा देओ ; तोमादेर तेजस्विनी बुद्धिरे प्रेरणा करिरा धर्मप्रचारकेर शुभ उद्देश्य सम्पादन कर। भगवानेर कृपावृष्टि एव तोमादेर शुभ-कामनार अभा वृष्टि धर्मप्रचारकेर महत्के पतित हईले आर किछूटि टिछा करि ना।

धर्मप्रचारकेर आहार महत्समयगण वेदपु-सदाशर ओ उन्नत ताहाते आगरा आश्रित हृदये विश्वास करि ये नियमित मूल्य ओ डाक करदि जगु औहादिके पृथक पत्रादि द्वारा आर उद्देशित करिदे हईवे ना। केनना अर्थीभावे ये कार्येर विश्रुतना घटिरा थाके, ईहा औहारा उन्नतपु-विहित आछैन। औहादेर परमादरेर धर्मप्रचा-रकेर कोन प्रकार कुशल हय तज्जना बोध करि औहारा अवश्य यत्नान थादिबैन। भगवान् धर्मप्रचारकेर अनुग्राहक आहक, पाठक, सहायक, सहस्रान्तक ओ अन्यान्य सर्व साधारणेर कल्याण विधान करन। तनि आतोकेर धर्मपथेर नेता हउन ; समस्त जीवके औहार दिके आकर्षण करन। आगरा येन औहार प्रकृत सेवा पूर्वक निज २ कर्तव्य साधने कृतार्थ हईरा औहार अभय-पद लात करिते पारि। धर्मप्रचारक ४४ वर्षे येन औहार उन्नत ओ आर्य शांतिविशेष रूपे प्रकाश करिते मार्ग हय।

व्याकुल हृदय हो उठा है। आर्य विज्ञान आर्य दर्शन, आर्यधर्म आदिकी चर्चा का तरंगने समुद्र राशी की उक्तुंग तरंग मालाको पदाघात करके पृ-थ्वीकी तावत् सम्य समाजकी श्रद्धा आकर्षण करी है। धर्मही आर्यगण ! आप लोगोंने कबधराधाम परित्याग किया तिसका निर्णय नहीं किन्तु आ-प लोगोंके साधु पवित्र जीवन दर्शनार्थ आज ज-गत् चंचल हुआ है। हा ! आप लोगोंके आर्य योग विज्ञानका रहस्य, बोध होता है कि आप लो-गोंके संगहीमे परिसमाप्त हुआ। आप लोगोंकी प्रकृति देव दुर्लभ थी। आप लोगोंकी गौरव की छनीमे भारत जागता जाता है 'धर्मप्रचारक' आप लोगोंके उन्नतम पवित्र भाव का विज्ञापन पत्र है। आप लोगोंकी उत्तेजना, आप लोगोंकी बल बीर्य आप लोगोंकी तपो मर्यादा, आप लोगोंकी तत्वज्ञान आदि से धर्मप्रचारकके अंग सुदृढ़ हो सु-शोभित कर दीजिये ; आप लोगोंकी तेजस्विनी बुद्धिकी प्रेरणा करके धर्मप्रचारक का शुभ उद्देश्य सम्पादनकी जिये। भगवानकी कृपावृष्टि और आप लोगोंकी शुभ कामना की सुधावृष्टि धर्मप्रचारक का महत्के पर गिरनेसे फिर और कुछ भी चिन्ता नहीं।

धर्मप्रचारकके ग्राहक महोदय माडली जिस माति सदाशय और भद्र हैं उसमें हम आशायुक्त हृदयसे विश्वास करी है जो नियमित मूल्य वो डाक कर आदिके निमित्त उन्होंको पृथक पत्राद से फिर उसका न पड़ेगा क्योंकि उन्होंने उ-न्नतरूप विदित है जो अर्थभाव से कार्यका दृढ-त गड़बड़ हो जाता है। तन्निमित्त हमने बोध करता है जो उन्होंने इस आशयपर अवश्यही यत्न वान रहेंगे कि जिस तरहसे उन्होंके परमादरणीय 'धर्मप्रचारका' किमही माति लेश ना होय। २-गानने धर्मप्रचारकके अनुग्राहक ग्राहक, पाठक, सहायक, सहानुभाजक वो सर्वसाधारणके कल्याण विधान करें, समस्त जीवोंको अपने और आकर्षण करें। हमको भी यह सामर्थ्य है कि उन्होंकी प्रकृ-त सेवा पूर्वक निज निज कर्तव्य साधनसे कृतार्थ हो उनका अभयपद लाभ कर सकें और धर्मप्रचा-र भी चतुर्थ वर्षमें उनका तत्व और आर्य मा-हात्मा विशेष रीतिसे प्रकाश करने में समर्थ होय।

चाक चिन्ताबलि ।

१। यिनि आपनाके बिम्ब-नियन्त्रार सेवक मने करिया स्वकीय ओ परकीय उन्नति साधने यत्न-वान हसैन, ऐश्वर्य स्वयं तौहार सहायक ; उन्नति तौहार आञ्छाधीन থাকिया सनैः२ कार्याक्षेत्रे आधिपत्य करे । परश्रीकातर कुद्राशय मनुष्यांगण सेई महात्मार रथा अपयश महस्य कण्ठे कीर्तन करिलेओ तौहार कति नाई । भगवाननिज मङ्गल हस्ते विजय पताका धारण करिया तौहार उन्माह बर्कन करैन ।

२। यदि चिरजीवी हईते चाओ, तवे मृत्यु हईवार पूर्वैई मरिया बाओ । किरूपे मरिते हर, ताहा ई समाधिस्थ मौनी योगीके जिज्ञासा कर, तिनि नीरव থাকियाओ स्फोटोस्फुरे वूकाईसा दिवैन । तिनिई मरियाछैन, साहाके आर मरिते हईवे ना ।

३। विहग ! तूनि यখন देवदुर्लभ अमृत-माथा मधुर अरे गहैते२ उर्क आकाशे उड़िते-छिले, तখন आनि अवाक हईसा तौमार दिके ताकाईसाछिलाम, किन्तु तूनि पुनर्कार अवनीते अवतरण करिया तपुलकणा भोजने प्ररुद्ध हईसाह देखिया अतीव दुःखित हईलाम । पृथिवीर आकर्षण शक्ति तौमाके पुनराकर्षण करियाछे । विहग ! एवार तूनि एरूप बेगे ओ एत उर्के उछटीन हईवे, से येन संसार तौमाके आर धारण करिते ना পারে ।

जीवेर निद्रा भङ्ग ।

जन्मावधि आनि संसार सुखे आसक्त । केन ना संसार भिर आर कोन सुखद सामग्री आनि कथन दर्शन करि नाई । एही सुखेर संसार परि-त्याग करिते हईवे, एही निद्रारूप बार्ता अग्रण करिलेओ मन चिन्ताहूल ओ भयविह्वल हईसा उठे । संसारेर विचित्र, मोहिनी मूर्ति, भोगविलासोर रमणीयता शैशव हईतेई आमार हृदयके अधिकार करियाछे । आनि संसारेर दाम हईसा संसारेर अलग्न থাকिया आपनार जीवनके सुखी मन

चाक चिन्ताबली ।

१। जोने अपनेको बिम्ब नियन्त्राका सेवक मानकर स्वकीय ओ परकीय उन्नति साधने यत्न-वान होय, ईश्वर स्वयं उनका सहायक बनते हैं ; उन्नति ने उनकी आञ्छाधीन रहकर धीरे २ कार्यक्षेत्र में आधिपत्य करता है । परश्रीकातर, कुद्राशय, मनुष्यों ने यदि उन महात्मा का वृथा कुयश सहस्र कंठसे कीर्तन किया करे तब भी उनकी हानि नहीं । भगवान ने निज मंगल हस्त में विजयपताका लिये ज्ये उनका उत्साह बढ़ाया करता है ।

२। यदि चिरंजीव होने चाहो तब मृत्यु होने का पहिले ही-मरजाओ । किस रीति से मरने होता, सो बह समाधिस्थ मौनी योगीकी जिज्ञासा करो । उन्होने नीरव रहकर भी स्पष्टाक्षरसे सम-भाषि देगा । उन्होने मरा है जिन्हें फिर मरते न होगा ।

३। विहग ! तू जब देव दुर्लभ अमृत मिला-या ऊँचा मधुर स्वरसे गाते ऊँच उंची अकाशपर उड़ता था उस समय में बचन अन्य ज्ये तेरा और ताक रहा था परंतु तुझे पुनर्कार धरित्रीपर उतर कर चावल का दाना खाने में प्रवृत्त ऊँचा देख के अतीव दुःखित ऊँचा । पृथ्वी की आकर्षण शक्ति तुझको पुनरा-कर्षण करी । विहग ! इस देर तू इस भांति बेगने और इतने उंचे में उड़ता रहेगा जैसे कि संसार पुष्प को फिर पकड़ न सके ।

जीवका जगना ।

मैं जन्मसे संसारके सुखोंमें आभक्त हो रहा हूँ, क्योंकि संसारको छोड़कर और कुछ सुखदायक वस्तु कभी नहीं देखनेमें आया । इस संसारके सुखको छोड़ ना पड़ेगा, इस निद्रारूप कालीको सुमनेसे मन चित्ताकुल औ भयविह्वल हो जाता है । संसार का विचित्र चित्र, मोहिनी मूर्ति, भोगविलासोंको रमणीयताने बालक पनहीसे मेरे हृदय पर अधि-कार कर छोड़ा है । मैं संसारका दास हो कर, औ उल्ला अलग्न रह कर अपने जीवन सुखी मानता हूँ ! मैं अपने प्राणने भी संसार को अधिक प्यार

करि। आमार प्राण इहतेओ संसारके आमि अधिक प्रियतर छान करिया पाकि। यथन मनै हय वे, एही विस्तृत गृह अट्टालिका उदानादि भू-सम्पत्तिर आगिहै एक मात्र अधिपति, तखन आमार हृदये आञ्जगौरव आर धरे ना; यथन भावि ये एही परम रूपवती सुवृत्ति आमार महर्षिचारिणी हईया जीवन यौवन आमारहै सुख सम्पर्कन ओ परिचर्याय उद्गमग करियाछैन, यथन देखि अपत्य-गण वेशभूषा ओ भोजनादिक जना एकमात्र आमा-रहै मुखेर दिके चाहिया रहियाछे, यथन अवलोकन करि ये भृत्य ओ परिचारिकागण निर्भीत ओ सतर्क भावे आमार आञ्जग प्रतीक्षा करितेछे, यथन देखि रथ, गज, बाजि राजि आमारहै जना द्वार-देश सम्पन्न, तखन आमार नयन इहते अवि-रल धारय आनन्दाश्रु बहिते থাকे। यथन आमार विद्या ओ यशः-सुखमेर मोरते दशदिक आमोदित हईयाछे जानिते पारिलाग, यथन आमार साधारण जन समाजे अनुर्थित कार्या-कलाप राज घारे सम्मानित हईते लागिल, यथन शत २ लोकैर मुखे आमार प्रशंसा धनि नृत्त करिते आरम्भ करिल से दिन आमि सुखेर उच्चतम मोपाने आरोग्य करिलाग। संसार आमाके एही रूपे नाना सम्पद-सुवासित सुख शय्या शोराईया समादर पूर्वक सुखनिद्राय अभिभूत करिया दल। आमि मनैर अहुरागे, कलनार बेगे कतहै आश्चर्य २ सुख देखितेछिलाग, हृदये येन सुधा रूष्टि हईतेछिल; किन्तु हा! अकस्मात् आमाके के डकिल! आमार सुखेर निद्रा भङ्ग हईया गेल। एखन विमर सम्पदेंर कोमल शय्या येन कर्तकाकीर्ण बोध हईतेछे; सुखमय संसार येन विमर विषधरब आमाके दंशन करितेछे; भोग विलास विकट बेश आमाके डय प्रदर्शन ओ ताड़ना करितेछे। चिरदिनेर आशा फेडके येन आज उमर भूमि प्रतीति हईतेछे। आज सम्मानके पूतिगङ्गेर समान, आञ्जगौरवके घोर रौरव महानरक तुला ओ प्रतिष्ठाके शूकरी बिष्ठा मृदुष बलिया घृणा बोध हईतेछे। आज वाम-भवन कारागार ओ स्त्री पूजादि ताबत सामग्री एकत्र सम वेत हईया येन आमार वस्त्र शृङ्खल रचना करिया-छे एहीरूप अनुमान हईतेछे। हाय! आमार सुख-अप-समाकुल निद्रा के अकस्मात् भङ्ग करिल,

करता छ। जब मनमें आता है कि इस विस्तृत गृह औ अट्टालिका फुलवाड़ी आदि भूस्वत्तिका में ही मालिक छ, तब मेरे हृदयमें इला आत्मगौरव आमिलता कि फूलानसमाता; जब मनमें देखता छ कि यक्ष परम रूपवती सुवृत्तिने मेरी सहधर्मि-रिणी होकर जीवन यौवनको मेरे ही सुख औ परि-चर्याके लिये उत्सर्ग किया है, जब देखता छ सब लड़केवाले वेश भूषा औ भोजनादिके लिये मेरेही ओर ताक रहे हैं, जब देखता छ कि भृत्य औ परिचारिकागण विभीत औ सतर्क हो हो कर मेरी ही आज्ञाकी प्रतीक्षा करते हैं, जब देखता छ कि रथ, गज, बाजि राजि मेरे ही लिये द्वारदेशमें सु-सज्जित रहते हैं, तब मेरे आँखोंसे अविरल आनन्दकी औश्र बहना करती है। मैं जानता छ कि जब मेरी विद्या औ यशके फूलके सुगन्धमे दसो दिशा सुवासित हो रही है, जब साधारण जनसमाजमें मेरा किया काज राजद्वार में सम्मानित होने लगे, जब संकड़ों आदमीके मुखमें मेरी प्रशंसा की ध्वनि नृत्य करने लगी, तब ही मैं सुखके उच्चतम मोपान पर आरो-हण किया। संसारने मुझको इसी भांति नाना सम्पत्ति सुवासित कुसुमशय्यापर सोलाकर आदरपूर्-वक सुखनिद्रामें अभिभूत कर डाला। मैं अपने मनके अहुराग से, कलनारके बेगसे किला आश्चर्य आश्चर्य रूप देखता था जैसा हृदयमें अमृत की छष्टि हो रही थी; किन्तु हाय! अकस्मात् मुझे किसने प्रकाश। मेरी सुख नींद टूट गई। अभी विषय सम्यक्की कोमल शय्या कलकाकीर्ण से बूझ पड़ती है ॥ सुखमय संसार जैसा विषम विषधरका सा दंशन करता है, भोग विलास विकट रूपसे मुझ को डराता औ धमकाता है, इतने दिनोंका आशा छै जैने उधरभूमि कीसी देख पड़ती है। आज सम्मानकी पूतिगङ्गेके समान, प्रतिष्ठाकी शूकरी बिष्ठा के तुल्य और आत्मगौरवकी महाघोर रौरव नरकके सदृश जान पड़ते हैं औ घृणा लगती है। आज रहनेका घर कारागार सा हो गया है। औ अनु-मान होता है कि कौ क्या पुनः सबको सब इकट्ठे हो कर मुझकी बांधनेके लिये बेड़ी प्रस्तुत किये है। हाय! मेरी सुखरूप समाकुल निद्राकी अकस्मात् भङ्ग किया। किसी पाथरकी भी भेदन करने-

काहार पानाग भेदनौ समधुर बाणी आमार कठेर हनरेर मर्मदेशे प्रवेश करिया आमाके जाग्रत करिल ! !

अपूर्व रूप माधुरी दर्शने हृदय पुलकित हईया उठिल । हाय ! चैतन्य दान करियाई आमार त्रिनि कोथाय लुकाईलेन आर देखिते पाईलाम ना ! मन ताहारई जन्म पागल हईल । तौहाके ना देखिले आर धाकिते पारितेछि ना । से रूपेर आदर्श नाई, से मधुर बाणीर उपमा नाई ; त्रिनि विद्याधर प्रकाशित हईयाई आमाके सचेतन करिया कोन लीला पट्टेर अन्तराले लुकाईलेन, आर तौहार तबू पाईतेछि ना । संसार आमाके बारम्बार बलितेछे ये उहा तौमार अमूलक चिन्ता, तौमार कलना मात्र, उहा सप्रोच्छागेर एकटी चकल तरङ्ग । किन्तु एही प्रबोध वाक्ये आमार मन मानितेछे ना आर मानिवेउ ना । आमार मन सेई मोहन मूर्तिर आश्चर्या माधुरी दर्शने विमोहित हईया गियाछे ; आमार प्राण तौहार दर्शनार्थ आपनाके उन्मर्ग करिया बगिराछे ; आमा तौहाके छाड़िया आर ए देहे धाकिते चाहे ना । हाय ! एकणे कोथाय गेलें तौहार दर्शन पाईव ! के आमाके ताहार प्रकृत तबू बगिया दिया छिरदिनेर मृत कृतार्थ करिव ! !

संसार भूमि आर आमाके तौमार अपवित्र हउए स्पर्श करिउ ना । विनि आमाके डाकिया जाग्रत करियाछेन, आमा तौहार निकट याईव । तौहार अमृत-निःसन्दिनी बाणी श्रवणे आमार ए-थनउ शरीर रोमावत हईतेछे । आमार निद्रा तबू हईयाछे, आर तौमार नाया-विस्तारित विदय शन्या सुथकर बोध हईतेछे ना । आमा चलि-लाम संसार ! तौमार निकट छिरदिनेर मृत विदय गईलाम । आमा सेई मन-विमोहन महापुरुषेयर यर लक्ष्य करिया यात्रा करिलाम !

ताहार केवल तौहारई कथा कहिवेन, आज हईते तौहादेरई कथा सुनिव, ये पुस्तके केवल तौहारई गुणगुवाद उ निगूठ तत्र लिखित धाकिवे ताहई पाठ करिव, येथाने जाग्रत पुरुष वर्ग ताहार सहित सदालाप करितेछेन, सेई स्थानेई गमन करिव, येथाने तौहार अपूर्व मूर्ति दर्शनार्थ

हारी समधुर बाणीने मेरे कठेर हृदय मर्मदेशमे प्रकाश करके मुझको जगा दिया !

इस अपूर्व रूप माधुरीका दर्शन होतेही हृदय पुलकित हो गया । हाय ! चैतन्य दान भर करके फिर कहां अन्तर्धान हो गये, पुनर्भार देख न सका, मन उन्हीके हित पागल हुआ । उन्को त्रिनि देख अब रह नहीं सकता ऊँ । उस रूपका और आदर्शनही है । उस मधुर बाणीकी उपमा नहीं है । वह केवल विजली की नाई चमक कर मुझे सचेतन कर किसी लीलापट्टे ओटने छिप गये, फिर उन के तबूको न पाता ऊँ । संसार बारम्बार मुझको कहता है कि यह तुम्हारी अमूलक चिन्ता है, यह तुम्हारी कल्पना मात्र है, वह स्वप्नोच्छासका कोई चक्षुस तरङ्ग है । किन्तु इस प्रबोध वाक्यसे मेरा मन नहीं मानता नहीं मानेगा । मेरा मन उसी मोहन मूर्ति के आश्चर्य माधुरी दर्शन से विमोहित हो गया है ; मेरे प्राणों उन्को देखके लिये अप-नेको उन्मर्गकर डाला है ; आमा उन्हे छोड़कर और इस देहमें रहने नहीं चाहता है । हाय ! इस समय कहां जानें उन्का दर्शन पाउंगा ? मुझको कौन उन्का प्रकृततबू बताके चिरदिनतक कृतार्थ करेगा ! !

संसार ! तू फिर मेरा अपवित्र हृदयमें मुझे स्पर्श न करे । जोन मुझे पुनारकर जगाया है मैं उन्ही के निकट जाउंगा । उन्ही अमृत निकालती ऊई बाणी श्रवणे से मेरा शरीर अबतक भी फुलान समाता है । मेरी नीन्द टूटी, और तेरी माया से सारी ऊई विषय शय्याकी सुखकर बोध न होती है । पञ्चब मैं चले, संसार ! तेरे निकट चिरदिन के निमित्त विदाय ले लेता ऊँ । मैं वह मन विमोहन महापुरुषका स्वरको लक्ष्य करके यात्रा करी ।

जिन्होंने केवल उन्हीकी कथा कहिनी आज तिन्हों ही की कथा मैं सुनूंगा, जिस पुस्तकमें उन्ही का गुणगुवाद वर्ण निगूठ तत्र लिखा रहेगा उसही हीको पाठ करूंगा, जहां जाग्रत पुरुषोंने उनके साथ सदालाप कर रखा है उसी स्थानमें जाउंगा, जहां उनकी अपूर्व मूर्ति दर्शनार्थ कोई पवित्र अनुष्ठान हो रहा है, वहांही विश्राम करूंगा, जिन्होंने लोक लज्जा को तुच्छ मानकर गभीर साहस की ओर शीरसे उन्का सदाचार प्रचार कर रखा है

कौन पवित्र अनुष्ठान है तेहे, सेई थाने विश्राम करिव, याँहारा लोक लज्जा तूछ करिया गङ्गीर साहसे उच्च निनादे ताँहार समाचार प्रचार करितेछेन ताँहादेर शरणागत हैइया सेई प्रिय-तमेर संवाद जिज्जामा करिव । आमि कथन वने बसिया ताँहाके मनन करिव, कथन वा पर्वत कन्दरवासि श्रुतिगणेर निकट गिरि गाङ्गीर्या सह ताँहार आश्चर्य महिमा अनुष्ठान पूर्वक अगाध गङ्गीर सहाय डुबिया गहैव, कथन कथन वन कुष्ठम राजिते ताँहार प्रसन्न वदन बिलोकन करिव, कथन गिरि निःसृत निम्बलनीर नदी तीरे उपविष्ट हैइया चन्द्र किरणमिश्रित लहरी-मालार मध्ये ताँहार मधुर हस्य दर्शन करिव, कथन महाघोर मेघ मण्डलेर सङ्गे २ वज्र गर्जनेन ताँहार प्रचण्ड दौर्द्धि प्रताप व महिमा देखिब, कथन पीक कोकिल कुजनादिर मध्य हैइते ताँहार स्तुति पाठ सुनिया प्रवण शीतल करिव, कथन समुन्देर नील-नीर निनादे ताँहार त्रिभुवन शासन वाक्य आकर्षण करिव, कथन वा ताँहार भावे उन्नत हैइया नृत्य करिते थाकिब ।

संसार ! आर तोमार क्रोड़े निद्रा याँहैव ना । ये देशे सक्राना है, शर्करा नाई, येथाने निद्रा नाई, अन्न नाई, येथाने ताप नाई, विक्षेप नाई, आमि सेई देशेर लोक पाँइयाछि । आमार निद्रा भङ्ग हैइयाछे । याँहार मधुर स्वर व याँहार अप्रार्थित कृपा आमार निद्रा भङ्ग करिल, हा ! सेई प्रिय सखा एकरे कोथाय ! आमि ताँहारई शरणागत हैइलाम ।

प्राण सखे ! यदि दया करिया निद्रा भङ्ग करिले, तबे हस्त धारण करिया तोमार अमृत धामे लईया चल । तूमि दया करिया देखा ना दिले केहई तोमाके देखिते पाय ना । सुनियाछि तूमि नाकि भक्तैर प्रति दया करिया ताँहार सहचर हैइया थाक । तूमि साधुदिगेर सर्वस्व धन । तो-मार महिमा अपार ! दीनबन्धो ! दुःखी देखिले तूमि दया करिया थाक, देशे देशे साधुदिगेर निकट एई संवाद सुनिया आज तोमार द्वारे आसिया उपस्थित हैइयाछि । अन्न पदे स्थान दान कर । हे हरे ! तोमार पाषाण भेदी शरें संसार अन्न संकुल मोह निद्रा भङ्ग हैइयाछे । एकरे अस्पर्शागे जाग्रत थाकिया तोमार परम

उन्हीके शरणागत छवे मेरे प्रियतमके सन्वाद जि-ज्ञासा करंगा । मैं कभी वनमें बैठकर उनका मनन करंगा, कभी पर्वत कन्दरवासी ऋषीश्रुतिक निकट पर्वतोपम गम्भीरता से उनकी आश्चर्य महिमा अनुष्ठान पूर्वक अगाध गम्भीर सत्वामें डुब जा-उंगा, कभी कभी वन कुष्ठम राजि मैं उनका प्रसन्न वदन दर्शन करंगा, कभी गिरि निःसृत निम्बल नीरपूर्ण नदीके किनारे उपविष्ट होकर चन्द्रकिरणसे मिली ऊई लहरीमालाके मध्यमें उनका मधुर हस्य दर्शन करंगा, कभी महाघोर घनघटाके संगही संग वज्र ध्वनिसे उनके प्रचण्ड दौर्द्धि प्रताप को महिमा देखूंगा, कभी कोकिल आदिके कुजनके मध्यमें से उनकी स्तुतिपाठ सुनकर श्रवणको शीतल करंगा, कभी समुद्र की नील नीर निनादसे उनकी त्रिभुवन शासन वाक्य आकर्षण न करंगा, कभी उनका भावसे उन्नत हो कर नृत्य कातर रहूंगा ।

संसार ! फिर तेरा गोदीपर मैं सोउंगा ।

जिस देशमें सत्य नहीं, शर्करा नहीं, जहां निद्रा नहीं, अन्न नहीं, जहां ताप नहीं, विक्षेप नहीं, मैंने उसी देशका एक पुरुषको पाया है । मेरी निद्रा टूटी है । जिनका मधुर स्वर बोजिन की प्रार्थना की बिना छपाते मुझको जगाया है ! वह प्रिय सखा अब कहाँ ! मैं उन्हीके शरणागत होऊँ ।

प्राण सखे ! यदि छपा करके मुझे जगायो तो हस्तधारण किये आपकी अमृतपुरीमें ले चलिये, आपकी दया बिना कहीं न आपका दर्शन पाता है । सुना है कि आप भक्तकी और दया करके उसका सहचर बनाते हैं । आप साधुश्रुतिके सर्वस्व धन हैं । आपकी महिमा अपार है ! हे दीनबन्धी ! देश देशान्तर में साधुश्रुतिके निकट यह सन्वाद सुना कि आपने दुःखियों को देखके दया की करती है, सोही मैं आज आपके दरवाजासे आ पड़ूँगा । अभयपद में स्थान दीजिये । हे हरे ! आपकी पाषाणभेदी शरें संसार रूपी स्वप्न समाकुल मोह निद्रा टूटी है अब अन्तर्-योग से जागने छवे आपके परमपदका पीयूष पान

পদ পীযুষ পান করিব। হে অভীষ্ট ফলদাতা।
আমার আশা পূর্ণ কর।
শান্তিঃ, শান্তিঃ, শান্তিঃ, হরি ওঁ।

কানপুর হইতে আমাদের জনৈক বন্ধু বেদার্থ বিপর্যয় সম্বন্ধে একখানি পত্র লিখিয়াছেন। মাননীয় শ্রীযুক্ত পণ্ডিত দয়ানন্দ সরস্বতী যে নবীন বেদভাষ্য প্রকাশ করিতেছেন তাহারই অর্থব্যভিচার প্রদর্শনই পত্রখানির মূল উদ্দেশ্য। বেদ ত্রিকাণ্ডে (কর্ম, উপাসনা ও জ্ঞান) বিভক্ত যিনি এক কাণ্ডীয় মন্ত্রের অন্য কাণ্ডের উপযোগী অর্থ করেন, বোধ করি এতাদৃশ ব্যক্তিকেই লোকে “কাণ্ডজ্ঞানরহিত” বলিয়া তিরস্কার করিয়া থাকেন। বাহা হউক সাধারণের গোচরার্থ ও অবধান পূর্বক বিচারার্থ পত্রখানি নিম্নে প্রকটন করিলাম।

বেদার্থ বিচার।

“ইমেহোজ্জৈহা বায়ব হ দেবোবঃ সবিতা
প্রার্থয়তু শ্রেষ্ঠতমায় কর্মণ আপ্যায়ধমদ্বা ইন্দ্রায়
ভাগং প্রজাবতী রণনীবা অযক্ষাসাব স্তেন ইযত
মাঘশঙ্কসো ধ্রুবা অশ্বিন্ গোপত্যোহস্যাত বহ্নীর্য-
জমানস্য পশুন্পাতি।”

যজুর্বেদ সংহিতা। ১।

শব্দ।	দয়ানন্দকৃত অর্থ	মহিধরকৃত অর্থ
ইমে	ইচ্ছা	বৃষ্টির জন্য
উজ্জৈ	পরাক্রম	অন্নাদি রস নিমিত্ত
হা	আশ্রয়	(হাং) তোমাকে
বায়ব	প্রাণাদি	বায়ুরূপ
হ	উহকে	
বঃ	সকলের	
সবিতা	পরমেশ্বর	সবিতা দেবঃ প্রেরক
শ্রেষ্ঠতমায়	অতু্যক্তম	উৎকৃষ্ট
কর্মণে	যজ্ঞাদি কর্ম	যজ্ঞ
প্রার্থয়তু	সংযুক্ত করেন	প্রাপ্ত
ভাগং	ধন ও জ্ঞান	ভূক্ত
আপ্যায়ধম	উন্নতি প্রাপ্তি	বৃদ্ধি
ইন্দ্রায়	পরমেশ্বর্য	ইন্দ্রদেবতা
প্রজাবতী	সন্তানবতী	সন্তানবতী
রণনীবা	আদি	আরোগী
অযক্ষা	যক্ষা রহিত	অযক্ষা
গোপতি	পৃথ্বীপতি	গোপালক

কহংগা। হে অমীষ্ট ফলদাতা! মেরি আশা পূর্ণ
কীজবে।

শান্তিঃ, শান্তিঃ, শান্তিঃ, হরি অর্হি

কানপুর سے हमारे जनैक मित्रने वेदका विपरीत
अर्थ प्रकाश होनेका आशयपर एक पत्र लिखा।
माननीय श्रीयुक्त पण्डित दयानन्द सरस्वती जीने
जी नवीन वेदभाष्य प्रकाश कर रहा है। उसमें
जी वेदका उल्टा पुल्टा अर्थ लगाया गया सोई दे-
खावना पत्रका मूल अभिप्राय है। वेद त्रिकाण्ड
(कर्म, उपासना वो ज्ञान) में विभक्त है। जिन्होंने
ने एक काण्ड के मंत्र का अर्थ अन्य काण्डका उपा-
योगी कर लगावे, वीध होता है कि लोगोंने ऐसा
ऐसा पुरुषों को “काण्डज्ञान हीन” कहकर तिर-
स्कार किया करता है। जो ह्यो, साधारण जनोके
गोचरार्थ वो अवधान पूर्वक विचारार्थ उस पत्रको
हम नीचे प्रगट करते हैं।

वेदार्थ विचार।

“इमेहोज्जैहवा वायव स्य देवो वः सविता प्रा-
र्थयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायधमद्वा इन्द्राय
भागं प्रजवती रणनीवा अयक्षासाव स्तेन इषत
माघशंजसो ध्रुवा अश्विन गोपत्यास्यात वह्निर्यजमा-
नस्य पशुन्पाति।

यजुर्वेद संहिता। २।

शब्द	दयानन्द कृत अर्थ	महिधर कृत अर्थ
इमे	इच्छा।	वृष्टि के अर्थ।
उज्जै	परक्रम।	अन्नादि रसके अर्थ।
हवा	आश्रय।	(हवां) तुमको।
वायव	प्राणादि।	वायुरूप।
स्य	उनको।	
वः	सबके।	
सविता	परमेश्वर।	सवितादेवः प्रेरकः।
श्रेष्ठतमाय	अत्युत्तम।	उत्कृष्ट।
कर्मणो	यज्ञादि कर्म।	यज्ञ।
प्रार्थयतु	संयुक्त करे।	प्राप्त।
भागं	धन वो ज्ञान।	दुग्ध
आप्यायधम उन्नति प्राप्ति।		वृद्धि।
इन्द्राय	परमेश्वर्य	इन्द्रदेवता।
प्रजवती	सन्तानवती।	सन्तानवती।
रणनीवा	आदि।	अरोगी।
अयक्षा	यक्षा रहित।	अयक्षा।
अह्वना	अहिंसा।	अहिंसा।

অদৃশ্য	অহিংসা	অহিংসা
অঘশাজস	পাপী	হিংস্র ব্যাঘ্রাদি
স্তেন	চোর	চোর
ইশত	উৎপন্ন	সমর্থ
যজমান	ধার্মিক	যজ্ঞকর্তা
পশুন্	গো, অশ্ব, হস্তী, লক্ষ্মী	গোবৎসাদি
পাছি	রক্ষা কর	রক্ষা কর
অগ্নিন্	ইহা	এই স্থানে
ধ্রুব	নিশ্চয়	স্থির

দয়ানন্দ কৃতভাষ্য—হে মানবগণ! সেই পরমেশ্বর সকলের প্রাণরূপ তিনি ইন্দ্রিয়গণকে উত্তম কর্ম জন্য সংযুক্ত করিয়া থাকেন। তিনি অন্নাদি পদার্থ, বিজ্ঞানের ইচ্ছা ও পরাক্রম লাভার্থ ধন ও জ্ঞানাদি শ্রেষ্ঠ গুণগ্রাম প্রদান করেন। হে মিত্রগণ! তোমরাও উন্নতি লাভ কর। হে ভগবন্! আগাদিগের পরমেশ্বর্য্য প্রাপ্তির নিমিত্ত আরোগী ও অযক্ষা সম্ভূত মনুভি এবং অহিংসা-যোগ্য বহুতর গবাদি পশু সর্বাঙ্গ দান কর। পাপী ও চোর সৃষ্টি করিও না। তুমি ধর্ম্মজ্ঞা, গো, অশ্বাদি পশু, লক্ষ্মী ও প্রজাকে নিরন্তর রক্ষা কর। ধার্মিকের নিকটেই এতাবৎ পদার্থ নিশ্চয় হইয়া থাকে।

মহীধর কৃত অর্থ—হে পলাশ শাখে! বৃষ্টির জন্য তোমাকে ছেদন করা হইতেছে। শাখে! অন্নাদি রসের জন্য তোমাকে কোমল করা যাইতেছে। হে বৎসগণ! তোমরা বায়ুরূপ, বায়ু-বৎ গমনশীল, নিজস্ব মাতার নিকট হইতে অন্যত্র দূরে গমন করিও না। প্রেরক পরম দেবতা সন্নিভা তোমাদিগকে উত্তম ভূগর্ভ বনে লইয়া যাউন। হে গাভিগণ! তোমরা যজ্ঞ সিদ্ধির জন্য ইন্দ্র-ভাগ চুক্ক রুদ্ধি কর। বনে ব্যাঘ্রাদি হিংস্র পশুগণ ও চোর মণ্ডলী যেন তোমাদিগকে হনন করিতে না পারে, কেননা তোমরা প্রজাবতী, অরোগী ও অ-যক্ষা। তোমরা যজ্ঞকর্তার নিকট বদ্ধিত হও ও নিশ্চল হইয়া থাক। হে পলাশ শাখে! যজ-মানের পশুগণকে রক্ষা কর।

“পর্ণশাখাচ্ছিনন্তি, শাল্মলীং ত্বেমেতেজ্জ-
য়েতি বা চ্ছিনন্তীতি বোভয়োস্তাকাণ্ডং ক্ষত্বাৎ সং-
নময়ামীতি বোক্তর ইতি।”

মাতৃভিবৎমান্ সঞ্চক্ষ্যবৎক্ষ্য শাখয়োপস্পৃ-
হতি বায়রেহেতি।

গোপতি	পৃথ্বীপতি।	গোপালক।
অঘশাজস	পাপী।	হিংস্র ব্যাঘ্রাদি।
স্তেন	চোর।	চোর।
ইশত	উৎপন্ন।	সমর্থ।
যজমান	ধার্মিক।	যজ্ঞকর্তা।
পশুন্	গো, অশ্ব, হস্তি, লক্ষ্মী।	গোবৎসাদি।
পাছি	রক্ষা কর।	রক্ষা কর।
অগ্নিন্	ইহা।	যহা।
ধ্রুব	নিশ্চয়।	স্থির।

দয়ানন্দকৃত ভাষ্য—“হে মনুষ্য লোক! বহু পরমেশ্বর সৌ সবার প্রাণ আর ইন্দ্রিয়ের উত্ত-
ম কর্মের লিখে সংযুক্ত করে হৈঁ বো অন্নাদি পদার্থ,
বিজ্ঞানের ইচ্ছা আর পরাক্রমের প্রাপ্তির লিখে ধন
আর জ্ঞানাদি শ্রেষ্ঠ গুণকে দেন্দ্রহার হৈঁ। হৈঁ মিত্র
লোক! তুমি উন্নতির প্রাপ্ত হও। হৈঁ ভগবন্!
হৈঁ লোকের পরমেশ্বরের প্রাপ্তির লিখে বহুতর
সন্তান জো অরোগী বো অযক্ষা হৌ, আর অহিংসা
যোগ্য বহুতর মা গো আদি পশু সর্বে নিয়ত কীজিয়ে।
পাপী বো চোর ডাঁকু মত উৎপন্ন হৌ। আপ ধর্ম্ম
পরায়ণ মনুষ্যের গো অশ্বাদি, লক্ষী বো প্রজা-
কী নিরন্তর রক্ষা কীজিয়ে। ইহা ধার্মিকের সমীপ
উক্ত পদার্থ নিশ্চয় হৌ।

মহীধর কৃত অর্থ—হে পলাশ শাখে! জলকী
বৃষ্টির অর্থ তুমি ছেদন করে হৈঁ। শাখে! অন্ন-
াদি রসের অর্থ তুমি কোমল করে হৈঁ। হৈঁ বৎস
তুমি বায়ুরূপ, বায়ু-বৎ গমনশীল হৌ, অর্পে মা-
তার অর্পে সন্নিভ হৌ অন্যত্র দূর মত জাও। প্রেরক প-
রম দেবতা সন্নিভা তুমি উত্তম ভূগর্ভ বনে
লৈ জাও। হৈঁ গাভ! তুমি যজ্ঞ সিদ্ধির অর্থ ইন্দ্রকে
ভাগ, দুগ্ধ তর্জি করো। বন-
ব্যাঘ্রাদি হিংস্র
পশু অথবা চোর তুমি মার-
নেকো বা চোর-
নেকো সমর্থ
ন হৌ বো-
কি তুমি প্রজাব-
তী হৌ, অ-
রোগী আর অ-
যক্ষা হৌ।
তুমি যজমানকে
যহা বৃদ্ধি বো
স্থির হৌ।
হৈঁ পলাশ
শাখে! তুমি
যজমানকে
পশু-
নেকো
রক্ষা করো।

“পর্ণশাখাচ্ছিনন্তি শাল্মলী, ত্বেপে ত্বেজ-
য়েতি বাচ্ছিনন্তীতি বো ভয়োস্তাকাণ্ডং ক্ষত্বাৎ সং-
নময়ামীতি বোক্তর ইতি।”

মাতৃভিবৎমান্ সঞ্চক্ষ্যবৎক্ষ্য শাখয়োপস্পৃ-
হতি বায়রেহেতি

देवोव इति मातृनामैकां व्याकृतैस्तद्भवति मा इन्द्रं वेति ।

कात्यायन सूत्र । ४ ।

“इमेहा” এই মন্ত্র দ্বারা পলাশশাখা অথবা সমীশাখা ছেদন করিবে। “উজ্জৈহা” এই মন্ত্র দ্বারা (সংনময়ামি) নমন করিবে। এই দুই মন্ত্রেই ক্রিয়াপদের আকাঙ্ক্ষা রহিয়াছে। “বায়ব” এই মন্ত্র দ্বারা গাভীগণের সহিত বৎসবৃন্দের সংযোজনা পূর্বক একটি বৎসের গাত্রে পলাশ শাখা স্পর্শ করাইবে। “দেবোব” এই মন্ত্র দ্বারা একটি গাভীকে পৃথক করিবে, উহার দুধাদি ইন্দ্র দেবতার জন্য। “যজমানস্য পশুন্ পাহি” এই মন্ত্র পাঠ পূর্বক অগ্নিহোত্র স্থানে পলাশ শাখা স্থাপন পূর্বক প্রার্থনা করিবে ইতি ।

শতপথ ব্রাহ্মণ—যজমানস্য পশুনিত্যাগাগরি-
ন্যাস্তুরস্য পুরস্তাচ্ছাখানুপগৃহতীতি । শঃ পঃ
১।৫।৪।১।৮ মর্ষে পর্ণশাখয়া বৎসান্ পা করোতি ।
বত্রৈব গায়ত্রী সোমগচ্ছা পততদস্য আদরন্ত্যা
অপাদস্তাত্যায়ত্বপর্ণ্যঃ প্রতিচ্ছেদ গায়ত্রৈ বা সো-
মস্য বা রাজস্তন্ত্য তিহা পর্ণো ভবতম্মাং পর্শে
নাম (পলাশ) শাখয়া বৎসান্ পা করোতি । ১ ।

তমাচ্ছিনন্তি ইমেহোজ্জৈহেতি বৃক্ষৈতদাহ
নদাহৈ মেহেতু জ্জৈহেতি যো বৃক্ষোহুগ্রনো জায়তে
তস্মৈ তদাহ । ২ ।

ভ.মার্থ—যজ্ঞকর্তা পর্ণশাখা দ্বারা বৎসগণকে
পৃথক করিয়া থাকেন। এক সময় গায়ত্রী পক্ষী-
রূপ ধারণ করিয়া আকাশস্থ সোমকে গ্রহণ করিবার
জন্য ধাবিত হইয়াছিলেন সেই সোমলতার একটি
পত্র ছিন্ন হইয়া পৃথিবীতে পতিত হয় তাহা হই-
তেই পলাশ উৎপন্ন ও গায়ত্রীর সম্বন্ধ নিবন্ধন উহা
ব্রহ্মরূপ বলিয়া প্রতিপন্ন হইল। এই জন্যই পলাশ
শাখা দ্বারা বৎসগণকে পৃথক করা বিধেয়।

“ইমেহা” ও “উজ্জৈহা” এতন্মন্ত্রদ্বয় দ্বারা
পলাশ শাখা ছেদন করিবে। “ইমেহা” অর্থাৎ
বৃষ্টের জন্য, হে পলাশ শাখে! তোমাকে ছেদন
করিতেছি। উক্ত বৃষ্টি দ্বারা অন্নাদি উৎপন্ন হইবে
এই নিমিত্ত তোমাকে সংনমন করিতেছি।

ফতেগড়হু পণ্ডিত শ্রীউমাদত্ত কৃত অর্থ—দর্শ-
পৌর্ণমাস যাগ জন্যই বাস্তবিক বহুবর্ষেদাত্তর্গত এই
কাণ্ডটি উক্ত হইয়াছে। ইহাতে পাঁচটি মন্ত্র
আছে। দর্শপৌর্ণমাস যাগে তিন ২ দ্বিঃ হইয়া

দেবোব ইতি মাতৃনামৈকাং ব্যাকৃতৈস্তদ্भवति मा-
इन्द्रं वेति ।

कात्यायन सूत्र । ४ ।

अर्थ । “इमेहा” इस मंत्र करके पलाश शा-
खा अथवा समीशखा छेदन करे, “उज्जैह्या” इस
मंत्र करके (संनमयामि) नमावे, इन दोनोंही मं-
त्रमें क्रिया पदकी आकांक्षा रही । “वायवया”
इस मंत्र करके माताओंसे बत्सोंकी भिलाकर एक
बत्सको पलाश शाखामें स्पर्श करे । “देवोव” मंत्र
करके एक गौकी पृथक करे, उसका दूधदिह इन्द्र
देवताका होता है । “यजमानस्य पशुन् पाहि”
इस मंत्र करके अग्निहोत्र स्थानके आगे पलाश शा-
खाको स्थापन पूर्वक प्रार्थना करे इति ।

शत पथ ब्राह्मण ।

यजमानस्य पशुनित्यन्यागवस्थान्तरस्य पुरस्ता-
त्छाखानुपगृहतीति । शः पः १ । ५ । ४ । १ । ८ ।

सर्वपर्णशाखया बत्सान् पाकरोति । यत्र वै
गायत्री सोममच्छा पततदस्या आदरन्त्या अपाद-
न्ताभ्यायथर्पण्यं प्रचिक्षेद् गायत्रे वा सोमस्य वा
राजस्तस्यति वा पर्णा भवतस्मात् पर्णा नाम (प-
लाश) शाखया बत्सान् पा करोति ॥ १ ॥

तमाच्छिनन्ति इमेवोज्जैह्येति वृक्षैतदाह यदा
है मेवे त्यज्जैह्येति या वृक्षाहूयं सो जायते तस्मै
तदाह ॥ २ ॥

भाषार्थ । सो यज्ञकर्त्ता पর্ণशाखावे बत्सोंको
पृथक करता है । एक समय में गायत्री पक्षीरूप
धारण कर स्वर्गस्थ सोम का ग्रहण करनेकी समु-
धावन करी थी । उसही समय में सोमलताका
एक पत्र छिन्न होके पृथ्वीपर गिरा उसमेंसे पलाश
उत्पन्न हुआ । गायत्रीका सम्पर्क से वह ब्रह्म रूप
हुआ । इस लिये पलाश शाखा करके बत्सोंको पृथ-
क करना चाहिये । इमेहा और उज्जैह्या इस मंत्र
करके उस पलाश शाखा को छेदन करता है । “इ-
मेहा” अर्थात् वृष्टिके अर्थ, हे पलाश शाखे तुमको
छेदन करते हैं । उस वृष्टिसे अन्नादि रसके अर्थ
तुमको संनमन करते हैं ।

फागड़हू पण्डित श्रीउमार्दत्त कृत अर्थ । “वा-
स्तव से यजुर्वेदका एकाण्डी दर्श पौर्ण मास याग
की है । दर्श पौर्णमास यागमें तीन तीन द्रविः
होते हैं । अग्निदेवताका पुरोडास, इन्द्र देवता

थाके । अग्निदेवतार पुरोडास ओ ईन्द्रदेवतार दधि ओ दुध । अमावस्याते अग्निहोत्र करिया प्रति-पद प्रातःकाले दधि हवन करिते हर, सेई दधिर हवनई बागेपयोगी हईया थाके । एवं दधि मन्त्रपूत करिया जमाईते हर । এই जन्यई पलाश शाखा छेदन, संनमन, वंसके स्पर्श ओ ताहाके पृथक् करण, गाभीके वज्रशालाय रक्षण, अन्याना गाभीगणके बने प्रेरण, गृहस्थित गाभीर छुद्धे दधि प्रश्रुत ओ तदनन्तर तद्द्वारा हवनादि करा विधेय ।

लेखकेर मन्त्रव्य दयानन्दकृत “हे मानवगण” इत्याकार मन्त्रक तौहार सकपोल कल्पित बोध हईतेछे, केनना शतपथ ब्राह्मण अथवा कात्यायन सूत्रे एकरूप समोधान नाई । आर्यमेत परिवर्तना-न्तर निज मत प्रतिष्ठा पूर्वक प्रतिपन्न हईवार मानसे आर्यादिगेर सर्व शास्त्र शिरोमणि एकमात्र वेदवाणीर मध्ये ए कपोल कल्पना जाल विस्तार करिया त्रिनि अतीव गर्हित कार्य करियाछेन । ईहाते वेदार्थ विचारानभिज्ञ अनेक व्यक्तिई तौ-हार भाषार्थ मात्र पाठ करियाई विपणगामी ओ वि-पदग्रस्त हईवार संभावना । वस्तुतः पलाश शाखार समोधानई एथाने सुलभ । ईहा द्वारा सप्रमाण हईतेछे ये पण्डित उमादत्त कृत अर्थ महीधर कृत अर्थेय अलगत ओ शतपथ सम्यत । दयानन्द कृत वेदभाष्य यदि सर्वत्रई ऐकरूप अगमोक्तिन अर्थे प्रकाशित हईया थाके तबे ताहा आर्य धर्मावल-म्बीदिगेर अग्रार्थ ओ नितान्त अनर्थकर हईयाछे । संस्कृत भाषार एक एक शब्देर अनेकानेक अर्थ हईया थाके; किन्तु यथायोग्य स्थान, प्रकरण आ-दि विचार पूर्वक यदि अर्थ बाध्या ना करा हर, ताहा हईले सदर्थ प्रकाश होग्य अतीव दुष्कर हई-या उठे । कर्षकाण्ठीय मन्त्र उपासना काण्डे ग्रहण लोक-प्रचारना मात्र । पण्डितगण एतद्वारा मि-च्छास्त करिया लईबेन ये, आजकाल “संस्कृत” स्वयं निज कुहकजाले लोक प्रवर्धना करिते प्र-रुत हईयाछेन ।

सम्पादकेर राज-संस्कार ।

किरदिबस अतीत हईन, मतिहारी आर्यधर्म प्रचारिनी सभा कर्तृक आहूत हईया आगि चम्पा-रणे गमन करियाछिनाम । मतिहारी सभार अव-स्था ओ ताहाते साधारणेर सहानुभूति दर्शने परम

दधि वो दुध । अमावस्या का दिन अग्निहोत्र क-रके प्रतिपदके दिन प्रातःकाल दधिका हवन होता है । वह दधि मंत्रपूत करके (जमाई जाती है ; तदर्थ पलाश शाखा छेदना, संनमन, वंसकी स्पर्श ना, पृथक् करना, एक गौकी यज्ञशालामें रखना, अन्य गौओंकी वनों में भोजना, गृहस्थित गौका दुध से दधि जमावना, तदनन्तर हवनादि करना क-र्तव्य है ।

लेखकका अभिप्राय । दयानन्दका “हे मनुष्य लोगो ! यह समोधान निज कपोल-कल्पित बोध होता है । क्योंकि शत पथ ब्राह्मण अथवा कात्या-यन सूत्रमें यह समोधान नहीं मिलता है । ऋषि-योंके मत के बदले निज मतकी प्रतिष्ठा पूर्वक प्र-तिपन्न होनेकी इच्छा में आर्य लोगोंके सर्वशास्त्र-शिरोमणि एकमात्र वेदवाणीके मध्य में स्वकपोल कल्पना जाल विस्तार करके उन्होंने अतीव गर्हित कार्य किया । इस में इतनीही पूरी संभावना है कि वज्रत सा लोग जिन्होंने वेदार्थ विचारने में समर्थ नहीं, वे दुनका बनाया ऊँचा भाषार्थ मात्र पढ़ कर कुराह पर जागे वा । विपदग्रस्त होंगे । वस्तुतः यहाँ पलाश शाखाका समोधान सुलभ है । इस में प्रमाण होता है कि पण्डित उमादत्त कृत अर्थ म-हीधर कृत अर्थके पीपक वो शतपथ सम्यत है यदि दयानन्द कृत वेद भाष्य इसही रीति सर्वत्र असनी चीन अर्थ करके पूर्ण होय तो वह आर्य धर्मावल-म्बीयोंके अग्रार्थ वी नितान्त अनर्थकर ऊँचा । सं-स्कृत भाषाका हर एक शब्द नानार्थ बोधक है, किन्तु यदि यथायोग्य स्थान, प्रकरण आदि विचार पूर्वक अर्थ न लगाया जाय तो सदर्थ प्रकाश होना अतीव कठिन है । कर्षकाण्ठीय मंत्र उपासना काण्डमें ग्रहण करना लोक भुलावना है । पण्डित लोग उपरोक्त व्याख्यान से समझ लें कि आज कल स-रस्वतीही स्वयं निज मोहन मंत्र करते लोग भुलाने में तत्पर ऊँ ।

सम्पादक का राज दर्शन ।

थोड़े दिन अतीत ऊँचा, मतिहारी आर्यधर्म प्रचारणी सभाके बुलाये ऊँचे में बस्यारणा में गया था । मतिहारिण्य सभाकी अवस्था औ उपपर स-र्व साधारणकी सहानुभूति देखकर परमप्रीति ला-

प्रीति लाभ करिलाम नभार सम्पादक मान्यवर श्रीगुरु बाबू उपेन्द्रनाथ गंगोपाध्याय ओ बाबू दर-
बारिनाल प्रभृतिर अनुरोधे तथाय "संस्मरण"
असंग्रे एकटी वस्तुता करिलाम । तदनन्तर आर्या
कुल भूमण वेतिग्राधिपतिर अभिप्रायानुसार आगि
उक्त बाबूदय ओ श्रीगुरु कान्तिचन्द्र मुखोपाध्याय महा-
शय समन्वित्याहारे वेतिग्राय गमन करिलाम । त-
थय प्रथमे धीर प्रकृति धीशक्ति सम्पन्न अद्वाभा-
जन श्री श्री श्री श्रीमन्महाराजकुमार हरेंद्रकिशोर
सिंह बाहादुरेर सहित शुभ साक्षात् हईल । तौ-
हार नहुंसाह, धर्मभार ओ आर्या प्रतिभा दर्शने
परम पुलकित हईलाम । तिनि इतिपूर्व हईतेह
आनादेर कार्येर विषय ओ भारते सनातन आर्या-
धर्मेर पुनः प्रचारदि चेष्टेर आभास विदित छि-
लेन, अक्षणे आमार प्रमुखां भारतेर वर्तमान
छद्दिने आर्याधर्मेर पुनरुद्दीपना ओ संस्कृत भाषा
उन्नति साधनेर आवश्यकतार विषय विशेषरूप अ-
वगत हईरा अमीर आनन्द प्रकाश करिलाम एवं
उज्जन्य कोन साहाय्य प्रार्थना करिवार पूर्वैह
तिनि अयं अति उंसाहकर बाको बलिलेन मे
एहै गुरुतर कार्येर जन्य आमार द्वारा नत दूर
अर्थ साहाय्य हओरा संभव ताहा आगि करिव । प्र-
चार कार्येर जन्य तिनि आमार प्रति ये रूप भा-
वे महानुभूति प्रकाश करियाछिलेन, आश्व-गौरव
प्रकाश जन्य प्रगदभये ताहा उल्लेख करिते न-
हूचित हईलाम ताहार उदार प्रकृति ओ धर्मा-
साह दर्शने आगि गने गने तौहाके शत शत सा-
धुवाद ना दिग्रा थाकिते पारिलाम ना ।

तत्परदिन भगवच्छरण परायण आर्या कुलाभ-
रण गुणग्राहीगणाग्रगण्य महान्या वदान्यवर श्री श्री
श्री श्री श्रीमन्महाराज राजेंद्रकिशोर सिंह बाहा-
दुर सद्यः साधु हृदय महोदयेर सहित शुभ सा-
क्षात्कार हईल । तौहार पवित्र प्रवीण मूर्ति
दर्शन करिलेह भक्ति ओ अक्षर उदय हर । गिनि
कथन सौभाग्यक्रमे एकवार ओ तौहार शुभ दर्शन
लाभ करियाछेन तिनि तौहार वचन माधुर्य, उदा-
र्य, शांत अभाव, विनय, निरभिमानता ईष्टदेव-
निष्ठा, परहित व्रत आदि देवोपम सद्गुणराशिर
प्रशंसा ना करिया थाकिते पारेन ना । अपर्याप्त
कोन प्रार्थी रिक्त हस्त तौहार निकट हईते प्रति
निवृत्त हर नाहै । तौहार प्रत्येक प्रजार मुखे

भ किया । सभा के सम्पादक मान्यवर श्रीगुरु बाबू
उपेन्द्रनाथ गंगोपाध्याय वो बाबू दरबारीनाल आदि
के अनुरोध से मैंने वहाँ "सत् संग" के आशय पर
एक वक्तृता करी । तदनन्तर आर्यकुल भूषणवे-
तियाधिपति का अभिप्राय अनुसार मैंने उन दोनों
बाबूयें वो श्रीगुरु बाबू कान्तिचन्द्र मुखोपाध्याय म-
हाराजके संग बेतिया में जा पड़वा । वहाँ प्रथ-
मतः धीर प्रकृति धीशक्ति सम्पन्न अद्वाभाजन श्री श्री
श्री श्रीमन्महाराजकुमार हरेंद्र किशोर सिंह बहा-
दुरका शुभ दर्शन पाया । उनके सद्गुणों पर धर्म
भाव वो आर्य प्रतिभा देखकर परम पुलकित हुआ ।
उन्होंने इसका पूर्व ही से हमारे कार्य के अभिप्रा-
य विदित था और एतना आभास भी पाया था कि
भारतवर्ष में सनातन आर्यधर्मका पुनर्जीव प्रचारके
लिये चेष्टा करी जाती है । भारतवर्षकी वर्तमान दुर्द-
शाके दिन आर्यधर्मकी पुनरुद्दीपनाओ संस्कृतभा-
षाकी उन्नति साधन को आवश्यकताके विषय मेरे
मुंहसे अब विशेष रूप विदित होवे अत्यन्त आनन्द
प्रकाश किया और तदर्थ कोइ साहाय्य प्रार्थना कर-
ने का अवसर दिये बिना उन्होंने अति उत्साहयुक्त
वचनमे बोला कि इस गुरुतर कार्यके वास्ते हमसे
जहांतक हो सके तहांतक मैं मदद करंगा । प्र-
चार कार्यके निमित्त उन्होंने मुझपर जिस भांतिसे
सहायुभूति प्रकाश किया सो लिखने में मैं संकोच
मानता हूँ, क्योंकि उससे आत्मगौरव प्रकाशार्थ
मेरी हानि पड़चेगी । उनकी उदार प्रकृति वो
धर्मका उत्साह दर्शनकर हृदयमें उनको शत शत
साधु बाद दिये बिना मुझे नहीं रह्या गया ।

तदनन्तर द्वितीय दिनमें भगवत चरण परायण
आर्यकुलाभरण गुणग्राही गणागुण्य महामान्य
वदान्यवर श्री श्री श्री श्री श्रीमन्महाराज राजेंद्रकिशोर
सिंह बहादुर सद्यः साधु हृदय महोदय के शुभ द-
र्शन प्राप्त हुआ । उनकी पवित्र प्रवीणमूर्ति द-
र्शन करनेहीसे भक्ति वा अद्वा उपजती है । जि-
न्होंने सौभाग्य करके एकवार भी उनका शुभदर्शन
लाभ किया उन्होंने उनके वचन साधुर्य, औदार्य,
शान्त स्वभाव, विनय, निरभिमानता ईष्टदेवनिष्ठा
परहित व्रत आदि देवोपम सद्गुणों की प्रशंसा किये
बिना रह नहीं सकती है । अबतक किसी याचक
ने उनके निकटसे खाली हाथ नहीं लौटा । उनका
हर एक प्रजार मुझे उनकी गुणानुवाद सुनी जाती

तौहार गुणगाथा सुनिते पाওয়া যায় । শ্রীমহারা-
জার অভিপ্রায়ানুসারে মহারাজকুমার প্রধান
সদস্য, মওলী, ও অন্যান্য মহাস্থানিক লোক পরি-
বেষ্টিত মহারাজার সম্মুখে একত্রে অমতিদীর্ঘ বক্তৃ-
তা করিলাম। তৎপরদিন বিদায়কালে তৌহার সহি-
ত যে বার্তালাপ হইল তাহাতে তিনি আমাদের
কার্য্য সম্বন্ধে যথেষ্ট মহানুভাবকতা প্রদর্শন করি-
লেন এবং আর্থ্যধর্মের পুনঃ প্রচার কার্য্যের জন্য
যথোচিত অর্থ সাহায্যার্থ এসময় বদনে প্রতিশ্রুত
হইলেন। সেই দিন মহারাজকুমারের নিকটও
বিদায় লইলাম। তিনি আমার বেতিয়ায় পুনর্গ-
মন সম্বন্ধে ইচ্ছা ও অনুরাগ প্রকাশ করিলেন।
আমি জীবন সহ্যে তাঁহাদের ভদ্রোচ্চিত সংকার ও
শিক্ষাচার বিস্মৃত হইব না। ব্রাহ্মসমাজ কর্তৃক
যে বঙ্গ বিভাগে সনাতন আর্থ্যধর্মের যথা কথঞ্চিৎ
ক্ষতি হইয়াছে ও হইতেছে, তজ্জন্য শ্রীমহারা-
জা ও মহারাজকুমার সতিশয় বিরজিত ও ক্ষোভ প্র-
কাশ করিলেন। ব্রাহ্মগণের আচার ব্যবহারকে
তাঁহারা অন্তরের সহিত ঘৃণা করিয়া থাকেন। তাঁ-
হার রাজ্যে (মতিহারীতে) আর্থ্য ধর্মপ্রচারিণী
সভা সংস্থাপিত হইয়া রাজ্যের মুখে জ্বল করিয়া-
ছে বিদিত হইয়া তাঁহারা সতিশয় প্রীতি প্রকাশ
করিলেন এবং তৎসভারও নিয়মিত সাহায্য করি-
বেন, স্বীকার করিয়াছেন।

মহারাজ ভবনে সন্ধ্যোগ্য বাঙ্গালীগণেরও বি-
শেষ সমাদর দৃষ্ট হইল। তাঁহার সভায় ভট্টপল্লী
নিবাসী জনৈক পরমোদার প্রকৃতি শাস্ত্র জ্ঞান স-
ম্পন্ন পণ্ডিত আছেন। তাঁহার চিকিৎসালয়াক্ষক
ও চিকিৎসকও আমাদের বাঙ্গালী তাঁহার নাম
মান্যবর শ্রীযুক্ত বাবু জয়গোপাল মুখোপাধ্যায়।
ইনি মহারাজার একজন প্রিয়ভাজন, শাস্ত্রপ্রকৃতি
ও চিকিৎসক। ইনি পাশ্চাত্য বিদ্যায় ব্যাপন্ন
হইয়াও আর্থ্যধর্মের ও ভারতীয় ভাবের নিতান্ত
অনুরাগী। ইহার সজ্জনোচিত সংকারে আমরা
পরিভূক্ত হইয়াছি রাজভবনের ইঞ্জিনিয়ার শিম্প-
চতুর মাননীয় শ্রীযুক্ত বাবু অম্বিকাচরণ গঙ্গো-
পাধ্যায় মহাশয়ও বঙ্গদেশবাসী তাঁহার তুল্য ধীর
ও শান্ত স্বভাবের লোক অতি অস্পষ্ট দৃষ্ট হয়।
তাঁহার সদ্যবহার ও আমাদের কার্য্যের সহযোগী-
তা জন্য তিনি আমাদের চিরস্বামী।

পাঠক মহোদয়গণ! শ্রীমহারা-জা ও মহারা-

জ। মহারাজ কুমার, প্রধান সদস্য মওলীও
অন্যান্য সহস্রাধিক লোকের পরিবেষ্টিত মহারাজকে
সম্মুখে उनका अभिप्राय अनुसार मैंने एक अनति
दीर्घ बक्तृता करी। नत परदिन मेरा विदाय का-
लमें उनने जो बार्तालाप ऊई थी उस समय उ-
न्होंने हमारे कार्यके और यथोचित सहानुभावक-
ता देखाई और आर्थ्यधर्मका पुनः प्रचारके अर्थ
प्रसन्न बदन कमल से स्वीकार किया कि यथोचित
साहाय्य करेगा उसी दिन महाराज कुमारसे भी
विदाय लिया; उन्होंने मेरा बेतिया में पुनर्गमनार्थ
इच्छावो अनुराग प्रकाश करी। मैं जीवन भरमें
उन्होंके भद्रोचित सत्कार विशिष्टाचार न भुलूंगा।
ब्राह्मसमाजोंके द्वारा बङ्ग विभागमें सनातन आर्थ्यध-
र्म को जो कुछ हानि ऊई वो होती जाती है त-
न्निमित्त श्रीमहाराजा वो महाराजकुमार अत्यन्त
विरक्ति वो खेद प्रकाश किया। ब्राह्मलीगोंके आ-
चार व्यवहारादिको उन्होंने दिलसे घृणाकी करती
है। उनके राज्यमें (मतिहारी; में) आर्थ्यधर्म
प्रचारिणी सभा संस्थापित होती ऊई जो राजका
सुखोज्ज्वल करी इसके उन्होंने सतिशय आनन्द प्र-
काश किया और उस समाको नियमित साहायता
करनेमें भी स्वीकार किया।

महाराज भवनमें सुयोग्य बंगदेश वासियोंके
भी समादर दृष्ट ऊआ। उनकी सभामें सदृष्टी
निवासो एक पण्डित रहते हैं। उन्होंने परमोदार
प्रकृति वो शास्त्रज्ञान सम्पन्न हैं। उनके चिकित्सा-
लयाध्यक्ष वो चिकित्सक भी हमारे एक बंगाली हैं।
उनका नाम मान्यवर श्रीयुक्त बाबू जयगीपाल सु-
खोपाध्याय। इन्होंने महाराजाके प्रियभाजन,
शान्त प्रकृति वो सचिकित्सक हैं। इन्होंने अंग-
रेजी बिद्याये व्युत्पन्न ऊये भी आर्थ्यधर्म वो भार-
तिय भावके एकांत अनुरागी हैं। इनका सज्जनो-
चित सत्कारसे हम परिहृत ऊये। राजभवनके
इञ्जीनियार गिल्लचतुर माननीय श्रीयुक्त बाबू अम्बि-
काचरण गङ्गोपाध्याय महाशय भी बंगदेश बासी हैं।
इनका तुल्य धीर वो शान्त स्वभाव का पुरुष अति
अस्यदेखा जाता है। तिनका सहायकार वो हमारे
कार्यकी सहयोगिता के लिये उन्होंने हमारे चिर-
स्वामीय रहा।

জকুমার আমাদের প্রস্তাবিত ভারতের এই গুরুতর কার্যে কি রূপ সাহায্য করেন, ইহা জানিবার জন্য আপনারা বাগ্ন হইয়াছেন। আশা করি তাঁহারা “শুভম্য শীঘ্রং” স্থির করিয়া নিজনিজোচিত দেয় অর্থ প্রেরণ করিবেন। আমরাও প্রফুল্লচিত্তে কৃতজ্ঞতা পূর্বক তত্তাবৎ প্রাপ্তি স্বীকার করিয়া আপনাদিগের আনন্দ বর্ধন করিব।

বিশেষ দৃষ্টব্য।

ভারতবর্ষের দেশ দেশান্তরে সনাতন আৰ্য্য ধর্মের (ধর্মপ্রচারাদি নিয়োগ দ্বারা) পুনরুদীপনার্থ ও স্থানে স্থানে সংস্কৃত বিদ্যালয়াদি প্রতিষ্ঠা পূর্বক সংস্কৃত ভাষার পুনরুন্নতি বিধানার্থ আজাদিগের প্রস্তাবিত এক লক্ষ টাকার মূল ধনের পুরণ জন্য এককালীন দান স্বীকার।

রায় অন্নদাপ্রসাদ রায় বাহাদুর, কাশিমবা-

জার ৪০০০।

শ্রীযুক্ত বাবু রামপ্রসাদ দাস মুন্সের ২০০।
সৈয়দপুর উন্নতি বিধায়িনী সভা (প্রাপ্ত) ২০।
মতিহারী আৰ্য্যধর্মপ্রচারিণী সভা ২০।
বিবিধ ২৫৫।

শ্রীযুক্ত বাবু আর্থোরকান্ডজীপ্রসাদ

বরহরোয়া ২০।

আশা করি ভারতহিতৈষি মহাজ্ঞা নাভ্রৈই আনাদের প্রস্তাবিত এই গুরুতর কার্যে সহায়তা করিবেন। ধর্মার্থে ও ভারতহিতার্থে বাঁহার বাহা সাধ্য তাঁহা অল্পগ্রহ পূর্বক মুন্সের আৰ্য্যধর্মপ্রচারিণী সভায় ধর্মপ্রচারক পত্র সম্পাদকের নামে পাঠাইবেন। ধর্মপ্রচারকে ও অন্যান্য প্রকাশ্য সংবাদ পত্রে তত্তদান প্রাপ্তি কৃতজ্ঞতাসহ স্বীকৃত হইবে। ভগবান্ দাতৃবর্গের কল্যাণ করিবেন। এককালীন দান ভিন্ন মাসিক রুতি প্রার্থনীয় নহে।

মুন্সের আৰ্য্যধর্ম-
প্রচারিণী সভা।

শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন।
সম্পাদক।

পাঠক মহোদয়গণ! আপ লোগ ইস লিয়ে অ্যা প্রজ্ঞে হোগি কি শ্রীমহাশ্রীমহাশ্রী মহারাজকুমার নি হমারে প্রস্তাবিত ভারতবর্ষের ইস গুরুতর কার্যে মৈ দিস মাতি সাহায্য কেরে। মৈ আশা করতা হৈ কি তুমহোনি “শুভম্য শীঘ্রং” স্থির জানকর নিজ নিজোচিত দান যোগ্য অর্থ প্রেরণ করোগে। হুম মৈ প্রফুল্লচিত্ত সে কৃতজ্ঞতাপূর্বক তিসমী প্রাপ্তি স্বীকার কেরে আপ লোগকে আনন্দ বর্ধন করোগে।

বিশেষ দৃষ্টব্য।

হমারে প্রস্তাবিত এক লক্ষ টাকার মূল ধন की जीने इस लिये जमा करी जाती है, कि धर्म प्रचारकादि नियत करके भारतवर्षीय देश देशान्तर में सनাতन आर्य्यधर्मकी पुनरुद्दीपना वो स्थान स्थान में संस्कृत विद्यालय आदि प्रतिष्ठा पूर्वक संस्कृत भाषाकी पुनरुन्नति की जाय, तदर्थ एककालिन दान स्वীकार।

রায় অন্নদাপ্রসাদ রায় বাহাদুর কাশি-

মবাজর ৪০০০।
শ্রীযুক্ত বাবু রামপ্রসাদ দাস মুন্সের ২০০।
সৈয়দপুর উন্নতি বিধায়িনী সভা (প্রাপ্ত) ২০।
মতিহারী আৰ্য্যধর্মপ্রচারিণী সভা ২০।
বিবিধ ২৫৫।
শ্রীবাবু ছাখৌরীকান্দ জী প্রসাদ ২০।

হম আশা করতে হৈ कि भारतके हित चाहने-
हारे सहकामाच ही हमारे प्रस्तावित इस अतीव
गुरुतर कार्यमें सहानुभावकता वों सहायता करेंगे।
धर्मार्थ वो भारतका हितार्थ जिन्होंने जो कुछ दे-
सके वो अनुग्रह पूर्वक मुंगेर आर्य्यधर्म प्रचारिणी
सभा में धर्मप्रचारक पत्र सम्पादकके नाम से भेजें।
धर्मप्रचारक वो अन्यान्य प्रकाश्य सम्पाद पत्रों में
कृतज्ञता पूर्वक दान प्राप्ति स्वीकार की जायगी।
भगवान् दाता श्रीका कल्याण करें। एककालिन
दान छोड़के मासिक रुति प्रार्थनीय नहीं है।

मुन्सिर आर्य्यधर्म-
प्रचारिणी सभा।

श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सें।
सम्पादक।



“एक एव ब्रह्मकर्मा निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यतु गच्छति॥”

“एक एव ब्रह्मकर्मा निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यतु गच्छति॥”

४ र्थ भाग । { शकाब्द १८०२ ।
३१ संख्या । { अग्रहायण पूर्णिमा ।

४ र्थ भाग । { शकाब्द १८०२ ।
३१ संख्या । { अग्रहायण पूर्णिमा ।

राम गीता ।

(पूर्व प्रकाशिते पर ।)

उपसंहार ।

रहस्यमेतच्छ्रुति सार संग्रहं
मया विनिश्चित्य तवोदितं प्रियात् ।
यत्ने तदालोचयतीह बुद्धिमान्
समुच्यते पातक राशिभिः कृणात् ॥ ५९ ॥

यदिও ऋति समुहের সার সংগ্রহ অত্যন্ত
গুহ্যতম তথাপি তোমার কল্যাণের জন্য আমি
তত্ত্বাবতের স্থির সিদ্ধান্ত করিয়া কহিলাম । যে
ধীমান্ পুরুষ এই ঋতিসার সংগ্রহ পর্যালোচনা
করেন তিনি তৎকৃণাৎ সমস্ত পাপ হইতে বিমুক্ত
হয়েন ।

জ্ঞান শাস্ত্র আলোচনা করিলে অজ্ঞান বুদ্ধি
বিনষ্ট হইয়া যায়, এবং জ্ঞানোদয় জন্য অজ্ঞানকৃত
কর্মও ভঙ্গীভূত হয় ।

राम गीता ।

(पूर्व प्रकाशित की आगे)

उपसंहार ।

रहस्यमेतच्छ्रुति सार संग्रहं
मया विनिश्चित्य तवोदितं प्रियात् ।
यत्ने तदालोचयतीह बुद्धिमान्
समुच्यते पातकराशिभिः क्षणात् ॥ ५९ ॥

यदिच श्रुति समुहके सारसंग्रह अतीव गुह्य है
तथापि तम्हारा कल्याणार्थ मैं ने उनसबों का
स्थिर सिद्धान्त करके कह दिया । जो धीमान्
पुरुष इस श्रुति सार संग्रह की पर्यालोचना किये
करते, उन्होंने उसही क्षणमें समस्त पापसे विमुक्त
हो जाता है ।

ज्ञान शास्त्र की आलोचना करके अज्ञान बुद्धि
विनष्ट हो जाती है औ ज्ञानोदय होने से अज्ञान से
किया हुआ कार्य भी भस्मीभूत हो जाता है ।

भ्रातर्यदीदं परिदृश्यते जग-
न्नायैव सर्वं परिहृत्य चेतसा ।

मद्भावना भावित शुद्ध मानसः

सुखी भवानन्दमयो निरामयः ॥ ७० ॥

हे भ्रातर्लक्षण ! यदिच এই জগৎ স্পর্শকৃতঃ
দৃষ্ট হইয়া সত্যবৎ প্রতীত হইতেছে তথাচ এই
সমস্ত বস্তুকে মায়াময় মিথ্যা জানিয়া মন দ্বারা
তৎসমস্ত পরিত্যাগ পূর্বক পরমাত্মা স্বরূপ আমার
সহা চিন্তায় নিমগ্ন ও বিশুদ্ধ চিত্ত হইয়া সুখী হও
এবং পুনঃ পুনঃ জন্ম মরণাদি রূপ ব্যাধি বর্জিত
হইয়া সচ্চিদানন্দ স্বরূপে বিরাজ কর ।

यः सेवते मामगुणं गुणां परं

हृदा कदा वा यदि वा गुणात्कम् ।

मोहं स्वपादाक्षित रेणुभिः स्पृशन्

पुणाति लोक त्रितयं यथा रविः ॥ ७१ ॥

যেমন রবি কিরণ জালে ভুবন পবিত্র হয়
তদ্রূপ যে ভক্ত ব্যক্তি নিম্নলি চিত্তে আগাকে
মায়াতী ও ত্রিগুণ রহিত বিদিত হইয়া অর্থাৎ
আমিই পরব্রহ্ম ইদৃশ অভেদবুদ্ধিতে আমার পূজা
করেন কিম্বা লীলাদিকালে আগাকে সহ গুণাত্মক
জানিয়া আরাধনা করেন তাঁহার চরণরেণু স্পর্শে,
ত্রিলোক পবিত্র হইয়া থাকে ।

এতৎ শ্লোকে ভক্তবৎসল ভগবান্ অনুরক্ত
সেবকগণের সম্মাননা ও সম্বর্দ্ধনা করিয়া অভেদ
ভাবের পরাকাষ্ঠা প্রদর্শন করিলেন ।

विज्ञानमेतदखिल श्रुति सारमेकं

वेदान्त वेद्य चरणेन मयैवर्गीतं ।

यः श्रद्धया परिपठेद्गुरुभक्ति युक्ता

मद्रूपमेति यदि मद्भजनेषु भक्तिः ॥ ७२ ॥

বেদান্ত বেদ্য পাদপদ্ম বিশিষ্ট আমার কথিত
সমস্ত শ্রুতির সারভাগ স্বরূপ এই গীতা যিনি
শ্রদ্ধা পূর্বক পাঠ করেন, তিনি আমার বাক্যে
বিশ্বাস করিলে, গুরুভক্তি যুক্ত হইয়া আমার সা-
রূপ্য লাভ করেন ।

इति श्रीमद्भगवद्गीता समाप्ता ।

भ्रातर्यदीदं परिदृश्यते जग-
न्नायैव सर्वं परिहृत्य चेतसा ।

मद्भावना भावित शुद्ध मानसः

सुखी भवानन्दमयो निरामयः ॥ ६० ॥

हे भ्रातर्लक्षण ! यदिच यह जगत स्पष्ट रूप
देख पड़ता है जग सत्य मालूम होता है तथापि इन
समस्त वस्तुओं की मायामय मिथ्या जानकर उन
सबकी मनसे परित्याग पूर्वक परमात्मा स्वरूप
जो मैं हूँ, मेरी सत्वाकी चिन्तामें निमग्न वो वि-
शुद्ध चिन्त ही कर सुखी होओ औ बारम्बार जन्म
मरणादि रूप व्याधि से रहित होकर सच्चिदानन्द
स्वरूप बने हुए विराज करते रहो ।

यः सेवते मामगुणं गुणात्परं

हृदा कदावा यदिवा गुणात्मकं ।

मोहं स्वपादाक्षित रेणुभिः स्पृशन्

पुणाति लोक त्रितयं यथा रविः ॥ ७१ ॥

जैसा सूर्य किरण समूहसे धरित्री पवित्र हो
जाती है उस ही रीत जो भक्त पुरुष निमल चित्त
से भूभक्तों मायातीत वो त्रिगुण रहित विदित हो
कर अर्थात् मैं ही परब्रह्म हूँ इस भांति अमिद् बुद्धि
करके भूभक्तों पूजे अथवा लीलादि के समय सत्व-
गुणात्मक जानकर आराधना करें ऐसे महात्मा का
चरण रेणुका स्पर्शसे त्रिलोक पवित्र हो जाते हैं ।

इस श्लोक करके भक्तवत्सल भगवान् ने अनुरक्त
सेवकों की मर्यादा वो बढ़ाई करके अभेद भाव की
परकाशा देखलाई है ।

विज्ञानमेतदखिल श्रुतिसारमेकं

वेदान्तवेद्य चरणेन मयैव गीतं ।

यः श्रद्धया परिपठेद्गुरुभक्ति युक्ता

मद्रूपमेति यदि मद्भजनेषु भक्तिः ॥ ७२ ॥

वेदान्त आदि ज्ञान से विदित होने का योग्य
पद कमल से युक्त मेरी कही हुई सारी श्रुति का
सारांशरूप जो यह गीता है, श्रद्धा पूर्वक जो ने
इस को पाठ करेगा, मेरी बातोंपर यदि उसका
विश्वास रहे तो वह गुरु भक्तियुक्त होने लगे मेरा
धारण्य लाभ करेगा ।

इति श्रीमद्भगवद्गीता समाप्ता ।

जीव, ईश्वर ओ ब्रह्म ।

* जीव, ईश्वर ओ ब्रह्म लईया बादबुवाद रूपा जम्पना मात्र बलिया बोध हय, वस्तुतः तिनैह एक ओ एकेह तिन । एकमात्र ब्रह्मह तिन तिन नामे शास्त्र ओ लोक व्यवहारेर नियामक, पालक ओ रक्षक हईया থাকेन । ब्रह्म शास्त्र व्यवहारेर नियामक ओ केवल मात्र शब्दर प्रमाणीकृत एवं जीव ओ ईश्वर ईहलोक ओ परलोक नियामक, पालक ओ रक्षक स्वरूपे प्रत्यक्ष ओ अनुमान प्रमाणीकृत नय । ब्रह्म प्रति प्रामाण्य, ईश्वर अनुमान प्रामाण्य, जीव प्रत्यक्ष प्रामाण्य । ईश्वर परलोक नियामक, जीव ईहलोक नियामक, ब्रह्म प्रमाणातीत ।

तस्मान्मुमुक्षुर्भित्तैव मति जीवेश वादयोगः ।

कार्या किन्तु ब्रह्मतत्त्व विचार्य बुधात्माक तत् ॥ *

अतएव मुमुक्षु महादयगणेर जीवेश्वरादि वाद विचारे प्रवृत्त हउया विषय नहे किन्तु शास्त्र द्वारा मर्कथा ब्रह्मतत्त्व विचार करिते থাকिवेन । शास्त्रीय रीतिसे ब्रह्म विचार पूर्वक अनुमान वा प्रगाढ़ परिचिन्तन द्वारा ताँहार ऐश्वर्य मनन करिया प्रत्यक्ष आत्म सहाय ताँहाके लाभ करिवे । विचारार्थ वैत कम्पनार आश्रय ना लईले अद्वैत ब्रह्मतत्त्व निर्णय हय ना, छतरा तत्त्ववेत्तागण ओ ईश्वर मंज्हा दिया गुरु ओ लघु भाव स्थापन करियाछेन मय किन्तु तत्त्वबोध उदय हईले एतावत नितान्त निष्प्रयोजन हईया पड़े । ये कारणके उपलक्ष करिया एक वस्तुत्रिधा कम्पना प्रतीति हय, सेह वस्तुत्रि प्रति लक्ष्य स्थिर राखिया सेह कारणेर अध्ययन करा दैते विचार ओ अद्वैते सिद्धान्त लाभ हईया থাকे एह मंडैश्वर्यमयी माया वा अविद्या सेह कारण बलिया कथित हईयाछेन । एक अथओ चिद्वस्तुते एह माया ओ अविद्यार अन्तराय वशतः जीवेश्वरमय वैत जगत् प्रतिभासित हईतेछे, विचार द्वारा सेह कारण विदित हईले अथओ चिद्रूप प्रत्यक्ष हईवार कोन प्रतिबन्धक থাকे ना । एह प्रत्यक्षर नाम अपरोक्षानुभूति, उक्त अन्तराय ओ छूह प्रकार ; आनन्द ओ विज्ञान । माया आनन्दर मूल ओ अविद्या विज्ञानेर कारण । ईश्वर मायावी आनन्दमय एवं जीव मायिक (अविद्यायुक्त) विज्ञान मय । ए उभयह अद्वैत चैतन्य स्वरूप सहाय

जीव, ईश्वर ओ ब्रह्म ।

जीव, ईश्वर ओ ब्रह्म के विषय में बाद विवाद करना हथा जल्दना मात्र बोध होती है, वस्तुतः तीनों ही में एक रूप वो एकही में तीनों रूप विद्यमान हैं । केवल एक ब्रह्म ही भिन्न भिन्न नाम से शास्त्र वो लोक व्यवहार का नियन्ता, पालनकर्ता वो रक्षा करनेवाले बनते हैं । ब्रह्म जो है सो शास्त्र व्यवहार का नियामक वो केवलमात्र शास्त्र प्रमाण के योग्य है, ओ जीव वो ईश्वर इस लोक वो परलोक के नियामक, पालक वो रक्षक रूप करके प्रत्यक्ष वो अनुमान प्रमाण से सत्य ठहरते हैं । ब्रह्म श्रुति के प्रामाण्य, ईश्वर अनुमान के प्रामाण्य वो जीव प्रत्यक्ष प्रमाण है । ईश्वर परलोक के नियामक वो जीव इस लोक का नियामक वो ब्रह्म प्रमाणातीत है ।

तस्मान्मुमुक्षुर्भित्तैव मतिर्जिज्ञेयावाद्योः ।

कार्या किन्तु ब्रह्मतत्त्व विचार्य बुध्यतां च तत् ॥

अतएव जीवेश्वरादि के विषय में बाद विवाद करना मुमुक्षु महादयोंके उचित नहीं, किन्तु केवल शास्त्रद्वारा मर्कथा ब्रह्म तत्त्व विचारिते रहेंगे । शास्त्रीय रीति से ब्रह्मविचार पूर्वक अनुमान वा प्रगाढ़ चिन्तन द्वारा उनके ऐश्वर्य मनन करके प्रत्यक्ष आत्म सहाय उनको लाभ करेंगे । विचारके समय वैत कल्पना का आश्रय लिये बिना अद्वैत ब्रह्मतत्त्व नहीं निरूपण होता है, सुतरां तत्त्ववेत्ताओंने जीव वो ईश्वर इतनी संज्ञा लगाकर गुरु वो लघु भाव स्थापन किया सही, किन्तु तत्त्वबोध होने से एतावत नितान्त निष्प्रयोजन हो पड़ते हैं । जिस जिस कारण को अवलम्बन करके एक वस्तुकी विधा कल्पना प्रतीति होती है, उसही वस्तु के ओर लक्ष्य हट करके कारण का अवलम्बन करना आवश्यक है । वैत करके विचार वो अद्वैत भावसे सिद्धान्त लाभ होता है । मंडैश्वर्यमयी माया वा अविद्याही वही कारण करके कही गयी है । एक अखण्ड चिद्रूप में यही माया वा अविद्या का व्यवधान वशात् जीवेश्वरमय वैत जगत् भासित हो रहा है । विचार के द्वारा उसही कारण को विदित होने पर अखण्ड चिद्रूप प्रत्यक्ष होनेमें कोई बाधा न रहेगी । इस प्रत्यक्षका नाम “अपरोक्षानुभूति” करके जानना । उक्त अन्तराय भी दो प्रकार के हैं ; आनन्द वो विज्ञान । माया आनन्द का वो अविद्या विज्ञान का मूल कारण है । ईश्वर मायावी आनन्द मय वो जीव मायिक (अविद्यायुक्त) विज्ञान मय है । इन दोनों ही अद्वैत चैतन्य स्वरूप सहाय

कम्पना मात्र । पुरुषों के अवस्था विचार करिलेई एतावत् संशय विदूरित हईवे ।

जीव ओ ईश्वर के दैत जगत् रहियाछे सेई जन्य मूल, सूक्ष्म ओ कारण एतच्छरीर त्रय दृष्ट हय । एई शरीर त्रय के नामई त्रैलोक्य । एई शरीर आछे बलिया अवस्था त्रितय ओ विद्यमान रहियाछे । यथा बाल्य, यौवन, जरा ओ जाग्रत स्वप्न ओ सुषुप्ति । एकटी अङ्गुर के येमन छूईटी पत्र हय तद्रूप एक मूला प्रकृति माया के विज्ञान ओ आनन्द नामक छूईटी वस्तु हईते जीव ओ ईश्वर कम्पना करा नितान्त अमूलक नहे । यतदिन जीव के जीव ओ ईश्वर बुद्धि থাকिवे ततदिन दैत जगत् ओ परिदृष्ट हईवे एवम् यथन अथ ओ चैतन्य स्वरूप परब्रह्म जीव ओ ईश्वर-रूप कम्पना बिनष्ट हईवे सेई सङ्गे सङ्गे दैत जगद्भातिर ओ शान्ति हईया वाईवे । एई अवस्थाई प्रकृत ब्रह्मज्ञान के अवस्था बलिया अभिहित हईया थके ।

“ ईश्वरादि प्रवेशान्ता सृष्टिरीशेन कल्पिता , एतच्छ्रुति वाक्य द्वारा प्रतीति हईतेछे ये ईश्वरई कर्ता, केनना पर्यालोचन हईते अनुप्रवेश पर्याप्त तावद्यापारई ईश्वर के कार्य ; ब्रह्म के कार्य आरोपित हईल ना, केनना ब्रह्म चैतन्यस्वरूप निष्क्रिय । एथाने येरूप ब्रह्म ओ ईश्वर के भेद वापदेश आछे तद्रूप जीव ओ ईश्वर के भेद प्रदर्शित हईतेछे ।

“जाग्रददि विमोक्षान्तः संसारो जीवकल्पितः”

जाग्रत हईते मूल पर्याप्त समुद्र व्यापारई जीवकल्पित । जीव के बुद्धि हईते एई सकल कार्य निष्क्रिय हईया थके, एई जन्य विज्ञानमय अविद्याकोष छिं “जीव” नामे एवम् पर्यालोचन हईते अनुप्रवेश पर्याप्त (लीला) व्यापार मात्रई माया कल्पित, एई जन्य आनन्दमय कोष छिं “ईश्वर” नामे उक्त हईयाछेन ।

“अद्वितीय ब्रह्मतत्वे संप्रतीयमखिलं जगत् ।

ईशजीवादि रूपेण चेतनाचेतनात्मकं” ॥

ईश्वर जीव ओ देह आदि सचेतन ओ अचेतनात्मक एई जगत् समस्त एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म-चेतन्ये कल्पित । येमन जीवात्मा विष्णु, तैजस प्राज्ञ एई तिन संज्ञा ; जाग्रत् स्वप्न ओ सुषुप्ति एई तिन भाव, बाल्य, यौवन, जरा एई तिन अवस्था एवम् प्रत्यक्ष, अनुभव ओ आकस्मिक जन्य सुख दुःख

कल्पना मात्र है । पुरुष की अवस्था विचारने की से एतावत सन्देह मिट जागे ।

जीव वो ईश्वर में है त जगत रहा है, तन्निमित्त मूल सूक्ष्म वो कारण इनतीनों शरीर देख पड़ती है । इन शरीर तीनों की का नाम त्रैलोक्य है । इन शरीरों की वर्तमानता करके अवस्था तीनों भी विद्यमान रही है, यथा बाल्य, यौवन वो जरा ओ जाग्रत स्वप्न वो सुषुप्ति । किसी अङ्कुर से जैसा दो पत्ते निकलते हैं वैसा ही एक मूला प्रकृति माया के विज्ञान वो आनन्द नाम दो दृष्टसे जीव वो ईश्वर नाम को कल्पना करना नितान्त अमूलक नहीं । जब तक जीव की जीव वो ईश्वर बुद्धि बनी रहैगी तब तक हैत जगत भी प्रतीत होगी ओ जब जीव वो ईश्वर कल्पना अखण्ड चैतन्य स्वरूप परब्रह्म में मिट जावेगी उसका साथ ही साथ हैत जगत बोध की शान्ति भी हो जायेगी इस ही अवस्था को प्रकृत ब्रह्मज्ञान की अवस्था करके जानना ।

“ईश्वरादि प्रवेशान्ता सृष्टिरीशेन कल्पिता”

यही श्रुति बचन से प्रतीति होती है जो ईश्वर ही कर्ता है क्योंकि पर्यालोचन से लेकर अनुप्रवेश पर्यन्त समस्त व्यापार ही ईश्वर की क्रिया है, ब्रह्म में कार्य न लगाया गया । क्योंकि ब्रह्म चैतन्य स्वरूप निष्क्रिय है । यथा जैसा ब्रह्म वो ईश्वर में भेद देखाया गया, तद्रूप जीव वो ईश्वर में भी भेद देखाया जाता है ।

“जाग्रदादि विमोक्षान्तः संसारी जीवकल्पितः”

जाग्रदवस्था से लेकर मुक्ति पर्यन्त समस्त व्यापार ही जीवका कल्पित है । जीवकी बुद्धि से इस सब कार्यने उद्भा करता है इस लिये विज्ञानमय अविद्याकोष जो चित है वही “जीव” करके ओ पर्यालोचन से लेकर अनुप्रवेश तक (लीला) समस्त कार्य ही माया कल्पित है इस लिये आनन्दमय कोष जो चित है वह “ईश्वर” करके उक्त होता है ।

“अद्वितीय ब्रह्मतत्वे संप्रतीयमखिलं जगत् ।

ईश जीवादि रूपेण चेतनाचेतनात्मकं ॥

ईश्वर, जीव वो देह आदि सचेतन वो अचेतनात्मक जितना जगत है सबही एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म चैतन्य पर कल्पित है । जैसा जीवात्मा पर विष्णु, तैजस वो प्राज्ञ इनतीनों संज्ञा, जाग्रत स्वप्न वो सुषुप्ति इस तीनों भाव; बाल्य, यौवन, जरा

ও আনন্দভোগ কল্পিত হয়, তদ্রূপ ব্রহ্ম চৈতন্যে পরমাত্মা, ঈশ্বর, ভূতাত্মা, হিরণ্যগর্ভ বিরাট্ সংজ্ঞা ; সৃষ্টি, স্থিতি, প্রলয় এই তিন ভাব ; সত্ত্ব, রজঃ ও তমঃ এই তিন অবস্থা, অধিভূত, অধিদৈব ও অধাত্ম জনিত ভোগানন্দ, যোগানন্দ ও পরমানন্দ কল্পিত হইয়াছে।

আনন্দই কারণ ; আনন্দ কারণেই ঈশ্বরত্ব। উক্ত আনন্দ যদৈশ্বর্য্য জন্য প্রযুক্ত মায়িক বা প্রাকৃতিক। স্বরূপানন্দে ভেদ ভাব নাই ; উহা অনন্ত ও অরূপম। জীব ও ঈশ্বরের আনন্দমাগর গোপ্পদ তুল্য মীমা শূন্য নহে। উপাস্য ও উপাসকের ভাবের মীমা আছে। যতক্ষণ এত-চত্বরের বিদ্যমানতা থাকিবে ততক্ষণ অসীম স্বরূপানন্দ কখনই উদয় হইবে না। ঈশ্বর ‘অহংব্রহ্ম’ ভাবে পরমানন্দ ভোগ করেন, জীবাত্মা ‘অহংজীব’ ভাবে বিদ্যানন্দ ও “অহং যোগী” ভাবে যোগানন্দ ভোগ করেন। “যখন” ও “তখন” আদি কালভেদ থাকিলেই “অহং ঈশ্বর” “অহং জীব” আদি অভিমান ; “অহং ভোক্তা” “অহং স্বর্গী” “অহং চুঃখী” আদি বুদ্ধিবিকার থাকিবে ; এতাবৎই ঈশ্বরত্ব ও জীবত্বের পরিচায়ক। যখন এই দ্বৈতভাবকে প্রাকৃতিক বলিয়া স্বপ্নবৎ অসত্য বোধ হইবে তখনই স্বরূপানন্দে ব্রহ্মত্ব নিশ্চয় হইবে। আমি কে ! উহা কি ! তাহা কি ! ইহা কি ! ইত্যাকার সংশয় সত্ত্বে, ভ্রাম্যমাণ মায়াবী আত্মা, স্বীয় স্বরূপকে (স্বভাব) যখন অবিদ্যার অন্তরায়ে অপ্রত্যক্ষ অনুভব করেন তখনই আত্মার “জীব” সংজ্ঞা এবং যখন ইহা, উহা, তাহা আদি কিছুই নহে, সমুদয়ের অন্তর্যামী (কূটস্থ) প্রকৃতিস্থ, প্রতিবিস্তৃত চৈতন্যের নিয়ামক একমাত্র “আমিই” আছি ইত্যাকার উপলব্ধি হইবে তখনই আত্মার “ঈশ্বর” সংজ্ঞা হইয়া থাকে। যখন ইহা, উহা, তাহা আদি তাবৎই আমি, আমি হইতে পৃথক কিছুই নাই এরূপ অনুভব হইবে তখনই স্বরূপানন্দ অদ্বৈত ব্রহ্মত্ব ভাবের আবির্ভাব স্বীকার্য্য।

“জলাভ্যোপাধ্যধীনে তে জলাকাশাত্মনঃ ।
আধারৌতু ঘটাকাশ মহাকাশৌ স্তনির্মলৌ ॥”

इन तीनों अवस्था और प्रत्यक्ष, अनुभव वो आकस्मिक हेतु ; सुख, दुःख वो आनन्द भोग की कल्पना करी जाती है, तदुप ब्रह्म चैतन्य परमात्मा, ईश्वर सूत्रात्मा, हिरण्य गर्भ, विराट नाम संज्ञा ; सृष्टि, स्थिति, प्रलय नाम तीन भाव, सत्त्व, रजः वो तमः नाम तीन अवस्था ; अधिभूत, अधिदैव, वो आध्यात्म जन्य भोगानन्द, योगानन्द वो परमानन्द की कल्पना करी गयी है।

आनन्दही कारण है। आनन्दही का हेतु करते ईश्वरत्व भी है। उक्त आनन्द पदैश्वर्य्य से बना ऊँचा, इस लिये मायिक वो प्राकृतिक है। स्वरूपानन्द में भेद भाव नहीं ; वह अनन्त वो अनुपम है। जीव वो ईश्वर का आनन्द रूप सागर गोपदके समान है, असीम नहीं। उपास्य वो उपासक समन्वयी भाव की सीमा है। जब तक इन दोनों की विद्यमानता रहेगी तब तक असीम स्वरूपानन्द कभी ही न उपजेगा, “मैं ब्रह्म ऊँ” इस भाव करते ईश्वर परमानन्द भोग करते रहते हैं और जीवात्मा “मैं जीव ऊँ” इस भावसे विषयानन्द वो “मैं योगी हूँ” इस भावसे योगानन्द भोग किये करते हैं, ‘जब’ वो ‘तब’ आदि काल भेद रहन ही से “मैं ईश्वर हूँ” “मैं जीव ऊँ” आदि अभिमान, “मैं भोग करनेवाला ऊँ” “मैं खसी ऊँ” “मैं दुःखी ऊँ” आदि बुद्धि विकार रहेगी, इतना ही ईश्वरत्व वो जीवत्व का पहचान देनेहार है। जब इन द्वैत भावकी प्राकृतिक समझ कर स्वप्नवत् मिथ्या बोध होगा, तबही स्वरूपानन्दसे ब्रह्मत्व निश्चय होगा। “मैं कौन ऊँ” “वह क्या है,” “यह क्या है” इस प्रकार का संशय रहते भी स्मरते हुए मायावी आत्मा, अपना स्वरूपको (स्वभाव) जब अविद्याका आड़ में अप्रत्यक्ष अनुभव करने हैं, उसही समय आत्मा की जीव संज्ञा और जब “यह,” “मैं” आदि कुछ ही नहीं सर्वान्तर्यामी (कूटस्थ) प्रकृतीस्थ प्रति-विस्त्रित चैतन्य के नियामक एकमात्र “मैं ही हूँ” ऐसा बोध होगा, उसही समय आत्मा की ईश्वर संज्ञा होती है। “यह” वह “मैं” आदि सबही मैं ऊँ, मुझसे कुछ भी पृथक नहीं जब ऐसा बोध होता रहेगा, तब ही स्वरूपानन्द में ब्रह्म भाव का आविर्भाव स्वीकार किया जायगा।

“जलाभ्योपाध्यधौने ते जलाकाशात्मनः ।

आधारौ त घटाकाश महाकाशौ सनिर्मलौ ॥”

येमन जलाकाश ओ मेघाकाश जन ओ मेघ उपाधि द्वारा विभिन्न हईले ओ आधारभूत घटाकाश ओ महाकाश निर्मल थाके, तद्रूप आनन्द ओ विज्ञान, माया ओ बुद्धि अधीन चैतन्य एक अद्वैत ब्रह्म चैतन्ये निर्मलभावे थाके । एकरा जीव ओ ईश्वर प्रभेद छरीभूत हईन । ब्रह्म ईश्वर ओ ब्रह्म जीव बलिया प्रतिपन्न हईलेन ।

“आश्चरेन्दो जगत्सत्यमीशोन्य इति चेत्तद्वयम् ।
तज्यते तैस्तदा सांख्ययोग वेदान्त सम्प्रतिः ॥”

बुद्धिभेद वशात् आश्चर्य ये भेदभाव दृष्ट हय ताहा परित्याग पूर्वक सांख्यशास्त्रवादिगण, मायिक जगत्तर निराकार ओ सत्ता परित्याग पूर्वक योगाचारिगण एवं ब्रह्मेश्वर के भावतुल्य भेद परित्याग पूर्वक वेदान्तवादिगण यदि एकवाक्य हयैन ताहा हईले सर्वशास्त्रसिद्ध एकता के अरु किछु मात्र संशय थाके ना ।

वेदान्त शास्त्र प्रथमतः ब्रह्म ओ ईश्वर के भेद प्रतिपादन करियाछैन वटे किन्तु पुनः पुनः प्रतिपादन करियाछैन एकरा अन्यान्य दर्शन शास्त्र सहित वेदान्त के विरोध दृष्ट हईला थाके किन्तु से विरोध विचारार्थ मात्र, सिद्धांत जन्य नहै । सिद्धांत वाक्य तावच्छास्त्र वेदान्त के अनिरोधी ।

सद्वैतः श्रुतः श्रुतेः प्राकृतदेवादयोपरि
मुक्तावपि रूपा माया जगत्सत्यखिलां जनान् ।

श्रुति पूर्वक ओ वर्तमान ये अद्वैत सद्ब्रह्म विषय श्रुति के उक्त हईलाछे, तिनि एकरा ओ तद्रूप विराज करितेछैन ओ भविष्यते ओ सदैवरूप विद्यमान थाकिबैन ; ताहार से ई मुक्तावहार कथन कौन व्यतिक्रम हय ना ओ हय ओ नाई तने रूपा केन अखिल जीव “आमि ब्रह्म” “आमि नूत” बलिया भ्रमण (जगज्जन्मतर) करिया वेड़ाई-तेछे ? उक्त सद्ब्रह्म आश्रित असत्-माया प्रभावै ई भ्रमणरूप जगत् के उदय हईलाछे । ये महात्मा से ई मायारूप कारणके विदित हईलाछैन, तिनि ईदृश भ्रमणके मिथ्या बलिया स्मरण करियाछैन ; ताहार विस्तृत दृष्टि के भ्रमण नाई, अतः जीव ओ ईश्वर के सम्पन्न ओ नाई किन्तु ताहार ई मायाकल्पित स्वप्नमय संसारके निरास ओ सत्ता बोध करैन ताहार भ्रमण ओ करिते

ऐसा जलाकाश वो मेघाकाश जल वो मेघ इस उपाधि करके विभिन्न होने पर भी आधारभूत घटाकाश वो मेघाकाश निर्मल रहते हैं, तद्रूप आनन्द वो विज्ञान वो बुद्धि के अधीन चैतन्य एक अद्वैत ब्रह्म चैतन्यमें निर्मल भावसे रहा करते हैं । अब जीव वो ईश्वर में जो प्रभेद बुद्धि थी सो मिट गयी । ब्रह्म ही ईश्वर वो ब्रह्म ही जीव करके प्रतिपन्न हुए ।

“आत्मभेदो जगत् सत्यमीशोन्य इति चैत्तद्वयम् ।

त्यजन् तैस्तदा सांख्ययोग वेदान्त सम्प्रतिः ॥”

बुद्धि का भेद जन्य आत्मा का जो भेद भाव देख पड़ता है, उसके परित्याग पूर्वक सांख्य शास्त्रवादी, वो मायिक जगत् के मिथ्या वो समस्त परिहार पूर्वक योगाचारवाले और ब्रह्म वो ईश्वर का भावान्तर भेद परित्याग पूर्वक वेदान्तवादी यदि एकवाक्य हों, तो सर्वशास्त्र सिद्ध ऐक्य भाव ही में कुछ भी संशय न रहता है ।

वेदान्त शास्त्र ने परमेश्वर ब्रह्म वो ईश्वर इन दोनों में भेद देखावा है सोही, ता ओ पुनः पुनः ऐक्य भी प्रतिपादन किया, इससे ब्रह्म के दर्शन के लिये के सहित वेदान्त का निरोध देख पड़ता है किन्तु उस विरोध को विचारार्थ माना जाना, निमित्त के निमित्त नहीं सिद्धांत के समस्त शास्त्र ही ने वेदान्त के पक्ष में ही है ।

“यद्वैतं तत् तद्वैतः प्राकृतदेवादयोपरि ।

मुक्तावपि हयामाया भ्रमणमखिलान् जनान् ॥

सृष्टि के पूर्व में भी वर्तमान रहनेवाले जिस नरम के विषय श्रुति में उक्त है उन्होंने अवतक विसाही विराजमान हैं ओ भविष्यत में भी विसाही विद्यमान रहेंगे ; उन ही उसी मुक्तावहार का व्यतिक्रम न कभी हुआ न ही वाला है, तब क्यों जीवों में हया “मैं ब्रह्म हूँ” “मैं मुक्त हूँ” ऐसा सोचकर भ्रमण (जगज्जन्मतर) कर फिर करता है ? उक्त सद्ब्रह्म का आश्रय ली हुई असत् माया का प्रभाव ही यह भ्रमण रूप भ्रम का उदय हुआ है । जिस महात्मा ने उस मायारूप कारण की विदित हुआ, उन्होंने इस भाँति भ्रमण की मिथ्या करके स्थिर कर लिया है ; उनकी विशुद्ध दृष्टि में भ्रमण नहीं, सतरा जीव वो ईश्वरत्व की कल्पना भी नहीं किन्तु उन्होंने इस मायाकल्पित स्वप्नमय संसार की निरास वो सत्य बोध किया करता है, उन्होंने का

थाकेन, केनना अप्रदृष्ट व्याघ्र ओ भयैर कारण हय,
द्वैत पदार्थ पूर्वै छिन ना, द्वैत सृष्टि करियाछैन,
याहुर एही प्रकार मायिक बुद्धि, तिनिहै एक
अद्वैत ब्रह्मा द्वैतस्य कल्पना करैत एव सृष्टवस्तु
विनश्यत एव नित्य सद्यस्तु उदपत्ति ओ विनाश नाहै
याहार सूक्ष्म ओ निर्गुल विवेक जमियाछे तिनि
द्वैतस्य ओ जीवस्य निराकरण पूर्वक ब्रह्म चैतन्य
एकीभूत हयैत । आजा ये सर्वसम्पन्न वर्जित, ईहा
तद्विज्ञानीर नित्य सिद्धान्त ; ताहाते द्वैतस्य वा
जीवस्य कल्पना करा अज्ञान ओ भ्रांति मल्लूत
बलिहारे हईवे । यद्वैतस्य सम्पन्नताहै द्वैतस्य ;
यद्वैतस्य मायास्य । मायावी ब्रह्म चैतन्यहै द्वैतस्य
ओ मायावीन ब्रह्म चैतन्यहै जीव बलिहारे अभिहित
हईया थाकेन ।

जगत्त्रिंशत् पट्टे चित्रमिवापि तं

मायाया तद्रूपेणैव चैतन्ये परिशिष्यतां ॥

एही प्रत्यक्ष परिदृश्यमान जगत् चित्रपट्टे
माया एक चैतन्य सत्ताय सृष्टिचित बोध हईवेछे ।
मायाहै ताहार रसरूप अवयव । वेगन पट्टेहै एक
मात्र वस्तु ओ रसरूप अवयव मिथ्या । कल्पित तद्रूप
एक चैतन्य मात्र सद्रूप वस्तुते जीवस्यरादि नाम-
रूप कल्पना सकलहै मिथ्या, केवल चैतन्य मात्रहै
सत्य । ईहाहै शास्त्रे छुड़ात सिद्धान्त ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः हरि ॐ ।

प्रश्नोत्तर ।

प्रश्न । बालक काहाके बले ? काहाकेहै
वा पिता बला याय ? महान् बलिहारे माननीय के ?
श्रेष्ठ लाभेय प्रकृति कि ? एवम् रुद्धहै वा
काहाके कहै ?

उत्तर ।

“ अज्ज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्ददः ।

अज्ज्ञं हि बालमित्याहुः पितृत्वेन तु मन्ददम् ॥ ”

केवल मात्र अप्रिय वयस्क हईलेहै बालक बला
याय ना । युवक व्यक्ति यदि अधिक वयस्क ओ हय
तवे से व्यक्ति ओ बालक मध्ये परिगुणित । यिनि

अमरी भी पड़ता है क्योंकि स्वप्न दृष्ट व्याघ्र भी भय का
कारण होता है । जिनकी ऐसी मायिक बुद्धि है कि द्वैत
पदार्थ आगे नहीं था, ईश्वरने सृष्टि किया है, उन्होंने
एक अद्वैत ब्रह्ममें ईश्वरत्व की कल्पना की करती है
और जिनका ऐसा सूक्ष्म वो निर्गुल विवेक उपजा की
सृष्टवस्तु नाशमान वो नित्य सद्यस्तु की उत्पत्ति वो
विनाश नहीं है, उन्होंने ईश्वरत्व वो जीवत्व का
निराकरण पूर्वक ब्रह्म चैतन्यमें एकीभूत हो जाता
है । यह तत्वज्ञानीका नित्य सिद्धान्त है कि आत्मा
सर्वसम्पन्न वर्जित ; उनमें ईश्वरत्व वा जीवत्वकी कल्पना
करना अज्ञान वो भ्रान्ति करके है, जानना चाहिये ।
यद्वैतस्य सम्पन्नता ही का नाम ईश्वरत्व ; यद्वैतस्य
मायास्य है । मायावी जो ब्रह्म चैतन्य है सोही
ईश्वर, वो मायावीन जो ब्रह्म चैतन्य, सोही जीव
करके प्रसिद्ध है ।

“ जगत्त्रिंशत् पट्टे चित्रमिवापि तं ।

मायाया तद्रूपेणैव चैतन्ये परिशिष्यतां ॥

यह प्रत्यक्ष परिदृश्यमान जगत् चित्रपट्टे न्याई
एक चैतन्य सत्तामें सृष्टिचित बोध होता है । माया
ही उसमें रं, रूप वो अवयव है । जैसा कि पट्टेहै
एकमात्र वस्तु है और रं, रूप, अवयव मिथ्या कल्पना
भाव है वैसाही एक चैतन्यमात्र सद्रूप वस्तुमें जीव
वो ईश्वर आदि नाम रूपकी कल्पना सबही मिथ्या
है, केवल चैतन्य मात्रही सत्य । यही शास्त्रका
चूड़ात सिद्धान्त है ।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरि ॐ ।

प्रश्नोत्तर ।

प्रश्न । बालक किसको कहलाये ? पिता किसको
कहा जाय ? महान् करके यौन माननीय है ?
ज्येष्ठलाभ करके की प्रकृत रीति क्या है ? और
रुद्धही वा किसको कहा जाय ?

उत्तर ।

“ अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्ददः ।

अज्ञं ही बालमित्याहुः पितृत्वेन तु मन्ददम् ॥ ”

केवलमात्र अज्ञ वयःक्रम होनेही से बालक
नहीं कहावता है । भूखजन यदि अधिक वयःक्रम का
भी होय तो वह भी बालक के मध्यमें गिना जाता

जन्मदाता अर्थात् याँहा हईते शरीर प्राप्त हई-
याछु तिनि पिता नहैन यिनि आत्मार छिर मरणातिर
जन्म मज्जदान अथवा वेदाध्यापना द्वारा ज्ञान प्रदान
करैन तिनिई पिता ।

“न हायनैर्न पलितैर्न विद्वेन न वक्रुभिः ।
श्रमयश्चक्रिरे धर्मं योऽहं ज्ञानं न नो महान् ।”

अधिक वयस हईले वा केश कलाप पलित
हईया गेले किन्ना बहु धन सम्पत्ति लाभ करिले
अथवा पितृव्य, श्वशुरादि सम्पर्कयुक्त हईलेई
महान् बना याय ना । यिनि वेदेर गूढ गर्त
निहित प्रकृत रहस्य भेद करिया वेदेर अध्या-
पना करिते पाऐन तिनिई आमादिगेर मध्ये
महान् बलिया माननीय ।

“विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठं क्रत्रियानाञ्च वीर्यातः ।
वैश्यानां धान्य-धनतः शूद्राणामेव जन्मतः ॥”

ब्राह्मणगणेर मध्ये तिनिई ज्यैष्ठ यिनि वेद-
विदाध्यायन पूर्णक समधिक तत्त्वज्ञान लाभ करिया-
हैन ; क्रत्रियवर्गेर मध्ये तिनिई ज्यैष्ठ यिनि
समधिक साहस, सेना ओ बलवीर्य सम्पन्न ; वैश्या-
वर्न्देर मध्ये तिनिई ज्यैष्ठ याँहार गृहे प्रचुर
धन धान्य वस्त्रादिते परिपूर्ण ; शूद्र समूहेर मध्ये
तिनिई ज्यैष्ठ यिनि अधिक वयस ।

“न तेन ब्रह्मो भवति येनास्य पलितं शिरः ।
नो वै युवाऽप्यधीयान् स्तं देवाः स्यविरं विदुः ॥”

याँहार अधिक वयःप्राप्ति प्रयुक्त मस्तकेर
केश कलाप शुद्ध हईया गियाछे तिनि ब्रह्म नहैन,
युवा हईयाओ यिनि विद्वान ओ ज्ञानवान देवतारा
ताँहाकेई ब्रह्म बलिया जानैन ।

सैयदपुर उन्नतिविधायिणी সভा हईते प्राप्त ।

मद ।

मनेर ये वृत्ति मनुष्येर अस्तुःकरणके अभि-
भूत करिया मनेर मत्तता उत्पादन करे ताँहा-
केई “मद” बलिया अभिहित करा याय । ईहा ये
आमादेर ईष्ट साधन जन्म जेन्नेर कर्तृक नियोजित
हईयाछे तत्पक्षे संशय मात्र नाई । आमा के?
एई प्रश्न सकेलेई आपना आपनि जिज्जामा
करिया थाकेन । एतए ईहा लईया मनोमये

है । जो जन्मदेनेहार है अर्थात् जिनसे शरीर मिला
है, वे प्रथम पिता नहीं, जिन्होंने आत्माकी चिर
समृति के निमित्त मज्जदान अथवा वेद पढ़ाकर ज्ञान
दान करता है उन्हेंको पिता करके जानना ।

“न हायनैर्न पलितैर्न विद्वेन न वक्रुभिः ।

श्रमयश्चक्रिरे धर्मं योऽहं ज्ञानः न नो महान् ॥”

वयःक्रम अधिक होनेसे वा केश कलाप पलित
होनेपर, किन्ना ब्रह्मत् धन सम्पत्ति मिलनेसे अथवा
पितृव्य, श्वशुरादि सम्बंधयुक्त होने ही पर महान्
नहीं कहा जाता है । जिनने वेदका गूढ गर्भमें नि-
हित प्रकृत रहस्य भेद करके वेदकी अध्यापना कर
सक्ती, वही हमारे मध्यमें महान् करके मान-
नीय है ।

“विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठं क्रत्रियामान्त्व वीर्यतः ।

वैश्यानां धान्य-धनतः शूद्राणामेव जन्मतः ॥”

ब्राह्मणोंके मध्यमें वही ज्यैष्ठ है जिनने इद-
विद्या पढ़कर समधिक तत्त्वज्ञान लाभ किया है,
क्रत्रियोंमें वही ज्यैष्ठ है, जिनने समधिक साहस,
सेना वो बलवीर्य सम्पन्न है, वैश्यवर्ग में वही ज्यैष्ठ
है जिनका गृहमें प्रचुर धन, धान्य, वस्त्रादि करके
परिपूर्ण है ; शूद्र समूहमें वही ज्यैष्ठ है जिनकी
अवस्था अधिक है ।

“न तेन ब्रह्मो भवति येनास्य पलितं शिरः ।

नो वै युवाऽप्यधीयान् स्तं देवाः स्यविरं विदुः ॥”

जिनकी अवस्था अधिक होनेपर मस्तकके केश
कलाप शुद्ध हो गये हैं, वह ब्रह्म नहीं किन्तु युवा
होकर भी जिनने विद्वान वो ज्ञानवान होबे देवता-
ओंने उन्हेंको ब्रह्म करके मानते हैं ।

सयदपुर उन्नत विधायिणी सभासे प्राप्त ।

मद ।

मन की जिस वृत्तिने मनुष्यका अन्तःकरण को
अभीभूत करके मनकी मत्तता उत्पादन किया करता
उसही का नाम “मद” करके जानना । यह नि-
श्चयेह है कि ईश्वरने इसको हमारे कल्याणार्थ नि-
यत किया । सबकोई “मैं कौन हूँ” इस प्रश्नको अपने
मनमें पुछा करते हैं, और इसपर जितनी चर्चा की
जाय उतनाही मद की प्रतीति होती है । अहं भाव

यतई आन्दोलन करा थाय ततई मदर कार्या प्रतीयमान हय। आगिर आसिया आमादर अस्तिकरण अधिकार करे। कथित आछे वे “बाइबेलर” वर्णित आदि पूरुष आदम हठां शोभा मज्जा समवेत धरा अबलोकन पूर्वक अतिशय कोतूहलाक्रान्त एवं तिनि के ईहा जानिवार जन्य बाहुल हईलाहिलेन। क्रमे तौ-हार चतुष्पार्श्ववर्ती जीवगणेर कार्यकलाप देखिया तौहार अन्तर मध्ये निज महत्त्वर् भाव उद्दीपित हईल। तहारा ये तौहार सहवास योग्य नहे तहारा तौहार प्रत्यय हईल। तिनि देखिलेन ये, पशुपक्षी प्रभृति जीवगण अपेक्षा तौहार कमता अधिक, सुतरां तहामेर सहवास तौहार तृप्ती लाभ हईल ना। तथन तिनि बाहुलचिते तौहार अस्तर अनुसन्धान करिते लागिनेन। परम पिता तद्ध करिते करिते कतई आनन्द अनुभव करिलेन। तौहार सृष्टि कौशल ओ मज्जल भाव यतई हृदयस्मर करिते लागिनेन ततई तौहार सहवास अथ लाभ करिवार आशा तौहाके उन्मुख करिया तुलिल। मनुष्य मात्रेई उक्त पदवीर अधिकारी विवेचना करिया पाथिव अथके अति अकिफिकर विवेचना करिया थाके एवं अस्तर लाभेर जन्य प्राणमन तौहातेई समर्पण करे। फलतः आपनाके उन्मुख जीव बनिया विवेचना ना हईले उन्नति हईवार संभावना नाई। परम पिता आमादिगके वादृश स्वाधीनता ओ अधिकारवृद्धि प्रदान करियाहेन, तौहाते आमरा संसारेर कार्य सृचारु रूपे सम्पन्न करिते एवं विविध विघ्न बाधा अतिक्रम करिया सत्य पथे विचरण करतः तौहार सहवास जनित अथ अनुभव करिवार योग्य हईते पारि। यदि ओ आमरा कियु-कालेर जन्य धराधामे आवक आछि बटे, किन्तु ईहा आमादर सर्वदा हृदयस्मर थाका उचित वे आमरा धरापृष्ठे सृष्ट जीव समष्टीर मध्ये श्रेष्ठ एवं देवलोकेर अधिकारी। मनोमध्ये एव-प्रकार भाव पोषण करिले आमरा कथन निरुद्ध पथ अवलम्बन करिते पारि ना। पाप चिन्ता अन्तरे उदय हईवामात्र अमनि मद भङ्गना करिया बले तुमि मनुष्य पदवीते अधिष्ठित हईया कि प्रकारे पापाचरण करिवे ? विशुद्ध ज्ञान सम्पन्न हईया कि रूपे पशुर मर्त्य व्यवहार करिवे ?

आकर हमारे अन्तःकरण को अधिकार करलेता है। ऐसी कइ वत चली आती है जो बायबुलमें लिखा हुआ आदि पुरुष आदमने अकस्मात् शोभा साजमे युक्ता धरा मण्डल को अबलोकन करके अत्यन्त कौतु-हल युक्त और वह स्वयं कौन है यह जाननेके लिये व्याकुल हुआ था। क्रमशः उनके चारो ओर विच-रते ऊँचे जीवोंके कार्यकलाप देखकर निज मनम अपने मज्जलका भाव उठा ; वह सब जो उनका सहवास योग्य नहीं है सो उनको बूझ पटा ! उनने देखा जो पशु पक्षी आदि जीवोंसे उनकी समता अधिक है, सुतरां उन सबके सहवास से उनकी तृप्ति न हुई। अनन्तर उनने व्याकुल चित्तसे अपने स्रष्टा का अनुसन्धान करने लगा। परम पिताके तत्त्व विचारते हुये उन को कितनाही आनन्द अनुभव हुआ। उनकी सृष्टि कौशल, मज्जल भाव जहां तक हृदयस्मर करने लगे तहांतक उनके सहवास सुख-लाभ करने की आशा उनको प्रफुल्ल करने लगी। हरेक मनुष्य अपनीकी उच्च पदके अधिकारी समझ कर पार्थिव सुख की अत्यन्त तुच्छ मानता है जो ईश्वर लाभार्थ उनने प्राण मन समर्पण कर देता है। फलतः यदि कोई अपने को उत्कृष्ट जीव करके नमाने तो उन्नति होने की सम्भावना नहीं। परम-पिताने हमको जिस भांति स्वाधीनता सविचार बुद्धि प्रदान करते हैं तिसी हम संसार के कारवार सुन्दर रूपसे समादन करने और नाना शान्ति की विघ्न बाधा अति कम करके सत्य राह पर विचारते ऊँचे उनके सहवास सुख अनुभव करनेका योग्य बन सकते हैं। यद्यपि हम थोड़े दिन के लिये संसारमें आवद्ध हैं सच्चा, परन्तु हमको सर्वदा स्मरण रखना चाहिये जो हम संसार के जीवोंमें श्रेष्ठ ओ देवताके अधि-कारी हैं। यदि अन्तःकरणमें हम इस भांति भाव को पोषण करते रहें तो हम कभी बुरी राहपर न जासकेंगे। पाप चिन्ता हृदयमें उदय होनेहीसे भट “मद” ने तिरस्कार कर जाइता रहता है’ तुम् मनुष्य पदवी में रह कर कैसे पापाचरण करोगे ? विशुद्ध ज्ञान युक्त होकर कैसे पशुके न्याह कार्य करोगे ? तुम् क्या सोच करके अपने को नहीं पह-चान सकते हो ? पृथिवी तुम्हारी प्रवास भूमि-मात्र है, ब्रह्मलोक ही को तुम्हारे प्रकृत निवास स्थान जानना। जिस उपायसे उसही परमपवित्र पुण्यधाम के अधिकारी बन सको तिसकी चेष्टा

पृथिवी तोमार प्रवास क्षेत्र मात्र, त्रकालोकेही तोमार यथार्थ आवाँन । माहाते सेई परम पवित्र पुण्यधामेर अधिकारी हईते पाँर ताहार चेष्टा कर । मंदेर एवम्प्रकार उद्देजनातेई उद्देजित हईया मनुष्यगण सत्कार्य करिते उद्युक्त हईया থাকे । कोन भद्र साधु-मण्डी भूक्त हईले मनुष्य मंदेर क्षमता विशेष रूपे रुदयक्षम करिते पावैन । साधुविर्गहित कार्य करा तौहार पक्षे असम्भव हईया उठे । यिनि साधुसमाजे तेजस्वी हईया विराज करैन तनि पाप पक्षे कलुषित हईया कि प्रकारे प्रभाहीन प्रभात प्रदीपेर नाय लोकेर अनादर भाजन हईया থাকिवैन । यिनि अनेकेर दृष्टांतुर अल, याहार कार्य कदम अनुकरण करिया अनेके आ-ज्ञांकर लाल करियाछैन एवं यिनि धर्माज्ञा दलिया समाजे विशेष रूप सम्मानित तनि कि प्रकारे निकट प्रगति हईया रहिवैन ! मद तौहार अन्तःकरण अधिकार कराते तनि आपनाके साधुविवेचना करैन, सुतरां नानाप्रकार प्रलोभन मद्देओ तनि साधु पदवीते अटल भावे थाकिते कृत-सङ्कल्प हयैन । किन्तु मद स्त्रीय सीमा अतिक्रम करिले समूह अनिष्ट उद्देपादन करे । ईहार प्रतिक्रम अति विशाल । ईहा ए प्रकार गुप्त भावे अन्तःकरण अधिकार करे, ये ईहार कार्य अनुभव करा कठिन हईया उठे ।

कोन भक्ति भाजन आचार्य कोन धर्मोपादेश प्रदान करितेछैन, श्रोतृवर्ग एकाग्रचित्त ताहा आवण करितेछैन एवं तौहार विशुद्धभाव रुदयक्षम करिया मने मने तौहाके साधुवाद दितेछैन । एमन समये मद भाव विमूर्क आचार्यो अन्तःकरण अधिकार करिल । आचार्य मने मने विवेचना करिलैन, आहा ! आमार कि चमत्कारिणी वक्तृता शक्ति ! श्रोतागण ताहा आकर्षण करिया विमोहित हईतेछैन । अपरेर वक्तृताय कि लोकेर मन एप्रकार द्रव हईया থাকे ?

कोन धार्मिक व्यक्ति उपासनाय समये विनीत भावे ईश्वर समीपे आज्ञा निवेदन करितेछैन, तौहार मानसिक दुर्बलता ईश्वरेर निकट प्रकाश करिया पापेर जन्य अनूताप करतः क्षमा प्रार्थना करितेछैन एमन समये मद अलक्षित भावे तौ-

करो । ‘मद’ की इस भाँति उसकाने में उत्तेजित होकर मनुष्यगण सत्कार्य करनेमें उत्सुक हुआ करते हैं । कोई भद्र साधु मंडलीमें मिलने पर मर्दकी शक्ती विशेष भाँति हृदयंगम की जा सकती है, असाधु कार्य करना उनके लिये असम्भव हो उठता है । जिनने साधुसमाज में तेजस्वी ऊँचे विराज करता है उनने पाप पंक्ति कलुषित होकर किस प्रकार से प्रभाशून्य प्रभात दीपके न्याई लोगोंके अनादर पात्र बने रहिगा ! जिनने वञ्छित लोगोंके दृष्टांतके स्थल है, जिनके कार्यकदम अनुकरण करके कितने लोगने आत्मोन्नति लाभ करी है और जिनने धर्माज्ञा करके लोगोंके पास विशेष रूप सम्मानयुक्त है, उनने कैसे निकट पथ अवलम्बन पूर्वक साधारणके निकट घुणाकी पात्र बने रहिगा ! “मद,” उनकी अन्तःकरणकी अधिकार करनेसे वे अपने को साधुकरके मान लेते हैं सुतरां नाना प्रकारके प्रलोभन आने से भी उन्होंने किसी प्रकार से साधुपदवी से नहीं टरता है । किन्तु मद अपनी सीमा टप जाने से अत्यन्त हानि करता है । इसका वि-क्रम अतीव विलास है । इसने इस भाँति अन्तःकरणकी अधिकार कर लेता है कि इसका कार्य असम्भव करना कठिन हो पड़ता है ।

मानो कोई भक्तिभाजन आचार्य धर्मका उपदेश दे रहे हैं । श्रोताओंने एकाग्रचित्त होकर सब सुन रहे हैं, वो उनके विशुद्ध भाव हृदयंगम करके मनमें उनको साधुवाद दे रहे हैं ऐसा समय “मद” ने, भाव से मोहित ऊँचे आचार्यके अन्तःकरणको अधिकार कर लिया । आचार्यने विचारने लगा, आहा ! मेरी कैसी चमत्कारिणी वक्तृता शक्ति है ! श्रोतागण सुनकर मोहित हो गये ! दुसरा किसी की वक्तृतासे क्या लोगोंके मन इस भाँति द्रव होते हैं ?

कोई धर्मात्मान उपासनाके समय विनीत भावसे ईश्वरके समीप आत्म निवेदन कर रहे हैं, उनके मनकी दुर्बलता ईश्वरके निकट प्रकाश पूर्वक पापके लिये पश्चात्ताप करके क्षमा प्रार्थना कर रही है । “मद” ने ऐसा समय अलक्षित भाव से उनको दिक् करने लगा । उनके

हाके विरक्त करि तेछे। ताँहार मन विषय चिन्ताय ब्याकुल हईया। उठितेछे, सुतरां भगवदुपासनाय विशेष विघ्न जन्मिल। से भाव अन्तर्हित हईवारो कोन सम्भावना नाई। प्रकृत पक्षे एरूप समये ईशदेवैर अर्चना करिले कोन फलोदय হয় ना। समाहित अन्तःकरणे उपासनाय प्रवृत्त हওয়া विधेय। किन्तु मंदेर कि टूटिल कार्य! अग्नि अक्षुटि श्वरे कहितेछे मानव! तूमि धार्मिक बलिया सकलैर निकट परिचित। अनेके अवगत आछेन ये तूमि अनेकक्षण पर्याप्त समाहित चित्त हईया जगद्धिधतार उपासना करिया थाक। एखन कि प्रकारे आसन परित्याग करिवे? तोमार अन्तःकरण ये भावे अवस्थिति करिक ना केन, मन्त्र रूप किम्बा स्तोत्र पाठ करिया आपनार धर्म प्रवृत्तिर परिचय प्रदान कर।

कोन महात्मा कोन दीनेर दैन्यावस्था अवलोकन करिया मुक्त हउछे दान करितेछेन। कुषार्थके अन्न दान, ब्रह्महीनके ब्रह्म दान, एवं रोगीके औषधि ओ पथ्य प्रदान करितेछेन। चारि दिक हईते यशोगौरव ध्वनि उठितेछे दाता पुलके पूर्ण हईतेछेन। एमन समय मन्त्रता अन्तर अधिकार करिल। आमार न्याय दाता ये आछे, आमार न्याय के दरिद्रैर जन्य एत क्लेश स्वीकार करिया थाके?

कोन प्रभूत धनशाली व्यक्ति सकार्ये अर्थ बाय करितेछेन। प्रशस्त रम्या निर्माण, विद्यालय ओ चिकित्सालय संस्थापन, पांथ निवास निर्माण एवं रूप ओ तड़ाग खनन करिया अतुल्य वश्या हईतेछेन। चतुर्दिक हईते सुख्यातिर धूमि आसिया। ताँहार कर्णहरे प्रवेश करितेछे। एही सुमोगे मद अवसर पाईया ताँहाके उद्भेजित करितेछे। तिनि आपनाके बड़ लोक विवेचना करिया उन्नत ओ आश्चर्यमय हईलेन। आमि सकार्ये अर्थेर केमन सार्थकता सम्पादन करितेछि। धनीतो अनेक आछेन, किन्तु आमार न्याय एमन पुण्य कर्म के करिया थाकेन?

उपरोक्त कार्य कदम्बेर द्वारा मंदेर क्षमता प्रकाश पाईतेछे बटे, किन्तु ताँहार विशेष क्षमतार विषय एखनओ उल्लिखित হয় नाई। मान-मद कि भयानक! सामान्य व्यक्ति हईते मन्त्राट पर्याप्त ईहार वशीभूत। मानैवणा सकलैरई अन्तरेई

मन विषयकी चिन्तासे व्याकुल हो उठता है। सुतरां भगवतकी उपासनामें विशेष विघ्न उत्पन्न। वह भाव मिटनेकी भी कोई सम्भावना नहीं। वस्तुतः ऐसा समय इष्टदेवकी अर्चना करनेसे कुछ फल नहीं होता है। समाहित अन्तःकरण जड़े उपासनामें प्रवृत्त होना चाहिये। परंतु “मद” का क्या कुटिल कार्य है! उसी दम अस्पृष्ट स्वरसे कह रहा है—मानव! तू धर्मात्मा करके सबके निकट परिचित है, ब्रह्मसे लोग जानते हैं जो तूने ब्रह्म देर तक समाहित चित्त जड़े जगद्धिधताकी उपासनाकी करती है। अब क्यों करके आसन छोड़िगा? तैरा अन्तःकरण जिस अवस्था में क्यों न रहे, मन्त्र रूप किम्बा स्तोत्र पढ़कर अपनी धर्म प्रवृत्ति का परिचय देते रहो।

किसी महात्मा कोई दरिद्र की दुर्दशा देख कर मुक्त हस्त से दान कर रहे हैं। पुष्पार्थकी अन्न दान, वृक्षहीन को वृक्ष दान, वो रोगी को औषध वी पथ्य दे रहे हैं। चारो ओरसे सुयश की ध्वनि उठ रही है, दाता आनन्द में पूर्ण हो रहे हैं। ऐसा समय “मन्त्रता” में हृदय की अधिकार कर लिया। मेरे समान कोन कर्म सत्ता करता है?”

कोई बड़े धनाढ्य पुरुष सकार्य में धनव्यय कर रहे हैं। प्रशस्त पथ निर्माण, विद्यालय, चिकित्सालय संस्थापन, पांथ निवास की प्रतिष्ठा और कूप वी तड़ाग आदि खुदवा कर अतुल्य लाभ कर रहे हैं। चारो ओरसे प्रशंसा बाद आया कर उनको कर्णकुचर में प्रवेश कर रही है। इसी संयोग में मद ने अवसर पाकर उनको उल्ला रचा है। उनने अपने को बड़े आदमी समझ कर उन्नत वो आत्म विस्मृत हो गये। “मैंने सत्कार्य करके अर्थ की कैसी सार्थकता सम्पादन कर रही है। धनाढ्य तो ब्रह्म हैं किन्तु मेरे समान ऐसा पुण्य कर्म कौन किया करता है?”

उपरोक्त कार्य कदम्ब करके “मद” की शक्ति प्रकाश पार रही है, किन्तु उनकी विशेष क्षमता के विषय अबतक भी लिखा न गया है। “मानमद” केसा भयङ्कर है! सामान्य व्यक्ति से लेकर सम्राट तक इसका बशभूत हैं। मर्यादा की इच्छा हर

निहित आछे। प्रभु तैहार भृत्यके कटुस्तु करिलेन, अमनि अभिमान आसिया भृत्येकर अङ्क-करण अधिकार करिल से प्रभु भृत्ये से सर्वदा नश्वर तैहार सहित उठर प्रभु भृत्ये करिते से नीत हईल ना। कोन कार्यालये अर्थात् तैहार कोन कर्मचारी प्रति एकटी कठिन वाक्य प्रयोग करिलेन, अमनि तनि आपनाके अपमानित विवेचना करिलेन। यदि तनि विशेष रूप अवगत आछेन ये तनि अनन्योपाय एवं कार्य तैहार तादृश दक्षता नई, इटां कर्म-ताग करिलेन शान्तिये कोन उपाय हईल सहज नई, विशेषतः गृहे अनेक ठुलि परिवार, तनि याहा उपाय करितेछेन ताहा तैहार जी-वन धारणेर उपाय। तथापि मदेर एमनि क्षमता ये माने उन्नत हईल भविष्य विवेचना ना करिया तनि ताहार उपस्थित कर्म प्रति परिताग करिलेन। मान-मद अत्र विच्छेदेर एकटी प्रधान कारण। कयेक जन समबल एकत्रित हईल कथोपकथन करितेछेन। ईहार मध्ये एकटी कथा ताहार विवेचनाय अपमान सूचक बनिया प्रतीयमान हईल, अमनि ईहा हईते विवा-देर तरङ्ग उठल; शान्ति कोथाय पलायन करिल। ईह मान-मद अत्र विच्छेद हईतेछे, कत गृह वि-विच्छेद घटितेछे। मान-मदेर विष-मयफल कुलीन दिगेर मध्ये विशेष रूपे लक्षित हईल। माने उन्नत हईल तैहार वंशज अथवा निकृष्ट कुलीन-गणेर अति हेय ज्ञान करिया थाकेन। कोन निकृष्ट कुलीन, विशुद्ध चरित्र एवं सद्गुणजात हईले तैहार गृहे अग्रग्रहण करिते किछुतेई सम्भत हईयेन ना। एदिके तनि ये निजे कदा-चारीर अग्रगण्य ताहा तैहार मने एकवार उदय हईल ना। मान-मदे उन्नत हईल तनि कि पर्याप्त नई अत्याचार करितेछेन, अहेर पात्री दुहितेके अङ्गीति वंशज वयस्क पात्रेर सहित परिणय कार्य सम्पादन करिया दितेछेन, अथवा सहजुल्य घर ना पाओयाते आपनार कन्याके अरु-चावस्थार राखियाछेन, एवं ईहा हईते ये कि प्रकार विषमय फल उपादन हईतेछे, ताहा अदयस्त्र करिले अङ्क-करण सिहरिया उठे। किन्तु कि आश्चर्ये विषय कुलीन महाशय साधारणेर न्याय अवस्थिति करिया ईह सकल अत्याचार प्रत्यक्ष

किसीके मन में निहित है। प्रभुने अपने भृत्यको कटु वचन बोला, उसी दम अभिमान आकर भृत्यके अन्तःकरणको अधिकार किया। जिस प्रभुके डरसे वह सर्वदा संकुचित रहता था, अब उनमें उत्तर प्रत्युत्तर करने में भय न माना। किसीका कार्य व्यर्थ के अध्ययन किसी कर्मचारी का कोई कठिन वचन कह बैठा। उसी दम वह अपने को अपमानित समझा। यद्यपि वह खूब जानते हैं जो वह स्वयं अनन्योपाय है और कार्य करने में उनकी उत्तम रूप दक्षता नहीं, अवस्थात काम काढ़ने से स्थानांतर में कोई उपाय होना भी सहज नहीं, विशेषतः गृहमें बद्धत सा परिवार है उनकी उपार्जन से उन लोगों की जीवन यात्रा निश्चाय होती है, तथापि “मद” की ऐसी शक्ति है समान बुद्धि का कि अनन्यमत ऊंचे वो विना भविष्यत के विचार किये वह उपस्थित कक्ष परित्याग किया। “मान-मद” आत्म विच्छेद का भी प्रधान हेतु है। कैक सम-वयस्क पुरुष एक-एक करके कथोपकथन कर रहे हैं। इसमें कोई एक बात किसीके विचारमें अपमान-सूचक करके प्रतीति ऊंची; भट उसही से विवाद के तरंग उठा। शान्ति कहा तो भागी। इसी “मान-मद” से कितना सहृदय भेद हो रहा है, कितने गृहमें आत्म विच्छेद हो गया। कुलीनों के मध्यमें मान-मदक विषमय फल देख पड़ता है। मानसे उन्नत हो केव उन्हें वंशज अथवा निकृष्ट कुलीनों को अत्यन्त तुच्छ मानते। कोई निकृष्ट कुलीन विशुद्ध चरित्र औ सहज जात होति पर भी उसकी गृहमें कुलीन लोग अवग्रहण करने में किसी तरह से सक्षम नहीं होते हैं। परन्तु वे स्वयं जो कदाचारी के अवग्रहण हैं सो एकवार भी स्मरण नहीं होता है। “मान-मद”से उन्नत होकर उनमें कहा तक न अत्याचार कर रहा है खेह की पाद्री लड़की को अस्सी वर्ष के एक वृद्ध के सहित विवाह दे रहे हैं अथवा समयोग्य कुल न मिलनेपर अपनी कन्या को अविवाहित अवस्था में रक्ता करते हैं और इसी जो किस भांति विषमय फल उत्पन्न होता है सो स्मरण करने में भी अन्तःकरण सिद्ध उठता है; किन्तु का आश्चर्य का विषय है, कि कुलीन महाशयगण अन्य साधारण के न्याई, चुप रह कर इतना विरुद्धाचार प्रत्यक्ष कर रहे हैं और वे ही जो स्वयं इन सबका कारण हैं सो एकवार भी मनमें चिन्तन

करिबेहैन। एवं तिनिई ये एई समुदयेर का-
रण ताहा एकवार उ मनोमधे अनुधावन करि-
तेहैन ना। कि प्रकारेई वा करिबेन ? मान
मद' तौहके उम्मत करियाछे वे, तौहार गृह
मधे झुण्डित भावे ये सकल अत्याचार हई-
तेहै तिनि सगाक रूपे ताहार प्रसन्न दितेहैन।
पाछे गुप्त कथा प्रकाश पाग, पाछे तौहार
मर्यादा रूप निर्मल शशाङ्क कलङ्कर मलिन रेखा
निपतित हय, इहाई तौहार भावना। अकिङ्कि-
कर मन्त्रम रक्षा करिवार जन्य कठिन हृदय हईया
स्वीय तनयार उपरे कठिन व्यवहार करा,, एवं
अयं सकल अत्याचारैर कारण अन्तःकरणके पापे
कलुषित करा ये कत दूर पर्याप्त अन्याय कार्य
महजेई उपलब्धि हईते पावे। सुपतिगण गाने
बशीकृत हईया कत दूर पर्याप्त ना अनिष्ट उद्पादन
करितेहैन। सामान्य मान हानिर आशङ्कय तौ-
हार। अपरेर निष्ठ हरण, लक्ष लक्ष जीवैर प्राण
नाश एवं अवशेषे राज्य नाश करिया तवे फल
हईतेहैन। दुर्ग सकल भय उ विघ्न, पुस्तका-
गार भस्मीकृत, बहू बहू विनिर्मित सुन्दर सुन्दर
जनपद सकल ध्वंश एवं असंख्य नरैर शोणित
स्रोते समुद्रि शाली राज्य निष्पन्न करा कि प्रश-
सार कार्य ? एवं ईदृश आचरणेई कि प्रभुत
सम्मान रक्षि हईया थाके ? विद्यार आलोचनाय
वैज्ञानिक उद्बोध साधनाय, आध्यात्मिक उन्नतिते
एवं शिल्प, कृषि, उ वाणिज्य आदि कार्ये निपू-
णता प्रकाश करिले कि मानैर रक्षि हय ना।

क्रमशः।

विशेष द्रष्टव्य।

भारतवर्षैर देश देशान्तरे सनातन आर्य-
धर्मैर (धर्म प्रचारकादि नियोग द्वारा) पुनरु-
द्दीपनार्थ उ आने आने संस्कृत विद्यालयादि
प्रतिष्ठा पूर्वक संस्कृत भाषार पुनरुन्नति
विधानार्थ आगादिगैर प्रस्तावित एक लक्ष टांकार
मूलधनेर पूरण जन्य एककालीन दान स्वीकार।

राय अन्नदाप्रसाद राय बाहादुर कलिकाता

४०००

श्रीयुक्त बाबू रामप्रसाद दास गुज्जर २००

विविध २०१

नही करते हैं। कैसे करें! “मानमद” उनक
इतना उम्मत कर रखा है, जो उनके घरमें जूझित
भावसे जितना अत्याचार हो रहा है उनने छुट तरह
से उस्का प्रयय देता जाता है। गुप्त बात का प्रकाश न
होने, उनकी मर्यादा रूप निर्मल शशाङ्क पर
कलङ्क की मलीन रेख न पड़े, एतने ही उनकी
चिन्ता है। अकिंचित कर मर्यादा रक्षा करनेके
लिये कठोर हृदय से निज तनयापर कठोर व्यवहार
करना वो स्वयं सारे अत्याचारके कारण अन्तःकरण
की पापमे कलुषित करना जो कहां तक अन्याय
कार्य है सो सहज ही में अनुभव हो सकता है।
मुपतिगणने “मान” के बशीभूत हो कर कहां तक
न अनिष्ट उत्पादन कर रहे हैं। सामान्य मातकी
हानिके उरमे उन्हें दुसरे का धन हरण, लक्ष
लक्ष जीवके प्राणनाश, वा अन्त में राज्यनाश करके
तब निवृत्त होता है। दुर्ग समुद्रों को भग्न वी
बिचूण, पुस्तकागार भस्मीभूत, लज्जतवर्ष में निर्झरा
कये बैठाये जड़े, सुन्दर सुन्दर जनपद समूह को
ध्वंश वी असंख्य मनुष्यों के शोणित के प्रवाह समुद्रि-
शाली राज्यको वहाय देना क्या प्रशंसा की कार्य
है ? और ऐसे ऐसे आचरणसे क्या प्रभूत सम्मान की
वृद्धि होती है ? विद्याकी चर्चा में वैज्ञानिक उद्बोध
साधना में, आध्यात्मिक उन्नति में और शिल्प, कृषि
वी वाणिज्यादि कार्य में निपुणता देखलाने से क्या
मान की वृद्धि न होती है ?

शेष आगि।

विशेष द्रष्टव्य।

हमारे प्रस्तावित एक लक्ष रुपये के मूलधन
की जोने इस लिये जमा करी जाती हैं, कि धर्म
प्रचारकादि नियत करके भारतवर्षीय देश देशान्तर
में सनातन आर्यधर्म की पुनरुद्दीपना वी स्थान
स्थान में संस्कृत विद्यालय आदि प्रतिष्ठा पूर्वक
संस्कृत भाषा की पुनरुन्नति की जाय, वर्द्धय एक-
कालिन दान स्वीकार।

राय अन्नदाप्रसाद बहादुर कासिमबाजार ४०००

श्रीयुक्त बाबू रामप्रसाद दास मुंगेर २००

विविध २०१

আশা করি ভারতহিতৈষি মহাত্মা মাত্রেই আমাদের প্রস্তাবিত এই গুরুতর কার্যে সহানুভাবকতা ও সহায়তা করিবেন। ধর্মার্থে ও ভারত হিতার্থে যঁহার যাহা সাধ্য তাহা অল্পগ্রহ পূর্বক মুঙ্গের আর্থ্যধর্ম প্রচারিণী সভায় ধর্ম-প্রচারক পত্র সম্পাদকের নামে পাঠাইবেন। ধর্মপ্রচারকেও অন্যান্য প্রকাশ্য সংবাদ পত্রে তত্ত্বজ্ঞান প্রাপ্তি কৃতজ্ঞতাসহ স্বীকৃত হইবে। ভগবান্দাতাবর্গের কল্যাণ করিবেন। এককালীন দান ভিন্ন মাসিক রুতি প্রার্থনীয় নহে।

৩য় বর্ষের মূল্যপ্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত রাজা নরেন্দ্রনারায়ণ রায় বাহাদুর	কাঁদী	৫
শ্রীমতী মহারানী শরৎসুন্দরী	পুটিয়া	৩৬০
শ্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসাদ চৌধুরী ঐ		৩
,, গিরিধর লাল ঐ		৩
,, শম্ভুচন্দ্র বিশ্বাস ঐ		৩
,, নবাব সিং (জমীদার) ঐ		৩
,, বিশ্বেশ্বর মুখোপাধ্যায় জামালপুর		৩
,, দয়ালনাথ ভট্টাচার্য কলিকাতা		৩৬০
,, রাজকৃষ্ণ মল্লিক হাবড়া		৩
,, নফরচন্দ্র রায় বহরমপুর		৩৬০
,, শ্রীকান্ত চট্টোপাধ্যায় ঐ		৩৬০
,, মহেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায় ঐ		৩৬০
,, মতিলাল বন্দ্যোপাধ্যায় ঐ		৩৬০
,, দ্বারকানাথ ভট্টাচার্য মুন্সেফ আরা		৩৬০
,, মহেন্দ্রনাথ ঘোষাল, কানপুর		৩৬০
,, প্রমথনাথ ঘোষ, বন্দ		৩৬০
,, কুমারনাথ ভট্টাচার্য, গজা		৩৬০
,, অমৃতনারায়ণ আচার্য, মুন্সীগঞ্জ		৩৬০
,, শান্তপ্রসাদ ডিং মাঃ জাফরপুর		৩৬০
,, অভয়চরণ বসু ভগলপুর		৩৬০
,, রাধাগোবিন্দ পাল শ্রীহট্ট		৩৬০
,, আঘরি কাঁদজীপ্রসাদ বরহরোয়া		৩৬০
,, উমেশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় ডিং, কঃ, গঙ্গা		৩৬০
,, ভূষণচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায় হালিশহর		৪১
,, জানকীপ্রসাদ সিংহ মৌবোল		৩৬০
,, ক্ষেত্রনাথ মুস্তফী সোমড়া		৩৬০
,, হরিশচন্দ্র কাশী		৩৬০

হম আশা কর্তে হৈঁ কি ভারত কে হিত বাহনে হারে মহাত্মামাচ হী হমারে প্রস্তাবিত ইস অতীষ গুরুতর কার্য মেঁ সহানুভাবকতা বী সহ্যতা করेंगे। धर्मार्थ वी भारतको हितार्थ जिन्होने जो कुछ दे सैंके सो अनुग्रह पूर्वक मुंगेर आर्थ्यधर्म प्रचारिणी सभा मेँ धर्मप्रचारक पत्र सम्पादकके नामसे भेजें। धर्म प्रचारक वी अन्यान्य प्रकाश्य सम्वाद पत्रो मेँ कृत-ज्ञता पूर्वक दान प्राप्ति स्वीकार की जायगी। भगवान दाताओंका कल्याण करें। एककालिन दान छोड़ के मासिक रुति प्रार्थनीय नहीं है।

২য় বর্ষের মূল্যপ্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত রাজা নরেন্দ্রনারায়ণ রায় বাহাদুর,	কাঁদী,	৫
শ্রীমতী মহারানী শরৎসুন্দরী, পুটিয়া		৫১ =
শ্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসাদ চৌধুরী, মুঙ্গের		২
,, শম্ভুচন্দ্র বিশ্বাস ,,		২
,, গিরিধর লাল, ,,		২
,, নবাব সিং (জমীদার) ,,		২
,, বিশ্বেশ্বর মুখোপাধ্যায়, জামালপুর		২
,, দয়ালনাথ ভট্টাচার্য, কলিকাতা		২ =
,, রাজকৃষ্ণ মল্লিক, হাবড়া		২
,, নফরচন্দ্র রায়, বহরমপুর		২ =
,, শ্রীকান্ত চট্টোপাধ্যায়, ,,		২ =
,, মহেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায় ,,		২ =
,, মতিলাল বন্দ্যোপাধ্যায় ,,		২ =
,, দ্বারকানাথ ভট্টাচার্য মুন্সেফ, আরা		২ =
,, মহেন্দ্রনাথ ঘোষাল, কানপুর		২ =
,, প্রমথনাথ ঘোষ, বন্দ		২ =
,, কুমারনাথ ভট্টাচার্য, গজা		২ =
,, অমৃতনারায়ণ আচার্য, মুন্সীগঞ্জ		২ =
,, শান্তপ্রসাদ ডিং মাঃ, জাফরপুর		২ =
,, অভয়চরণ বসু, ভগলপুর		২ =
,, রাধাগোবিন্দ পাল, শ্রীহট্ট		২ =
,, আঘরি কাঁদজীপ্রসাদ, বরহরোয়া		২ =
,, উমেশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়, ডিং, কঃ, গঙ্গা		২ =
,, ভূষণচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায়, হালিশহর		৪
,, জানকীপ্রসাদ সিংহ, মৌবোল		২ =
,, ক্ষেত্রনাথ মুস্তফি, সোমড়া		২ =
,, হরিশচন্দ্র, কাশী		৬ =

শ্রীযুক্ত বাবু গিরিশচন্দ্র রায়(জমীদার)রায়নগর ৩৬/০

„ বৈশাখী লাল	মজফরপুর	৩৬/০
„ রামদয়াল নন্দী	জামালপুর	২১
„ শ্যামাপদ রায়	দশঘরা	৩৬/০
„ মাতাদীন (সব জজ) গয়া		২৬/০
„ হরিদাস বসু ছোটসরমা		২৬/০
„ স্বরূপচন্দ্র চাঁদ	শ্রীহট্ট	২৬/০
„ বৈকুণ্ঠচন্দ্র দাস অষ্টপতি	ঐ	২৬/০
„ মনঃসুন্দর রায় চৌধুরী ধর্মপুর		২৬/০
„ রাধাগোবিন্দ মুন্সী	ঐ	২৬/০
„ বিপিনবিহারী সরকার রাহুলপিণ্ডী		২৬/০
„ অন্নদাপ্রসাদ চক্রবর্তী লক্ষ্মী		২৬/০
„ আতৌষ মুখোপাধ্যায়	ঐ	২৬/০
„ লাডলীমোহন বসু বহরমপুর		২৬/০
„ রসিকলাল রায় মুন্সী রাহুলপিণ্ডী		২৬/০
„ গঙ্গাদাস বন্দ্যোপাধ্যায় লালবাগ		৩৬/০
„ পূর্ণচন্দ্র দাস	মিরাত	২৬/০
„ কৃষ্ণবল্লভ রায় চৌধুরী কলিগ্রাম		২৬/০
„ কমললোচন রায় চৌধুরী	ঐ	২৬/০
„ তারকবন্ধু ভট্টাচার্য	ভট্টপল্লী	২৬/০
„ যোগেশ্বর রায়	মকদমপুর	২৬/০
„ সারদাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায় নয়াভূমকা		২৬/০
„ উদয়চন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় মিরাত		২৬/০
„ শিবপ্রসাদ চক্রবর্তী	পাহাড়পুর	২৬/০
„ বৈকুণ্ঠনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় গরলগাছা		২৬/০
„ বৈষ্ণবচরণ পূর্ব কায়স্থ রায়নগর		২৬/০
„ কবিরাজ ভগবচ্চরণ সেন	মাগদহ	২৬/০
„ „ যোগেন্দ্রনাথ গুপ্ত	মহাচাঁদা	২৬/০
„ ব্রজগোপাল চট্টোপাধ্যায় হুগুগাছী		২৬/০
„ প্রিয়নাথ মজুমদার	রামপুর হাট	২
„ হরিনারায়ণ মিশ্র	কাঁদী	২৬/০
„ অঘোরানন্দ চট্টোপাধ্যায় বননবগ্রাম		২৬/০
„ বেণীমাধব নাথ	রাহুলপিণ্ডী	২৬/০
„ বিরজানাথ ন্যায়বাগীশ পাথিতা		২৬/০
„ কৃষ্ণচন্দ্র দাস অষ্টপতি	নাটু	২৬/০
„ শ্যামলাল সাহ	রাজমহল	২৬/০
„ কালীপ্রসাদ সাহ	ঐ	২৬/০
„ চন্দ্রনারায়ণ ঝাঁ	ঐ	২৬/০
„ চরণ দাস নরসিংপুর (মধ্যপ্রদেশ)		২৬/০
„ পিয়ারে লাল পাঁচমারি (ঐ)		২৬/০
„ বৈকুণ্ঠনাথ দত্ত	শ্রীহট্ট	২৬/০
„ ভুবনমোহন বন্দ্যোপাধ্যায় কানসাট		২৬/০
„ গোবর্ধন চক্রবর্তী	শিবগঞ্জ	২৬/০

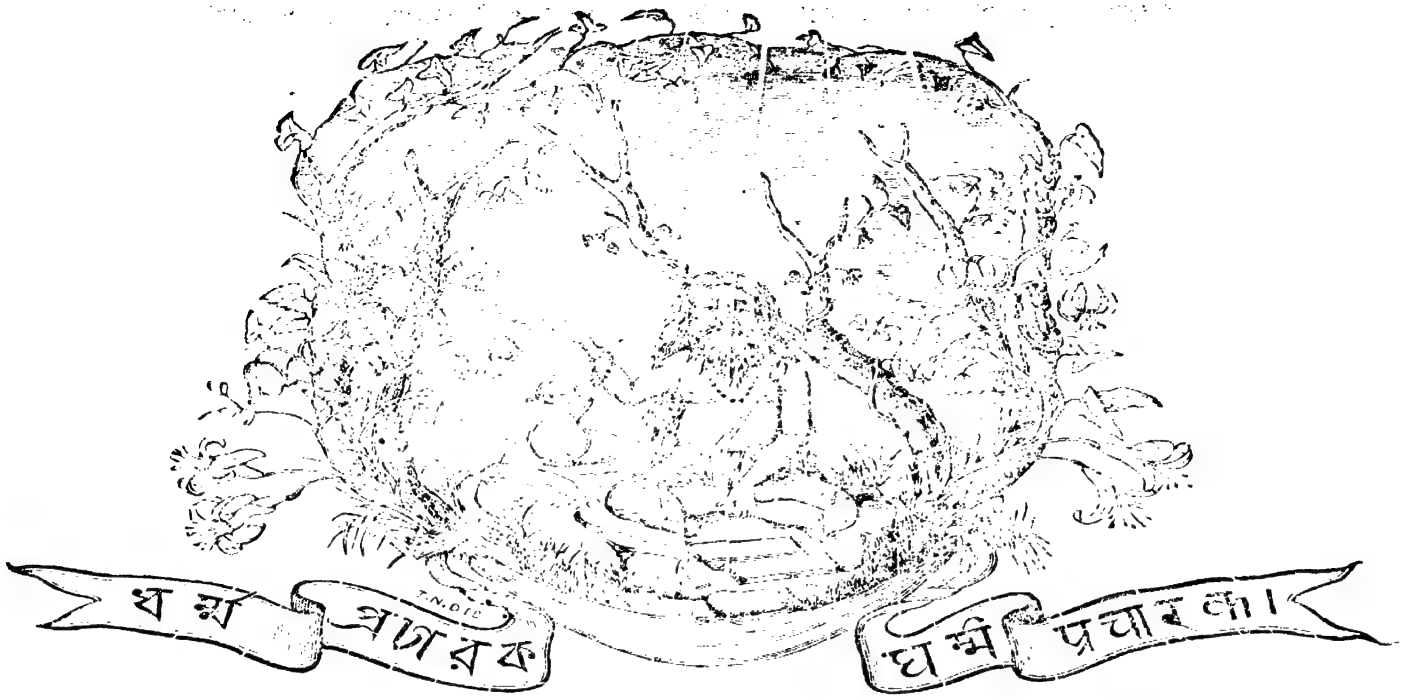
শ্রীযুক্ত বাবু গিরিশচন্দ্র রায় (জমীদার)

	রায়নগর	২১=
„ বৈশাখীলাল,	মজফরপুর	২১=
„ রামদয়াল নন্দী	জামালপুর	২১=
„ শ্যামাপদ রায়,	দশঘরা	২১=
„ মাতাদীন (সবজজ) গয়া		২১=
„ হরিদাস বসু ছোটসরমা		২১=
„ স্বরূপ চন্দ্রচাঁদ, শ্রীহট্ট		২১=
„ বৈকুণ্ঠচন্দ্রদাস অষ্টপতি, শ্রীহট্ট		২১=
„ সনতকুমার রায় চৌধুরী ধর্মপুর		২১=
„ রাধাগোবিন্দ মুন্সী,	„	২১=
„ বিপিনবিহারী সরকার, রায়লপিণ্ডি		২১=
„ অন্নদাপ্রসাদ চক্রবর্তী, লক্ষ্মণী		২১=
„ আশুতোষ মুখোপাধ্যায়,	„	২১=
„ লাডলীমোহন বসু, বহরমপুর		২১=
„ রসিকলাল রায়মুন্সী, রায়লপিণ্ডি		২১=
„ গঙ্গাদাস বন্দ্যোপাধ্যায়, লালবাগ		২১=
„ পূর্ণচন্দ্র দাস,	মিরাত	২১=
„ কৃষ্ণবল্লভ রায়চৌধুরী, কালিগ্রাম		২১=
„ কমললোচন রায়চৌধুরী	„	২১=
„ তারণবন্ধু, মহাচার্য, মহাপল্লী		২১=
„ যোগেশ্বর রায়, মকদমপুর		২১=
„ সারদাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায়,		২১=
	নয়াভূমকা	২১=
„ উদয়চন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়, মিরাত		২১=
„ শিবপ্রসাদ চক্রবর্তী, পাহাড়পুর		২১=
„ বৈকুণ্ঠনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,		২১=
	গরলগাছা	২১=
„ বৈষ্ণবচরণ মুখোপাধ্যায়, রায়নগর		২১=
„ কবিরাজ ভগবচ্চরণ সেন, মালদহ		২১=
„ যোগেন্দ্রনাথ মন্ডল, মহাচাঁদা		২১=
„ নীলমোহন মুখোপাধ্যায়, বাঁকা		২১=
„ ব্রজগোপাল চট্টোপাধ্যায়,		২১=
	কুড়ুলগাছা	২১=
„ প্রিয়নাথ মজুমদার, রামপুরহাট		২১=
„ হরিনারায়ণ মিশ্র, কাঁদী,		২১=
„ অঘোরানন্দ চট্টোপাধ্যায়, বননবগ্রাম		২১=
„ বেনীম ধবষাথ, রায়লপিণ্ডি		২১=
„ বিরজানাথ ন্যায়বাগীশ, পাথিতা		২১=
„ কৃষ্ণচন্দ্র দাস অষ্টপতি,	লাটু	২১=
„ শ্যামলাল সাহ,	রাজমহল	২১=
„ কালীপ্রসাদ সাহ,		২১=
„ চন্দ্রনারায়ণ ঝাঁ, রাজমহল		২১=
„ চরণ দাস, নরসিংপুর (মধ্যপ্রদেশ)		২১=
„ পিয়ারিলাল,	পাঁচমারি	২১=
„ বৈকুণ্ঠনাথ দত্ত, শ্রীহট্ট		২১=
„ ভুবনমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়, কানসাট		২১=
„ গোবর্ধন চক্রবর্তী, শিবগঞ্জ		২১=

পণ্ডিত রামনাথ বিদ্যাভূষণ কানসাট	১৮০
দীননাথ দাস	১৮০
পণ্ডিত রাজচন্দ্র চক্রবর্তী	১৮০
অঘোরনাথ ভট্টাচার্য্য	১৮০
প্রসন্নকুমার দত্ত	১৮০
প্যারীমোহন গোস্বামী	১৮০
শ্রীমন্ত রায় কবিরাজ	১৮০
সারদাপ্রসাদ চট্টোপাধ্যায়	১৮০
নবকিশোর দাস	১৮০
নবকিশোর ঘোষ	১৮০
পরমেশ্বর ভট্টাচার্য্য	১
অঘোরনাথ ঐ	১
ক্ষেত্রনাথ মাহিন্দার	১
যতুনাথ ভট্টাচার্য্য	১
নিবারণচন্দ্র ঘোষ	১
হরিশচন্দ্র চক্রবর্তী	১
আশুতোষ চক্রবর্তী	১
বেণীমাধব গুপ্ত	১
বিশুচন্দ্র ভট্টাচার্য্য	১
ভূষণচন্দ্র ঘোষ	১
কিশোরীমোহন চক্রবর্তী	১
রামবল্লভ শঙ্কর	১
প্রাণকৃষ্ণ চক্রবর্তী	১
লালবিহারি গুপ্ত	১
বেণীমাধব রায়	১
মতিলাল রায়	১
নবীনচন্দ্র দত্ত	১
দীননাথ নন্দী	১
তৈলোক্যনাথ রায়	১
সত্যকৃষ্ণ মুখোপাধ্যায়	১
প্যারীমোহন পাঠক	১
গিরীশচন্দ্র বসু	১
দীননাথ রায়	১
অবিনাশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	১
অখিলচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	১
জগদ্বন্ধু সেন	১
জানকীনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	১
গিরীশচন্দ্র ঘোষাল	১
মহেন্দ্রনাথ ঘোষ	১
মুন্সীলাল	১
বুলাকীলাল	১
নাথসহায়	১
বলদেবপ্রসাদ	১
ব্রজকিশোর লাল	১
অযোধ্যাপ্রসাদ	১
দৌলতপ্রসাদ	১
সূর্যনারায়ণ	১

শ্রীযুক্ত পণ্ডিত রামনাথ	
বিদ্যাভূষণ, কানসাট	১।=
বাবু দীননাথ দাস, শ্রীহট্ট	১।=
পণ্ডিত রাজচন্দ্র চক্রবর্তী, হবিগঞ্জ	১।=
বাবু অঘোরনাথ ভট্টাচার্য্য, কানসাট	১।=
প্রসন্নকুমার দত্ত, হবিগঞ্জ	১।=
প্যারীমোহন গোস্বামী, মৌনাতালী	১।=
শ্রীমন্ত রায় কবিরাজ, ভবানীগড়	১।=
সারদাপ্রসাদ চট্টোপাধ্যায়, গাইঘাট	১।=
নবকিশোর দাস, শ্রীহট্ট	১।=
নবকিশোর ঘোষ, কমলগঞ্জ	১।=
পরমেশ্বর ভট্টাচার্য্য, জামালপুর	১।=
অঘোরনাথ ভট্টাচার্য্য, জামালপুর	১।=
ক্ষেত্রনাথ মাহিন্দার, জামালপুর	১।=
যতুনাথ ভট্টাচার্য্য, জামালপুর	১।=
নিবারণচন্দ্র ঘোষ, জামালপুর	১।=
হরিশচন্দ্র চক্রবর্তী	১।=
আশুতোষ চক্রবর্তী, জামালপুর	১।=
বেণীমাধবগুপ্ত	১।=
বিশুচন্দ্র ভট্টাচার্য্য	১।=
ভূষণচন্দ্র ঘোষ	১।=
কিশোরীমোহন চক্রবর্তী	১।=
রামবল্লভ শঙ্কর	১।=
প্রাণকৃষ্ণ চক্রবর্তী	১।=
লালবিহারি গুপ্ত	১।=
বেণীমাধব রায়	১।=
মতিলাল রায়	১।=
নবীনচন্দ্র দত্ত	১।=
দীননাথ নন্দী	১।=
তৈলোক্যনাথ রায়	১।=
সত্যকৃষ্ণ মুখোপাধ্যায়	১।=
প্যারীমোহন পাঠক	১।=
গিরীশচন্দ্র বসু	১।=
দীননাথ রায়	১।=
অবিনাশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	১।=
অখিলচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	১।=
জগদ্বন্ধু সেন	১।=
জানকীনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	১।=
গিরীশচন্দ্র ঘোষাল	১।=
মহেন্দ্রনাথ ঘোষ	১।=
মুন্সীলাল	১।=
বুলাকীলাল	১।=
নাথসহায়	১।=
বলদেবপ্রসাদ	১।=
ব্রজকিশোর লাল	১।=
অযোধ্যাপ্রসাদ	১।=
দৌলতপ্রসাদ	১।=
সূর্যনারায়ণ	১।=

এই পত্র প্রতি পূর্ণিমাত্রে মুদ্রের আধ্যাত্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে নূতন দত্ত প্রেসে শ্রীবিদ্যনাথ দাস কর্তৃক মুদ্রিত



“এক এব সুহৃদ্বর্ম্মো নিধনেঃপ্যনুযাতি যঃ ।
শরীরেণ সমস্রাজঃ সর্বমন্যচু গচ্ছতি ॥”

“এক এব সুহৃদ্বর্ম্মো নিধনেঃপ্যনুযাতি যঃ ।
শরীরেণ সমস্রাজঃ সর্বমন্যচু গচ্ছতি ॥”

৩য় ভাগ । } শকাব্দাঃ ১৮০২ ।
৩৮ ও ৪০ সংখ্যা । } পৌষ ও আশ্বিন—পূর্ণিমা ।

২য় ভাগ । } শকাব্দাঃ ১৮০২ ।
৩৮ ও ৪০ সংখ্যা । } পৌষ ও আশ্বিন—পূর্ণিমা ।

পরমার্থসার ।

(স্বীকৃতগবান শঙ্করাচার্য্য প্রণীতঃ ।)

পরং পরমহং প্রকৃতেরনাদি-
যেকনিবিন্ধেৎ বহুধা শুদ্ধায় ।
সর্বালিয়ং সর্বচরাচরস্থং

ভ্রামেব বিষ্ণুঃ শরণং প্রপদ্যে ॥ ১ ॥

তুমি পরাপ্রকৃতি হইতেও পরম শ্রেষ্ঠ, অনাদি, সজাতীয় বিজাতীয় ও সগতভেদরহিত এক স্বরূপ হইয়া দেব, দানব, মানবাদি দেহে বহুরূপে বিরাজ করিতেছ, তুমি সকলের একমাত্র আশ্রয়স্থান, অথচ তুমি চরাচরব্যাপী, তুমিই বিষ্ণু, আমি তোমার শরণাপন্ন হইলাম ।

আত্মাসুরাশৌ নিখিলোঃপি লোকে
মগ্নোঃপি নাচামতি নৈক্ষতে চ ।
আশ্বর্ষ্যমেতন্মৃগতৃষ্ণিকা ভে
ভবাসুরাশৌ রমতে যুগৈব ॥ ২ ॥

আজ সজারূপ অগাধ জলগমিতে তীব্র লোকই নিমগ্ন রহিয়াছে, কিন্তু কেহ সে জলের স্রোত গ্রহণ বা তাহার দিকে দৃষ্টিপাতও করিতেছে না । আশ্বর্ষ্য

পরমার্থসার ।

(স্বীকৃতগবান শঙ্করাচার্য্য প্রণীতঃ ।)

পরং পরমহং প্রকৃতেরনাদি-

মেকনিবিন্ধেৎ বহুধা শুদ্ধায় ।
সর্বালিয়ং সর্বচরাচরস্থং

ত্বামেব বিষ্ণুং শরণং প্রদ্যে ॥ ১ ॥

আপ পরাপ্রকৃতি সে भी পরম শ্রেষ্ঠ হো, আপ অনাদি হো, আপ স্বজাতীয় বিজাতীয় বো সগত-
ভেদরহিত একস্বরূপ হোকার भी देव, दानव, मानव
आदि विविध देह में नाना भांति से विराज कर
रहे हो, आप सारे संसारके एक मात्र आश्रय
हो, अथच आप चराचर में व्यापेजये हो, आप
हि विष्णु हो, मैं आपके शरण आया हूं ।

आत्मासुराशौ निखिलोऽपि लोको
मग्नोऽपि नाचमति नैक्षते च ।
आश्चर्यमेतन्मृगतृष्णिका भे
भवासुराशौ रमते यूपैव ॥ २ ॥

आत्म सत्वारूप गम्भीर समुद्र में सब जलोनि
निमग्न हो रहा है, किन्तु कोई उस जलका स
खाद लेता न उस ओर कोई देखता है । आश्चर्य

এই যে মায়ামরীচিকায় মোহিত হইয়া মিথ্যা সংসারসলিলে জীড়া করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছে ।

গর্ভবাসজন্মজরামরণবিপ্রয়োগ হু থাকৌ ।

জগদালোক্য নিমগ্নং গ্রাহ গুরুং প্রাজলিঃ শিষ্যঃ ॥ ৩ ॥
জঠরযন্ত্রণা ও জন্ম, জরা মরণাদিরূপ ব্লেণসমুদ্রে সংসারকে নিমগ্ন অবলোকন করিয়া শিষ্য কৃত-
জলিপুটে নিবেদন করিল ।

ত্বং সাক্ষবেদবেদো ভেদো সংশয়গণস্য সত্যবক্তা ।

সংসারার্ণবতরণে প্রকঃ পৃচ্ছমাং ভগবন্ ॥ ৪ ॥

হে গুরো ! আপনি সাক্ষবেদবেদো, সংশয়পাশ
বিনাশকর্তা ও প্রকৃত তত্ত্ববেদো, অতএব হে ভগবন্
আমাকে এই সংসার সমুদ্র হইতে পারের সপায়
বলিয়া দিউ ।

দীর্ঘোহগ্নিন্ সংসারে সংসরতঃ কস্য কেন সংবন্ধঃ ।
কর্মশুভাশুভফলান্বভবতি গতগতৈরিহ কঃ ॥ ৫ ॥

এই স্বদীর্ঘ সংসারে জন্ম মরণাদি যোগে জীবগণ
বারম্বার ভ্রমণ করিতেছে ; এখানে কাহার সহিত
কিরূপ সম্বন্ধ এবং কেই বা এখানে পূর্বকৃত পাপ
পুণ্যের ফলস্বরূপ সুখ দুঃখ ভোগ করিয়া থাকে ।

কর্মগুণজালবদ্ধো জীবঃ সংসরতি কোশকার ইব ।

মোহান্ধকার গহনান্ধস্য কথং বন্ধনান্মোক্ষঃ ॥ ৬ ॥

যেমন কোশকার কীট নিজ নির্মিত সূত্রগৃহে স্বয়ং
রুদ্ধ হয় তদ্রূপ কর্মরূপ সূত্রজালে জীবগণ আবদ্ধ
হইয়াছে, এই মোহান্ধকার ভয়ঙ্কর বন্ধন হইতে
তাহারা কিরূপে মুক্তিরাজ করিবে ।

গুণকর্মবিভাগস্তে ধর্মাদিধর্মো নিবন্ধকৌ ভবতঃ ।

ইতি গদিতং পূর্ববাক্যৈঃ প্রকৃতিং পুরুষঞ্চ মে ক্রহি ॥ ৭ ॥

এইরূপ পূর্বতন মহাত্মাগণের উক্তি শুনিতে
পাওয়া যায় যে, যিনি গুণকর্ম বিভাগজ্ঞ ধর্ম ও
অধর্ম তাঁহার বন্ধনের কারণ হয় না ; অতএব সেই
মায়া ও জীবের বিভাগ ব্যাখ্যা করুন ।

ক্ষিপ্তপাদারো ভগবান্ পৃষ্ঠঃ শিষ্যেণ তং সহোবাচ ।

বিদুষামপ্যতিগহনং বক্তব্যমিদং শৃণু তথাপি ত্বং ॥ ৮ ॥

শিষ্যের ঈদৃশ প্রশ্ন শ্রবণ করিয়া ভগবান্ অনন্তদেব
বলিলেন যে, তোমার জিজ্ঞাসিত বিষয় বিদ্যাবান-
গণেরও ছুরধিগম্য, তথাপি তোমার নিকট বলি-
তেছি, অবহিতচিত্তে শ্রবণ কর ।

ক্রমশঃ ।

कि बात यह है कि माया जगदृष्ट्या से मोहित
होकर सबकोइ मिथ्या संसाररूप जलमें डूबा रम
रहे हैं ।

गर्भवसजन्मजरामरणविप्रयोगदुःखाब्धौ ।

जगदालोक्य निमग्नं ग्राह गुरुं प्राञ्जलिः शिष्यः ॥ ३ ॥

अठर की यातना वो जन्म, जरा मरणादि रूप
क्लेशसमुद्र में सारा संसारको डूबता डूबा देख-
कर शिष्य कर जोड़के गुरु से निवेदन किया ।

त्वं सांगवेदवेत्ता भेत्ता संशयगणस्य सत्यवक्ता ।

संसारार्णवतरणे प्रकः पृच्छाम्यहं भगवन् ॥ ४ ॥

हे गुरो ! आप सांग वेदवेत्ता हो, आप
संशयपाशको नाश करने हारे हो, आप प्रकृत
त्वके वातावेवाले हो, अतएव हे भगवन् ! इस
संसारसमुद्र से पार उतरने का उपाय मुझको
बनाईये । यही मेरी पुछना है ।

द दीर्घाग्नौ संसारे संसरतः कस्य केन संबन्धः ।

कर्म शुभाशुभफलान्वभुवति गतागतैरिह कः ॥ ५ ॥

इस बड़ा भारी संसार में जन्म मरणादि करके
जीवोंने बारंबार घुम रहा है । यहाँ किस से क्या
संबन्ध और जन्म जन्मांतर में किया हुआ पाप पुण्य
का फलरूप सुख दुःखको कौन ही वा भोग किया
कर्त्ता है ?

कर्मगुणजालबद्धो जिवः संसरति कोशकार इव ।

मोहान्धकार गहनान्धस्य कथं बंधनान्मोक्षः ॥ ६ ॥

जैसा कुशहरी का कीड़ा अपना बनाया हुआ
सुतरी का घरमें स्वयं बंध हो रहता है, वैसे कर्म-
रूप सूतमें जीवसमूह बंधे गये हैं, इस मोहान्ध
कार रूप बंधन से उन्हीं को किस तरह से मुक्ति
होगी ?

गुणकर्मविभागस्ते धर्माधर्मौ निबन्धकौ भवतः ।

इति गदितं पूर्ववक्तैः प्रकृतिं पुरुषश्च मेब्रूहि

पूज्यतन महासाध्वी को ऐसी वचन सुनी जा

है, कि जो गुण वो कर्मका विभाग जानते हैं, धर्म
वो अधर्म उसका बन्धनका कारण न होते, अतएव
उन माया वो जीवका विभाग कहिये ।

ज्ञित्वाधारो भगवान् पृष्ठः शिष्येण तं सहोवाच ।

विदुषामप्यतिगहनं वक्तव्यमिदं शृणु तथापि त्वं ॥ ८ ॥

शिष्य की इस भांति वचन सुन कर भगवान्
अनन्तदेव ने बोला है शिष्य ! तुम्हारी पुछी
हुई बात विद्वानों के भी जानने योग्य नहीं,
तथापि तुमको मैं कहता हूँ, दत्तचित्त हुए सुनते
रहो ।

शेष आगे ।

छूथनिवारण वा गोपालन ।

अहो ए पर्याप्त आमादिगेर से भाव उदय वा एकवार स्मरण होईल ना । आमादिगके ओ धिक् ! ओ आमादिगेर “आमिहृकेओ” धिक् !! धर्मराज महाराज युधिष्ठिरेर अधिकार काल हईते सकलेइ सुनिया आसितेछेन ये गो ओ छूथितार ग्राय निःसहाय ओ छूथिना आर केहई नाई, किन्तु बलिता पारि ना आमादिगेर एतई कि धनगर्ब हईराछे ये आमरा ताहादिगेर प्रति एकवार दृष्टि करिते वा मनोयोग ओ करिते असमर्थ । आमादिगेर पूर्ववर्ती ओ अग्राण्य लोक कत सुख ओ छूथ जनक रीति याहा काल प्रत्यक्ष साक्ष्य प्रदान करितेछे एवं ईश्वरार्जि शिक्षार गुणे याहार कलभागी हईतेछे एवं प्रसङ्गक्रमे दुर्बलतादि जन्य याहार गुरुतर दृष्ट छूथह हईरा उठिराछे, हाय ! एतन ओ कि आमादेर मन हहते ताहा अपसारित हईवे ना एतन ओ कि आमरा आत्मपरिचय ना लईरा मौनी थाकिव, आमादिगेर स्वतः प्रतिष्ठित धर्मर “आर्या” नामेर तवे कल कि हईल ! आमरा कि ताहार प्रतिष्ठा विस्मृत हईराछि ! याहा आमार गृह्यर परे ओ मङ्ग परि-त्याग करे ना, ताहा मत्से ओ आमरा केन स्थिर-निश्चित रहिराछि । आमरा उन्मत्तेर ग्राय तवे केन पूर्व रातिर अनुमरण करितेछि ईहा कि आमादेर एकाकी साधन करिबार जन्म नह ।

हे अभिमानिग ! हे ब्राह्मण !

एक एव सुहृद् धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।

धर्मर गति ये कत सूक्ष्म ओ धर्म भिन्न मरणान्तर ये आर किछुई सहगामी हय ना, ताहा सकलेइ विदित आछेन । अग्राण्य जातिर धर्म एतन पर्याप्त यथावत् उन्नति लाभ करिया गइतेछे किन्तु अत्यन्त छूथेर विषय एई ये आमादिगेर परस्पर अनैक्यवशतः आमादिगेर धर्मई दिन दिन प्रतिभा-हीन हईरा पड़ितेछे एवं एई जन्य ईहार मर्यादा एत न्यान हईरा गियाछे ये गत १२०० वत्सर हईते आमादिगेर धर्मविरोधी यवनगण भूपति-गणेर निकट स्वीय समधिक प्रतिष्ठा स्थापन करिया आसितेछे एवं भूपति ओ आमादिगेर धर्मर प्रति आस्था वा ग्रायपरतार प्रतिद्विष्टता ना करिया सर्व प्रकार आमादिगके दुर्बल बोध सकल विषयेई तिरस्कार करितेछेन । गत ४

अतिनिवारण, वा गोप्रतिपालन ।

क्या अब भी हमलोगोंको वह ईर्ष्या नहीं आती, और हम नहीं जानते ! ? धिक्कार है ! हमको और हमारे “हम” पनको और हमको ! आज तक सबकोई महाराज धर्मराज वा युधिष्ठिरके समयसे कहते आये हैं, कि गौ वा लडकीके समान कोई गरीब वस्तु नहीं, परंतु न जाने हम लोग अपनी अमीरी के ही कारण उन गरीबोंकी औरतक नहीं देखते क्या—भुक्तते ! हाय ! क्या अबतक भी हमलोगोंके दिलसे वे बातें न उतरेंगी ! जो कि हमारे पूर्वजोंने वा अन्यलोगोंने, कोई सुख-कारी कोई दुःखकारी समय प्रत्यक्ष दिखनेवाली की हैं, जिनको कि हम लोग इनही अंग्रेजोंकी सुराज्य शिक्कासे जानकर उनके भागी होते हैं और प्रसंगसे दुर्बलताके कारण उनके वजनको सहना भी भारी समझते हैं ? क्या अब भी हम लोगोंका मौन कभी हमको “तुम कौन” ऐसा नहीं कहलावेगा ? क्या हमारा धर्म इतना स्वतन्त्र प्रतिष्ठित “आर्य” नांव पाया, क्या हम उसकी प्रतिष्ठा भूल गये ? वह भी, जो यज्ञानवासके अनंतर भी हमरा साथ न छोड़ता—क्यों हमको इतने दीन और निर्लज्ज कर चुका ? हम भी क्यों दया पागलके समान, उसका पीछा खींचे ही जाते हैं ? क्यों यह हमारा अकेलेका ही न बना रहा ?

हे अभिमानियो वा भाईयो !

एक एव सुहृद् धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।

धर्मकी गति कितनी सूक्ष्म है, और धर्मके सिवाय मरणके अनंतर भी साथ जानेवाला कोई नहीं है, यह सबकोई जानते हैं, उसमें भी औरोंका धर्म यद्यपि अभी तक जैसा तैसा दृष्टिपर ही है, परंतु बड़े शोचका विषय है कि हम लोगोंके अनेकसे हमरा धर्म दिन दिन घटता जाता है और इसी कारणसे इसकी कदर इतनी घट गई कि आज १२०० वर्षसे हमारी शलुता करनेवाले जो यवन, उनका वजन हर बातमें हमसे अधिक, सरकारमें पड़ने लगा और सरकार भी हम लोगोंके धर्मका ख्याल वा ध्यायकी रीति पर ध्यान न रखकर, सब रीतिसे दुर्बल हम लोगोंको हर बातमें तिरस्कार करने लगी, आज कोई बार महीनोसे बराबर एक नाएक सुहृद् धर्मा आर्य वा हिंदु और यवन वा मुसलमानोंन ज्ञा ही करता है, और जिसका

মান হইতে আর্থ্য বা হিন্দু ও যবন বা মুসলমানের মধ্যে একটা না একটা মোকদ্দমা * প্রায়ই ঘটিতেছে এবং হিন্দুদিগের কারাবরোধ, অর্থদণ্ড বা শিকার আদি তাহার পরিণাম ফল হইতেছে। সন্মানে ক্রমে যবনদিগের স্পর্ধা এত বৃদ্ধি হইয়াছে যে যেমনই কেন ধর্মবিরুদ্ধ কার্য হউক না তাহারা অবোধ সম্পন্ন করিতেছে কেন না তাহাদের ইহা ঈশ্বর নিশ্চয় হইয়াছে যে আমরা যেমন কেন উলঙ্গ হইয়া ও নৃত্য করি না শাসন কর্তৃপক্ষ আশাশুভদিগেরই পক্ষ সমর্থন করিবেন। বাস্তবিকও এতাবৎ মোকদ্দমার ফল সেইরূপই হইয়াছে। যে দিন হইতে আর্থ্যগণের হস্ত হইতে ভারতাবধিপত্য ভার যবনদিগের হস্তে গিয়াছে সেই দিন হইতেই আশাশুভদিগের বল বিনষ্ট হইয়াছে। যদিও ক্রীমতি মহারাণী ভারতেশ্বরের বিজয়পতাকা ও চারশরী আশাশুভদিগের তথ্য তথ্য শুনিয়া যথার্থ বিচার করিবার জন্য প্রস্তুত, অথচ রাজকর্মচারীগণ তদ্বিনয়ে অমনোযোগী, এই নিমিত্ত ঈদৃশ কটুক্তি দ্বারা অশাস্ত্রীয়ভাবে রাজার ননোক্ত্য না দিয়া থাকিতে পারিলেন না। ইহার সমুপায় বিধানও রাজার আশ্রয়।

হে আর্থ্যধর্মাবলম্বীগণ! যদি তোমরা যথার্থই ধর্মপ্রিয়গণ থাক ও নিজ ধর্ম বা জননী রূপিনী মাভীকে পূজ্য বলিয়া সম্মান কর, তবে শীঘ্রই ইহার উপায় বিধান কর। নিজ নিজ গুলী বা সভা হইতে রাজ প্রতিনিধি ক্রীমান মহামায়া মাকুইস্ অর রিপন বাহাদুরের নিকট এক এক খান নিবেদন পত্র প্রেরণ কর নতুবা হায়দ্রাবাদ, ভগলপুর বা মিরজাপুরের গোবধ হইল আর তত্রস্থ হিন্দুগণ কোন উপায় করিতে পারিলেন না এরূপ ঘটনা ভোমাদিগেরও ঘটিতে পারে এবং ভোমাদিগেরও “ভ্রাক্ষণার্থং গবার্থং বা সদ্যঃ প্রাণান্ পরিত্যজেৎ” এইদাক্ষাত্যম্বারে প্রাণ বা ধর্ম পরিত্যাগ করিতে হইবেক।

হে নৃপতিভগ্ন! আপনারা যদিও সর্বদা লোকপার্শ্ব মনোযোগ পূর্বক কর্ণপাত করেন না তথাচ আর্থ্যনা এই যেন এ বিষয়ে উদাসীন না করেন।

হে পণ্ডিতগণ! আপনারা কেবল পুস্তকাদি

ফল হিন্দুগণের কৈদ, জরমানা, বা শিকার আদি হীনমিতা। হোতে হোতে অব্যবহার্য প্রাবল্য ইতনা জ্ঞাত্য কি অব্যবহার্য প্রাবল্য ইতনা হো, বেধভরক কর গুজরতে হৈ, কারণ উল্লেখ পূরা নিশ্চয় হো গয়া হৈ কি হম চাহে জেসে নংে নাচে তৌ ভী সরকার হমারা হী পল্ল করোগী, আর ইমী রীতিকা আজতক ইন মুকদ্দমোঁ সর কারকা বর্তাব ভী হোতা আয়া হৈ, হম লোগোঁকা বল তভী নষ্ট জ্ঞাত্য হৈ জব কি হমারে পূর্বজোঁকে হাথসে হমারী প্রভুতা, অন্তোঁকে বা মুসলমানোঁকে হাথসে গর্দ, যদ্যপি অমিতী মহারাণী ভারতেশ্বরীকী বিজয় পতাকা আর ন্যায্য সরগী হমারে মুখদুঃখকো মুনকর যথার্থ রীতিসে মিটানোবালী হৈ, তথাপি রাজ কর্মচারী ইসকা অ্যান নহী রহতে, ইস লিয়ে ऐसी ऐसी कटु उक्तिके लेख द्वारा अपने धर्मके जोपसे सरकारको दुःखित किये बिना रहा नहीं जाता, इसका उपाय भी तो सरकारके ही हाथ है।

হে আর্থ্যধর্মাবলম্বীগণ, যদি তুম সচ্চে अपने धर्मपर आरुढ़ हो और अपनी धर्म वा जननीरूप गौको पूज्य मानते हो तो इसका उपाय शीघ्र करो, अपनी अपनी मंडली वा सभासे एक एक निवेदनपत्र श्रीमान महामाया मार्किम आप रिपन् राजप्रतिनिधिके नामसे शीघ्र भेजो नहीं तो हैदराबाद, भागलपुर, वा मिर्जापुरमें गोवध ज्ञात, और वहांके हिंदू सुंइ देखते रहें, जैसे कभी तुम्हारे ऊपर भी यह प्रसंग आवेगा और तुम लोगोँको भी “ब्रह्मणार्थं गवार्थं वा सद्यः प्राणान् परित्यजेत्” इस वाक्यानुसार जानसे वा अपने धर्मसे हाथ धोना पड़ेगा।

হে নৃপতিভগ্ন, যদ্যপি আপ লোগ সর্বদা লোকপার্শ্ব কো সাবধান চিত্তসে কভী নহী সুনতে, তথাপি ইস প্রার্থনাके विषयमें जैसे न होजाइये।

হে পণ্ডিতগণ, আপ লোগ কেবল पुस्तकादि अवलोकन, अवगण, पठनमें ही अपना काल बिताते

* মুনী ইক্কনগি, হায়দ্রাবাদের বিদ্রোহ, ভগলপুর, মিরজাপুর, বাগদাদী, আদি স্থানে গোবধ, বেহাদের সহস্রমে গণেশধীর বিবাদ ইত্যাদি।

* মুনী ইক্কনগী, হৈদরাবাদকা বলবা, भागलपुर, मिर्जापुर, बनारस आदि स्थानका गोवध बिहारके मुहरम में गणेशजीका भगडा आदि कई उदाहरण हैं।

दर्शन, श्रवण, पठन करियाई दिनपात করেন, কিন্তু আশা করি এ বিষয়টীর জ্ঞাও কিঞ্চিৎ সময় ব্যয় করিবেন ।

হে ধনাঢ্যগণ ! ইহা নিজা বাইবার সময় নহে, দেখ, তোমাদের ধর্ম নষ্ট হইতে চলিল শীঘ্র ধন সহ জাগ্রত হও ।

হে সার্বভৌমিক সভ্যগণ ! যদিও এই কার্য্যটী সকলের সমবেত যত্নসাধ্য, তথাপি প্রত্যেকের ইহাতে সচেতন হইতে হইবে । এজন্য নিজ নিজ সভাকে উত্তেজিত কর ।

হে নিরুদ্যোগীগণ ! ইহাই তোমাদের উদ্যম দেখাইবার উত্তম অবসর, এজন্য এখনও দয়াল ইংরেজ রাজপ্রতিনিধি রিপন সাহেব বাহাদুরের নিকট স্বকীয় এবং স্বধর্মের রোদনধ্বনি গোচর করিতে ক্রটি করিও না ।

হে সংকার্য্যপরাগণ ও অসংকল্পবিরাগীগণ ! পত্র সম্পাদকগণ ! যদিও তোমাদিগের কণ্ঠ এই রূপ কাষের জ্ঞা চীৎকার করিতে করিতে ভগ্ন স্বর হইয়াছে ও হইবে তথাপি এই সময়ে ধর্ম্মকার্য্যানুরোধে নিজ ধর্ম্মানুসারে কেবল তোমাদিগকেই নহে তোমাদিগের পাঠকগণকেও চীৎকার করিতে ও সর্ব্বতোভাবে সহুপায় প্রচার করিতে হইবে ।

হে নিরঙ্করগণ ! তোমরাও এই উপলক্ষেও পড়িতে অভ্যাস ও সকলের সহিত মিত্রতা কর ।

হে ভারতবাসীগণ ! তোমরা সকলেই এই দেশবাসী, অতএব পরস্পরের বন্ধুত্ব যেন বিচ্ছেদ না হয় ।

হে রাজকর্ম্মচারীগণ আপনারাও ঈদৃশ কার্য্যে যথার্থ কাহার অপরাধ এবং আপনাদিগের বিচার কত দূর প্রজাহিতকারী ও রাজনিষ্ঠা-বর্দ্ধনকারী তৎপ্রতি সূক্ষ্ম দৃষ্টি করুন তাহা হইলে পক্ষপাতের কার্য্য শুনিয়া বা দেখিয়া আমাদিগকে দুঃখিত হইতে এবং আপনাদিগকেও গ্রহবৈগুণ্যের বশ-বর্ত্তী হইয়া ঈদৃশ রাজদণ্ড দিতে হইবে না ।

হে মহামান্য রিপন মহোদয় ! আপনার শুভা-গমনে আনন্দ এবং গীড়া জন্ম দুঃখ ভণ্ডভব করিলাম, এক্ষণে কার্য্যক্ষেত্রে আসিয়া শুভানুষ্ঠান দ্বারা আপ-নার পূর্ব্ব প্রতিজ্ঞানুসারে আমাদিগের আশা পূর্ণ করুন । আপনার এই সৎকীর্ত্তি আমরা চিরকাল স্মরণ রাখিব এবং ইতিহাস তাহার সাক্ষ্য প্রদান করিবে ।

হৈ পরंतু ইধর भी कुछ काल अवश्य आप देवेंगे ऐसी आशा है ।

हे धनिको, अपने धनके साथ आप लोगोभी जलद जागिये, ऐसे विषयमें सोना अच्छा नहीं देखो, तुम्हारे धर्मकी चांदी बन गई ।

हे सार्वभौमिक सभासदो, अद्यपि यह काम सर्व संमतका है तथापि प्रत्येकको इसका यत्न करना चाहिये, इसलिये सोती ऊई अपनी सभाओंको खडी करो ।

हे निरुद्योगियो, यही तुम्हारे उद्योगको प्रारम्भ करनेका अच्छा मुहूर्त्त है । इसलिये अब भी दयाल अंग्रेज सरकारके प्रतिनिधि रिपन साहबके पास अपनी वा अपने धर्मकी आर्त्तध्वनि पडचाने में कसर न करो ।

हे सत्कर्मप्रवृत्ति दुष्कर्मनिवृत्ति सूचको, उत्त-पत्त संपादको, यद्यपि तुम लोगोका कंठ इन ही कामोंमें चिल्लाते चिल्लाते बैठ गया वा बैठेगा, तथापि इस समय फिर भी इस धर्मकृत्य के हेतु अपने धर्मानुसार तुमको ही केवल नहीं, किन्तु, तुम्हारे पाठकोंको भी चिल्लाना और सब रीतिसे सदुपाय जताना पडेगा ।

हे अक्षर गतुआ, इस बहानेसे तो भी तुम पढनेका अभ्यास करो और सबके मिल बनो ।

हे भारतवासियो, चाहे जिस रीतिसे अपसमें एकदेशनिवासित्वके कारण बंधुत्वको न तोडो ।

हे राजकर्मचारियो, आप भी ऐसे ऐसे कामोंमें यथार्थ किसका अपराध है और आपका किया ऊआ न्याय कहाँ तक प्रजाकी रक्षा और राजनिष्ठाकी दृष्टिको सहकारी है इसपर भी सूक्ष्मदृष्टि दिया करो, तो एक तर्फी ही बातें सुनकर वा देखकर हम लोगोकी दतना आक्रोश करना न पडेगा और आपके विपरीत ग्रहका कारण होकर राजदण्ड न भुगतना होगा ।

हे महामान्य रिपन महोदय, आपके शुभा-गमनका आनन्द और रुग्णताके शोकका अनुभव तो हम लोग ले ही चुके, अब कार्य्यसरणीकी शिफा जो बाकी है, उसको भी, आशा है, कि जल्दभर तक हम लोग, आपकी पूर्वप्रतिज्ञाओंके अनुसारसे, न भूलेंगे, और यह निश्चय है कि वह इतिहास द्वारा भी आपकी सत्कीर्त्ति ही का सदा स्मरण देगी ।

हे भारतचक्रवर्तिनी राजराजेश्वरी ! वरुन
आमरा भारतवासिदिगेर निकटेई आमादिगेर
आर्तनाद गोचर करिते पारितेछि ना तখন
तोमाके किरूपे विदित करिब ।

हे परमेश्वर ! तूमिओ एई सकल उपायेर
सहायता करिया आमादिगेके कृतार्थ कर ।

“उचितकारिणी” कार्यालय } धर्मावलम्बी
श्रीनाथ द्वारा, मेठवार प्रांत } उचितकारिणी सभार सभागण ।

आमरा उचितकारिणी सभाके एई महदयम
ज्वालदयेर सहित सहानुभूति करि । भगवान
ताहादेर आशा पूर्ण करिने समस्त भारतेर विविध
कल्याण संसाधित हईवे । किन्तु महात्मा रिपन
बाहादुरेर निकट आवेदन मात्र करिलेई ये-
एतए प्रार्थना पूर्ण हईवे, ताहार आशा नाई ।
प्रताह ये ईराजगणेर भोजनार्थ कत गोहत्या
हईया थाके ताहार ईरता कर कठिन । अतएव
उचितकारिणी सभार निकट आमादेर प्रार्थना एई
ये, आमादेर धर्मप्रचारकेर १४श, १५श, १६श, ७
१७श संख्याय “गोहत्या निवारण” प्रस्तावेर
समालोचना काले याहा याहा लिखित हई-
याछे तबिसये एकटू प्रणिधान करेन, तदनुसारे
अनुष्ठानपत्र प्रचार करिया समस्त भारतेके उद्दे-
शित करिने अपेक्षारुत उद्भूत कललात
हईवेई हईवे । तबे आर्याओ महम्मदीय धर्मा-
वलम्बीगणेर मध्ये ये मध्ये मध्ये विषम विरोध
उपस्थित हय, ताहार सुविचार ज्ञान रिपन महादय
एकटू विशेष व्यवस्था करुन । ईहा आमादेर एकांत
प्रार्थना ।

धः, प्रः, सं ।

मुङ्गेर आर्यधर्मप्रचारिणी सभार

५८ वार्षिकोत्सव ।

ये परमात्मार प्रचओ तेजोप्रभावे त्रिभुवनेर
तावए क्रियाई नियम पूर्वक अनिर्वहित हईतेछे,
याहार रूपार आमरा ह्रस्व मनुष्यदेह लात करिया,
ताहार अनन्तलीला दर्शने विरोहित हईया रहि-
याछि । सेई रन्दारकन्दानन्दनीय परमपूकमेर
अभय चरणारविन्दे प्रणाम करि । याहार दयालात
करिले प्रबल वायु विताडित मेघ-मण्डलेर नाय
विपुल विघ्न विपत्ति विनष्ट हईया याय, याहार कृपा-
कटाक्षमात्रेई महापातकीओ मुक्तिलात करे, यिनि
तत्त्वबलता वशवद हईया समये समये संसारेर

हे भारतचक्रवर्तिनी राजराजेश्वरि, जब
हमारे भारतवासियो तक भी हम अपनी पुकार
नहीं पकड़ सकते, तो तुम तक कैसे जायगी ?

हे परमेश्वर इन सबके उपायोको साहाय्य
करनेके लिये तुम भी कम्बर बांधे रहो ।

“उचितकारिणी” कार्यालय } धर्मावलम्बी
श्रीनाथ द्वारा, प्रान्त मेवाड़, } उचितकारिणीसभासदः

इस सद्व्यम के अर्थ हम “उचितकारिणी
सभाके ओर पूर्णहृदयसे सहानुभूति प्रकाश करते
हैं । भगवान् उन्हींकी आशा पूरीकर देनेसे समस्त
भारतवर्षके नाना भान्ति कल्याण संसाधित होंगे ।
किन्तु यह कुछ आशा नहीं देखी जाती कि रिपन
बहादुरके निकट आवेदन करने ही से सभा की
कामना पूरेगी । हर दिन जो अंग्रेजोंके भोज-
नार्थ कितने गोहत्या हो रही है, तिमकी हयत्ता
करना ही कठिन है । अतएव उचितकारिणी
सभाके निकट हमारी यह प्रार्थना है जो वे उस
आशय पर तनिक प्रणिधान करें, जो कि हमारे
१४, १५, १६ वी १७ संख्यक “धर्मप्रचारक” में
“गोहत्यानिवारण” नाम प्रस्ताव की समालोचनाके
समय लिखा गया है । तदनुसार अनुष्ठान पत्र
प्रचार कर समस्त भारत को उस्कानेपर हमें
कुछ अवश्य ही उत्तम फल मिलेगा । हां, आर्य
वी महम्मदी धर्मावालेके मध्य में जो बीच बीच में
विषम विरोध मचजाता है, इसके सुविचारार्थ
रिपन महोदय तनिक विशेष वन्दोवस्त करें, यह
हमारी एकान्त प्रार्थना है ।

धः, प्रः, सं ।

मुङ्गेर आर्यधर्म प्रचारिणी सभाका

५८ वार्षिकोत्सव ।

जिन परमात्माके प्रचण्ड प्रतापसे त्रिभुवन की
हरएकक्रिया नियम पूर्वक चल रही है, जिनकी
रूपासे हम सब दुर्लभ मनुष्यदेह पाकर उनकी
अनन्तलीला देखते झूठे मोहित होरहे हैं, उन
दृन्दारक दृन्द वन्दनीय परम पुरुषके अभय
चरणारविन्द में सीर झुकाये प्रणाम करते हैं ।
जिनकी कृयालाभ करने से, प्रबल वायुके जोरसे
उड़ने झूए घनघटामण्डके समान विपुल विघ्न
विपत्ति विनष्ट हो जाती जिनकी कृपाहृदी होने

ध्वजा, पताका, पत्र, पुष्प, फलादि के द्वारा सभागृह को संस्कार पाठशाखा को सुशोभित श्री पवित्र भावयुक्त किये गयेथे। वायुके प्रवाह करके पताका जब तरङ्गाकार होती ऊई बड़ा जोरसे उड़ने लगी, तब बोध होता था जैसा कि भारत-वासियोंके अमूल्य विजयचिह्न धर्म, जो कि इन्हींके एकमात्र चिर परमादर की सामग्री है, वर्तमान शताब्दी की अष्टाचार की प्रबल तढ़पन से कम्पित हो अस्थिर हो उठा है। प्रातःसमय संस्कृत पाठगृह में श्रीश्रीश्रीमन्नारायण वो वेद वेदान्त, दर्शन, पुराणादि संहित विहित उपचार से सरस्वती देवी मूर्ति की पूजा ऊई। पण्डितोंने जब वेदमन्त्रसे वाग्देवी का सब पाठ कर रहा था, उस समय श्रोताओंके हृदय में यथार्थतः भक्तिका उच्छ्वास उठ रहे थे। इसका उपरान्त जब वेहारवासी वो वङ्गदेशी बालक वो युवकगण कक्षागदिये खड़े होकर हातजोड़े भक्ति पूर्वक मन्त्रपाठ करते हुए देवीके चरण पर पूष्पाञ्जलि चढ़ाते थे तब उसको (वेहार वो वङ्गला का मिलन) एक अभिनव दृश्य करके समझ पड़ा था। मध्याह्नके समय निमन्त्रित ब्राह्मण मण्डली को मिष्टान्नादि से परितोष पूर्वक भोजन कराकर यथोचित दक्षिणा देके विदाय किये गये। अपराह्नवेला ३ बजे के समय गृहद्वार, कर्ताल, भेरी, घड़ी, आदि वाद्योद्यमके साथ सुङ्गेर वो जमालपुरके हरि-गुण-गान-निपुण अन्यान्य अर्द्धशत पुरुष कलाटमें पुष्पके हार लटकये हुए सुमधुर स्वर मिलाय "नगर-सङ्कीर्त्तन" गावने निकले, आगे आगे वङ्गीय वो वेहारी बालक मण्डली प्रसन्नवदन से हरिनामाङ्कित पताकावलि हातमें लेते हुए

গণের কর্ণ-কুহর স্বগীয় স্মরণাচারে-হরিনামধ্বনিত
পুলকিত ও পবিত্র করিয়া সকলে প্রত্যাবৃত্ত হই-
লেন। অতঃপর ৩২২২তীর আরতী হইল। তদ-
নন্তর গায়কগণ হরিনাম গানে পুনঃ প্রবৃত্ত হইয়া
প্রমোদিতবৎ নৃত্য, কুন্দন ও হরিনামের জয় কীর্তন
করিয়া প্রথম দিনের কার্য শেষ করিলেন।

২৩ এ মাঘ। শুক্রবার।

অপরাত্ন বেলা ৪টার সময় বাদ্যোদ্যমাদি সহ
সুসজ্জিত ৩২২২তী প্রতিমা নগরের প্রধান প্রধান
স্থান পরিবেষ্টন করিয়া প্রসিদ্ধ পবিত্র কষ্টহারিণী
ঘাটে বিসর্জিত হইল।

সন্ধ্যাবসানে আ. ধ. প্র. সভান্তর্গত বালকবর্গের
সুনীতি মঞ্চারিণী সভার অধিবেশন হইয়াছিল।
ব্যাসাসনের বাম পার্শ্বে বঙ্গীয় শিশুগণের, দক্ষিণ-
পার্শ্বে বেহারী বালকবর্গের ও সম্মুখে অত্র সাধা-
রণের বসিবার স্থান হইয়াছিল। সভা আলোক-
মালায় সুশোভিত ও ভদ্র মহাত্মাগুলীতে পরিপূর্ণ
হইল। প্রথমতঃ সভার গায়ক মহাশয় তানলয়
বিশুদ্ধতা সহ দুইটি ধর্ম সংগীত গাইলেন। তৎ-
পরে বাঙ্গালীবালকগণ সমবেতস্বরে পরমাত্মার
স্তব ও পদ্যাবলি বাঙ্গালা ভাষায় বালকগণের প্রতিজ্ঞা
পাঠ করিল। এতদবসানে ক্রমান্বয়ে স্ব. সং. সভার
বাঙ্গালা বিভাগের সম্পাদক প্রিয়দর্শন শ্রীমান্
জগদ্বন্ধু রায় ও হিন্দীবিভাগের সম্পাদক বিনয়বনত
শ্রীমান্ বুলাকীলাল কর্তৃক বাঙ্গালা ও হিন্দী ভাষায়
বার্ষিক কার্য বিবরণ পাঠিত হইল। উভয়েরই
পাঠিত বিবরণ হইতে অর্থাভাবাশ্রিত জলন্ত কণিকা
বিস্ফারিত হইতেছিল। তাঁহাদের পঠনপট্টার
সহিত হৃদয়ের সছন্দ্যম, উদ্ভেজনাতিও প্রকাশ
পাইল। এক বর্ষ কাল নীতিশিক্ষক শ্রীযুক্ত বাবু
সুরেন্দ্রনাথ পাল, শ্রীযুক্ত বাবু রাখালদাস সেন ও
স্ব. সং. সভার অধ্যক্ষ শ্রীযুক্ত শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন এই
তিন জনের নিকট নীতি উপদেশ লাভ করিয়া
বালকগণ যে দিন দিন সংপ্রকৃতিস্থ হইতেছে ও
তাহারা যে অনেক চরমিগম্য বিষয় সরল ভাবে
শিক্ষা করিতেছে, তাহা সম্পাদকদ্বয় কর্তৃক কৃত-
জ্ঞতাসহ কথিত হইল। উপসংহার কালে শ্রীমান্
জগদ্বন্ধুর কয়েকটি কথা আমাদিগের আশা প্রদ ও
পরম সন্তোষকর বোধ হইল। যথা “হে মহো-
দরোপম প্রিয়বালক বন্ধুগণ। আইস, আর মিথ্যা
বাণিত্যের প্রয়োজন নাই, ইহা জীবন সংগঠনের

জাতে যে, इससे और भी शोभा भलकती थी।
नगरके प्रधान प्रधान मार्ग वो महल्लेके सबजनोंके
कर्णकुहलको पुलकित वो पवित्र करते हुए,
सबकाई लौट आये। अनन्तर उसके, गायकोंने
फिर हरिनाम गाते गाते प्रेमोन्नतता से नाच
कुन्दकर वो हरिनाम का जय कीर्तन करके प्रथम
दिनका कार्य समाप्ता किये।

माघ सुदी ६। शुक्रवार।

अपराह्न वेला ४ बजे के समय वाद्योद्यम
आदिके साथ उत्तमरूप मजार्ई ऊई मरस्वती
प्रतिमाको नगरके प्रधान प्रधान स्थाननिवासी-
योंकी दर्शन कराकर प्रसिद्ध पवित्र कष्टहारिणी
नामघाटमें विसर्जन किया गया।

संख्याके उपरान्त आ. ध. प्र. सभान्तर्गत बाल-
कोंकी “सुनीति—सञ्चारिणी सभा”का अधिवेशन
ऊँचा था। व्यासासनका वाम भागमें बङ्गदेशी
शिशुओंके वो दाहिने किनारे में बेहारवासी बाल-
कोंके श्री साहने में अन्य साधारण के बैठने का
स्थान ऊँचा था। सभा आलोकमालासे सुशोभित
वो भद्र माहात्मा मण्डलीसे परिपूर्ण ऊई। पहले
सभाके गायक महाशय ने विशुद्ध तानलयेके साथ दो
धर्म मङ्गीत गाया। तदनन्तर बङ्गदेशी बालकोंने
मिलार्ई ऊई सुरसे परमात्माका स्तोत्र वो छन्दमें
रची ऊई बङ्गभाषा में बालकोंकी प्रतिज्ञा पाठ
करी। बाद इसके क्रम पूर्वक सु. सं. सभाके
बङ्गला विभागके सम्पादक प्रियदर्शन श्रीमान्
जगद्वन्धु राय वो हिन्दी विभागके सम्पादक
विनयविनय श्रीमान् बुलाकीलालने बङ्ग वो हिन्दी
भाषा में वार्षिक कार्य विवरण पाठ किये।
दोनों हीकी पड़ी ऊई विवरणसे आर्थमाव-
रूप अनल की लहरती ऊई भुनगी निकल आती
थी। उन्हींकी पटन पटुता के साथ हृदयका
सद्व्यम, उत्तेजना आदि भी प्रकाश पार्ई। एक
वर्षभर नीतिशिक्षक श्रियुक्त सुरेन्द्रनाथ पाल,
श्रियुक्त बाबु राखालदास सेन वो सु. सं. सभाके
अध्यक्ष श्रियुक्त श्रीलक्ष्म प्रसन्न सेन इन तीनोंसे
नीति उपदेश पापाकर बालकगण जो दिन परदिन
सत्प्रकृतिस्थ होते जाते हैं, वो उन्हींने जो अनेक
विषय जो कि अतिकठिनता से बुझ पड़ती, सरल
रीतिसे शिक्षाकरी हैं, सो सम्पादक द्वयने कृतज्ञता
पूर्वक प्रकाश किये। अन्तमें श्रीमान् जगद्वन्धुकी
कैएक वार्ते हमको आशा देनेवाली वो परम
सन्तोषकारी समझ पड़ी, जैसा “हे सहोदरके
समान प्रियबालक बन्धुगण! आओ और झूठी
वाणित्यका प्रयोजन नहीं, अब अपनी प्रकृतिको

अवहेला वा उदास करिवार समय नहे। এই समय हईतेहै सुसज्जित हईते हईवे। समुत्थे घोर यौवनकाल आसितेछे, देखियाओ कि भय हईतेछे ना। यौवनेर प्रियसहचर राक्षसरूप व्यभिचार आमादिगके ग्राम करिया केलिबे, आर असावधान थाकिया कालक्षेप करा कर्तव्य नहे। এই समये सुनीति शिक्षा रूप तरवारि सुशानित राखिते हईवे, ताहारै तीव्र आघाते राक्षस विनष्ट हईवे। आमादिगके मनुष्य नामेर गौरव रक्षा करिते, पशुवत् व्यवहार करिव ना बलिया, प्रतिष्ठा करिते ओ भारतेर प्रकृत सन्तान हईते हईवे। करुणामय परमेश्वर ओ गुरुगण आमादिगेर कामना पूर्णार्थ शुभाशीर्वाद करुन्” ।

सु, मं, सभाके अन्यतर सभ्य नीतिशिक्षानुरागी श्रीमान् हरिलाल सोमने इस आशय पर एक प्रबन्ध पाठ किया कि “लड़कोंने पिता, माता, गुरुजनादिके किस भांति सहायकार चाहा करता है” । उसका स्थूल अभिप्राय यह है ; १म, पिता माताका जबसे मालुम पड़ा कि गर्भ में लड़का का सञ्चार हुआ तब ही से उन्होंने शिशुके चिरजीवन के शारीरिक कल्याण कामना की करती है, उसही भांति उन्होंने यह भी चाहिये कि शिशु की सत्प्रकृति बननेके योग्य प्रबन्ध कर देवे। २य, शिशुकी प्रकृतिने साहित्य, गणित, शिल्प, मङ्गीत आदि जिस किसी विद्या के अनुकूल वो योग्य होय, पिता माता यदि उसको उसही विषय की उची शिक्षा देंतो अन्त में शिशु कोई एक प्रसिद्ध वो विचक्षण पुरुष बन सकेगा। ३य, शिशुकी मन्द आचरण, दुष्टता वा विद्या सिखने में विराम देखनेसे पिता माता सञ्चराचर शिशुको बड़ा पोठते हैं। किन्तु यह छाड़के उनको चाहिये कि असत्सङ्ग आदि जो की लड़के की बुरी प्रकृतिका मूल कारण है, उसही को उच्छेद कर देवे। ४थ, लड़का यदि कभी चोरी आदि कोई कुकाज करे तो पहले ही उसको दण्ड न देना, कुकाज करना जो अकत्तव्य है सोही सम्मान देना चाहिये, नही तो लड़का समस्त कुकार्य ही गुप गुप करने का अभ्यास करता रहेगा। ५म, जब लड़का किसी सुनीति शिक्षा वा धर्मशिक्षा के लिये सभा आदि में स्वतः एव आयगा, उस समय पिता माताको चाहिये कि आनन्द प्रकाश पूर्वक उसका सद्गुण बटावे, यदि स्वयं जायतो यत्नकरके वहा शिशुको भेजाकरे। ६ठ, काबुसे गाधा वो विष्णु इन दोनों

सुगठनार्थ तुच्छ मानने वा उदास होनेका समय नहीं है। अब ही से साज वाजके तैयार होना चाहिये। मान्हने में घोर यौवन काल आनेवाला है। इतने में भी क्या भय नहीं होना है? यौवन के प्यारा साथी राजसमरूप व्यभिचार हमको ग्राम करडालेगा। और असावधानतासे काल बीताना चाहिये। अब सुनीति शिक्षारूप तरवार की सानदेकर रखना। उसही का तीव्र आघातसे निशाचर नष्ट होगा। हमको मनुष्य नामकी गौरव रखना, पशुवत् कार्य न करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा करना वो भारतके सुमन्तान बनना चाहिये। करुणा-मय परमेश्वर वो गुरुगण हमारी कामना पूर्णार्थ शुभाशीर्वाद करें।”

सु. सं., सभाके अन्यतर सभ्य नीतिशिक्षानुरागी श्रीमान् हरिलाल सोमने इस आशय पर एक प्रबन्ध पाठ किया कि “लड़कोंने पिता, माता, गुरुजनादिके किस भांति सहायकार चाहा करता है” । उसका स्थूल अभिप्राय यह है ; १म, पिता माताका जबसे मालुम पड़ा कि गर्भ में लड़का का सञ्चार हुआ तब ही से उन्होंने शिशुके चिरजीवन के शारीरिक कल्याण कामना की करती है, उसही भांति उन्होंने यह भी चाहिये कि शिशु की सत्प्रकृति बननेके योग्य प्रबन्ध कर देवे। २य, शिशुकी प्रकृतिने साहित्य, गणित, शिल्प, मङ्गीत आदि जिस किसी विद्या के अनुकूल वो योग्य होय, पिता माता यदि उसको उसही विषय की उची शिक्षा देंतो अन्त में शिशु कोई एक प्रसिद्ध वो विचक्षण पुरुष बन सकेगा। ३य, शिशुकी मन्द आचरण, दुष्टता वा विद्या सिखने में विराम देखनेसे पिता माता सञ्चराचर शिशुको बड़ा पोठते हैं। किन्तु यह छाड़के उनको चाहिये कि असत्सङ्ग आदि जो की लड़के की बुरी प्रकृतिका मूल कारण है, उसही को उच्छेद कर देवे। ४थ, लड़का यदि कभी चोरी आदि कोई कुकाज करे तो पहले ही उसको दण्ड न देना, कुकाज करना जो अकत्तव्य है सोही सम्मान देना चाहिये, नही तो लड़का समस्त कुकार्य ही गुप गुप करने का अभ्यास करता रहेगा। ५म, जब लड़का किसी सुनीति शिक्षा वा धर्मशिक्षा के लिये सभा आदि में स्वतः एव आयगा, उस समय पिता माताको चाहिये कि आनन्द प्रकाश पूर्वक उसका सद्गुण बटावे, यदि स्वयं जायतो यत्नकरके वहा शिशुको भेजाकरे। ६ठ, काबुसे गाधा वो विष्णु इन दोनों

निर्मित मूर्ति उद्घाटने कठिन होइया गेले, ताहार रूप आर परिवर्तन होइते पारे ना, तद्रूप शैशव कालेई मानवेर प्रकृति यादृशी संघटित होइवे, तिरदिन ताहाई थाकिवार संस्थावना । शिशु प्रथमे असं प्रकृति लात करिले, परिणामे ताहार साधु प्रकृति होइया अतीव दुस्कर, एही जन्म अति सतर्क थाकिया, शैशवेई साधु प्रकृतिर उपयोगी शिक्षा देओया पिता मातादिर कर्तव्य इत्यादि ।

तदनन्तर सु. सं. सभार अनातर सभा, शान्तस्वभाव श्रीमान् पूर्णानन्द सेन कर्तक “ बालकदिगेर कर्तव्य कि ” विषयक निम्न प्रकृति प्रवक्तृ पठित होइल । “ सकल बालकेरई सुबोध, सुशील, शान्तस्वभाव ओ विनयविनम्र होइया कर्तव्य । पिता माता यथन याहा आदेश करिवेन, ताहा प्राणपण यत्ने प्रतिपालन करिया ताहादिगेर सर्वदा सन्तुष्ट राखा कर्तव्य । याहा करिते निषेध करिवेन, ताहा मन्द होइले कोन क्रमेई करा उचित नहै । ताहारा तिरस्कार करिले ताहाते रुष्ट वा असन्तुष्ट, विरक्त वा अभिमानयुक्त होइया अनुचित । कारण ताहारा आमादेर मङ्गलर जन्यई तद्रूप करिया थाकेन । स्वीय भ्राता भगिनिगेर भाल बासा ओ ताहादेर आनन्दे आनन्द ओ दुःखे दुःखानुभव करा सुबोध शिशुर प्रकृति सिद्ध । ताहादिगेर सहित मारामारि ओ कलह करा उचित नहै । अन्यान्य बालकगणेर सहित ओ निज भ्रातार न्याय व्यवहार करा उचित ओ परस्पर विवाद विमर्षाद वा विद्वेष करा उचित नहै । आपनापेक्षा वरज्येष्ठ व्यक्तिदिगेर सहित नम्रभावे कथा वार्ता कहा, ओ ताहारा याहा बलेन ताहा मनोयोग पूर्वक धीरचित्ते श्रवण करा कर्तव्य । परनिन्दा, मिथ्या कथन ओ अन्येर प्रति कटुक्ति प्रयोग, आमोदेर जन्य दुर्वचन जीव सकलके पीड़ा देओया ओ अक्र व्यक्तिदिगेर कुपथ देखाइया दिया हास्य करा अनुचित, एवं वे सकल बालक एही रूप करे, ताहादेर सङ्गे थाका ओ अकर्तव्य । अक्र, अर्झाक्र, विकलाङ्ग ओ दुःखी प्रवृत्ति व्यक्तिदिगेर दया करा ओ परोपकारर जन्य सर्वप्रकार क्लेश सह करिते शिक्षा करा कर्तव्य । विद्यालये शिक्षक ये सकल उपदेश प्रदान करेन हिर मन तत्तावे श्रवण करा उचित । सर्वदा सुबोध बालकगणेर सहवास थाका एवं अध्ययन काले हास्य, गीत, गद्य प्रवृत्ति परित्याग करिया निबिडे

ही मूर्ति बन सकी है । बनायी हुई मूर्ति जैसा उत्थापने कठिन होजाने पर उसके रूप फिर बदल न सका है, उस भांति लड़कपन ही में मनुष्योंकी प्रकृति जैसी बनेगी भर जीवन उस भांति रहने की सम्भावना है । लड़का यदि पहले ही बुरी प्रकृति को लाभ करे तो अन्त में उसकी साधु प्रकृति बनना अतीव कठिन है, इस लिये पिता माताको चाहिये कि अति सतर्कता पूर्वक लड़कपन ही में साधु प्रकृति बनानेके योग्य शिक्षा दें । इत्यादि ।

तदनन्तर सु. सं. सभाके और एक सभ्य शान्तस्वभाव श्रीमान् पूर्णानन्द सेन ने नीचे लिखा हुआ प्रबन्धको पाठ किया, इसका आशय यह है कि “ बालकोंके क्या कर्तव्य है ” हरके लड़कोंको चाहिये कि सुबोध, सुशील, शान्तस्वभाव वो विनय विनम्र बने । पिता माता जब जो आज्ञा करेंगे, उसको प्राणपण यत्नसे प्रतिपालन कर उन्हीं को सदा सन्तुष्ट रखें । जो कुछ काम करने में माना करेंगे वह बुरा होनेपर किस ही तरहसे करना ना चाहिये । वे यदि तिरस्कार करें तो रुष्ट वा असन्तुष्ट, विरक्त वा अभिमानयुक्त होना अनुचित है । क्योंकि हमारे ही कल्याणार्थ उन्हींने उस रीति डाँटतै है । अपने भाई बहीनको प्यार करना, उन्हींके आनन्दमें आनन्द वो दुःखके समय दुःख अनुभव करना सुबोध शिशु की प्रकृति सिद्ध है । उन्हींसे मारपिट वो झगड़ा करना ना चाहिये । अन्यान्य बालकोंके साथ भी अपने भाईके न्याय व्यवहार करना उचित है औ परस्पर विवाद, विमर्षाद वो विद्वेष करना उचित नहीं । अपने से जिनकी अवस्था अधिक हैं उन्हींके साथ नम्रभावे वार्त्तालाप करना वो वे जो कुछ कहें सो धीरता पूर्वक दत्तचित्त हुए श्रवण करना कर्तव्य है । दूसरे किसही कि निन्दा, मिथ्याकथन वो हमारे की बुरी बुरी बातें कहना, तामासा के अर्थ दुर्बल जीवोंकी पीड़ा देना औ अन्ये की कुमार्ग देखाकर हास्य करना ना चाहिये औ जितने बालक इस भांति किया करें उन्हींके सङ्ग करना भी उचित नहीं । अन्य, अर्झान्य, विकलाङ्ग वो दरिद्र आदि व्यक्तियोंकी दया करना वो परोपकारार्थ सब भांति क्लेश उठाने की शिक्षा करना चाहिये । विद्यालय में शिक्षक जितने उपदेश देंगे स्थिरमनसे सब श्रवण करना उचित है । सर्वदा सुबोध बालकोंके सङ्ग करना औ

मने पाठाभ्यास करा उचित । सस्तरिह हওয়া, सता कथा कहा ७ गुरुजनके भक्ति करा उचित, कोन क्रमेई तौहादिगेर अमर्यादा अथवा तौहादिगेर कथा उपेक्षा करा उचित नहै । पिता माता निकट सर्वदा उंकुटे वेशभूषादि प्रार्थना करिया तौहादिगेर बस्तु करा काहारउ उचित नहै ; कारण तौहारा ताहा दिते ना पारिले, अत्यस्त दुःखित हन, अतएव तौहादिगेर वखन येरूप मार्गर्ह हईवे सेई रूप वस्त्रादि दिवेन एवं ताहातेई सन्तुष्ट धाकिते हईवे । तौहारा कथादिगेर विविध मूल्यावान् अलङ्कारादि दिया थाकेन वटे किन्तु आमादिगेरकेये “विद्या” दान करेन, ताहार सस्त्रे तुलनाय अलङ्कारादि अति तूछ ७ अल मूल्य बंध हय । अतएव एकरूप बहुमूल्यद्रव्य पाईया ७ सामान्य वेशभूषादि र जस्य तौहादिगेर मनःकटे देওয়া बालकमात्रेई अकर्तव्य । बाल्यकाल हईतेई विद्या अध्यायनेर सस्त्रे सस्त्रेई नीतिशिक्षा, ईश्वरेर प्रति भक्ति ७ अधर्मेर प्रति आस्था करा विधेय । एवं यदि कोन धर्मात्मा अनुग्रह पूर्वक नीति अथवा धर्मादिर कोन उपदेश दान करेन, ताहाते अवहेला ना करिया स्त्रिचित्ते श्रवण, मनन ७ धारणा करतः तद्रूप कार्य करा सकल बालकेरई कर्तव्य । कारण, मूलपत्तन अदृष्ट हईले येमन अट्टालिका असंगठित हय, सेई रूप मनुष्येर बाल्यावस्था भविष्यज्जीवनेर भित्तिभूमि स्वरूप, अतएव यदि सेई बाल्यावस्था एई सकल गुणे अलङ्कृत हय, ताहा हईले, सेई मनुष्य ये एक जन उक्त उदार स्वभाव अशेष गुणसम्पन्नव्यक्ति हईवेन ताहार आर सन्देह नाई । यदि ७ नीति ७ धर्मशिक्षा एवं ईश्वरेर प्रति भक्ति ना थाकिले ७ सकलेई विद्वान हईते पारेन, किन्तु सेई विद्या ये परिणामे कुफल प्रसव करे, ताहा केहई अनुभव करेन ना । धर्मनीति ज्ञान शून्य विद्या शिक्षा, प्राणशून्य देहेर न्याय, जानिते हईवे । आमादेर देशे ये सकल लोक एक्कणे वर्तमान रहियाछेन, तौहादेर मध्ये अनेकेई बाल्यकाले नीति ७ धर्मशिक्षा ना कराय एक्कणे परस्परेर विषय लईया विवाद करितेछेन, केह वा दुर्नीतिर दाम हईया, असदुपाये अर्थोपार्जन पूर्वक कारावरुद्ध हईतेछेन, केह वा बुधा नाट्य गीतादि, वेश्यासमागम ७ मदपान द्वारा अवथा अर्थव्यय कविया, भविष्य ७ वंशावलीर अस ७ आदर्श स्वरूप हईतेछेन, केह नास्तिक

पढ़ने के समय हास्य, गीत, गल्प आदि परित्याग कर मन लगाये पाठाभ्यास करना चाहिये । सत्य वचन बोलना, सच्चरित्र होना, दो गुरुजनोंकी भक्ति करना, कर्त्तव्य है, किसही तरहसे जन्हीं की अमर्यादा अथवा आज्ञा की उपेक्षा करना चाहिये । सर्वदा पिता माताके निकट उत्तम वेश भूषण आदिके अर्थ प्रार्थना कर जन्हींको व्यस्त न करना ; क्योंकि वे उन वस्तुओंको यदि देने न सकेता बड़ा दुःख मानते हैं, अतएव जब जन्हींको जैसा सामर्थ्य होगा तदनुसार वस्त्रादि देंगे औ उस ही से सन्तुष्ट होना उचित है । जन्हींने लड़कियोंकी नानाभान्ति के मूल्यवान् अलङ्कारादि देते हैं सही किन्तु हमको जो “विद्या” दान करते हैं तीस की बराबरीसे अलङ्कार आदि की अति तुच्छ वी अल्प मूल्यका समझा जाता है । अतएव ऐसा बहुमूल्य द्रव्य पाये भी सामान्य वेश भूषादि के अर्थ पिता माताके मन में पीड़ा देना बालक मातृही का अकर्त्तव्य है । लड़कपन हाँसे विद्या अध्ययन के ही साथ नीति शिक्षा, ईश्वर के ओर भक्ति वी निज धर्मपर आस्था करना चाहिये औ यदि कोई धर्मात्मा कृपा करके नीति अथवा धर्मके विषय में कोई उपदेश दें, उससे तुच्छ न समझे स्थिर चित्तसे श्रवण, मनन वी धारण पूर्वक उस रीति काम करना हरैक लड़का का उचित है, क्योंकि नेव सजवत होने से जैसा इमारत सुन्दर बनती है, तद्रूप बालकपनही मनुष्योंके भविष्यत जीवन की भित्ति भूमि है । अतएव यदि इस बाल्यावस्था इनसब गुणोंसे सुशोभित हो तब वह मनुष्य जो कोई एक उच्च उदारस्वभाव, अशेष गुणसम्पन्न पुरुष होंगे उस में सन्देह नहीं । यद्यपि नीति वी धर्म शिक्षा और ईश्वरके ओर भक्ति रहे विना भी सजजन विद्यावान हो सक्ते हैं, किन्तु वही विद्या जो अन्तमें कु फलको देनेवाली होती है सो कोई भी न समझता धर्मनीति वी ज्ञान से रहित जो विद्या शिक्षा है उसको प्राणशून्य शरीरका समान जानना । आज कल हमारे देश में जितने पुरुष वर्त्तमान हैं, जन्हीं में बहुतेरे जन लड़कपन में नीति वी धर्म शिक्षान करने पर अब आपुस में नाना भान्ति की मामला लड़ रहे हैं । कोई कोई दुर्नीति के दास बने बुरी रीति से रूपै कमाकर कैद होते हैं, कोई कोई दृष्टान्ता गीतादि वेश्यासमागम, वी मदपान से नष्ट से अधिक अर्थ व्यय करके भविष्यत वंशावली के असत आदर्श बनते हैं । कोई नास्तिक कोई इसाई

केह वा श्रीकान हईतेछेन इत्यादि नाना कारणे भावतवर्ष कलङ्कित हईतेछे ओ जगन्मान्य आर्या-गणेर छिर गौरव हाराईतेछे । आर शिक्षा काले सकल बालकेरई मने करा कर्तव्य ये विद्या शिक्षा करा केवल मात्र धनोपार्जन केर जन्य नहे । कारण धनोपार्जन विविध उपाये हईते पावे । केहवा चोर्ध्ववृत्ति द्वारा केह वा मिथ्या साक्ष्यादि प्रदान द्वारा ओ धनोपार्जन करितेछे । अतएव याहा जेदृश नीच कर्म केर द्वारा ओ उपार्जन হয়, ताहा कখনई विद्यार चरम फल हईते पावे ना । अतएव विद्यार फल अपेक्षाकृत किछू उच्च ओ उৎकृष्ट हओ याई सम्भव । विद्या द्वारा प्रथमतः जेधरेर माहात्म्या, आश्चर्य गूढतत्त्व ओ शास्त्रेर मर्म वृद्धि ते पावा याय । द्वितीय, धनोपार्जन द्वारा श्वीर जाविका निर्विवाह ओ परेर अभाव मोचन करा याय । तृतीय, धर्म ओ नीति उपदेश द्वारा लोक सकलके सच्चरित्र, धार्मिक ओ विद्वान करिया अदेशेर उन्नति साधन ओ निज सुख वृद्धि द्वारा उद्भावि विविध कौशलज्ञान विस्तार द्वारा जनसमुह के मङ्गलार्थ नाना सहुपाय करा याय । अतएव एही गुणि मने करिया विद्या शिक्षा करा सकल बालकेरई कर्तव्य । यिनि बाल्या-वस्था रूप भूमि ते सविद्यारूप रक्त रोपण करेन, तिनि ज्ञानरूप फल, स्वकीय ओ परकीय भरण पोषण ओ आवश्यकीय व्यय निर्विवाहोपयोगी अर्थोपार्जन रूप शीतल छाया लाभ करेन एवं ताँहार विद्यमानता जगते मनुष्येर प्रकृत आदर्श प्रचार करि ते धाके ।

उपसंहार काले परम कारुणिक परमेश्वर के निकट प्रार्थना एही ये तिनि आमादिगके सनीति पथे परिचालित करुन ओ गुरुजन आमादिगेर मङ्गलार्थ आशीर्वाद करि ते पावुन ।

तएपरे आ, घ, प्र, सभा के कार्य सम्पादक अक्षयसिंह श्रीयुक्त पण्डित भाईराम अग्निहोत्री हिन्दी भाषाय ओ सहयोगी सम्पादक श्रीयुक्त श्रीकृष्ण-प्रसन्न सेन बाङ्गला ओ हिन्दी भाषाय पितामाता ओ सन्तानेर परस्पर के गुरुतर कर्तव्य के विषय वाच-निक वक्तृता द्वारा बालकगणेर ओ कर्तृपक्षीयगणेर सहस्रान्वह वर्द्धन करिलेन । तदनन्तर बाङ्गला चित्र पयारे विरचित ओ मुद्रित “नीति पुष्पहार” उप-स्थित प्रत्येक बालकके वितरित, अवशेषे मधुर-श्रव, ताल सह शिशु के उक्ति सूचक कयैकटी धर्म

हो जाता है, इस भाँति नाना हेतु से भारतवर्ष कलङ्कित होते जाते हैं और जगन्मान्य आर्य्य पुरुषों के चिर गौरव खोआ रहे हैं । शिक्षा के समय सब लड़के ही का याद करना चाहिये, जो केवल मात्र धन कमाने के लिये विद्याशिक्षा करना नहीं, क्योंकि नाना उपाय से धन कमाया जा सकता है । कोई चोरी से कोई झुटी गवाह देकर धन कमा रहा है । अतएव इतने नीच कामों से जो दण्ड मिलता है वह कभी विद्या के परम फल नहीं हो सक्ता सुतरां विद्या के फल इससे कुछ उच्चे वो उत्तम होना ही सम्भव है । विद्या के द्वारा पहिले ईश्वर की महिमा, आत्मा के गूढ तत्त्व वो शास्त्र के अभिप्राय समझने सकते हैं । द्वितीयः, धन उपार्जन करके अपनी जीविका निर्वाह वो दूसरे की घटती पूरी कर दिया जाता है । तृतीयतः, धर्म वो नीति उपदेश करके लोगों को सच्चरित्र, धर्मात्मा वो विद्यावान बनाकर स्वदेश की उन्नति साधन वो निज सुख वृद्धि करके निकाली ऊँई नाना भान्ति कौशल जाल विस्तार पूर्वक सब जनों के मङ्गलार्थ नाना सहुपाय किये जाते हैं । अतएव सब बालकों के चाहिये कि इतने स्मरण कर विद्याशिक्षा करे । जोने लड़कपन रूप भूमि पर सहिद्यारूप वृक्ष को रोपे, उन्हें ज्ञानरूप फल और अपने वो दूसरे का भरण पोषण वो प्रयोजन अनुसार व्यय निवाहने को योग्य धन जाँकि शीतल छाया के रूप है, लाभ करते हैं, और उनकी विद्यमानता, “मनुष्य के प्रकृत आदर्श क्या है” यही जगत में प्रचार की करती है ।

उपसंहार में परम कारुणिक परमेश्वर से यही प्रार्थना है जो वे हम सब को सुनीति मार्ग पर चलावें और गुरुजन हम सब के कल्याणार्थ आशी-र्वाद करते रहें ।

तदनन्तर आ, घ, प्र, सभा के कार्य सम्पादक अक्षयसिंह अमान् पण्डित भाईराम अग्निहोत्री महाशय हिन्दी भाषा में वो सहयोगी सम्पादक श्रीयुक्त श्रीकृष्णप्रसन्न सेन वङ्गला वो हिन्दी भाषा में इस आशय पर वाचनिक वक्तृता किये कि पिता माता वो सन्तानों के मध्य में परस्पर गुरुतर कर्तव्य क्या है इससे लड़कों के वो कर्तृपक्षियों के सदृशाह लड़ा । इसके अनन्तर वङ्गभाषा चित्र पयार दोहा में रची वो छापी ऊँई “नीति पुष्पहार” हरेक लड़का को बाँटी गई वो अन्त में मधुर खुर-तान के साथ लड़कों को उक्ति सूचक

संगीत इत्यादि सभा भङ्ग हुई। आ, ध, प्र, सभा
सहस्रसं, स, सभा सभागणके किफि९ किफि९
मिठाई दिया विदाय करिलेन।

२४९९ नाव शनिवार, अपराह्न ३००० रात्रि ८०० पर्याप्त।

मुस्वरके आमांजित संस्कृतनिष्ठ पण्डित मातृदेई
सभा सभा स्थाने समीप ही रहिलेन, तत्पश्चात्
सभान्तर्गत संस्कृत पाठशाला परीक्षित विद्यार्थी
पूज्य एवं तत्पश्चात् सभासद भद्र महोदयगण
एकत्र उपाधि थाकिया, सभा शोभा वर्द्धन
करितेछिलेन। प्रथमे सभा सहयोगीसम्पादक
श्रीयुक्त श्रीकृष्णप्रसाद सेन पण्डित मातृदेई महोदय
प्रार्थना करिलेन वे, ईश्वर के अवतारवाद
पुराणादि सन्मत, ईश्वर भारतवासीमातृदेई विदित
आछेन; अर्जुनके उपदेशदानकाले भगवान्
श्रीकृष्ण स्वयं ताहार प्रकृत रूप समर्थन करिया-
छेन, किन्तु पुराणादि प्रति वर्तमान भारत के ये-
रूप अनास्था दृष्ट हईतेछे, ताहाते श्रीकृष्ण
वाक्य पोषणार्थ श्रुति प्रमाण प्रदान करिते
पारिले, सर्वश्रेष्ठ उपकृत हईव। पण्डितगण प्रश्न
अवगण आनन्द प्रकाश प्रार्थना य स सामर्थ्योचित
उत्तर ओ विचारादि द्वारा सभा सभासद वर्द्धन करि-
लेन। अतःपर किञ्चन पण्डितगण परस्पर
शास्त्रीय विचार चलिन्। तदनन्तर सम्पादक
अमरनाथ क्रमे मान्यवर श्रीयुक्त पण्डित भोजानाथ
मिश्र महाशय सभापतिर आसन परिग्रह प्रार्थना
संस्कृत पाठशाला वार्षिक परीक्षा उत्तीर्ण बालक-
वर्गके पारितोषिक दान करिलेन। तदनन्तर
सभा कार्य सम्पादक अर्थात् महोदय पूजा ओ
पुष्पमाला दान प्रार्थना सभासद पण्डित पूजाके
रत्नमुद्रा ओ मिठाईदि द्वारा मर्यादासह विदाय
करिलेन। अतःपर सभा सहयोगी सम्पादक
पण्डितगण सभासद सभा आनन्द ओ गौरव
प्रकाश प्रार्थना “संस्कृत भाषा शिक्षा ओ संस्कृतनिष्ठ
पण्डितगण अनन्द” विषयिनी एकटी वाचनिक
वक्तृता करिलेन, श्रुतिभाववशतः ताहार शूल
मर्ममात्र एही स्थले प्रकटित हईव।

वर्तमान भारतवर्षे संस्कृत भाषा की दुर्दशा दर्शन
करिया प्रत्येक आर्या हृदयेई दुःखोद्बुध उपस्थित
हईराछे। अतःदूर दूर करिवार ईच्छा हरतो
प्रत्येक महात्माई हृदये उदय हईरा थाके, किन्तु

कैके धर्मसङ्गीत होकर सभा विसर्जन ऊई। आ,
ध, प्र, सभा सभासद होकर सु, सं, सभाके सन्ध
मण्डलीको छोड़ा कुछ मिठाई देदेकर विदाय
करि।

माघ सुदी ७, शनिवार अपराह्न २००० रात्रि ८०० पर्याप्त।

मुस्वर के संस्कृत पण्डितमातृ ही जो कि
सभासे बोलाये गयेथे, सभाके मुख्यस्थान पर बैठे,
उसके किनारे विद्यार्थी मण्डली जो ने सभाके
अधोन संस्कृत पाठशाला में पश्चिमा ही थी, और
उसके आगे सभासद भद्र महोदयगण एकत्र बैठे
सभाकी शोभा बढ़ाये थे। पश्चिमे सभाके सहयोगी
सम्पादक श्रीयुक्त श्रीकृष्णप्रसादसेन सम्मानपूर्वक
हरेक पण्डितसे यह पूछा जो ईश्वरकी अवतार
वाद जो पुराणादि के सन्मत है यह तो हर किसी
भारतवासीने विदित है, अर्जुन की उपदेशकाल
में भगवान् श्रीकृष्ण ही स्वयं इसका प्रकृत रूप
स्थापन किये थे। किन्तु पुराणादि के और वर्त्ता-
मान भारत की जिस भाषा अनास्था देख पड़ती
है इससे यदि कोई श्रीकृष्णकी कही ऊई बातोंकी
पुष्टी करनार्थ श्रुतिके प्रमाण दे सकें तो सभा बड़ी
उपकार मानेगी। प्रश्न सुनकर पण्डितमण्डली
आनन्द प्रकाशपूर्वक निज निज सामर्थ्यके अनुसार
उत्तर वो विचारादि से सभाका सन्तोष बढ़ाये
अनन्तर छोड़ी देर तक पण्डितोंके परस्पर शाल्वार्थ
ऊँचा। इसके उपरान्त सम्पादक के असुरोधसे
मान्यवर श्रीयुक्त पण्डित भोजानाथ मिश्र महाशय
सभापति के आसन सुशोभित किये और संस्कृत
पाठशाला की वार्षिक परीक्षा में उत्तिर्ण किये
बालकोंके पारितोषिक दिये। तदनन्तर सभाके
कार्यसम्पादक अर्थात् सहित पूजा वो पुष्प
माला दानपूर्वक सभासे समागम पण्डितपूजाकी
रत्नमुद्रा ओ मिठाईदि द्वारा मर्यादा करके
विदाय किये। इसके उपरान्त सभाके सहयोगी
सम्पादक ने पण्डितोंके समागम से सभा का
आनन्द वो गौरव प्रकाश पूर्वक एक वाचनिक
वक्तृता करी जिसका आशय यह था कि “संस्कृत
भाषा शिक्षा वो क्यों संस्कृत पण्डितोंका अनादर
होता है।” स्थानाभावके अर्थ उसका स्थूल अभि-
प्रायमात्र यहाँ प्रकट किया गया।

वर्तमान भारतवर्ष में संस्कृत भाषा की दुर्दशा
देखकर हरके आर्य हृदय ही में दुःख की चिन्ता
उठी है। किन्तु महात्माके हृदय में इस दुःख
को दूर करनेके लिये इच्छा होती होगी किन्तु

ताहार प्रकृत सद्भावस्था करिवार मागर्था प्रत्येकैर आयत्तौत्त नहे, एहि जगत् अद्वैती शुभ ईच्छा कत लोकैर रुदरे उदय हईयाई प्रविष्टिबल हईया याय । धनाढ्य ओ जूगतिगणैर मथोचित महा-यज्ञ, तीहादेर निकटे समुचित समादर ओ संस्कार ना पाईले, संस्कृत भाषा पुनरुत्थिति हईवार आशा अति अल्प देविते पाओया याय । देश देशांतरे हईने हईते पावे, किन्तु भारतवर्षे हईया अतीव दुकर । एहि संस्कृत भाषा उका-क्षेत्त ग्रंथ गुणि अध्यायन ओ अध्यापनार अभाव एकरुप निरुप हईया याईतेछे ये, कत कत पूरा-तन ग्रंथैर अनुसन्धान पर्याप्त पाओया याय ना । संस्कृत शास्त्रैर बहून् प्रचार ना हईने आर्याधर्मैर ओ कल्याण देखा याय ना, केन ना, भगवद्वाणी श्रुति हईते आर्या महाज्ञागणैर तावद्व्यपदेश पूर्ण अर्थात् आमादिगैर प्रयोजनीय समस्त ग्रंथै संस्कृत भाषा निरपिबद्ध । उक्तम रूप संस्कृत ना जानिले, आर्या-धर्मैर प्रकृत अभिधाय वृत्तिरा नओया अत्यंत कठिन अथवा दुराशयात्त । किन्तु दुःखैर विषय एहि ये, अर्थोपार्जनै बर्द्धमान भारतैर विद्याशिक्षार चरम फल स्थिर थाकाय, सर्व माधारण लोकै निज निज पुत्रगणकै केवल ईराजि वा पारस्य भाषादि शिखा-ईया माहेन वा मौलवी, मुन्शी प्रसूत करियर लई-तेछेम । अल्प लोकै संस्कृत पठित हईते ईच्छा प्रकाश करेन । हा संस्कृतभाषे ! तूमि आजि कान् काङ्गालीर माता बनियर जगते प्रसिद्ध हईते चलिले ! !

नितांत शैशव कालै संस्कृत भाषा शिक्षारंभ करी उचित नहे । केन ना संस्कृतभाषा युक्ताक्षर सिक्क शब्द राशिते परिपूर्ण । ये बालक प्रथमतः निज प्रदेशीय भाषा (बाङ्गाली, हिन्दी, महाराष्ट्री आदि) नरल पाठादि युक्त पुस्तक पाठि ना करियर संस्कृतध्यान आरंभ करे, ताहार पक्षे संस्कृत भाषा आरंभ करी बहू दिन माध्य हईया पढ़े ओ प्रदेशीय भाषा उन्नत रूप ना जानार पठित पुस्तक श्रो-गणैर निकटे व्याख्यान काले अत्यंत क्लेश ओ अस्-विधा हईया थाके । प्रचलित भाषा शिक्षा द्वारा भाषा विकसित करी नितांत आवश्यक । नतुवा संस्कृत शिक्षा ओ ताहार व्याख्या एक प्रकार वि-द्वान् मात्र हईया पढ़े । सचराचर देखिते

इसकी प्रकृत सद्भावस्था करनेकी सामर्थ्य सब किसी के नहीं, तन्निमित्त ऐसी शुभ इच्छा कितने के हृदयमें उठते ही फिर निवृत्त हो जाती है । धनाढ्य वो भूपतिगण से यथोचित सहायता वो उन सबके निकट समुचित समादर वो सत्कार पायेबिना संस्कृत भाषाकी पुनरुत्थिति होने की आशा अति अल्प ही देख पड़ती है । देश देशान्तर में होतो हो सकती किन्तु भारतवर्ष में होनि अतीव कठिन है । इस संस्कृत भाषाके उच्चाङ्ग के पुस्तकों पठन वो पाठन बिना इस भान्ति बिलुप्त होते जाते हैं, जो कितने पुरानी ग्रन्थों की पत्तातक भी नहीं पाई जाती है । संस्कृत शास्त्रके बङ्गल प्रचार बिना आर्य धर्मका भी कल्याण नहीं देखा जाता है, क्योंकि भगवद्वाणी श्रुति से लेकर आर्य महात्माओंके उप-देशों से पूर्ण अर्थात् हमारे प्रयोजनयोग्य जितने ग्रन्थ हैं सब ही कुछ संस्कृत भाषा में लिखी हुई हैं । उत्तम भान्ति संस्कृत जाने बिना आर्यधर्मके प्रकृत अभिप्राय समझलेना अत्यन्त कठिन अथवा दुरागा मान है । किन्तु दुःख का विषय यही है जो धनोपार्जन ही वर्तमान भारतने बिद्या शिक्षाके चरम फल मान लेने पर सर्वसाधारण लोग निज निज पुत्रगण को केवल अंगरेजी वा पारस्य भाषादि सिखा सिखाकर साहब वा मौलवी सुन्नी बनाते हैं । अल्प ही लोगने संस्कृत पण्डित बनने की इच्छा प्रकाश करते हैं । हा संस्कृत भाषे ! तू आज कल कङ्कालियोंकी माता करके जगत में प्रसिद्ध होती चली है ! !

नितान्त शैशव काल ही में संस्कृत भाषाकी शिक्षारंभ करना उचित नहीं, क्योंकि संस्कृत भाषा युक्ताक्षरोंसे सिद्ध शब्दसमूह करके परि-पूर्ण है । जो लड़का पहिले निज प्रदेश की (बङ्गाली, हिन्दी, महाराष्ट्री आदि) भाषा में बनाया हुआ सरल पाठादि युक्त पुस्तक पढ़े बिना संस्कृत अध्ययन आरंभ करता, उसकी संस्कृत भाषा हृदयमें लाना बड़ा कठिन युक्त पड़ता है, और प्रदेशीय भाषा भली भान्ति नजानने पर ओता-ओंके निकट पढ़ी हुई पुस्तक की व्याख्यान करने के समय अत्यन्त क्लेश औ असुविधा होती है । प्रचलित भाषाकी शिक्षा करके भाषाका विकास करना नितांत आवश्यक है । नहीं तो संस्कृत शिक्षा औ उसकी व्याख्या करना एक तरह की विद्वन्नामात्र हो पड़ती है । सचराचर देखा

পাওয়া যায় যে বহুল সংস্কৃত শাস্ত্রদর্শী কোন পাণ্ডিত্যবান, কোন শাস্ত্রের বাচনিক ব্যাখ্যা বা অনুবাদ করেন, তাহা সাধারণ লোকের ছরপিণ্ডে হইয়া থাকে। প্রচলিত ভাসার শিক্ষাভাবই এই বিড়ম্বনার মূল। অতএব শিশুগণকে সঙ্গ প্রাদেশীয় ভাসার সুশিক্ষিত করিয়া সংস্কৃত শিক্ষার প্রবর্ত করা ব্রহ্মগুপ্তীর অন্তিমোদ্দেশ্য।

আমরা দেখিতে পাই যে বহু দিন ভ্রমসাধ্য সংস্কৃত ভাষায় সুশিক্ষিত পণ্ডিতগণ অনেক সময়ে অনেক লোকের নিকট যথোচিত সমাদর পান না। এজন্য অনেক পণ্ডিতেই একরূপ আক্ষেপ করেন, যে সংস্কৃত শিক্ষায় কোন কল নাই; কোন না ইহাতে অর্থোপার্জন, সমাদর ও সম্মান দিন দিন হ্রাস হইয়া আসিতেছে। আমরা পণ্ডিতগণের এই আক্ষেপোক্তিকে একবারে অমূলক বলিতে পারি না। ভারতের শ্রীম্বরূপ মহাত্মাগণের নিকট ভিন্ন পণ্ডিতগণ সৰ্বদাই প্রায় অনাস্থার পাত্র হইয়া উঠিয়াছেন। পণ্ডিতগণের হতাদর হইবার কারণ অবধারণ করা কঠিন। মৃত্যু মাত্রেই স্ব স্ব কার্য সাধন তৎপর, বাহার দ্বারা লোকে কোন কার্যের সহায়তা পায় না, তাহাকে অন্তরের সহিত আস্তা করা প্রকৃতবিরুদ্ধ। লোকে যদি সাধারণ কার্য কালে পণ্ডিতদিগের নিকট হইতে সাহায্য পায় তাহা হইলে নিশ্চয়ই তাঁহাদিগকে সমাদর করিতে পারে। ইংরাজি শিক্ষার যে রূপ পদ্ধতি সংস্কৃত শিক্ষায় তদ্রূপ নহে। ইংরাজি ভাষায় যিনি সুপণ্ডিত, তিনি সাহিত্যে, ব্যাকরণে, ভূবত্তে, জ্যোতিষতত্ত্বে, উদ্ভিদবিদ্যায়, ইতিহাসে, গণিতে, দর্শনে, ও বিজ্ঞানাদি নানা শাস্ত্রে যথা সম্ভব অভিজ্ঞতা লাভ করিয়া থাকেন, সুতরাং তিনি লোক-সমাজের যে কোন প্রয়োজনীয় বিভাগের কার্যক্ষেত্রে অবতরণ করিয়া অর্থ ও প্রতিষ্ঠা লাভ করিবার উপযোগী হইয়া থাকেন। সংস্কৃত শাস্ত্রার্থীগণের মধ্যে হয়তো কেহ অপরাভ্যেয় বৈরাচর্যিক, কেহ হয়তো দ্বিধিজরী দার্শনিক, কেহ হয়তো সাহিত্যে মহাপণ্ডিত, হইয়া থাকেন। লোক ব্যবহারোপযোগী শাস্ত্র তাঁহারা অতি অল্পই আলোচনা করেন; ধর্মশাস্ত্র, তর্কশাস্ত্র, জ্ঞানশাস্ত্র, লইয়াই তাঁহারা জীবনানন্দানুভব করিতে অভিলষী। কিন্তু যে সকল পণ্ডিত জ্যোতিষ বা আবুর্বেদাদি ব্যব-

जाता है कि वज्रल संस्कृतशास्त्र पढ़े हुए कोई पण्डित जब किसी शास्त्रकी वाचनिक व्याख्या वा लक्ष्या करते हैं, तब वह सर्वसाधारण जनोके बुद्धिगम्य ना होता है। प्रचलित भाषाकी शिक्षा भाव ही इस विडम्बना का मूल है। अतएव लड़कोंको निज निज प्रदेशीय भाषामें सुशिक्षित करके संस्कृत सिखावना विद्वज्जनोका असुमो दित है।

हम देखते हैं जो वज्रत दिनके परिश्रमसे लाभ करने के योग्य संस्कृत भाषा में सुशिक्षित पण्डितगण कितने समय कितने लोगोंके निकट यथा योग्य सम्मान नहीं पाते इसलिये कितने पण्डित इस भांति आजीव कर रहे हैं, जो संस्कृत सिद्धने से कुछ लाभ नहीं, क्योंकि इसमें जो धनागम, समादर, औ सम्मान थे सो दिन पर दिन घटने जाते हैं। हम पण्डितोंकी इस आजीवोक्ति को एक दम अमूलक नहीं कह सकते हैं। भारतके श्रीस्वरूप महात्माओंके निकट छोड़कर पण्डितगण सभी जगह में प्रायः अनास्था के पात ही उठे हैं। पण्डितोंके अनादर होनेके हेतु स्थिर करना चाहिये। हर एक मनुष्य ही निज निज कार्य साधन में तत्पर रहते हैं। जिनसे किसी कार्य की सहायता न मिलती, उनको मनके सहित आस्था करना प्रकृति विरुद्ध है। लोगोंने यदि हर एक प्रजोजन में पण्डितोंसे साहाय्य पाता तो निश्चय ही उन सबको आदर कर सक्ता। अंगरेजी शिक्षाकी जिस भांति रीति है, संस्कृत शिक्षा की रीति उस भांति नहीं। अंगरेजी भाषा में जो पण्डित बनते है वे साहित्य, व्याकरण, भूत ज्योतिस्त्व, उद्भिद्बिद्या, इतिहास, गणित, दर्शन औ विज्ञानादि नाना शास्त्रमें यथासम्भव वज्रदर्शिता लाभ किये करते हैं। सुतरां उन्होंने लोग समाज की जिस किस ही प्रयोजनीय विभाग के कार्यक्षेत्रपर उतर कर धन औ प्रतिष्ठा लाभ करने में उपयोगी बनते हैं। संस्कृत शास्त्रार्थियोंके मध्य में चाहे तो कोई ऐसे वैयाकरणिक बनते हैं जिसको कोई प्ररास्थ नहीं कर सक्ता, कोई तो दिग्विजयो दर्शन कर्त्ता, कोई तो साहित्य शास्त्रमें महा पण्डित बनते है। लोकव्यवहारके उपयोगी शास्त्र उन्होंने वज्रत ही कम आलोचना करते है; धर्मशास्त्र, तर्कशास्त्र, ज्ञानशास्त्र आदि ही से उन्होंने जीवनानन्द अनुभव करना चाहते हैं। किन्तु जितने पण्डित ज्योतिष

हार शास्त्रे विद्वत्पण्डितो दक्षतां लाभं करिष्यात् । लोकसमाजे तौहादेर प्रायः अनादर वा अप्रतिष्ठा देखिते पाওয়া যায় না । আজ কাল বর্তমান ভারত যেকোন ধর্মভাবশূন্য ও ইংরাজি ভাবপ্রিয় হইয়া উঠিতেছে, তাহাতে ত্রীমঙ্গাগবদাদি পাঠক, দর্শন-শাস্ত্র বিচারক, ব্যাকরণশাস্ত্রবিদগণ বা ধর্ম-শাস্ত্রনিপুণ মহাত্মাগণ কিরূপে মর্যাদার আশা করিবেন তবে যদি পূর্বতন আৰ্য্য মহাত্মাগণের ন্যায় সর্বাবয়বপূর্ণ বিদ্যা শিক্ষা করিতে থাকেন, তাহা হইলে আৰ্য্যগৌরব, লোকমর্যাদা ও অর্থাদি লাভে কৃতকার্য হইবেন । শাস্ত্রে দেখিতে পাওয়া যায় যে, ঋষিগণ, যোগ, ধর্ম, জ্ঞান, সাধারণ নীতি, রাজনীতি, সমরবিদ্যা, বাণিজ্য ব্যবসায় পদ্ধতি, অশেষ শিল্পশাস্ত্র, ইতিহাস, ভূগোলাদি তাবদ্বিষয়ই বিদিত থাকিতেন, এজন্য সর্বত্র পূজিত ও সমাদৃত হইতেন, সকলেই তাঁহাদের নিকট কার্যের সাহায্য লাভ করিত । এক্ষণে তাদৃশ পণ্ডিত অতি বিরল । স্মৃতরাং ব্যবহার কালে লোক সকলকে অন্তর সাহায্য প্রার্থনা করিতে হয় । যদি পণ্ডিতগণ জৈনশী প্রতিষ্ঠার কামনা করেন, তবে বর্তমান শিক্ষা-প্রণালীর পরিবর্তন করিয়া পূর্বতন আৰ্য্যগণের শিক্ষা প্রণালী অবলম্বন করুন অথবা যদি ধর্মশাস্ত্রাদি দ্বারাই নিজ নিজ অভীষ্ট পূর্ণ করিতে চাহেন, তবে প্রাণপণ বস্ত্রে ধর্মোৎসাহপূর্ণহৃদয়ে ধর্ম প্রচার দ্বারা প্রত্যেক ভারতবাসীর হৃদয়কে ধর্মভাবে উন্নত করিয়া দিন । পণ্ডিত মহাশয়গণ ! আৰ্য্যদিগের কঠোর স্বাধ্যায় ও তপস্কালক অতুল সম্পত্তি শাস্ত্র সমূহ আপনাদিগকে সমর্পণ করিয়া তাঁহারা ধরাধাম পরিত্যাগ করিয়াছেন । তাঁহাদের লোকদুর্লভ ধন রক্ষা করুন, তাঁহাদের পবিত্র পদ্ধতি অবলম্বন করুন ; তাঁহাদের ধর্মের বিজয়পতাকা হস্তে ধারণ করিয়া বিশ্ববাসীকে বিমোহিত করুন । সচেতন জিহ্বায় তাঁহাদের কীর্তি কীর্তন করিয়া তাঁহাদের বংশমর্যাদা প্রকৃত ভাবে রক্ষা করুন । আপনারা বর্তমান সমাজের ঘোর বিপ্লবসমরে পৃষ্ঠভঙ্গ দিলে ভারত প্রবল ভ্রষ্টাচারের প্রজ্জ্বলিত অনলে বিদগ্ধ হইয়া যাইবে । আপনারা কুলকর্তব্য দৃষ্টিভূত হইবেন না । আৰ্য্য কার্য্যশালা কঠো ধারণ করুন, তাঁহাদের তেজোবীৰ্য্য হৃদয়ে রক্ষা করুন ; পতিত-পাবনের প্রকৃত তত্ত্বরূপ পাবক রাশি আপনাদিগের

বৌ আয়ুর্বেদ আদি ব্যবহার শাস্ত্র মেন বিশ্বাস্যতা বৌ দক্ষতা লাভ কিয়ে হৈ, লোক সমাজমেন উন্মোকে প্রায় অনাদর বৌ অপ্রতিষ্ঠা ন দেখী জাতী হৈ । আজ কাল বর্তমান ভারত जिस भान्ति धर्म भाव शून्य बौ अंगरेजी भावप्रिय हो उठ रहा है, तिससे महात्मागण, जोने श्रीमद्भागवत आदि पाठ करने हारे, दर्शनशास्त्र को विचार करनेवाले, व्याकरण शास्त्रमें विशारद बौ धर्मशास्त्रमें निपुण हैं, कैसे मर्यादा की आशा करें । हां, यदि प्राचीन आर्य्य महात्माओंके सदृश विद्याओंकी सर्व अवयव से पूर्ण है, शिक्षा करते रहें, तो अवश्य ही अर्थगौरव, लोकमर्यादा बौ धनादि लाभ करने में जनकार्य होंगे शास्त्र में देखा जाता है, जो ऋषिगण योग, धर्म, ज्ञान, साधारण नीति, राजनीति, समर विद्या, वाणिज्य व्यवसाय की पद्धति अग्रेय शिल्पशास्त्र, इतिहास, भूगोलदि सब ही कुछ जाने छुए थे, इस हेतु सर्वत्र पूजा बौ आदर पाते थे सबकोइ अपने अपने काम में उन्मोका साहाय्य पाते थे । अब उस भान्ति पण्डित अत्यन्त विरल है । स्मृतां व्यवहार कार्यके समय लोगोंके दुसरा किसी से साहाय्य लेने पड़ता । यदि पण्डितगण ऐसी प्रतिष्ठा चाहें तो वर्तमान शिक्षाप्रणाली बदल कर पूर्वज आर्य्यगण की शिक्षाप्रणाली को अवलम्बन करें अथवा यदि केवल धर्मशास्त्रादि ही से निज निज अभीष्ट पूराने चाहें तो प्राणपण यत्नकर धर्मोत्साह पूर्णहृदयसे सनातनधर्म प्रचार पूर्वक हर एक भारतवासिके हृदयको धर्मभावसे उन्मोक्त कर दें । हे पण्डित महाशयगण ! आर्य्य महात्माओंने अपने अपने कठोर स्वाध्याय बौ तपस्या करके लाभ किया ऊँचा शास्त्रसमूह रूप अतुल सम्पत्ति आप लोगोंको समर्पण कर धराधाम त्याग किये । उन्मोके लोकदुर्लभ धनको रक्षा कीजिये, उन्मोके पवित्र पद्धति अवलम्बन कीजिये, उन्मोके धर्मकी विजयपतका हात में लिये छुए विश्ववासी को विमोहित कीजिये, सचेत जिह्वासे उन्मोके कीर्त्ति कीर्त्तन कर उन्मोके वंशमर्यादा प्रकृत भाव से रक्षा कीजिये । आपलोग यदि वर्तमान समाज के घोर विप्लव समर में दिखे हट भागियेगा, तो भारत प्रबल भ्रष्टाचार के लहरता ऊँचा आग में दग्ध हो जावेगा । आप लोग अपने अपने कुल कर्त्तव्य न भूलिये । आर्य्य कार्य शाला कष्ट में धारण की जिये, उन्मोके तेज प्रताप हृदय में रक्षा कीजिये ; पतिता पावन के प्रकृत तत्त्व जो कि पावक रूप है, आपलोगोंके

बदनविवर हईते बहिर्गत हईते थाकुक, जग७ आपनादिगेर चरणे स्वतःई अवनत हईवे । आप-नादिगेर प्रतिष्ठा भारते पुनः प्रतिष्ठित हईवे ।

सूर्यास्तकाले सभा भङ्ग हईल । सन्कार पर रात्रि ९टा पर्याप्त विशुद्ध तानलययुक्त धर्मसङ्गीत ७ हरिनाम संकीर्तन हईयाछिल । गायकेर धर्मभाव-पूर्ण स्मधुर स्वर श्रोता मात्रेई हृदयग्राही हईया-छिल ।

२५८९ माघ । रविवार, प्रातःकाल ।

प्रातः बेला ९टाेर समय आ, ध, प्र, सभान्तर्गत सद्दालोचनी सभार अधिवेशन हईल । प्रथमतः गङ्गावर्णनपूर्ण छुईटि धर्मसंगीत ७ त७परे संस्कृत भाषाय भगवत्सुत्र सरसंयोगे पठित हईल । ताहार परे एकटी संगीत हईले आ, ध, प्र, सभार सहयोगी सम्पादक एकटी ज्ञानोपदेश व्याख्यान करिलेन । व्याख्यानटी श्रानाभाव वशतः आद्या-पाठ सम्पूर्णरूप पाठकगणेर गोचर करिते पारि-लाम ना । ताहार संक्षिप्तसार मात्र निम्ने एक-टित हईल ।

जीव यथन आलोकार्कीर्ण स्थान हईते अन्ध-कारे आसिया उपस्थित हय, तथन से किछुई देखिते पाय ना : कोथाय गहिव कि करिव किछुई अनुभव हय ना । सेई समय कोन पथप्रदर्शकेर वशवर्ती हईया कार्य करिते बाध्य हय । साधक-गण ! आज् एई महोत्सवेर समय मनुष्य जीव-नेर एकटीवटना अवग कर । आमि एक समये एक पूर्णानन्दमय परमालोकार्कीर्ण स्थान हईते बहिर्गत हईया अकस्मात् एकटी अन्धकारमय स्थाने आसिया पतित हईलाम ; कोथा७ किछुई देखिते पाई ना, कि करिव, कोथाय गहिव, किछुई बुझिते पारि ना । आमार सेई पूर्व आलोकमय स्थान कोथाय ७ आमि एक्कणे कोथाय आसिलाम, किछुई अनुभव हय ना । एमन समये हठात् एकटी ब्रह्मा स्त्रीलोकेर सहित आमार साक्षात् हईल ; तिनि मनेहवाक्ये आमाके सञ्ज्ञावण करिया कहिलेन, बन्स ! भय नाई, तूमि आमार सङ्गे आहिस, आमि तोमाके परम स्वप्ने राखिव, अति यत्ने रक्षा करिव ; एमन कि, तोमाके आमार सुविस्तीर्ण राजेयर एकमात्र अधिपति करिव । आमि७ सेई भयानक दूरवशार समय ताहार हृदय-लोभन कथाय

पदारविन्द में स्वतःएव शिर झुकावेगी । आप-लोगोंकी प्रतिष्ठा भारत में पुनः प्रतिष्ठित होगी ।

सूर्यास्तके समय सभा विसर्जन ऊई । सन्कार के उपरान्त रात्रि ९ बजे तक विशुद्ध तानलय-युक्त धर्मसङ्गीत वो हरि नाम सङ्कीर्तन ऊछा । गायक महाशयके धर्मभाव पूर्ण रसिली स्वर हरेक श्रोताका मन हर ली थी ।

माघ सुदी ८ । रविवार, प्रातःकाल ।

प्रातःकाल सात बजे आ, ध, प्र, सभाके अन्त-र्गत सद्दालोचनी सभाका अधिवेशन ऊछा । पहिले गम्भीरभावसे पूर्ण दो धर्म सङ्गीत गाई गई । तदनन्तर भगवत सोल, जो कि संस्कृत भाषा में रची ऊई है, सूस्वर से पढ़ी गई । इसके आगे एक भजन होने पर आ, ध, प्र, सभाके सहयोगी सम्पादक एक ज्ञानोपदेश व्याख्यान किये । स्थाना-भाव के कारण व्याख्यान की आदि से अन्ततक सम्पूर्णरूप पाठकोंके गोचर न कर सके हैं । उसका सारांश मात्र नीचे लिखा गया ।

जीव जब ज्योति से पूर्णस्थान पर से अन्धकार में आगिरता है, उस समय उसको कुछ नहीं सूझता है । कहाँ जायगा क्या करेगा कुछ ही नहीं मालूम पड़ता । उस समय कोई राह दिखाने हारेके वश हो कर कार्य करने में बाध्य होता है । साधकगण ! आज इस महोत्सव के समय मनुष्य जीवनकी एक बात सुनिये । मैं किसी समय में एक पूर्णानन्दमय परम ज्योति करके भरा ऊछा स्थान से निकल कर अकस्मात् किसी अन्धकारमय स्थान में आ पड़ा ; कहीं कुछ दृष्टि न चली, क्या करूँगा, कहाँ जाऊँगा कुछ भी न बूझ सका । मेरा वह पूर्व आलोकमय स्थान कहाँ रहा वो मैं अब कहाँ आ चुका, कुछ ही अनुभव न ऊछा । इस समय अकस्मात् एक दृष्टा स्त्री से मेरा भेट ऊछा ; वे स्त्री वचन से सम्भाषण कर बोली, बेटा ! डर नहीं तू मेरे साथ आ, मैं तुझ को परम सुख में रखूँगी, अति यत्नसे रक्षा करूँगी, ऐसा कि तुझको मेरे सुविस्तीर्ण राजके एकमात्र अधिपति बना-ऊँगी । मैं भी उस भयङ्कर दुर्दशाके समय जनको मन लोभावनी बातोंसे मोहित होगया । धीरे-धीरे उनके पिछे जाने लगा । कभी जलमें, कभी स्थल में

विशुद्ध हईया गेलाम । धीरे धीरे तँहार अनुगमन करिते लागिलाम । कथन जल, कथन शूल, कथन दुर्गर्भ, कथन अन्तरीक्ष, कथन वृक्षापरे प्रतिष्ठित विविध पाण्डुशालाय अवस्थान करि । कोथाओ केवलमात्र बागुभक्षणे जीवनधारण करि, कोथाओ तृणपत्र आहार करिया प्राणधारण करि, कोथाओ ना नानाविध तिल, मधुर, अन्न, कषाय, मज्जा-मांसादि भक्षणे क्षुत्पिपासा निवारण करि । तनि बराबर आमार सङ्ग आछैन एवं नानाविध अलौकिक देखाइते देखाइते आमाके तँहार राजधानीते लईया चलिलैन । क्रमे नाना स्थान, गिरिगह्वर, अरण्याणि अतिक्रम करिया, एक परिकृत जनपदे अगिया पड़िलाम । तनि कहिलैन, एहि आमार राजधानी ; एतदिन याहा देखिया आसिले ताहाओ आमार शासनांतर्गत । एहि स्थाने तूमि समस्त राज्ये अवीधर हईया राज्यस्थ भोग कर । वत दिन आमि धाकिव, तोमाके विधिमते लालन पालन करिव । आमिओ अनेक परिश्रान्तिर पर एकट्ठ विश्राम पाइलाम एवं किफि सुखबोधो हईल । भोगस्थे उन्मत्त हईया, क्रमे आमार चिरनिवास पूर्णलोककीर्ण परमानन्दमय स्थान एके-बारे विस्मृत हईलाम ।

एहि रूपे क्रमे राज ऐश्वर्य भोगे आमार जीवन गत हईते लागिल । कालसहकारे राजोचित विपुल विक्रम आगिया आमाके आश्रय करिअ । तथन आमि राजा हईलाम ओ निज मर्यादा बुझिते पारिलाम । समये समये आमार राज्यविस्तार वासनाओ बलवती हईते लागिल । एक दिन राजनीतिर वशवर्ती हईया युग्यार्थ बहिर्गत हईलाम, क्रमे राजधानीर सीमा अतिक्रम करिया एक अदृष्टपूर्व मनोहर वने उपस्थित हईलाम । तथाकार प्राकृतिक शोभा मन्दर्शन करिते करिते मने आनन्द उपस्थित हईल । तरुगण नवीन पल्लव ओ फल पूष्प परिशोभित, विहङ्गन सकल मृदु मधुरस्वरे गान करितेछे, मन्द मारुत-हिल्लोले शाखा प्रशाखा सकल विलोडित हईतेछे ; भाविलाम एरूप शोभा कि आर कोथाओ कथन देखियाछि । आहा ! एरूप शोभा मयस्कन के करितेछे ! भाविते आमार पूर्व अवस्था स्मरण हईल, सेइ पूर्ण ज्योतिर्मय स्थान मने पड़िल,

कभी भूगर्भ में, कभी अन्तरीक्ष में, कभी तलपर बनाई ऊई नाना भान्तिके सराय में टिकने लगा । कहीं केवलमात्र वायु भोजन करके जीवनधारण किया, कहीं तृणपत्र आहार करके प्राण बचया, कहीं नाना भान्ति के तोता, मीटा, खट्टा कसैला, मज्जामांसादि भोजन कर भूखप्यास बुझाया । वे बराबर मेरे साथ रही, और नाना भान्तिके लालच देखलाती ऊई मुझको अपनी राजधानी में ले चली । क्रम क्रमसे नानास्थान, गिरिकन्दर बन, टप टप कर एक परिकृत जनपदमें आ पड़ा । वे बोलीं यही मेरी राजधानी है, इतना दिन जो जो स्थान देख आये हो वे सब भी मेरे शासनाधीन है । इस स्थान में तुम समस्त राज्यके आधीश्वर बनकर राजसुख भोगते रहो । जबतक मैं रहज्जी तुझको विधिपूर्वक लालन पालन करुज्जी । मैं भी वल्लत परिश्रम के बाद तनिक विश्राम पाया और कुछ सुख बोध भी लूँगा । भोग सुख में उन्मत्त होकर क्रमक्रमसे मेरे चिरवासस्थान पूर्ण ज्योतिर्मय परमानन्द से पूर्णस्थान को एक दम मूल गया ।

इस ही तरहसे राज ऐश्वर्य भोग करते लूँये मेरा आयु बीतने लगा । कालसहकारे राजोचित विपुलविक्रम मुझको आश्रय किया । उस समय मैं राजा बना वो निज मर्यादा समझ लिया । बीच बीच में राज्य बढावनेकी वासना भी बलवती होने लगी । एकदिन राजनीति के अनुसार मृगयार्थ बाहर निकला । क्रमक्रमसे राजधानी की सीमा टपकर एक वन में जा पड़्या, जो कि पहले कभी न देखा लूँगा वो परम मनोहर था । वंहा की प्राकृतिक शोभा देखते लूँये मन में आनन्द उपजा ; तरुगण नवीन पल्लव वो पुष्प आदिसे सुगोभित है, विहङ्गमगण मृदु मधुर स्वर से गाय रहे हैं । मन्द मारुतहिज्जोल से शाखा प्रशाखा डोल रही हैं, मनमें विचारा कि इस भान्ति शोभा क्या और भी कहीं देखा या नहीं । आहा ! इस शोभाको कोन बढा रहा है ! सोचते विचारते मेरी पूर्व अवस्था स्मरण पड़ी । वही पूर्णज्योतिर्मय स्थान बाद पड़ा, सोचा कि मेरे वंहा

ভাবিলাম আমার সে স্থান কোথায় । এই শোভা তাহার নিকট পরাজয় স্বীকার করে ।

এইরূপ আন্দোল্যমানচিত্তে ভ্রমণ করিতে২ সম্মুখে এক অভূত পর্বত দৃষ্ট হইল । ভাবিলাম এই পর্বতোপরি আরোহণ করিলে বোধ হয় আরও সমধিক শোভা দেখিতে পাইব । ক্রমে ক্রমে পর্বত সম্মিলিত হইয়া তাহাতে আরোহণ করিতে লাগিলাম । যতই উর্দ্ধে গমন করি, ততই শোভা দেখিতে পাই । এইরূপ যখন অর্ধপথে আরোহণ করিলাম । তখন দেখি সেই বৃক্ষা জীলোক অতি বেগে চিৎকার করিতে করিতে আমার অভিমুখে আসিতেছেন এবং হস্ত উত্তোলন করিয়া আমাকে প্রতিনিবৃত্ত হইতে অনুরোধ করিতেছেন । তখন আমি স্থম্ভিত হইয়া কণকাল দণ্ডায়মান রহিলাম ; ক্রমে তিনি আসিয়া আমার হস্ত ধারণ পূর্বক উর্দ্ধে উঠিতে বার বার নিষেধ করিতে লাগিলেন ; কহিলেন বৎস ! এরূপ দুঃসাহসিক কার্য কখনই করিও না । ঐ দেখ কত লোক উঠিতে গিয়া উর্দ্ধ হইতে বিচ্যুত হইয়া ভগ্নপদ ও বিকলাঙ্গ হইয়াছে, কত লোক পড়িয়া হতচেতন ও অকালে কালকবলে প্রবেশ করিয়াছে ; অতএব এরূপ কার্যে কখনই উদ্যম করিও না । এস, আমার সঙ্গে প্রতিনিবৃত্ত হও, তোমার বাহ্য আবশ্যক হইবে আমি তোমার রাজধানীতে আনিয়া দিব । এইরূপ আমাকে নানা প্রলোভন দেখাইতে লাগিলেন । আমিও তখন কি করি, গিরিশীর্ষস্থ অপরূপ শোভারাজি আমাকে উর্দ্ধদিকে গমনে আমন্ত্রণ ও তাঁহার প্রলোভন বাক্য প্রত্যাবর্তনে পরামর্শ দান করিতে লাগিল । পরিশেষে তাঁহারই বাক্যের বশবর্তী হইয়া পর্বতারোহণের উদ্যম পরিত্যাগ করিলাম এবং তাঁহার সঙ্গে নিজ রাজভবনে প্রত্যাগমন করিলাম । পুনর্ব্বার রাজভোগে অনুরক্ত হইয়াও সেই অবধি মধ্যে মধ্যে আমার মনে সেই রমণীয় শোভাবলোকনের ঐকান্তিকী ইচ্ছা হইতে লাগিল ।

একদা রাজ্যযোগে পর্য্যটক নিদ্রা বাইতেছি, স্বপ্ন দেখিলাম, যেন আমি পর্বতোপরি আরোহণ করিতেছি । মন আনন্দে উচ্ছলিত হইয়া নৃত্য করিতে লাগিল । রাজভোগ সুখৈশ্বর্য্য ভুলিয়া গেলাম । এমন সময়ে নিদ্রাভঙ্গ হইয়া দেখি, আমি

স্থান অব কঁহা রহা । यह शोभा उसके पास द्वार मानती है ।

इस भांति आन्दोल्यमान चित्तसे फिरते फिरते साहने में एक बड़ा भारी उषा पर्वत देख पड़ा, विचार किया कि इसपर्वतपर चढ़ने से और भी अधिक शोभा देख पड़ेगी । क्रमक्रमसे पर्वत के निकट जा उस पर चढ़ने लगा तत्काल देखा कि वे प्राचीना स्त्री दौड़ती दौड़ती चिल्लाती ऊई, मेरे और आरही और हाथ उठाकर मुझे लौटाने की इमरा कर रही हैं । उस समय मैं थम कर तनिक खड़ा रहा ; वे आकर मेरे हाथ पकड़े ऊई उपर उठनेको बारम्बार निषेध करने लगी । बोली कि हे वत्स ! ऐसे दुःसाहसिक कार्य कभी न करो । उधर देखो कितने लोग उठते उठते उपरसे गिरपर भग्नपद वो विकलांग वन बैठे, कितने तो गिरते ही अचेतन हुए वो अकाल कालकवल में प्रवेश किये, अतएव ऐसा काममें कभी उद्यम न करो । आओ, मेरे सङ्ग लौटो, तुम्हारा जो कुछ प्रयोजन पड़ेगा, मैं तेरी राजधानी में ला दूँगी । इस भांति अनेक लालच दिखलाने लगी । मैं उस समय क्या कह, पर्वत परकी आश्चर्य्य शोभापंति मुझे ऊपर से चढ़ जानेको आमन्त्रण कर रही थी, और उनकी मनलोभावनी वचनोंने लौट आनेका परामर्श देने लगा । अन्तमें उन्हींके वचन बश होकर पर्वतारोहण के उद्यम छोड़ा वो उनके सङ्ग निज राजभवन में फिर आया । पुनर्व्वार राजभोग में अन्तरक्त हुए भी उस समयसे बीच में उस रमणीय शोभा देखनेकी ऐकान्तिकी इच्छा होने लगी ।

एकदिन रात्री को पलङ्कपर सोए ऊँवे स्वप्न देखा जैसा कि मैं पर्वत पर चढ़ रहा हूँ । मन आनन्दसे उछल उछल कर नृत्य करने लगा । राजभोग सुखैश्वर्य्य सब ही भूल गया । ऐसे समय मेरी निद्रा टूटी, और देखा कि मैं राजभवन में

सेही राजभवने असज्जित पर्याङ्क शयन करिया रहियाछि । किन्तु मन तখনओ सेही शोभा जाग्रदशाते विस्मृत हय नहि ; प्राण, मन व्याकुल हईया उठिल, समुदय स्रष्टैश्वर्या विरल्लिकर बोध हईते लागिल । कि करि, काहाकेओ किछु ना बलिया, प्रभाते गार्वाङ्गान् पूर्वक एकाकी निःशब्दे राज भवन हईते बहिष्कृत हईया सेही पर्वताभिमुखे गमन करिलाम एवं उर्द्ध्व पुनरारोहण करिते लागिलाम । एवारओ पूर्ववत् रुक्मा प्रतिरोधिनी हईया आसिलेन, किन्तु एवार तँहार कथाय अमि अनादर पूर्वक उच्छेःश्वरे क्रन्दन करिते कहिलाम यदि केह निकटे थारु, तवे आमार अतीत साधने सहायता कर, आर येन रुक्मा वक्ष्णावाका आमाके मोहित ना करे । এই अयोग नष्ट हईले आर आशापूर्ण हईवे ना । এইरूप क्रन्दन करितेछि, एमन समये एकटी परमा सुन्दरी युवती उर्द्ध्व हईते आमाके हस्त प्रसारण पूर्वक, आशान वाक्ये आशान करिया कहिते लागिलेन । आइस, आर पञ्चाङ्क दिके दृष्टिपात करिओ ना, ओ रुक्मा राक्षसी, तोमाके विनाश करिवार जन्तु मोथिक ममता देखाय मात्र । आर भय नहि, आमि तोमाके उपरे लईया आसितेछि तोमार मानस पूर्ण करिव, आमार स्वामीर निकट तोमाके पोछा ईया दिव, भय नहि, उपरे आइस । आमि सेही वाक्ये आशानित हईया द्विगुण वेगे आरोहण करिते लागिलाम एवं तिनि स्नेहवश हईया, आमार हस्त धारण करिलेन ; ईहा देखिया सेही रुक्मा ये कोथाय तिरोहित हईल ताहार आर अनुसन्धान पाईलाम ना । उक्त आर्तदुःखविनाशिनी वामा पर्वत शिखरे गिया, एकजन सम्प्रथम प्रशान्त प्रकृति नोग्य पुरुषेण शरणपन्न हईते इक्षित करिलेन, बलिलेन उनि तोमार मानस पूर्ण करिवेन ! आमि तখন अश्रुपूर्णलोचने गन्तव्ये श्वरे तँहार चरणे लुण्ठित हईलाम । तिनि कहिलेन वत्स ! आर तोमार भय नहि, आइस এই सरोवरे स्नान करिया आइस । तोमार शरीर रुक्मा स्त्रीलोकक कुदृष्टितेओ उन्पाड़ने क्रतु विवृत हईयाछे, उहाते कीटैर मक्षार हईयाछे, ए सरोवरे स्नान करिले सकल मूक्त हईवे । तখন आमि कृताञ्जलिपूटे कहिलाम, हे शरणगत-

सजाए छए पालङ्कपर सोआ ह । किन्तु तौ भी मन जाग्रदशामें उस शोभाको न भूला ; प्राण, मन व्याकुल हो उठा, समस्त सुखैश्वर्य विरल्लिकर बोध होने लगा । क्या कहूं, किसही को कुछ कहे विना प्रभात काल उठ कर अकेले निशब्द छए राजभवन से बाहर निकला वो उस पर्वताभिमुख गमन किया औ फिर उपर चढ़ने लगा । इस वेर भी वह दृष्ट्वा पूर्ववत् प्रतिरोधिनी हो आई । किन्तु इस वेर उनकी बातोंपर विन मन दिये जोर शोरसे रो रो कर कहने लगा कि यदि कोई निकट रहे हों तो मेरी अभीष्ट साधन में सहायता करो, जैसा कि फिर दृष्ट्वा की वक्ष्णा वचन मुझे मोहित न करे । यह शुभ योग नष्ट होनेसे फिर आशा पूर्ण न होगी । जब मैं इस भान्ति रो रहा था, देखा कि एक परमसुन्दरी युवती ऊपरसे हाथ उठाये मुझे आशवास वाक्यसे पुकार कर बोलने लगी, आओ, पीछे मत देखो, वह दृष्ट्वा राजसो है, तुम्हको मारने के लिये भूटी ममता दिखलाती है । और डर नहीं; मैं तुम्हको ऊपर लिये आती हूं, तेरो मनसा पूरी करूँगी, मेरे स्वामी के निकट तुम्ह को पञ्जवा दूँगी, डरना नहीं, ऊपर आओ । मैं उसही वाक्यसे आशवासित होकर द्विगुण वेगसे आरोहण करने लगा और वे स्नेह वश होकर मेरे हस्तधारण करी, इतना देखतेही वह दृष्ट्वा जो कंधा छिप गयो, उसकी पतातक न पाया, वह आर्त-दुःख-विनाशिनी वामाने पर्वत-शिखर पर जो एक प्रधानतः सौम्य-मूर्ति पुरुषके, जो कि सम्मुख बैठे थे, शरण लेने को इमारा करी, बोली कि, वे ही तुम्हारी कामना पूरी कर देंगे । आँसूसे भरा हुआ नेत्र वो गद्गदस्वर से उनके चरणकमल पर गिरा । वे बोले, हे वत्स ! और तेरा भय नहीं, आओ, इस सरोवर में स्नान कर लेओ । तेरे शरीर दृष्ट्वाकी कुदृष्टि वो उन्पाड़न करके जित विवृत हो गया, उस में कीड़ाभी पड़ा, इस सरोवर में स्नान करनेसे सब छूट जायगा । तब मैं ने हाथ जोड़े कहा, हे शरणागतपालक ! मैं किधर किस

पालक ! আমি কোনদিকে কিরূপে অবতরণ করিয়া
জান করিব, তাহা জানি না, আমাকে দেখাইয়া
দিন । তিনি कहिलेन, क्रमे नरोवरे अवतरण
पूर्वक मस्तक अवनत करिया अवगाहन कर । আমিও
সেই আঙ্গানুসারে জনমধ্যে অবতরণ করিলাম;
ক্রমে মস্তক অवनমন করিয়া তথায় নিমগ্ন
হইলাম । শরীর শীতল হইতে লাগিল, বেদনা
দূরীভূত হইল ; কিন্তু অধিকক্ষণ ডুবিয়া থাকিতে
পারিলাম না, আবার ভাসিয়া উঠিলাম । তখন
কহিলাম, এ কি হইল ! আমি যে ডুবিয়া থাকিতে
পারি না । তিনি कहिलेन वत्स ! अग्रे शरीर
शीतल हउक, पश्चात् আমি তোমার কাছে এক
দিব্যৌষধি প্রদান করিতেছি, তুমি উক্ত ঔষধি ধারণ
পূর্বক জল মধ্যে মগ্ন থাকিতে পারিবে । আমি
জান করিয়া ঔষধি ধারণ করিলাম, তখন তিনি
কহিলেন, এইবার অবগাহন কর, আর ভাসিয়া
উঠিবে না । আমি তাঁহার অনুমত্যানুসারে অব-
গাহন করিলাম, এবং একেবারে জলের গভীর-
তলে গমন পূর্বক কোথায় গেলাম বলিতে পারি
না । তখনও কণ্ঠহরে এই শব্দ প্রবেশ করিল,
“আরও গমন কর, আরও শীতল হইবে”, ক্রমে
আরও গমন করিতে করিতে এক অপূর্ব আনন্দ-
ময় স্থানে প্রবেশ করিলাম । দেখিলাম তথায়
পরমরমণীয় জ্যোতির্ময় শোভা-বিশিষ্ট কতক-
গুলি সৌম্যমূর্তি পুরুষ আনন্দে বসিয়া আছেন ।
সেখানে পৌছিবামাত্র আমি স্পন্দ রহিত, আমার
হস্ত, পদ শরীরাদি কিছুই দেখিতে পাইতেছি
না ; কেবল এক আনন্দধ্বনী উচ্ছলিত হইতেছে ।
তখন আমার সেই পূর্ব পরিচিত সৌম্য পুরুষ
সেখানে উপস্থিত হইয়া কহিতেছেন, বৎস ! আরও
একটু ভিতরে আসিয়া, তোমার মানস পূর্ণ কর ।
তখন আমি তাঁহার দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখি,
তাঁহার সে আকার নাই, সে ভাব নাই ; কিন্তু কি
দেখিলাম, তাহা প্রকাশ করিতে পারি না, কি
অনুভব হইতে লাগিল, তাহা বলিতে পারি না,
আমারই বা তখন অবস্থা কি, তাহাও ব্যক্ত
করিতে পারি না, সে স্থানের সেই ভাব, সেই
শোভা, যে ব্যক্তি দেখিয়াছেন, তিনিই জানেন,
তন্নিম্ন আর কিছুই বলিতে পারি না ।

... সাধকগণ ! সদালোচনী সভার সভ্যগণ ! যদি

রোনিয়ে উতর कर खान करङ्गा, सो मैं नहीं
जानता ऊँ, मुझको देखाय दीजिये । उन्होंने कहा
धीरे धीरे सरोवर में उतर कर शीर झुकाये
गीता लगाओ । मैं भी उनको आत्मानुसार जलके
बीच उतर गया, धीरे धीरे शीर झुकाये उस में
निमग्न हुआ । शरीर शीतल होने लगा, दर्द दूर
हुआ, किन्तु वहुत देरतक मुझसे मगन हुए न रहा
यगा, फिर ऊपर उतराय आया, तो बोला यह क्या
हुआ ! मैं जो उवे नहीं रह सका ऊँ, वे बोले
हे वत्स ! पहले तो शरीर शीतल होय, तत्पश्चात्
मैं तेरे कण्ठ में एक दिव्य औषधि देदुंगा ऊँ, तु
वही औषध धारण करके जलके मध्य में भग्न
रह सकेगा । मैं खान कर औषधि धारण किया
तब वे बोले, अब डूबो, फिर न उतर आओगे ।
मैं उनकी अनुमति अनुसार अवगाहन किया और
‘एक दम गम्भीर जलके नीचे जाकर कहाँ चला
गया, सो नहीं कह सका ऊँ । तब भी कर्णविवर
में इतना शब्द प्रवेश किया कि और भी जाओ
और भी सुशीतल होओगे क्रमक्रमसे और भी जाते
जाते एक अपूर्व आनन्द स्थानको प्राप्त हुआ ।
देखा कि कितने परम रमण य ज्योतिर्मय शोभा-
विशिष्ट सौम्यमूर्ति पुरुष वहाँ आनन्द में विराज
कर रहे हैं । वहाँ पड़चनेहीसे मैं स्मन्दरहित
होगया । मेरे हस्त, पद, शरीरादि कुछ ही न देख
पड़ता रहा, केवल एक आनन्द की ध्वनी उछल
रही है । उस समय मेरे पूर्वपरिचित सौम्य पुरुष
वहाँ उपस्थित होकर बोले, हे वत्स ! और भी कुछ
दूर भितर पैटकर अपनी मानस पुरी करले । उस
समय उनके ओर मैं दृष्टिकर देखा कि उनके वह
आकार नहीं, वह भाव नहीं ; किन्तु क्या देखा,
सो नहीं प्रकाश कर सका ऊँ, क्या अनुभव होने लगा
सो कह नहीं सका ऊँ, मेरी भी अवस्था उस समय
कैसी ऊँई, सो प्रगट नहीं कर सका ऊँ । उस
स्थानके वह भाव, वह शोभा, जोने देखा, वही
जानते होंगे, इतना जोड़के और कुछ भी नहीं
कहा जा सका है ।

साधकगण ! सदालोचनी सभाके सध्यगण ! यदि
मनुष्यदेह धारण करके निज उद्देश्य सफल करने
चाहो, तो इस अपूर्व भावको एकवार मन में
चर्चा करो । यदि निज जीवन में यह उपभोग

मनुष्य जीवनेर उद्देश्य सफल करिते चाओ, एहि अपूर्वभाव एकवार मनोमथो आन्दोलन कर । यदि निज जीवने ईहा उपभोग करिते चाओ, देखिते पाईवे, सेई अगार आनन्द कि, ताहा मुखे बाक्क करिबार नहे, ताहा उपभोग भिन्न आर किछुतेई अहंभव करा याय ना ।

मनुष्य विवरणेर गूढ जांअर्पा अवधारण कर । ब्रह्मलोकई आमार ज्योतिर्भूय निकेतन, मूला प्रकृति वा मायाई ए बुद्धि स्त्री । जीवात्मा यখন ब्रह्मसङ्गाय विनीन থাকे, तखन सेई परमेश्वर पूर्ण ज्योतिर्भूय स्थान उपभोग करे, अतएपर मायावशतः देह धारण करिया जीवोपाधि प्राप्त हईले उक्त माया आगिया आहस करे, एवम् कीट पतङ्गादि चतुरशीति लक्षवर्ग पाहनिवास) अमण करतः तदन्तरे उपभोगोपभोगी जले, श्वले, फल, मूल पत्रादि भक्षण करिया जीवन धारण करे, क्रमे मानव देह प्राप्त हईले, जीवेर राजपद प्राप्त हर । तखन क्रमे राजविक्रम वा मनुष्य प्राप्त हईले, जीव धर्माद्वारे देवोपभोग्य आनन्द नातिर्य वा सुखार्थ अवेश करे । तथा, हईते संसृष्टरूप पर्वतारोहणे प्रवृत्ति जन्मे, माया अविद्यावेशे ताहा हईते निरुद्ध करिलेओ विवेक समरे समरे अक्षय जीवके उद्देशना करिया पुनर्बार ताहाके संसृष्टार्थ प्रवर्धना देय । अविद्या पुनर्बारणे उद्यत हईले, संसृष्ट प्रभावे जीवेर मने पश्चात्तापेर उदय हईरा থাকे ओ अनूतापाश्च पतित हर । तत्काल संसृष्टरूप कृपाकृपाणी रमणी जीवके अन्तरदान करिते थाके ओ तदर्थने अविद्या तिर्रोहित हईरा वाय । संसृष्टई मोक्ष पुरुष, तनि जीवेर काम, क्रोधादि ओ इन्द्रिय सेवादि जग ये विविध रुद्धाधि जन्मिया थाके, ताहा देहाईरा देन एवम् भगवत्प्राप्त्यारूप सरोवरने स्नान कराईरा ताहार आधिद्याधि शास्त्रि विधान ओ सहाय्य करिया देन । जीव अक्षय चेष्टा करिया भगवत् प्रेमनीरे अधिकरण छुविया धारिते पावेना । गुरु आज्ञा मन्त्र प्रदान करिले, जीव ब्रह्म समाधिसे ब्रह्मानन्दोपभोग करिते थाके । भक्त, ज्ञानी, योगीधर आनन्द धामेर ये वृत्ते अवस्थित, तथाय ताहार गति हईरा थाके । सेधाने गेले, दिव्य

करने चाहो, तभी सुख पड़ेगा जो वह अपार आनन्द कैसा है, वह आनन्द वचनके वर्णनीय नहीं, बिना उपभोग किये वह किस ही प्रकारसे अनुभवके योग्य न होता है ।

मेरा कष्टी ऊँह विवरणके गूढ अधिप्राय निश्चय करलो । ब्रह्मलोक ही को मेरे ज्योतिर्भूय निकेतन करके जानना, श्री मूला प्रकृति वा माया ही वह वृद्धा स्त्री हैं । जीवात्मा जब ब्रह्मसङ्गा में विनीन रहता है, उस समय वह परम उज्ज्वल पूर्णज्योतिर्भूय स्थानके सुखभोगता रहता, तदनन्तर मायासे देह धारण कर जीवोपाधि प्राप्त होने से उक्त माया उसको घाच्छन्न करलेती है, श्री कीट पतङ्गादि चौरासी लक्ष योनी (पाँचगाला) भ्रमण कर उस उस देहके उपभोगवाञ्छ जल, स्थलादि में फल, मूल, पत्रादि भोजन करता हुआ जीवनधारण किया करता है, क्रमसे मानवदेह प्राप्त होने पर जीवको राजपद मिलता है । उस समय क्रमक्रम से राजविक्रम वा मनुष्यत्व पाये, जीव धर्माद्वारे में देवोपभोग्य आनन्द लाभार्थ वा स्वर्गार्थ प्रवेश करता है । वहाँ ही यह प्रकृति उदगी है कि सत्सङ्गरूप पर्वतपर चढ़े, अविद्यारूप वनी ऊँह माया इस चेष्टासे निवृत्त करने पर भी समय समय में विवेक व्यग्रत जीवको चेता कर फिर उसको सत्सङ्ग करने की इच्छा बढ़या करता है । अविद्या पुनर्बार माना करने में तैयार होय तो सत्सङ्गके प्रभावसे जीव के मनमें पश्चात्ताप का तरङ्ग उठा करता है, श्री अनुतापके आसु फुट निकल आता है । उस ही लग मनुष्य को कृपा रूप एक रमणी जीवको अभय वचन कष्टती रहतो श्री तद्दर्शनसे अविद्या छिप जाती है । उस मौख्य पुरुषको सङ्ग करके जानो ; काम, क्रोधादि श्री इन्द्रिय सेवादिके अर्थ जीव की ओ नाना भांति की हृदयाधि जन्मती है, मनुष्यने उस सब दिव्याय देते है और भगवत् की उपासना रूप जो सरोवर है, वहाँ स्नान कराकर उस की आधि-व्याधि की शान्तिविधान श्री सद्व्यवस्था कर देते हैं । व्यर्थ चेष्टा करके जीव वृद्धत देरतक भगवत्-प्रेमनीर में डुबेन्द्र नहीं रहे सक्ता है । यह आत्ममन्त्र देन से जीव ब्रह्मसमाधि करके ब्रह्मानन्द उपभोग करते रहते हैं । उन की गति आनन्द धामके उस ही वृत्त (स्थानमण्डल) में होनी, कि जहाँ भक्त, ज्ञानी, योगीधर विराज

दृष्टि হয়। তখন গুরুকে সে মনুষ্য বুদ্ধিতে দেখিয়া ছিল ও “আমি দেহী” ইত্যাদি বোধ ছিল, তাহা বিনষ্ট হইয়া গুরু আদিত্তে ব্রহ্ম বুদ্ধি উদয় হয়। এই আনন্দ ধামই জীবের চির বিশ্রামের স্থান। এই স্থানেই জন্ম, মরণের প্রবাহ অবরুদ্ধ হয়, এই স্থানেই মক্তি ও শান্তি জীবের পরিচর্যায় নিযুক্ত; এখানকার তাবদ্ব্যাপারই অনির্বচনীয়, এখানকার বিকার, বিতর্কেত প্রবেশাধিকার নাই; এস্থান কৈবল্যানন্দের এক মাত্র প্রজন্ম। সাধক! সকলে সেই আনন্দধামে বাইবার জন্য মসজ্জ হও। পতিতপাবন ভগবানের প্রতি লক্ষ্য রাখিয়া শুভ দিনে সাত্তা কর। সংসারের, প্রতারণাদির চিরনিবাসের পথ ভুলিও না। মনুষ্য দেহ বিনষ্ট হইলে, একুপ শুভসংগ আর পাইবে না। আত্মা আনিদিগের কথিতমতে বিশ্বাস কর, বেদোপদেশ শিরোধার্য্য কর, বেদান্তকূল পৌরাণিকাকৌতকে পথপ্রদর্শিকা করিয়া লও, নিজ কলুষিত বুদ্ধি, মানায়া বুদ্ধি, মহাপুরুষগণের চরণে বসি প্রদান কর। সদগুরুর আশ্রয় লইয়া নিশ্চিত চিত্তে নিজ নিকেতনে চলিয়া যাও। ভগবান আমাদের সকলের অভিষ্ট সাধনের সহায়ক হউন। আমরা সকলে তাঁহাকে নমস্কার করি। ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরি ওঁ।

অতঃপর হরিনাম সংকীর্তন হইয়া, সভা ভঙ্গ হইল। মধ্যাহ্ন কালে দীন দরিদ্রকে যথাসাধ্য দান করা হয়।

অপরাহ্ন বেলা ২টা হইতে।

প্রথমতঃ সভার অন্ততর পণ্ডিত মান্যবর ত্রিযুক্ত ছট্টলাল পাণ্ডে মহাশয় সরল ভাষায় ত্রিগুণগবৎ ব্যাখ্যা করিলেন। তাঁহার পর সভার প্রথম পণ্ডিত মান্যবর ত্রিযুক্ত অম্বিকাদত্ত মিশ্র মহাশয় বিশেষ নিপুণতার সহিত মনুসংহিতার ব্যাখ্যা করিলেন। তদনন্তর সভার কার্য্যমস্পাদক পরম ধর্মোৎসাহী উদ্যমশীল মান্যবর ত্রিযুক্ত পণ্ডিত ভাইরাম অগ্নি-হোত্রী মহাশয় সভার বার্ষিক কার্য্য বিবরণ পাঠ করিলেন। তাহার স্থূল মর্ম্ম নিম্নে একত্রিত হইল।

১। বঙ্গবাসী বালকদিগকে নীতি শিক্ষা দিবার জন্য যে “সুনীতি সজ্জারণী সভা” দুই বৎসর হইতে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, বেহারী বাবরুন্দের জ্ঞান ও তজ্জপ গত বর্ষে আর একটী সভার প্রতিষ্ঠা

করনে হৈ। বচা জানে সে দিব্য দৃষ্টি होती। पहले जो गुरुको मनुष्य बुद्धि करके देखा था, श्री मैं देही हूं ऐसा जो बोध था, उस समय वे सब विनष्ट हुए गुरु आदि में ब्रह्मबुद्धि उदय होती है। इस आनन्द धाम ही को जानके नित्य विश्रामके स्थान करके जानना। यहाँ ही जीवके जन्म, मरणका प्रवाह बन्ध हो जाता है; यहाँ ही मुक्ति वो शान्ति जीव की सेवा में सदा ही नियत रहै है; यहाँ विकार विकर्क का प्रवेशाधिकार नहीं; यह स्थान कैवल्यानन्दका एकमात्र निर्भर है। साधक! सबकोई उस आनन्द धामको जानके लिये तैयार होओ। पतिपपावन भगवानके और लक्ष्य रखकर श्रमदिन में यात्रा करो। संसार की प्रतारणा वाक्यसे चिरनिवास की पथ मत भूलो। मनुष्यदह नष्ट होनेसे इस भांति प्रभयोग फिर न मिलेगा। आर्य्य ऋषियों के कहे हुए मतको विश्वास करो, वेदापदेश शिरो-धार्य्य करो, पौराणिकोक्ति को जो कि वेदान्तकूल है, पथ प्रदर्शिका करके मान लो, निज कलुषित बुद्धि सामान्य युक्ति आदिको महापुरुषोंके चरण पर बलिदान करो। मङ्गलके आश्रय लिये निश्चित चित्तसे निज निकेतन में चले जाओ। भगवान हम सब को अभीष्ट साधनका सहायक पनें। हम सब उनको नमस्कार करें।

ओं शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरिः ओं।

तदनन्तर हरिनाम संकीर्तन हुए, सभा विसर्जन हुई। मध्याह्नकाल दीन दरिद्रोंको यथा-साध्य दान किया गयाथा।

अपरान्ह वेला २-बजेसे।

पहले सभाके अन्यतर पण्डित मान्यवर श्रीयुक्त छट्टुलाल पाण्डे महाशय सरल भाषा में श्रीमद्भागवत को व्याख्या किये। इसके अनन्तर सभाके प्रथम पण्डित मान्यवर श्रीयुक्त अम्विकादत्त मिश्र महाशय विशेषरूप निपुणताके साथ मनुसंहिता की व्याख्या किये। तदनन्तर सभाके कार्य्य-नम्बादक परम धर्मोत्साहि उद्यमशील मान्यवर श्रीयुक्त पण्डित भाईराम अग्निहोत्री महाशय ने सभाका वार्षिक कार्य्यविवरण पाठ किये। उसके स्थूल मर्म्म नीचे प्रगट किया गया।

१। बङ्गवामी बालकोंको नोति मिखानेके लिये जैसी एक “सुनीति सज्जारणी सभा” प्रगत दो वर्ष से प्रतिष्ठित है, वसा ही बिहारो बालक-दुन्दके निमित्त गत वर्षसे और भी एक सभा की

हईयाछे । ताहाते बालकगण विशेषरूप उ९कर्थ लाभ करिषा उन्नतिमार्गे आरोहण करितेछे ।

२ । आमादेर सनातनधर्मप्रचारो९साही सहयोगी सम्पादक महाशय गत वर्षे देश देशान्तरे यथासाध्य धर्म प्रचार करियछेन, बहुदिन हईते तिनि भगलपुरे धर्मालोचनार कोन साधारण स्थान ना थाकाय दुःखित छिलेन । एज्जन्तिनि कयैक वर्ष हईते निज व्याये मध्ये मध्ये तथाय गमन करिषा कथन वक्त्रभाषाय ओ कथन हिन्दीभाषाय धर्मार्थयुक्त वक्तृता करिषा आसितेन । कत लोक ताँहाके निरु९साहसूचक वाक्ये बलितेन, भगलपुरे आपनार उद्देश्य सिद्ध हईवे ना ; किन्तु ताँहार धर्मो९साह एताव९ निरुद्धमकर वाक्येके तुच्छ करिषा, द्विगुण प्रेमे कार्य करिते लागिल, अवशेये भगवानेर रूपाय गत वर्षे ताँहार मनस्कामना पूर्ण हईयाछे । ताँहार वक्तृतामाला तथाकार सज्जनगणेर हृदयके उद्बुजित करिषा दियाछे । तज्जस साधु हृदय मान्यवर पण्डित श्रीयुक्त नित्यानन्द मिश्र महाशयेर यथोचित यत्ने ओ परिश्रमे तथाकार छटफटी नामक स्थाने अत्र सभार नामानुसारे “भगलपुर आर्याधर्म-प्रचारिणी सभा” स्थापित हईयाछे । उक्त सभार चेफाय नया बाजार आदि स्थाने आरओ छई एकटी सभा प्रतिष्ठित हईयाछे । रामपुरहाट, जामालपुर, भगलपुर, मतिहारी प्रभृति स्थाने तिनि गत वर्षे उ९साह पूर्वक वक्तृता ओ सद्दालोचनादि द्वारा धर्मोद्भेजना करिषाछेन । बेतियार महाराजभवने समदर पूर्वक गृहीत हईया वक्तृतादि द्वारा सभार विशेषरूप सम्पर्कना करिषाछेन । सनातन आर्याधर्मेर पुनरुद्दीपनार्थ तिनि गत वर्षे कलिकता नगरातेओ गमन करिषा, छई दिन वक्तृता करिषा छिलेन । तथाकार योड़ामाको हरिभक्तिप्रदायिनी सभा, ताँहार यथोचित समदर ओ स९कार करिषा-छिलेन । कलिकता, रामपुरहाट, भगलपुर, जामालपुर, मतिहारी, सैयदपुर, लाहोर, दानापुर, मे९राय रामपुर बोरालिया, बेगुसराई आदि ये ये स्थानेर सनातन धर्मेर पुनरुद्भेजनार्थ चेफा ओ तज्जन्त, आमादिगेर कार्येर सहायता करिषाछेन, सभा तन्निबन्धन कृतज्ञतापूर्वक ताँहादिगेके धन्यवाद प्रदान करिलेन । परमेश्वर भारतवर्षीय समस्त

प्रतिष्ठा ऊइ है । उससे बालकगण विशेषरूप उत्कर्ष लाभ कर उन्नति मार्गपर आरोहण कर रहे हैं ।

२ । हमारे सनातन धर्म प्रचारोत्साही सहयोगी सम्पादक महाशय ने गत वर्ष में देश देशान्तर यथागीति धर्म प्रचार करते आये । वहुत दिन से उन का यह दुःख बना रहा था कि हमारे भागलपुर में धर्मचर्चा करने केलिये, कोई साधारण स्थान नहीं ; एतदर्थ कैक वर्षसे उन्होंने बीच बीच में निज व्यय करके भागलपुर जाया करते थे औ कभी वंगभाषा में कभी हिन्दी भाषा में धर्मार्थयुक्त वक्तृता करते आये । कितने लोगों ने उनको यह निरुत्साह देखाते आये कि भागलपुर में कुछ नहीं हो सकेगा, किन्तु उनके धर्मोत्साह उतने निरुद्धम सूचक वचनोंको तुच्छ मान कर, दूना प्रेम से काम करने लगा, अन्त में ईश्वर की कृपासे उन की कामना पूरी ऊइ । उन की वक्तृता वहाँके सज्जनोंके हृदय में असर करी । पण्डित श्री नित्यानन्द मिश्र महाशयके यथोचित यत्न, परिश्रम औ चेष्टा करके छटफटी तलाव में इस सभाके नामानुसार भागलपुर आर्यधर्मप्रचारिणी नाम सभा बनी । नया बाजार आदि में भी उस सभा की चेष्टासे और दो एक सभा भी स्थापित हो चुकी हैं । रामपुरहाट, जामालपुर, मतिहारी आदि स्थान में ये गत वर्ष में उत्साह पूर्वक वक्तृता औ सद्दालोचनादि करके धर्म की उद्भेजना किये । महाराज बेतियाके भवन में समदर पूर्वक सत्कार लाभ करके सभा की विशेषरूप प्रतिष्ठा बढ़ाये । सनातन आर्यधर्म की प्रतिभा उत्खानेके लिये कलकत्ते में भी गये थे । वहाँ दो दिन उत्साह से वक्तृता कियेथे । वहाँ की जोड़ा मांकी हरिभक्तिप्रदायिनी सभाने उनका यथोचित समदर वो सत्कार कियाथा । कलकत्ता, रामपुरहाट, भागलपुर, जामालपुर, मतिहारी, सैदपुर, लाहोर, दानापुर, श्रीमाधद्वारा मेवार, रामपुर, बोखालिया, बेगुसराइ, आदि स्थान की जितनी सभाने हमारे धर्मको बढ़ानेके अर्थ चेष्टा औ हमारे कार्य की सहायता करी है, वह सभा प्रेमपूर्ण अन्तःकरणसे उन्हींको तन्निमित्त धन्यवाद दे रही हैं । परमेश्वर ने भारतवर्षीय समस्त

धर्मसभा ओ हिंदैविनी सभार सहित आगादिगेर प्रेम बर्द्धन करन ।

अतःपर सभार उपस्थित सभा ओ महायुग-
गणेर नाम पठित ओ वे सकल महात्मा गत वर्ष
सभार वस्त्र ओ द्रव्यादि द्वारा साहाय्य करियाछेन,
ताहादेर नामोल्लेख करिया धन्यवाद देओया
हईल । ईहाओ प्रकाशित हईल वे, गत वर्ष
सभार ५१८०/० धनागम ओ ४४९॥७/० व्यय हईयाछे ।
अवशेषे सभा अतीव दुःख ओ शोकैर सहित
प्रकाश करिलेन वे, गत वर्षे आमादेर सहयोग्य
सभाध्यक्ष परम धर्मात्मा दानशील राय अन्नदाप्रसाद
रायबाहादुर महाशयेर अकालमृत्यु आमादेर
नितास्त दुर्घटना बलिया गणनीय । ताहार गाय
विनयी, भगवद्भक्त, दानशील सच्चरित्र, धर्मात्माही,
गृहयोगी पुरुष अन्नई दुर्लभ हय । जेदूश महात्मा-
गणेर तिरोभाव भारतेर भावी दुर्दशाेर मूल
बलिते हईवे । भगवान् सेई महात्माके पर-
लोक परमानन्दधामे स्थान दान करेन, ईहाई
सभार एकान्त प्रार्थना ।

अतःपर एकटी समधुर धर्मसंगीत हईल ;
तदवसाने सभार सहयोगी सम्पादक प्रो०साहित
रुद्रदेव हिन्दीभाषाय एकटी वक्तृता करिलेन ।
धर्मात्मागी पाठकगणेर गोचरार्थे ताहार सारांश
मात्र निम्ने प्रकाश करिलाम ।

“धर्मा विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा, धर्मेण पाप-
मपनुदन्ति, धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति, धर्मेण सर्वं
प्रतिष्ठं तन्नाम धर्मं परमं वदन्तीति श्रुतिः ।”

धर्मई जगतेर एकमात्र आश्रय । धर्म द्वाराई
अधर्म ओ पापेर विनाश हईया থাকे, प्रजापुञ्ज
धर्मात्मा व्यक्तिवर्गेरई शरणागत हय । धर्मई समस्त
पदार्थे सभार गाय प्रतिष्ठित, अतएव धर्मई परम
सुखद, ईहाई श्रुतिते उक्त हईयाछे ।

मनुष्यमात्रेई अश्वरके जानिते चाहै, अश्व-
रके दर्शन करिते चाहै एवं एही जगहई जगते
कोन ना कोन साम्प्रदायिक रीतिर अनुसारे
मनुष्यगण धर्मानुष्ठान करिया থাকे । यद्यपि कोन
थूँठे उपामकके जिज्ञासा कर ये, किरूपे अश्वर
दर्शन हईवे, तनि आपनार साम्प्रदायिक भावे
उपदेश दिवेन ये, थूँठेके विश्वास कर, ताहार
दर्शन पाईवे । यदि कोन मूलमानके जिज्ञासा

धर्मसभा औ देशहितैविनी सभाओसे इस सभाका
प्रेम बढ़ावे ।

अनन्तर सभाके वर्तमान सभ्य वो सहायकोंके
नाम पढ़े गये, ओ जिन सब महात्माने गत वर्ष में
वस्त्र वो द्रव्य आदिसे सभाको साहाय्य किये थे,
उन्हींके नाम उल्लेख कर धन्यवाद दी गयी ।
यह भी साधारणको मालुम पड़ा कि, गत वर्ष में
सभाके ५१८०॥ धनागम वो ४४९॥७॥ व्यय हुआ ।
अन्तमें सभा अत्यन्त दुःख वो शोकसे प्रकाश करी
कि गत वर्ष में हमारे सुयोग्य सभाध्यक्ष परम
धर्मात्मा दानशील राय अन्नदाप्रसाद राय बाहा-
दुर महाययके अकाल मरण हमारे लिये अत्यन्त
लेश वो शोकावह वृत्त पड़ा । उनके समान
विनयी, भगवद्भक्त, दानशील, सच्चरित्र, धर्मात्माहि
गृहयोगी पुरुष अल्प ही देखे जाते हैं । ऐसे
ऐसे महात्माका तिरोभाव होना भारतवर्ष की
भावि दुर्दशा की सूचना कर रही है । भगवान्
उन् महात्मा को परलोक में परमानन्द धाम पर
वसावे, यही सभा की एकान्त प्रार्थना है ।

तदनन्तर एक सुमधुर धर्मसंगीत हुआ ; इसके
अनन्तर सभाके सहयोगी सम्पादक प्रो०साहित
हृदयसे हिन्दी भाषा में एक वक्तृता किये । धर्मा
सुरागी पाठकोंके गोचरार्थ उसके सारांश मात्र
नीचे प्रकाश किया जाता है ।

“धर्मा विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा धर्मेण पापमप-
नुदन्ति धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति धर्मेण सर्वं प्रतिष्ठं
तस्मात् धर्मं परम्वदन्ति, इति श्रुतिः ।”

धर्म ही जगतका एकमात्र आश्रय है ।
धर्महीके द्वारा अधर्म वा पापका विनाश होता
है, प्रजापुञ्ज धर्मात्मागणहीके शरणागत होते
हैं । धर्म ही समस्त पदार्थ में सत्ताके न्याई प्रति-
ष्ठित हैं, अतएव धर्म ही परम सुखद करके
जानाना, यही श्रुति में प्रगट हैं ।

हर एक मनुष्य ईश्वरको जानने चाहता, ईश्वर
को दर्शन करने चाहता है औ इसही लिये मनुष्य-
गण किसी न किसी सम्प्रदाय की रीति अनुसार
धर्मानुष्ठान किये करते हैं । यद्यपि किसी ईसा-
ईको जिज्ञासा करी जो किस रीतिमें ईश्वरका
दर्शन मिलता है, वे अपने साम्प्रदायिक भावसे
यह उपदेश देंगे, जो इसा मसीको विश्वास करो,

कर, जिनि उन्नत दिवेन वे महान्नादोक्त उपामना-
पद्धति अवलम्बन करिले, तौहार साक्षात् इहैवे ।
नदि कौन वीरुके जिज्ञासा कर, हिनि केवल
बुद्ध देवेर उपामनाय तौहार साक्षात्कार, उप-
देश प्रदान करेन । एहि रूपे सकनेई निज
निज सांप्रदायिक भावे उपदेश प्रदान करेन ।
आमि मानव, सम्प्रदाय लईया कि करिव,
भगवददर्शन करिया मुक्तिलाभ करिव, इहाई
आमार सत्कर्म । आमार काशरओ सहित
निराश वा काशरओ प्रति विद्वेष वा पक्षपात
प्रायोजन नाई । कि उपाय अवलम्बन करिले,
तौहारके जानिते पात्रा राय, इहाई आमार अग्रमन
करा उद्देश्य । इदानीन्तन अनेकेई आपनापन
युक्ति अनुसारे माहा रुचिकर बोध करेन,
तदनुसारे कार्य करिया থাকेन, एहि जगहै वर्त-
मान समये एत धर्मविप्लव उपस्थित इहैराछे ।
मानव ! यदि तौहार तद्ध अवगत इओया तौमार
जीवनेर मुख्य उद्देश्य विवेचना कर, तवे आपनार
असमीचीन युक्ति ओ रुचि परित्याग कर, केनना
तौमार युक्तिते जम थाकिते পারে । अनुसारे
जमसंकुल चिन्त कथन सत्य सिद्धांत उपस्थित
इहैते পারে ना ; एहि जगह आपु वाक्य वेदोक्ति
केई पूर्ण प्रत्यय करिया धर्मपथे अग्रसर इहैते
इहैवे । एकवार आर्या ऋषि गौरीदिगेर धर्मानु-
ष्ठान गृह्यरूपे अनुसन्धान कर । तौहार एकमात्र
वेद अथवा त्रैधरवाणी अवलम्बन करिया तौहातेई
आपनार देह मन प्राण अर्पण करियाछिलेन एवं
ये सत्यवाणीते ए पर्याप्त केहई सन्देह करिते
समर्थ नहेन ; अर्थात् तिनि सर्ववाणी, सर्वदर्शी,
सर्वानुबर्ही, “पूर्ण”, चैतन्यस्वरूप, सत्यस्वरूप,
तौहार सद्भातेई जगतेर अस्तित्व प्रवृत्ति ये सकल
अज्ञात सिद्धांत तौहार स्वीकार करियाछेन, एवं
सकलेई मुक्तकर्णे स्वीकार करिया थाकेन, तौहा-
दिगेर उपदेश ग्रहण कर । तौहादिगेर युक्ति
वा उपदेश तौमार युक्तिर सहित मिलिल ना बलिया
तुमि मुक्त इहैओ ना, कारण तौमार विषययुक्ति
समये समये अज्ञवाणीर प्रकृत मर्म वृत्तिते समर्थ

उनको दर्शन मिलेगा । यदि किसी मुसल-
मानको पुछोगे तो वे यह उत्तर देंगे कि, महम्मद
की कहीऊई उपामना की रीति अवलम्बन
करने पर, उनसे साक्षात् होगा । यदि किसी
बौद्धको जिज्ञासा करो, तो वे केवल बुद्ध देवकी
उपामना करके उनका साक्षात् मिलता है, यही
उपदेश देंगे । इस भांति सबकोई निज निज
सम्प्रदायके अनुसार उपदेश दिये करते हैं । मैं
मानव हूँ, सम्प्रदायसे मेरा कौन काम ! भगव-
दर्शन करके मुक्तिलाभ करूँगा, इतना ही मेरा
सङ्कल्प है । मैं न किसीसे विरोध करना, न किसी-
पर द्वेष करना, न किसीका पक्षपात करना चाहता,
केवल इतना ही अन्वेषण करना मेरा प्रयोजन है,
कि किस उपाय करके उनका जानाजा सक्ता । आज
कल बड़तेरे लोग निज निज युक्ति अनुसार जिस
किसी रीतिको रोचक समझे, तदनुसार कार्य
किया करते हैं । इस ही लिये वर्त्तमान दगा में
इतना धर्मका विप्लव आपड़ा । मानव ! यदि
तुम यह समझे रहो कि उनके तत्त्व विदित होना
तुम्हारे जीवनका मुख्य उद्देश्य है, तो अपनी अस-
मीचीन युक्ति वो रुचि परित्याग करो, क्योंकि
तुम्हारी युक्ति अमसे भरी ऊँड़ हो सक्ति है ।
मनुष्यके अमसङ्कुल चित्त कभी सत्य सिद्धान्त में
नहीं पड़स सक्ता है, इस लिये आप्तवाक्य वेदोक्ति
ही को पूरा विश्वास कर धर्मपथ में अग्रया होना
चाहिये । एकवार आर्य ऋषि योगीयोंके
धर्मानुष्ठानके विषय गूढतर रीतिसे अनुसन्धान
करो । जिन्होंने एकमात्र वेद अथवा भगवद्वाणी
को अवलम्बन कर उन्हींके अर्थ अपने देह, मन,
प्राणको समर्पण कियेथे औ जिन् सत्यवाणी पर
सन्देह लगाने में अबतक कोई समर्थ न ऊँए अर्थात्
“वे सर्वव्यापी” सर्वदर्शी, “सर्वान्तर्यामि,” पूर्ण
“चैतन्यस्वरूप,” सत्यस्वरूप हैं, उन्हींकी सत्ता करके
जगत्की वर्त्तमानता है, आदि उन्हींने जितनी
आन्ति रहित सिद्धान्त माने गये औ सब कोई
मुक्तकण्ठसे मान रहे हैं, उन्हींके उपदेश ग्रहण
करो ! उन्हींकी युक्ति वा उपदेश तुम्हारी युक्ति
के साथ न मिलनेके अर्थ तुम क्षुब्ध न हो, क्योंकि
तुम्हारी बुद्धि, जो विषय भोगसे विकार प्राप्त-
ऊँड़ है, समय-समय ब्रह्मवाणीके प्रकृत मर्म

नहै। तौहादिगेर जीवन एकमात्र धर्मानुष्ठाने अतिरहित हईयाछे। तौहादिगेर चित्त परिशुद्ध, मालिग्यशून्य एवं तौहादिगेर तूलनाय तौमादिगेर चित्तविकारयुक्त, नायानोहे जड़ित, ताहार कोन सन्देह नाई। अतएव निज युक्ति परित्याग कर; सेई आर्य धर्मिदिगेर उपदेश ग्रहण कर; तदनु आत्ममन्त्रे दीक्षित हउ। आर निज निज युक्ति अवलम्बन करिया रथा कालक्षेप करिउना। ये देशे ये समये ये परिमाणे स्वाभाविक ओ आपाजिक आश्चर्य आश्चर्य शक्तिसमूहेर आविष्कार हईते थाकिवे, सेई देश सेई समये सेई परिमाणे आर्य धर्मिदिगेर अलौकिकी प्रतिभाय विमोहित हईया, तौहादिगेर पथानुसरण करिवे। आमेरिका ओ जर्मनी आदि ताहार दृष्टान्त स्वरूप। आर अज्ञानता ओ प्राकृतिक तत्त्वेर अनभिज्ञता नेथाने नत बहल रुक्ति हईवे, सेथाने ततई आर्य धर्मेर अनंदादर हईते थाकिवे। वर्तमान भारतवर्ष ताहार प्रकृत आदर्शभूमि।

“आर्य” एई शब्दटी “आ” धातु हईते उत्पन्न। आ अर्थ गति। ये धर्मबले मानव तनः हईते ज्योतिते, मृत्यु हईते अमृतहै, जड़भाव हईते चैतन्ये गमन करे, ताहाकेई “आर्य धर्म” कहै। धर्म एक, धर्म छई प्रकार हईते पारे ना। पूर्वकाल हईते ऋति, श्रुति, पूराणादि कोन एहेई “धर्म” तिन “आर्यधर्म” वा “हिन्दूधर्म” आदि कोन प्रकार विशेष नाम छिल ना, एकमात्र “धर्मरत्न” एई कथाईदृष्ट हईया थाकिवे। एक्कणे खृष्टीय, बौद्ध, महम्मदीय आदि विविध धर्म हईते विशेष करिबार जग “आर्य धर्म” इत्याकार नाम दिते बाध्य हईतेछि। येमन कोन कार्यालये एकटी मात्र कर्मचारी थाकिले, ताहाके लोके “बाबू” मात्र सम्बोधन करिया थाके, आर अनेक प्रकार कर्मचारी थाकिले, बड़ बाबू, छोट बाबू, खाजाजि बाबू, केराणी बाबू प्रभृति बलिया डाके; सेईरूप बह उपधर्मेर मध्य हईते विशेष राखिबार जग “आर्य धर्म” अर्थात् श्रेष्ठधर्म वा “आर्यदिगेर आचरित

नही समझ सकी। एकमात्र धर्मके अनुष्ठान हीसे उन्होंका जीवन व्यतीत हुआ करता था। उन्होंके चित्तपरिशुद्ध, मालिग्यशून्य और उन्होंकी वरावरीसे तुम्हारे चित्त जो विकारयुक्त वो माया मोह करके जड़ित हैं, इसमें सन्देह नहीं। अतएव निज युक्तियोंको त्याग करो; वही आर्यधर्मियोंके उपदेश मानो; उन्होंके दिखे हुए आत्ममन्त्र करके दीक्षित हो। फिर निज निज युक्ति अवलम्बन किये रथा कालक्षेप न करो। जिस देश में जिस समय जिस परिमाणे स्वाभाविक वो आध्यात्मिक आश्चर्य आश्चर्य शक्ति समूहका आविष्कार होता रहेगा, वही देश उस ही समय उस ही परिमाणे आर्य धर्मियोंकी अलौकिकी प्रतिभा करके विमोहित होते हुए उन्होंकी पथकी अनुसरण करेङ्गे। अमेरिका वो जारमन्यादि देश इसका दृष्टान्त हैं। और जहां जितना अधिक परिमाणे अज्ञानता वो प्राकृतिक तत्त्वकी अनभिज्ञता रहि होती रहेगी वहां उतना ही आर्यधर्मका अनादर होता रहेगा। वर्तमान भारतवर्ष उसकी प्रकृत आदर्शभूमि हैं।

“आर्य” यह जो शब्द है, सो “ऋ” धातुसे उत्पन्न हुआ। “ऋ” धातु का अर्थ “गति”। जिस धर्मके बलसे मनुष्य तमःसे ज्योतिःके मध्य में, “मृत्यु”से अमृतत्व में, जड़भावसे चैतन्य में गमन करता, उस ही को आर्य धर्म कहा जाता है। धर्म एक है, धर्म दो प्रकारके नहीं बन सका। पूर्वकालसे श्रुति, स्मृति वो पूराणादि किसी ग्रन्थही में “धर्म” छोड़के “आर्य धर्म” वा “हिन्दू धर्म” आदि कोई विशेष नाम नहीं है, एकमात्र “धर्म” भर इतना ही देख पड़ेगा। अब इसाई, बौद्ध वो महम्मदी आदि नाना भान्तिके धर्मसे विशेष करनेके अर्थ हम “आर्य धर्म” इत्याकार नाम देने बाध्य होते हैं। जैसा किसही कार्यालयमें कोई एकमात्र कर्मचारी रहने पर, उनको लोगोंने केवल “बाबू” करके पुकारते रहते हैं, और जहां अनेक प्रकारके कर्मचारी रहें, वहां बड़े बाबू, छोटेबाबू, खाजाज्जी बाबू, केराणी बाबू आदि करके पुकारे जाते हैं; तद्वत् वर्तत उपधर्मके मध्य में से विशेष रखनेके लिये “आर्य धर्म” अर्थात् “श्रेष्ठ धर्म” वा “आर्य” लोगोंके अनुष्ठान किये हुए धर्म”

धर्म" बलिगा अभिहित होइतेछे । अति प्रति-
पाद्य धर्मइ जगतैर आदिम धर्म । अन्यान् सकल
धर्मइ ईह! होइते उपम होइयाछे । येमन एकटी
दापशिखा होइते एक थानि टीका धराइया लओ,
किंवा ऐ शिखा तृणनिर्मित गृहाच्छादने स्पर्श कराओ.
तबे टीका मंगल अग्नि ओ गृहदाहाग्नि येन दीप-
शिखा होइते पृथक विध बलिगा बोध होइवे । दीप-
वर्तिका होइते टीका ओ गृहाच्छादनेर आकृति प्रकृ-
तिर विभिन्नताइ ऐह तारतम्येय मूल हेतु ।
एतद्रूप भिन्न भिन्न देशेय ओ लोकैर भिन्न भिन्न जन
बायु ओ भूम्यादिगत अवस्था ओ प्रकृति अनुसारे मनुष्यगण
एक धर्मावलम्बी होइया ओ आचार व्यवहारे सतत होइया
पड़ियाछे । जगते ये कोन धर्मइ प्रचारित होइक
न केन, होइते आर्य धर्मइ महिमा प्रचार
होइतेछे, बलिहोइ होइवे । आर्यधर्मावलम्बिगण ! आज
तोमादेरइ ऐश्वर्येय किञ्चित् कलतागी होइया जग-
तेर चतुर्दिक्के धर्मैर घोर आन्दोलन होइतेछे ।

“आर्यधर्म” आयुर्वेद, ज्योतिषशास्त्र ओ अति
एतर्ज्येय समस्तः सम्प्रतिक्रमे संस्थापित ;
होइते शरीरतत्त्व, मनस्तत्त्व ओ अध्यात्मतत्त्व विज्ञा-
नेर एकत्र समावेश ; होइते स्थूल, सूक्ष्म ओ कारण
ऐह तिनैर सम्मिलन ; होइते भौतिक, दैव ओ ऐश्व-
र्य ऐह तिनैर ऐक्यविधान । अतएव यदि प्रकृत
धर्माचरण करिते चाओ, ऐह धर्मप्रकृति अवलम्बन
कर” । अत्रे शरीरशुद्धि, परे चित्तशुद्धि, पश्चात्
आत्माशुद्धि करिते होइवे ; तबे आत्मा आत्मा
दर्शन पाइवे, जीवन सार्थक होइवे । शास्त्रविहित
व्रत, उपवास, आहार, विहारादि द्वारा शरीर शुद्ध
हय । जप, याग, व्रत एवं पित्रकार्यादि द्वारा चित्त
शुद्धि ज्ये, आर उपासना ओ ध्यान धारणादि द्वारा
आत्माके परब्रह्मे समाधान करिते पाइवे,
आत्मा शुद्धि होय । नतुवा बायु पित्र, कफादिर विकार
प्राप्त पाड़ित शरीरे हत मिष्टानादि सेवन करिते
गेले, प्राहा यकृतादि रोगे आक्रान्त होइया,
अकाले कालकबले पतित होइवे । जानि मृत्यु

करके कहा जाता है । श्रुति प्रतिपाद्य धर्म हीको
जगतका आदिम धर्म करके जानना । अन्यान्य
समस्त धर्म ही उसो उत्पन्न हुए हैं । जैसा कि
एक दीपशिखासे एक टोकिया बार लो, किंवा
उम शिखाको लगभग वनायो ऊँधरके छप्पर पर
कुवायो तो मालूम पड़ेगा कि टिकियाके आग वो
जरती ऊँधर परके आग, दीप शिखासे कोइ
पृथक वस्तु है । दीपवर्तिकासे टिकिया वा छप्पर
की आकृति प्रकृति की जो तारतम्यता है, सो ही
इस भिन्न दृष्टिका कारण है । एतद्रूप समस्त
मनुष्य एक धर्मावलम्बी हुए भी भिन्न भिन्न देश
के जल, वायु वो भूमि की अवस्था वो निज
निज प्रकृतिके अनुसार आचार, व्यवहार करके
स्वतन्त्र हो पड़े है । जगतके जिस किसी देश में
जिस किस ही भान्ति धर्म न प्रचार होता हो,
इसो इतना ही कहने होगा कि सर्वत्र आर्य धर्म
की महिमा प्रचार हो रही है । हे आर्य
धर्मावलम्बीयो ! आज तुम्हारे ही ऐश्वर्यके
किञ्चित् फलभागी हुए जगतके चारो ओर धर्म
का घोर आन्दोलन हो रहा है ।

आयुर्वेद, ज्योतिषशास्त्र वो श्रुति इन तीनोंके
समन्तात् सम्प्रतिसे आर्य धर्म संस्थापित हुआ है ।
इस धर्म में शरीरतत्त्व, मनस्तत्त्व वो अध्यात्मतत्त्व-
विज्ञानका एकत्र समावेश है ; इस में स्थूल, सूक्ष्म
ओ कारण इन तीनोंका सम्मिलन है ; इस में
भौतिक, दैव वो ईश्वरीय इन तिनोका ऐक्यविधान
है । अतएव यदि प्रकृतरूप धर्मका आचरण करने
चाहो, तो इस धर्मप्रकृतिको अवलम्बन करो ।
पहले शरीर शुद्धि, तदनन्तर चित्तशुद्धि, तत्पश्चात्
आत्मशुद्धि करनी होगी, तब आत्माके आत्माका
दर्शन मिलेगा, जीवन सार्थक होगा । शास्त्र की
विधि अनुसार व्रत, उपवास, आहार, विहारादि
करके शरीर शुद्ध होती हैं ; तप, याग, यज्ञ वो
पितृकार्यादि करके चित्तशुद्धि होती है ; और
उपासना, वो ध्यान धारणादि करके यदि आत्माको
परब्रह्म में समाधान कर सके तो आत्मशुद्धि होती
है । नहीं तो यदि वात, पित्त, कफ आदिके विकार
प्राप्त हुआ विमार शरीर में हत मिष्टान्न आदि
भोजन किया जाय तो तापतिल्ली आदि रोगसे आ-
क्रान्त ऊँधे अकाल कालकबल में गिरेगा । इस

ये स्रतानि वास्तुनिचय शरीरैरपके अतिशय प्रष्टि
 ओ वलकारक वटे, किन्तु विकारयुक्त शरीरैर
 नहै, उहो उहो शरीरैर पत्रय सगकर । यदि
 केहै एरूप सन्देह करेन नै, ये धर्मैर मूलशास्त्र
 एकमात्र लक्ष्यैर उपासना उक्त हईयाछै, तबे
 प्रतिमादि गठन, पूजन आदि ए अतिनव पद्धति
 कोथा हईते आसिन ? प्रष्टके ये वर्ण ओ शब्द-
 गुलि थाके, ताहा मूल हईयाओ पाठकेर हृदये
 लेखकेर भावमात्र बहन करिया देय । शब्द नेमन
 मूल हईयाओ मूलैर वाहक, रूपओ उक्तरूप मूल
 हईया मूल तबेपर परिचारक । शास्त्र ओ गुरुपादेश
 नेमन शब्दावगुणेन साधकेर हृदये लक्ष्यभावेर
 उन्नय करिया देय, प्रतिमाओ उक्तरूप रूपभावगुणेन
 लक्ष्यभावेर पूर्ण विकास करिया देय । कवि शब्द द्वारा,
 शिल्पी चित्र ओ मूर्ति गठन द्वारा, तुल्य रूप भावेर
 प्रकाश करिते पावैर । मूल उपासनादि द्वारा
 मूलैर परिचय पावैर । याय, एहै जगत् लक्षण
 प्रकृतिर प्रतिबिम्ब रूप प्रतिमादि प्रकृतिवि
 प्रतिमादि प्रचारित हईयाछै; उहो मन्त्र वेद
 प्रतिपाद्य विषय भिन्न आर किछुई नाई, मूल रूप
 ब्रह्मा हईते हईवे । आर ओ देव, प्रतिमादि
 पूजन काले, ध्यान करिवाँर विधि आछै । उक्त
 समय चक्षु मूर्ति करिया ध्यानमन्त्रैर अभिप्राय
 मात्र केहाके धारणा करिते हर । यदि केवल
 मूर्तिमात्र पूजन करिले अभिप्राय सिद्ध हईत,
 तबे कथनई सम्मुखित मूलरूप परित्याग करिया
 चक्षु मूर्ति करिवाँर पद्धति उल्लेखओ करितेन ना ।
 मूल मूर्ति पूजन काले ताहाते ईश्वरैर आविर्भाव
 प्राप्त प्रतिष्ठादि एव ध्यान काले चक्षु मूर्ति
 करिवाँर अभिप्राय कि केहै विदित नहै ? आमा-
 दिगैर भारतवर्षे यत दिन ना मेहै प्राचीन आर्या-
 धर्म अनुमोदित याग, यज्ञ, पित्रकार्य, ज्ञत ओ
 प्रतिमा पूजनादि मन्त्रार्थ बोध ना हईवे, तत दिन
 यथार्थ धर्म वा प्रकृत धर्म लक्षण केहई बुझिते
 पारिवेन ना । अरु चेष्टा करिया, यतई केन
 अस्त्रादि पाठ वा धर्म आलोचना कर ना, धार्मिक
 हईते वा ईश्वरैर यथार्थ तत्त्व अवगत हईते हईले
 आकाशान अभ्यास करिते हईवे । वेदप्रतिपाद्य
 मूर्ति पुराणादि गुरु मन्त्रार्थ अनुमोदन करिया
 मनुष्य निकट दीक्षित हईते हईवे । ताहादि-

सत्य जानते हैं, जो हत आदि वस्तु शरीरकी पृष्टि,
 श्री वलकारक मन्त्री, किन्तु विमल शरीरके अर्थ
 नहीं, वह मुख्य शरीरका परम सुखदायी है ।
 यदि कोई इस भाँति सन्देह करे, जो जिस धर्मके
 मूलशास्त्र में एकमात्र ब्रह्म ही की उपासनाका
 विषय उक्त है, तो प्रतिमादि बनाना, पूजना आदि
 यह नवीन पद्धति कहाँसे आई । मुक्तवाके मध्य में
 जितने वर्ण श्री शब्द रहते हैं, वह सब स्थल वने भी
 पाठके हृदय में लेखके भाव मात्र की पड़वा
 देते हैं । शब्द जैसा स्थल वने भी सूक्ष्मका
 वाहक है, रूप भी तद्रूप स्थल वने सूक्ष्म तत्त्वका
 परिचायक है । शास्त्र श्री गुरुपादेश जैसा शब्द
 के परदा में से साधके हृदय में ब्रह्म भावका
 उदय कर देता है, प्रतिमा भी उस भाँति रूप
 की परदाके आडसे उस भावका पूर्ण विकास कर
 देती हैं । कवीश्वरगण शब्दोंके द्वारा, शिल्पी
 वा कारीगर लोग चित्र श्री मूर्ति बनाकर मुस-
 ह्य भावका प्रकाश कर सकते हैं । स्थूल उपा-
 सना करके सूक्ष्मका परिचय मिलता है, इस लिये
 प्रतिमादिके, जो की भगवत्प्रकृति का प्रतिबिम्ब
 रूप हैं, पूजन विधि पुराणादि में प्रचारित है;
 इन में वेदप्रतिपाद्य विषय उक्तके और कुछ ज्ञा
 नहीं, सूक्ष्म भावसे समझ लेने होगा । और
 भी देखो, प्रतिमादि पूजनके समय ध्यान करने
 की विधि है । उक्त समय आँखें मूँद कर ध्यान
 मन्त्रके अभिप्राय अनुसार उनको धारण करनी
 पड़ती है । यदि केवल स्थूलरूप मात्रके पूजनसे
 अभिप्राय सिद्ध होता तो साहजिक की प्रतिमा की
 परित्याग करने की रीति कभी न लिखते । स्थूल
 मूर्ति की पूजाके समय उस में ईश्वरके आविर्भाव,
 प्राणप्रतिष्ठा और ध्यानके समय आँखें मूँदने की
 अभिप्राय क्या, कोई विदित नहीं । हमारे भारत
 वर्ष में यावत् काल उस प्राचीन आर्य धर्मके
 अनुमोदित याग, यज्ञ, पित्रकार्य, ज्ञत श्री प्रतिमा
 पूजन आदिका मन्त्रार्थ बोध न होगा, तावत्काल
 यथार्थ धर्म वा प्रकृत धर्मलक्षण कोई न समझ
 सकेंगे । स्वयं चेष्टा करके जितना क्यों न मूल
 पाठ वा धर्म की आलोचना करो, यदि धार्मिक
 होना वा ईश्वरके यथार्थ तत्त्व जानाना हीतो
 आत्मज्ञानका अभ्यास करने पड़ेगा । वेद प्रति-
 पाद्य मूर्ति पुराणादिके गुरु मन्त्रार्थ अनुमोदन
 कर मनुष्यके निकट दीक्षित होने पड़ेगा । उक्तके
 उपदेशानुसार कार्य करने होगा । वैदिक अनु-

गेर उपदेशानुसारे कार्य करिते हईवे । वैदिक अनुष्ठान ना करिले, वेदार्थ बुझिबार शक्ति जन्म ना । एऊन कर्म द्वारा ज्ञानलाभ करिते हईवे । निज बुद्धि वा बुद्धि मात्राके अवलम्बन करिया । सेई अमृत लाभ करी असम्भव, कारण प्राचीन अवस्था तूलनाय एऊनकार परमाय अति अल्प । अतएव सदगुरुन दीक्षाानुयायी कार्य करिते पारिले सह-जेई सेई अमृत लाभ हईवे । तथन निज जीवने सेई दुर्जेय वस्तुन अभाव थाकिवे ना । ताहा चक्रते दर्शन करिबार अयोग्य, बाको प्रकाश करिबार अयोग्य, मन धारणा करिबार नितांत अयोग्य । तनि इन्द्रियादिर अगोचर । इन्द्रियगण निगृहीत हईले, मन विनष्ट हईले, अग्रज्जु अग्रंई प्रकाश हईलेन । एऊन हे जीव ! यदि जीवन सफल करिते चाँ, साधकमण्डलीन सज्ज लाभ कर, ताहादिगेर उपदेश कार्य परितगत कर, जीवन सार्थक हईवे, तार वृथा समय नष्ट करिँ ना । धर्म साक्षात् जेधरेर स्वरूप, जेधर अनिर्वचनीय, छतरां धर्मेन प्रकृत तद्गुणभाव कथनई व्यापार हईते पारि ना । धर्मानुष्ठान करिते करिते धर्मके विदित हईते हर । आर्यधर्म बाहिरन अनुष्ठानई पर्याप्त नहे, आर्यधर्मेन तार प्रकृति लाभ करिते हईवे । प्रकृतितेई धर्मेन परिचय, एवं कार्य प्रकृतिर परिचारक मात्र । ये प्रकृति परम पवित्र, ताहाई आर्य धर्मेन आधार ; ये प्रकृतिते विकार कर ना, ताहाई आर्यधर्मेन क्रीडाभूमि ; ये प्रकृति प्रकृति योग समाधि अनुष्ठानिनी, ताहाई आर्यधर्मेन आश्रय स्थान ; ये धर्म साधन द्वारा खुला प्रकृति अनाद्या प्रकृतिते विनोद हईया सच्चिदानन्द सदाय पुरुषके आकृति ७ प्रतिष्ठा करे ताहाई आर्य धर्म, ताहाई मानव धर्म, ताहाई जेधरोक्त वैदिक धर्म, ताहाई अवश कर्तव्य परम धर्म । जगते सेई प्रकृत धर्मई पुनः प्रचारित हईक । धर्म, जगत्के आनन्द निकेतन करिना दिन ।

वक्तृत्तर शेष हईले, सभार कार्यसम्पादन महाशय एकटी अनति दीर्घ वक्तृता करिया भगवत् स्तोत्र पाठ करिलेन । धूप, धूना धूमे ७ अगस्त्य सभागृह आच्छन्न ७ आगोदित एवं आलोकनाला प्रखलित हईन । वाद्योद्यम ७ आनन्द सह त्रींशो त्रीमन्नारायणेर आरती ७ निवेदित प्रसाद सभा मण्डलीके वन्दन कर हईन । सर्वशेषे नृत्य कुन्दनादि भक्ति लक्षण सहयोगे सभागण कर्तक हरिनाम संकीर्तन हईया रात्रि ८टां समय सभा भङ्ग हईन ।

ज्ञान किये बिना वेदार्थ समझने की शक्ति नहीं उपजती है । एतदर्थ कर्म करके ज्ञानलाभ करने होगा । केवलमात्र निज बुद्धि वा बुद्धिको अवलम्बन करके वह अमृतलाभ करना सम्भव नहीं । क्योंकि प्राचीन काल की वरावरी में आजकलके आयुः अत्यन्त अल्प है । अतएव यदि सद्गुरुकी दीक्षानुरूप कार्य किया जाय तो सहज ही से अमृत लाभ होगा । उस समय निज जीवन में उस दुर्लभ वस्तुका अभाव नहीं रहेगा । वे अक्षुकी दृष्टिके अयोग्य हैं, वाक्य की वर्णनाके बाहर हैं, मनके धारणातीत हैं । वे इन्द्रियादिके अगोचर हैं । इन्द्रियगण निगृहीत होनेसे, मन विनष्ट हो जाने से स्वयम्बू स्वयमेव प्रगट होंगे । अब हे जीव ! यदि जीवन सफल करने चाही, तो साधकोंकी सज्ज करके रहो, उन्हींके उपदेश कार्य में परिणत करो, जीवन सार्थक होगा, फिर समय व्यर्थ व्यतीत न करो । धर्मको साक्षात् ईश्वर का स्वरूप करके जानना, ईश्वर अनिर्वचनीय हैं, सुतरां धर्मके प्रकृत तत्त्व पूर्णभावसे कभी नहीं व्याख्यान हो सकता है । धर्म का अनुष्ठान करते करते धर्मको विदित होना है । बाहरके अनुष्ठान ही से आर्य धर्मका पर्यवसान नहीं, आर्यलोकोंके सहज प्रकृति लाभ करने होगा । प्रकृति ही से धर्मका परिचय मिलता, श्री कार्य प्रकृतिका परिचायक मात्र है । जो प्रकृति परम पवित्र है, उस ही को आर्य धर्मका आधार करके जानना, जिस प्रकृति में विकारका दाग नहीं लगता, वही आर्य धर्म की क्रीडाभूमि है, जो प्रकृति ब्रह्मयोग समाधि की पञ्चाङ्गामिनी है वही आर्य धर्मका आश्रयस्थान है, जिस धर्म साधनसे खुला प्रकृति अनाद्या प्रकृति में विलीन होती ऊई सच्चिदानन्द सत्ता में पुरुषके आकृष्ट वो प्रविष्ट कर देता है वही आर्य धर्म, वही मानव धर्म वही ईश्वरोक्त वैदिक धर्म, वही अवश्यमेव करनेके योग्य परम धर्म है । संसार में वही प्रकृत धर्म ही पुनः प्रचारित हों । धर्म, जगत्को आनन्द निकेतन बनावे ।

वक्तृताके शेष होनेसे सभाके कार्यसम्पादन महाशय एक अनति दीर्घ व्याख्यानकर भगवत् स्तोत्र पाठ किये । धूप, धूनाके धूमे वो सुगन्धकरके सभागृह आच्छन्न वो प्रफुल्ल ऊई श्री रोशनी की शोभा करी गयी । वाद्योद्यम वो आनन्दके साथ श्री श्री श्रीमन्नारायणकी आरती ऊई श्री निवेदित प्रसाद सभ्य मण्डलीके मध्य में बाँटे गये । अन्त में नृत्य कुन्दनादि भक्तिलक्षणके सहित सभ्यगण हरिनाम सङ्कीर्तन किये । रात्रि ८ वजेके समय सभा विसर्जन ऊई ।

हे परमात्मन् ! तूम्हि दर्यामय, এই জন্ম যখনত মন্তকে প্রার্থনা করিতেছি যে আমাদিগের সভার সভাসদ, উৎসাহী সহায়ক, হিতসাধক, মহানুভাবক, ও যে মহাত্মাগণ যে কোন স্থানে যে কোন উপায়ে হটক না কেন, জগতের কল্যাণ বিধানার্থ চেষ্টা করিতেছেন, ও যাবৎ প্রাণী তোমার সহায় বিদ্যমান রহিয়াছে, সকলকেই তুমি তোমার মুনিমনোহর-সুচারু চরণাভিগৃহে আকর্ষণ কর, তোমার প্রতি ঐকান্তিকী ভক্তি সকলের হৃদয়ে বিস্তার করিয়া দেও। হে হরে ! তুমিই ধর্মরক্ষক, ধর্মকে রক্ষা কর। আমাদিগকে একরূপ সামর্থ দেও যেন আমরা তোমার প্রীতি ও প্রিয়কার্য সাধনপূর্বক নিজ নিজ জন্ম জীবন সফল করি। এই উৎসব বাহিরে পরিসমাপ্ত হইল বটে, কিন্তু যেন ইহার উজ্জ্বল উৎসাহাগ্নি ও নির্মল প্রেম শিখা নিরন্তর হৃদয়কে আলোকিত করিয়া রাখে। হে ভগবন্ ! তোমাকে বার বার নমস্কার করি।

ওঁ শান্তিঃ, শান্তিঃ, শান্তিঃ, হরি ওঁ।

আমরা আনন্দ ও কৃতজ্ঞতাপূর্বক মহাদয় মাত্র কেই জ্ঞাত করিতেছি যে এই বার্ষিকোৎসবকালে কলিকাতার মাণ্ডবর শ্রীযুক্ত বাবু তারকনাথ প্রামাণিক মহাশয় ২৫৮ টাকা ও বেণুসরস্বী ধর্মসভা ৫৮ টাকা ও পীত বস্ত্রাদি দ্বারা সভার প্রতি বথোচিত মহানুভাবকতা প্রকাশ করিয়াছেন। ভগবান ধর্ম কার্যের সহায়কগণের ইহ-পারলৌকিক মঙ্গল বিধান করুন।

৩য় বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত রাধা তারেশচন্দ্র পাণ্ডে	পারুড়	১০০/০
শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শুকদেব	এলাহাবাদ	৩৮/০
.. বাবু তারাপ্রসন্ন ঘোষ	ঐ	৩৮/০
.. .. তারকনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ	৩৮/০
.. .. উমাচরণদাস	মুন্সের	২/
.. .. যোগেন্দ্রনাথ মৈত্র	ঐ	২/
.. .. হরিহর বসু	জামালপুর	২/
.. .. গণেশচন্দ্র শূর	ঐ	২/
.. .. ভূমিধর গঙ্গোপাধ্যায়	ঐ	২/
.. .. মহেন্দ্রনাথ বোষ	মুন্সের	২/
.. .. যাদবলাল রায়	শিবগাতি	২/
.. .. গিরীশচন্দ্র ঘোষ	ভগনপুর	১৮/০
.. .. কালীকিশোর মুন্সী	শেখপুর	১৮/০
.. .. নীলমোহন মুখোপাধ্যায়	বাঁকা	১৮/০
.. .. রমণীমোহন দে	চজাগুধা	১৮/০

হে পরমাत्मन् ! आप दयालु हैं, इसलिये शिर झुकाये मैं इतनी प्रार्थना करता हूँ, कि हमारी सभाके सभासद उत्साही सहायक, हित साधक, सहायुभावक वो जहाँ तहाँ जितने महात्मा जिस किसी भाँति उपायसे नहो जगतके कल्याणार्थ चेष्टा किये करते हैं, श्री जितने जीव आप की सत्ता करके वर्त्तमान है, सबकि सहीकी आप अपने मुनिमनोहर सुचारु चरणके और आकर्षण की जिये, आप की ऐकान्तिकी भक्ति सबके हृदय में विस्तार की जिये। हे हरे ! आपही धर्म रक्षक ही आप अपने धर्मको रक्षा कीजिये। हम सबको इतनी सामर्थ दीजिये कि आपकी प्रीति श्री प्रियकार्य साधनकर जन्म जीवन को सफल करें। बाहरे बाहर यह उत्सव समाप्त हुआ सही, किन्तु इसके उज्ज्वल उत्साहाग्नि वो निर्मल प्रेमशिखा हमारे हृदयको निरन्तर प्रकाशित रखे। हे भगवन् ! आपको बार बार नमस्कार करते हैं।

ओं शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरि ओं।

हम सबके सान्ने आनन्द वो कृतज्ञतापूर्वक यह प्रगट करते हैं कि इस वार्षिकोत्सवके समय कलकत्ते के मान्यवर श्रीमान बाबू तारकनाथ प्रामाणिक महाशय २५८ रुपये श्री वेणुसराय की धर्म सभा ५८ रुपये वो पीत वस्त्रादिके द्वारा सभाके और यथायोग्य सहायुभावकता प्रकाश किये भगवान् धर्मकार्यके सहायकोंका इसलोक वो परलोकका मङ्गल विधान करें।

इय वर्षका मूल्य प्राप्ति स्वीकार।

श्रीयुक्त राजा तारेचन्द्र पांडे	एकोड	१००/०
.. पण्डित शुक्देव,	एलाहाबाद	३८/०
.. बाबु ताराप्रसन्न घोष	..	३८/०
.. .. तारकनाथ बन्धोपाध्याय	..	३८/०
.. .. उमाचरण दास	मुन्सैर	२/
.. .. योगेन्द्रनाथ मैत्र	..	२/
.. .. हरिहर वसु	जामालपुर	२/
.. .. गणेशचन्द्र शूर	..	२/
.. .. भूमिधर गङ्गोपाध्याय	..	२/
.. .. महेंद्रनाथ घोष,	मुन्सैर	२/
.. .. यादवलाल राय	शिवगती	२/
.. .. गिरीशचन्द्र घोष	भगनपुर	१८/०
.. .. कालीकेशोर मुन्सी,	शोरपुर	१८/०
.. .. नीलमोहन मुखोपाध्याय, बाँका	..	१८/०
.. .. रमणीमोहन दे,	चन्द्रामधा	१८/०

৪র্থ বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার ।

শ্রীযুক্ত রাজা তারেশচন্দ্র পাণ্ডে	পাকুড়	৩১/০
,, বাবু গোপীমোহন রায়	কলিকাতা	৩১/০

বিদেশীয় এজেন্টগণের নাম ।

শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র মল্লোপাধ্যায়	ভাগলপুর ।
,, ,, বাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী ।
,, ,, জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর ।
,, ,, পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট ।
,, ,, সাতকড়ী বন্দ্যোপাধ্যায়,	কলিকাতা ।
,, ,, বিহারিলাল রায়,	জামালপুর ।
,, ,, রমেশচন্দ্র সেন,	ঐ
,, ,, উপেন্দ্রনাথ মল্লোপাধ্যায়,	ঐ
,, ,, ভোলানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,	বহরমপুর ।
,, ,, রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম ।

উপরোক্ত এজেন্ট মহোদয়গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয়-গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব ।

ধর্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী ।

১। যদি কোন ধর্মাত্মা আর্থধর্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষায় বা উত্তর ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারসান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহসহকারে ধর্ম প্রচারকে প্রকাশ করিব ।

২। ধর্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি মূদ্রের “আর্থধর্মপ্রচারিণী সভায়,” আমার নামে পাঠাইতে হইবে । পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না ।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মনিঅর্ডারে, পাঠাইবেন । ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন ।

৪। ধর্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১৩ সংখ্যা হইতে ডাকনামুল সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইরাছে ।

উত্তম কাগজে,	বার্ষিক	৩১/০,	প্রতিখণ্ড ১/০
মধ্যম ঐ	,,	২১/০	,, ১/০
সাধারণ ঐ	,,	১১/০	,, ১/০

মুদ্রের, আর্থধর্ম- } শ্রীতীক্ষ্ণপ্রসন্ন সেন
প্রচারিণী সভা } সম্পাদক ।

এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মূদ্রের আর্থধর্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া পাকে ।

৪র্থ বর্ষিকা মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার ।

শ্রীযুক্ত রাজা তারেশচন্দ্র পাণ্ডে	পকৌড়	২১/০
,, বাবু গোপীমোহন রায়	কলিকাতা	২১/০

বিদেশী এজেন্ট সবকা নাম ।

শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র মল্লোপাধ্যায়,	ভাগলপুর ।
,, ,, বাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী ।
,, ,, জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর ।
,, ,, পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট ।
,, ,, সাতকড়ী বন্দ্যোপাধ্যায়,	কলিকাতা ।
,, ,, বিহারীলাল রায়,	জামালপুর ।
,, ,, রমেশচন্দ্র সেন,	জামালপুর ।
,, ,, উপেন্দ্রনাথ মল্লোপাধ্যায়,	জামালপুর ।
,, ,, ভোলানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,	বহরমপুর ।
,, ,, রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম ।

উপরোক্ত এজেন্ট মহোদয়গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয়গণ মূল্যাদি দেন তাহা আমি প্রাপ্ত হইব ।

ধর্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী ।

১। যদি কোন ধর্মাত্মা আর্থধর্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার করণের নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা দেবনাগরী মে বা হিন্দী ভাষায় কোন প্রস্তাব লিখিলে তাহা লিখিত বিষয় সারসান প্রাপ্ত হইলে আনন্দ ও উৎসাহ সহিত ধর্মপ্রচারক মে প্রকাশ করিলে ।

২। ধর্মপ্রচারক পত্রিকা লেখক ও প্রকাশকসংক্রান্ত পত্রাদি মূদ্রের “আর্থধর্মপ্রচারিণী সভাকে” ঠিকান মে করে পাঠ ভেজনে হইয়া । পত্র বৈধি হইতে নষ্ট লিয়া জায়া ।

৩। মূল্য সম্ভবতঃ পোষ্টাল মনি অর্ডারে করিলে ভেজনা । যদি ডাক টিকিট মে ভেজেন তাহা আর্থ আনন্দ টিকিট করিলে ভেজ দেন ।

৪। ধর্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১২ সংখ্যাসি ডাকনামুল সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্য তিন প্রকার হইয়া ।

উত্তম কাগজপত্র,	বার্ষিক	২১/০	প্রতিখণ্ড ১/০
মধ্যম ,,	,,	২১/০	,, ১/০
সাধারণ ,,	,,	১১/০	,, ১/০

মুদ্রের, আর্থধর্ম- } শ্রীতীক্ষ্ণপ্রসন্ন সেন
প্রচারিণী সভা । } সম্পাদক ।

এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমা মে মূদ্রের আর্থধর্মপ্রচারিণী সভাকে উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া পাকে ।



एव एव सुहृदभी निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमयतु गच्छति ॥

“एक एव सुहृदभी निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमयतु गच्छति ॥”

७५ भाग { शकाब्द १८०२ ।
४१ श संख्या { फाल्गुण-पूर्णिमा ।

७५ भाग } शकाब्द १८०२ ।
४१ श संख्या } फाल्गुण-पूर्णिमा ।

परमार्थ सार ।

(पूर्व प्रकाशिते पर ।)

सत्यमिव जगदसत्यं मूल प्रकृतेरिदं कृतं येन ।
तं प्रणिपत्योपेन्द्रं वक्ष्यामि परमार्थसारमिदम् ॥७॥

बाह्य आश्चर्य कौशले এই माয়াবিস্তৃতি
অসত্য সংসারকে সত্যবৎ প্রতীয়মান হইতেছে
সেই উপেন্দ্র অর্থাৎ বিশ্বব্যাপী সনাতন মহাকে
প্রণাম পূর্বক সর্বশাস্ত্রসারভূত এই পরমার্থ সার
ব্যাখ্যা করিতেছি ।

अव्यक्तदण्डमद्भुतगुणकृततः प्रजा सर्गः ।

मायामयी प्रकृतिः संकीर्यत इयं पुनः क्रमशः ॥१०॥

অব্যক্ত হইতে অণ্ড (আবির্ভাব), অণ্ড হইতে
ব্রহ্মা, (সৃষ্টির মূলক্রম বা ভাব) এবং ব্রহ্মা
হইতে এই জগৎ উৎপন্ন হইয়াছে পুনর্বার এই
প্রাকৃতিক জগৎ মহামায়ার ক্রীণ ও তিরোহিত
হইয়া যাইবে, ইহাই প্রকৃতি নিরন্তর চিরন্তন
প্রকৃতি ।

परमार्थ सार ।

(पूर्व प्रकाशिते आगे)

सत्यमिवजगदसत्यं मूल प्रकृतेरिदं कृतं येन ।
तं प्रणिपत्योपेन्द्रं वक्ष्यामि परमार्थसारमिदं ॥ ८ ॥

मायाभिः कियता ऊआ यह असत्य संसार जिनके
आश्चर्य कौशलसे सत्य स्वरूप भासित होता है, उस
उपेन्द्र अर्थात् विश्वव्यापी सनातन सत्ताको प्रणाम
पूर्वक इस “परमार्थसार,” जो कि सर्वशस्त्रसार
भूत है, मैं व्याख्या करना ऊँ ।

अव्यक्तादण्डमद्भुतगुणवृत्त्याततः प्रजासर्गः ।

मायामयी प्रकृतिः संकीर्यत इयं पुनः क्रमशः ॥१०॥

अव्यक्तसे अण्ड, (आविर्भाव), अण्डसे ब्रह्मा
(सृष्टिका मूल क्रम वा भाव) आदि । ब्रह्मसे यह जगत
उत्पन्न ऊआ । फिर यह प्राकृतिक जगत मह-
माया करते स्त्रीणा वो अस्तछित हो जायगा, यही
रीति चिरन्तन चलि आती है ।

अनुलोम ओ प्रतिलोम प्रकृतिते जगत्तेर प्रकाश ओ विनाश हईया থাকे । यावत्काल प्रकृति परमात्माय अनुलोम थीके, तावत् एही जगदादि किछुई থাকे ना । परमात्माय स्वगत प्रकृति निरुद्धे परमात्मा हईते प्रकृतिर आविर्भावैर बहिष्करण ओ भावैर आकर्षण हईया থাকे । उक्त मूल प्रकृतिके अव्यक्त एवं उक्त आविर्भावके अणु कहै । एही आविर्भाव हईते प्रथम भाव (अहं भाव) उदय हईया থাকे । अतःपर अहं भाव हईते अनुसंधान इन्द्रियगण ओ सूक्ष्म भूतेर अद्भुतदय हय, एवं सूक्ष्म भूत हईते सूक्ष्म भूत वा जगत् प्रकाशित हईया থাকे । भौतिक जगत्ते ये ग्रहगणैर केन्द्रातिग (Centrifugal) ओ केन्द्रानुग (Centripetal) दुईटी गति दृष्ट हय उहा परमात्माय बहिष्करण ओ आकर्षण शक्तिर भौतिक द्वारा मात्र । मङ्गलमय परमात्मा अनन्तप्रेमेर साधारण एही जगत् बहिष्करण शक्ति प्रभावे प्रकाशित हईया ताहार अनन्त ओ अनिवार्य प्रेमैर आकर्षणे ताहाते पुनःप्रविष्ट हईया থাকे । ईहाकेही जगत्तेर विनाश कहै ।

मायामयोप्यचेतोऽगुण करणगणः करोति कर्माणि । तदधिष्ठाता देहो सचेतनो न करोति किञ्चिदपि ॥१॥

इन्द्रियगणैर अधिष्ठाता चैतन्यात्मक जीव कोन कर्म करेन ना ; मायामय मद्र, रजः, ओ तमो-
गुणयुक्त इन्द्रियगण अचेतन हईया ओ कर्म करिया
पाके ।

यद्वदचेतनमपि सन्निकटस्थे भ्रामके भ्रमति लोहं । तद्वत्करणसमूहस्थेते चिदधिष्ठितेदेहे ॥२॥

येमन चूषक लोहेर निकटवर्ती हईले अचे-
तन लोह सचेतन पदार्थैर न्याय विचलित ओ
क्रियायुक्त हय तद्रूप इन्द्रियगण जड़ हईया ओ देहा-
भावस्य चैतन्य मद्रा प्रयुक्त कार्य करिया থাকे ।
यद्वत्सन्निकटस्थ दिते करोति कर्माणि जीवलोकैरयं
न चतानि करोति रविर्नकारयति तद्वदात्मापि ॥३॥

येमन सूर्य उदय हईलेही जीव सकल स्वतः
प्रयुक्त हईया कार्य करिते থাকे ; वास्तविक सूर्य
प्रकाश ओ कोन कर्म करेन ना ओ काहाके कोन कर्म
कलिते आदेश वा प्रयुक्त ओ करेन ना, तद्रूप
आत्मा स्वयं निष्क्रिय, ताहार सत्तामात्रैर प्रभावेही
इन्द्रियगण कार्य करिते থাকे ।

अनुलोम ओ प्रतिलोम विधिकरके जगत्का
प्रकाश ओ विनाश होता रहता है । यावत्काल
प्रकृति परमात्मामें विलीन रहती, तावत् काल यह
जगदादि कुछ भी नहीं रहता है । परमात्मा की
स्वगत प्रकृति-सिद्ध गुण करके परमात्मामें प्रकृतिके
“आविर्भाव” का “बहिष्करण” ओ “भाव” का “आ-
कर्षण” होता रहता है । उक्त मूल प्रकृतिकी
अव्यक्त ओ उक्त “आविर्भाव” की अणु कहलाता है ।
इस आविर्भाव ही से पहले “भाव” (अहं भाव)
उदय हुआ करता है । इसके अनन्तर अहं भावमें
“अन्तर्बहिष् इन्द्रियगण की सूक्ष्म भूतों का अभ्युदय
याने प्रकाश होता है, ओ सूक्ष्म भूतोंसे सूक्ष्म भूत वा
जगत् प्रकाशित होता है । भौतिक जगत्में जो
ग्रहमण्डली की दो गति, जिनमें एकका नाम
“केन्द्रातिग” (Centrifugal) ओ दूसरा का नाम
“केन्द्रानुग” (Centripetal) देखी जाती, वे पर-
मात्मा की बहिष्करण ओ आकर्षण इन दोनों शक्ति
की भौतिक साध्यामात्र है । मङ्गलमय परमात्मा
अनन्त प्रेमका आधार है । यह जगत् बहिष्करण
शक्तिका प्रभावमें प्रकाशित होकर उनके अनन्त ओ
अनिवार्य प्रेम का आकर्षण करके उनमें फिर प्रवेश
किया करता है । इस ही की जगत्का विनाश
कहलाता है ।

मायामयोप्यचेतोऽगुण करणगणः करोति कर्माणि । तदधिष्ठाता देहो सचेतनो न करोति किञ्चिदपि ॥१॥

चैतन्यात्मक जीव, जोकि इन्द्रियों के अधिष्ठाता
है, कुछ भी नहीं करते है ; मायामय सब रजः ओ
तमोगुणयुक्त इन्द्रियगण अचेतन हुए भी कर्म किये
करते है ।

यद्वदचेतनमपि सन्निकटस्थे भ्रामके भ्रमति लोहं । तद्वत्करण समूहस्थेते चिदधिष्ठिते देहे ॥ १२ ॥

जैसा चूषक लोहाके समीप जानिसे, लोहा, जो
जड़ है, सचेतन पदार्थकी रीति चलने लगता है,
उसही भांति इन्द्रियगण जड़ हुए भी देखस्य चैतन्य
की सला करके कार्य किये करते है ।

यद्वत्सन्निकटस्थ दिते करोति कर्माणि जीवलोकैरयं । न चतानि करोति रविर्नकारयति तद्वदात्मापि ॥३॥

जैसा सूर्य उदय होनेही से जीवगण स्वतः एव
कार्य करने लगते ; वास्तवमें न सूर्य स्वयं कुछ
करते न किसही को कुछ करने कहते अथवा प्रवृत्ति
देते है, तद्वत् आत्मा स्वयं निष्क्रिय है, उनकी सला
ही के प्रभाव से इन्द्रियगण कार्य किये करते है ।

মনসোহকারং বিমূর্ছিতস্য চৈতন্যবিরোধিতসোহ ।
পুরুষাভিমান স্বখদুঃখভাবনা ভবতি মূঢ়স্য ॥১৪॥

মন অহঙ্কার কর্তৃক বিমূর্ছিত ও চৈতন্য কর্তৃক
প্রবৃত্ত হয় । মূঢ়তা প্রযুক্তই মনোমধ্যে পুরুষাভি-
মান রূপ স্বখ দুঃখাভাব হইয়া থাকে ।

কর্তাভোক্তাদ্রষ্টাক্ষি কর্মণামুভগাদীনাং ।

ইতি তৎস্বভাব বিমলোঃ ভিমল্যতে সর্বগোপ্যাত্মা ॥১৫॥

সর্বত্র বর্তমান নির্মল স্বভাব আত্মা পূণ্য পা-
পাদি কর্মকালে আমি কর্তা, আমি ভোক্তা, আমি
দ্রষ্টা ইত্যাদি অনুভব করেন, কিন্তু মূঢ়ের ন্যায়
অভিমান করেন না ।

ক্রমশঃ ।

আর্য্য শব্দের উপপাদন ।

(হিন্দাবনস্থ অষ্টময় বন্ধু শ্রীযুক্ত রাধাচরণ
গোস্বামীর লিখিত ।)

সরস্বতী দৃষদ্বল্যোদেব নদ্যোর্য্যাদন্তরম্ ।

তন্দেব নির্মিতং দেশমার্য্যাবন্তপ্রচক্ষতে ॥

এতদেশ প্রসূতস্য সকাশাদগ্রজন্মনঃ ।

স্বং স্বং চরিত্রং শিচ্চেরন্ পৃথিব্যাং সর্বমানবঃ ॥

(মনুসংহিতা ২ অঃ ১৭-২০ শ্লোক ।)

আমরা পৃথিবীস্থ সমস্ত আর্য্য, অনার্য্য, পণ্ডিত,
মূর্খ, রাজা, প্রজা, ধনী, দরিদ্র, গ্রন্থকার, পত্রিকা সম্পাদ-
ক প্রভৃতি সকল শ্রেণীস্থ লোকের নিকট বিনয়
পূর্বক নিবেদন করিতেছি যে, আপনারা ভারত-
বর্ষের প্রাচীন অধিবাসী ও বৈদিক ধর্ম্মাচারী আর্য্য
সন্তানগণকে কদাচিত্ “হিন্দু” বলিয়া উল্লেখ ও
কোন স্থানে ইদৃশ শব্দ লিপি বন্ধ না করেন ।
কেননা মহামদীয় আরবী পারসী ইত্যাদি ভাষায়
হিন্দু শব্দ “গুলাম” “কাফির” “কৃষ্ণবর্ণ” ইত্যাদি
অসভ্য অর্থে গৃহীত হয়, এবং মুসলমানেরাই প্রথ-
মত আমাদিগের প্রতি ঈর্ষা পরবশ হইয়া নিজ
রাজ্য শাসন কালে এই সংজ্ঞা প্রচলিত করিয়াছিল
নতুবা আমাদিগের ইদৃশী কুৎসিত সংজ্ঞা পুরাতন
কোন ইতিহাসাদিতে দেখিতে পাওয়া যায় না
আর কেহই “আর্য্য” শব্দের পরিবর্তে “হিন্দু” শব্দ
ব্যবহার করিতেন না । কিন্তু যখন মুসলমানগণ
এইরূপ কহিতে লাগিল তখন তাহাদের দেখাদেখি
ও তাহাদের ভয়ে অন্যান্য লোকও তদ্রূপ বলিতে
আরম্ভ করিল । কিন্তু এক্ষণে আমাদিগের মধ্যে

মনসোহকারং বিমূর্ছিতস্য চৈতন্য বিরোধিতসোহ ।

পুরুষাভিমান স্বখদুঃখভাবনা ভবতি মূঢ়স্য ॥১৪॥

মন অহঙ্কার কর্তৃক মূর্ছিত হইতা মৌ নৈতন্য
কর্তৃক জগতা হৈ । মূঢ়তা কর্তৃক মনম্ পুরুষাভি-
মান রূপ স্বখদুঃখ কৌ ভাবনা উঠী করতী হৈ ।

কর্তাভোক্তাদ্রষ্টাক্ষি কর্মণামুভগাদীনাং ।

ইতি তৎস্বভাব বিমলোঃ ভিমল্যতে সর্বগোপ্যাত্মা ॥১৫॥

আত্মা, জাকি সদা সর্বত্র বর্তমান বৌ নির্মল
স্বভাব হৈ, মুখ্য পাপাদি ক্রিয়া করনেকৈ সময়ম্
ভোক্তা জ্ঞ, মৈ দ্রষ্টা জ্ঞ, ঐসা অনুভব করতৈ কিন্তু
মূঢ়াকৈ সমান অভিমান নহী করতৈ হৈ ।

শেষ আগৈ ।

আর্য্য শব্দকা উপপাদন ।

(হিন্দাবনস্থ অষ্টময়মিব শ্রীযুক্ত রাধাচরণ
গোস্বামী লিখিত ।)

সরস্বতী দৃষদ্বল্যোদেব নদ্যোর্য্যদন্তরম্ ।

তন্দেব নির্মিতং দেশমার্য্যাবন্তম্ প্রচক্ষতে ॥

এতদেশ প্রসূতস্য সকাশাদগ্রজন্মনঃ ।

স্বং স্বং চরিত্রং শিচ্চেরন্ পৃথিব্যাং সর্বমানবঃ ॥

(মনুস্মৃতি: ২ অঃ ১৬-২০ শ্লোক ।)

হুম জগত্কে সব আর্য্য, অনার্য্য, পণ্ডিত, মূর্খ,
রাজা, প্রজা, ধনী দরিদ্র, গ্রন্থকার, পত্রিকা সম্পাদক
প্রভৃতি সকল শ্রেণীস্থ লোকগণে বিনয়পূর্বক নিবেদন
করতৈ হৈ, কি আপলোগ হুম আর্য্যলীগণকৌ জৌ ভারত
বর্ষকে প্রাচীন নিবাসী, মৌর বৈদিকধর্ম্মকে অনুযায়ী
হৈ, কদাচিত্ “হিন্দু” ন কহা করৈ । মৌর লেখম্ মৌ
হুম দুঃশব্দকা ব্যবহার ন কিয়া করৈ । ক্যণেকি যহ
সংজ্ঞা जिसका मुसलमानों की भाषा अरबी फ़र्सी
इत्यादिमें “गुलाम” “काफिर” “काला” इत्यादि
असभ्य अर्थ है, हमलोगोंकी प्रथम मुसलमानोंनेही
अपने राज्यमें ईर्ष्यासे प्रचलित की थी, क्योंकि
इसके पूर्व कहीं हमलोगों की यह संज्ञा इतिहासमें
नहीं पाई जाती, और न कोई “आर्य” शब्दके बदले
“हिन्दू” शब्दसे व्यवहार करता था । परन्तु जब
मुसलमान कहने लगे तो उनकी देखा देखो और
भयसे और लोगोंने भी कहना प्रारम्भ कर दिया ।
परन्तु अब यह व्यवहार आपुसमें बहलतही बुरा है,

इदृश व्यवहार थाका नितास्त निमित्त केन ना एकटी पवित्र समाजके बल-पूर्वक दूषित बना लोक ओ शास्त्र विरुद्ध ।

यदि केह केह एरूप आपत्ति करेन ये आगरा “हिन्दू” एही पारसी शब्द “सिक्कुतीर वामी” एही रूप अर्थ ग्रहण करि ताहा इहिले तौहादिगके जिज्जास्य एही ये आगरा एक्केण सकले सिक्कुतीर वाम करिउतेहि कै ? यदि ओ पूर्वक थाकिताम ओ उक्त नामे निर्देश योग्य ओ छिनाम तथाच कि “आर्य” बलिया उक्त इहिताम ना ? एकटी मुख्या नाम परिताग पूर्वक आर एकटी असम्मत ओ अशुद्ध नाम भद्रसमाजे व्यवहार करिबार प्रयोजन कि ।

हा ! कि मोह महिमा ! आमादिगेर प्रकृत संस्कृत “आर्य” नाम विस्मृत इहिया आगरा “हिन्दू” इहिया गियाहि एवं एक्केण आगरा “हिन्दू” शब्द परिहार पूर्वक आर्य शब्द ग्रहणे किं कर्तव्य विवेचना करिउतेहि । हा ! हा ! कि मोह मदिनाई आगरा पान करियाहि, ये ताहार प्रभावने अमृत मय “आर्य” शब्द परिताग पूर्वक विषमय “हिन्दू” शब्दके प्राधान्य दाने दृष्ट प्रतिष्ठ इहियाहि संस्कृत आर्यभासाई आमादिगेर मातृभाषा, आरबी पार्सीर सहित आमादिगेर किछुई संश्रव नाई तबे केन आमादिगेर भाषार स्वतः सिद्ध विशुद्ध “आर्य” शब्द परिताग करिया “हिन्दू” शब्देर समादर करिव ? छिः !!! आमादिगेर भारतवर्षीय भाषा समूहेर मध्ये एमन कि एकटी ओ शब्द नाई यद्दारा समाजेर नाम वृद्धिते पारा याय ? अथवा एमन कि कोन राजदण्डेउर भर आछे यद्दारा “हिन्दू” शब्देर परिवर्ते प्राचीनतम “आर्य” शब्द व्यवहार करिबार उन्साह भङ्ग करे ।

यदि केह सत्तोर अनुरोधे एरूप बलेन ये “आर्य” शब्द श्रेष्ठ वाचक । आमादिगेर पूर्व पुरुषगण यथार्थ ई श्रेष्ठ छिलेन किन्तु से श्रेष्ठता एक्केण आमादिगेर जातीय प्रकृतिउते दृष्ट हय ना एही जन्य “आर्य” बलिउते आमादिगेर मस्कोच बोध हय ताहाते आमादिगेर निवेदन एही ये, यदि आगरा कोन कोन णे तौहादेर इहिले नान तथाच “आर्य” शब्देर सर्वथा अनधिकारी नहि । केन ना आगरा अवश्याई किछु ना किछु परिमाणे सत्य, नितास्त निडजिल वामीदिगेर न्याय नहि । आमादिगेर न्याय अध्यात्मविद्या, सत्त्वविद्या ।

क्योंकि किसी निर्दिष्ट समाज की बलात्कारसे सदीय कहना लोक और शास्त्र दोनोंके विरुद्ध है ।

यदि कोई आपत्ति करते हैं कि हम “हिन्दू” शब्दको फार्सी मान कर इसका “सिक्कुतीरवासी” अर्थ करते हैं, तो हम उन लोगोंसे पूछते हैं कि हम अब सिक्कुतीर पर ही केवल कहा रहते हैं ? यदि पछिते रहते थे, और इसी नामसे निर्दिष्ट होनेके योग्य थे, तो क्या तब आर्य नहीं कहलाते थे ? फिर क्या आवश्यक है कि एक मुख्य नाम छोड़ कर एक असम्मत और अशुद्ध नाम भद्रसमाजमें उच्चारण किया जाय ।

हा ! क्या मोह महिमा है कि हम लोगोंका प्रकृत नाम संस्कृत निबद्ध “आर्य” है, उसे भूल कर हम लोग “हिन्दू” बन गये, और अब हम लोग “हिन्दू” शब्दको छोड़ कर “आर्य” शब्दके ग्रहण करनेमें सङ्कल्प विकल्प करते हैं । हा ! हा ! क्या मोहमदिना हम लोगोंने पान की है जिसके प्रभावसे अमृतमय “आर्य” शब्दको छोड़ कर विषमय “हिन्दू” शब्दको हम लोग मुखवास देनेमें दृढ़ प्रतिष्ठ है । हमलोगों की भाषा, संस्कृत आर्यभाषा प्रभृति है । कुछ इरानी, फार्सी इत्यादिक नहीं है तो फिर क्या प्रयोजन है कि इन भाषाओंके स्वतः सिद्ध शुद्ध आर्य शब्द को छोड़ कर उनका आदर करें ? छिः !!! क्या हमारे भारतवर्ष की अनिकावधि भाषाओंमें एक भी ऐसा शब्द नहीं, जो हम लोगोंके समाजका बोधक हो ? वा कोई राजदण्ड है, जिससे “हिन्दू” शब्दके बदले प्राचीनतम “आर्य” शब्द कहनेका उत्साह नहीं होता ।

किन्तु यदि कोई सत्यका अभिमान कर यह कहते हैं कि आर्य शब्दका अर्थ अष्ट है, आप लोगोंके पूर्वपुरुष ठीक अष्ट थे, पर अब वह अष्टता आप की जातिमें नहीं रही, इससे हमें कुछ आर्य शब्द के कहनेमें सोच होता है तो हमारा उनसे निवेदन है कि यदि हम किसी एक गुणमें उनसे न्यून भी हैं, तो ही “आर्य” शब्दके संख्या अनधिकारी नहीं है । क्योंकि अवश्य कुछ सभ्यता रखने हैं, निर “न्यूजीलैण्डिय” ही नहीं है । हमारी सी अध्यात्म विद्या, गानविद्या, योगविद्या, हमारी सी धार्मिकता, भगवद्भक्ति, आत्मिकता, दयाशीलता, हमारा सा कीर्पातिव्रत्य, हमारा सा धर्म, कर्म इत्यादि हमलोगोंमें ही है ; सारी जगत् बढ़ापि नहीं, तो

योग विद्या, आमादिगेर न्याय धर्मभाव, भगव-
स्तुक्ति आस्तिकता, दयाशीलता, आमादिगेर न्याय
रमणीगणेर पातिव्रत्य, आमादिगेर न्याय धर्म,
कर्म इत्यादि आमादिगतेई विद्यमान आछे अन्यत्र
कूत्रापि नाई एतावत् गुण सहेओ कि आमरा
आर्य्य हईते पारि ना ? आर यदि उक्त नियमई
प्रबल हय तवे फोर अब् ईगिया ” (भारत नक्षत्र)
आर “ बाहादुर ” (वीर पुत्र) इत्यादि उपाधि
राशि ओ अस्त्रादिर प्रलम्बायमान, नाम किरूपे
सर्वरथा सत्य हईते पारे । केवल एक देशिक
सत्यताई सर्वत्र प्रतीत हय सर्वतोभाविक किछु-
तेई दृष्ट हय ना आर यदि असत्यई हय तवे एता
वत् भद्र समाजे प्रचलित रहियाई.केन ?

“ नहि विकृतमनन्यवद् भवति ।

नहि तिर पुच्छोहश्चो गर्दभो भवति ” ॥

यदिच बहूदिन प्रचलने कथन लिखनेर कारण
हय तवे महत्प्र प्रकार पृथ प्रचलित असम्भारता
यथन नूतन सभ्यतालोक विरुद्ध हईयाछे ओ हई-
तेछे तवे एई दुःशक्तेर रक्षा करिवार जन्य
लोकैर एत दुराग्रह केन ! आर यदि ईहाई प्रधान
कारण हय तवे बातिचार, जुयाचुरी आदिओ त
प्रचलित आछे एतावत् कि संसार मध्ये असत्
कर्म बलिया धूनिह हय ना एव एतावत् परित्याग
करिवारई विधान केन ?

काहार काहार एरूप आशङ्काओ आछे ये इति
हासःनुसारे इंग्लो वासीराओ आर्य्य बलिया परि-
चय दिते पारेन, तवे दुईटी जाति आर्य्य नामे
लिखित ओ परिचित हईवे ईहाते लोकैर
आश्रित सम्भावना । ईहाओ समीचीन निष्कांत नहे,
तौहारा निःसन्देहई निज निज भाषाओ रूप भेदे
“ इंग्लिस ” “ फ्रान्सिस ” इत्यादि लिखिते
थाकिबेन । यदि तौहाराओ आर्य्य बलिते थाकेन
ताहातेई चिन्ता कि ? प्रकरणानुसारे सकलैर
भिन्नता प्रतिपन्न हईते पारे ।

ए आशङ्का भिन्न अनेके आरओ एक आशङ्का
करेन ये “ हिन्दू ” शब्द छाड़िया “ आर्य्य ” शब्द
व्यवहार करिले कर्म कार्य चलिबे ना । ईहाओ
विषम त्रय, केन ना आमरा देखितेछि, ये, स्वामी
दयानन्द सरस्वती ओ तौहार अनुगामी वर्ग कयेक
वर्षहईते कथावार्ता ओ लिखन पठन काले “ हिन्दू ”

फिर “ सितारेहिन्द ” (भारत नक्षत्र) और “ बाहादुर ”
(वीरपुत्र) इत्यादि उपाधिये, और प्रलम्बायमान
ग्रन्थादिकोंके नाम कब सर्वथा सत्य होसकते हैं ? केवल
एक देशिक सत्यताही सर्वत्र प्रतीत होती है, सार्व-
देशिक सत्यता किसीमें नहीं पाई जाती ! और यदि
असत्यही है तो फिर क्यों भद्र समाजमें प्रचलित है ?
किञ्च । “ न हि विकृतमनन्यवद् भवति ।

न हि भिन्न पुच्छोऽश्चो गर्दभोभवति ॥ ”

यदि च प्रचारही इसके बोलने और लिखनेका
कारण हो तो सद्बुद्धिः असद्बुद्धि जो प्रचलित थी,
नूतन सभ्यतासे मिट गई, और मिटती जाती है,
तो फिर क्या निमित्त है कि इसी दुःशब्द पर लो-
गोंको इतनी रक्षा है ? और यदि यही प्रधान का-
रण है, तो क्या व्यभिचार, जुआ, चोरी इत्यादिक
प्रचलित नहीं हैं, फिर क्यों संसारमें असत् कर्म
समझे जाते हैं ? और इनके खोजनेका विधान है ?

फई जनोंकी इसमें यह भी आशङ्का है कि
इतिहासानुसार इंग्लेण्डियादिक भी “ आर्य्य ” ठहर
सकते हैं, तो फिर जब दोनो “ आर्य्य ” नामसे लिखे
पढ़े जायंगे, ती लोगोंकी भ्रांति होगी, सी यह भी
कुछ ठीक नहीं ; उन्हें निश्चन्देह लोग तत्तद्भाषा
और देशके भेदसे “ इंग्लिश ” “ फ्रेंचिस ” इत्यादि
लिखे, और हमलोगोंकी हमारी भाषानुसार “ आर्य्य ”
लिखें, और यदि उन्हें भी “ आर्य्य ” पुकारे तो क्या
चिन्ता है ? प्रकरणानुसार सदाका भेद प्रकट हो
सकता है ।

इन आशङ्काओंसे अधिक एक आशङ्का और भी
बहुधा किया करते हैं कि “ हिंदू ” शब्दको छोड़
कर “ आर्य्य ” के व्यवहार करनेसे प्रायः काम नहीं
चलैगा, सी यह भी महान् भूल है, क्योंकि हम
देखते हैं कि स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके
अनुयायी लोग आज वर्धमाने बोल चाल और लिखा
पढ़ीमें “ हिंदू ” शब्दका व्यवहार नहीं करते तब क्या
उनका कार्य निर्वह नहीं होता ?

निदान कोई प्रकारसे “ आर्य्य ” शब्द कहेनेके
कुछ चिन्ता, भ्रम, या प्रमाद नहीं है, अतएव
हमारी सर्वसाधारण और विशेषतः अपने बंध
आर्य्यलोगोंसे आशा है कि जहाँतक हो “ हिंदू ”

শব্দের ব্যবহার ত্যাগ করিয়াছেন। তাঁহাদের কার্য কি নির্বাহ হইতেছে না?

উপসংহার কালে ইহাই বলিতেছি যে আৰ্য্য শব্দ ব্যবহার করিলে কোন, চিন্তা, ভ্রম, বা প্রমাদ নাই। অতএব আমাদিগের সর্বসাধারণ ও বহু আৰ্য্য গণের নিকট প্রত্যাশা করি যে তাঁহারা যত দূর পারেন “হিন্দু” শব্দের পরিবর্তে “আৰ্য্য” শব্দ ব্যবহার করিবেন, যেন আজকালকার কোন কোন গোবর গণেশ পণ্ডিতের ন্যায় সংস্কৃত মধ্যেও “হিন্দু” শব্দ না লিখিয়াবসেন। অতএব নিজদেশকে আৰ্য্যাবর্ত বা “ভারতবর্ষ” এবং নিজ ভাষাকে “মাতৃ ভাষা” বা আৰ্য্য ভাষা বলিবেন হিন্দুস্থান বা “হিন্দী” না বলেন, কেননা “বচনেষু দরিদ্রতা” ইহা কাপুরুষের কার্য্য।

শ্রুতি স্মৃতি মিতাচারঃ শুদ্ধাহারশ্রুতীতিমান
প্রীতিমান যো ভবেদেবে স আৰ্য্যঃ পরিকীর্তিতঃ ॥

বৈদিক মতানুযায়ী ন্যায়ী সচ্ছাত্রবিৎকশিচৎ
সদ্ধৃবিণ ব্যবসায়ী দায়ীমুক্তোভবেদার্য্যঃ ॥

ও শান্তিঃ ।

গোস্বামী মহাশয়ের অনুরোধে আমরা আনন্দিত চিত্তে তাঁহার প্রেরিত মুদ্রিত পত্রখানি আদর পূর্বক উপরে প্রকটন করিলাম। “হিন্দু” শব্দের দুর্গণীয়তা ও তৎপরিবর্তে “আৰ্য্য” শব্দ ব্যবহার করিবার আবশ্যকতা আমরা বহুদিন হইতে স্বীকার করিয়া উহার সম্যক রূপে প্রচারেচ্ছা করিয়া আসিতেছি। ধর্ম প্রচারকের প্রথম সংখ্যাতেই এই বিষয়ের বিশেষ রূপ উত্তেজনাও করা হইয়াছে। আমাদিগের সেই ভাব সাধারণ্যে প্রচার জন্য গোস্বামী মহাশয়কেও প্রবৃত্ত দেখিতেছি, এজন্য তিনি আমাদিগের একান্ত সহানুভূতির পাত্র। “হিন্দু ধর্মের” পরিবর্তে “আৰ্য্য ধর্ম” নাম প্রসিদ্ধ হয়, “হিন্দু স্থানের” পরিবর্তে “ভারতবর্ষ প্রচলিত হয়, ইহা আমাদের একান্ত ইচ্ছা। হিন্দু স্থানের” পরিবর্তে গোস্বামী মহাশয়ের প্রস্তাবিত “আৰ্য্যাবর্ত” নাম প্রচলিত হইতে পারে না, কেননা “হিন্দুস্থান” বলিলে হিমালয় হইতে কুমারিকা অন্তরীপ ও হিন্দু কূশ হইতে ব্রহ্মদেশ পর্যন্ত স্থানকে বুঝায় কিন্তু “আৰ্য্যাবর্ত” বলিলে কেবলমাত্র হিমালয় ও বিজ্যাচলের মধ্য দেশকে বুঝাইয়া থাকে, যথা “আৰ্য্যাবর্তঃ

শব্দকে পরিবর্তনে “আৰ্য্য” শব্দকে ব্যবহার করিবে না কি আজ কলকে কই গোবর গণেশ পণ্ডিতী কই মাতি সংস্কৃত পর্যন্তন “হিন্দু” শব্দ লিখিবে। অতএব अपने देशको भी “आर्यावर्त” वा “भारतवर्ष” और अपनी भाषाको भी “मातृभाषा” वा “आर्य-भाषा” कहेंगे। न कि “हिन्दोस्थान” वा “हिन्दी” क्योंकि “वचनेषु दरिद्रता” यह काम कापुरुषीका है।

श्रुतिस्मृतिमिताचारः शुद्धाचारः सुनीतिवान् ।

प्रीतिमान् यो भवेद्देवे स आर्यः परिकीर्तितः ॥

वैदिक मतानुयायी न्यायी सच्छास्त्रवित् कश्चिन्
सद्वृषिण व्यवसायी दायी मुक्तो भवेदार्यः ॥

आं शान्तिः ।

महात्मा गोस्वामीजी का अनुरोधके अनुसार हम आनन्दित चित्तसे उनकी ऊपारी ऊई प्रेरित पत्री आदर पूर्वक ऊपरमें प्रगट किये। “हिनदु” शब्दकी दुर्गणीयता वो उसकी बदले आर्य्य शब्दका व्यवहार करनेकी आवश्यकता समझकर अनेक दिनोंसे हमने उसका प्रचारकी पूरी इच्छाकरी जाती है। धर्मप्रचारक की १म संख्यामें इस आशयपर विशेष रूप उन्नेजना भी की गयी है। हमारे इस भाव की सर्वत्र प्रचारार्थ गोस्वामीजी को प्रवृत्त देखते हैं, इस लिये उनने हमारे सहानुभूति की पात्र ठहरे। “हिनदुधर्म” के बदले “आर्य्यधर्म” यह नाम प्रसिद्ध होय, “हिनदुस्थान” के बदले “भारतवर्ष” नाम चले, यह हमारी एकान्त ईच्छा है। गोस्वामीजी ने जो प्रस्ताव डेडा है कि “हिनदुस्थान” के बदले “आर्य्यवर्त” नाम चले, वो नहीं हो सका। क्योंकि “हिनदुस्थान” कहनेसे हिमालयसे लेकर कुमारीका अन्तरीप तक वो हिनदुक्षेत्रसे लेकर ब्रह्म देश पर्यन्त भूमि समझी जाती है किन्तु “आर्य्यवर्त” कहनेसे केवल मात्र हिमालय वो विज्याचल की मध्यदेश को र्भक्त पड़ता है, यथा “आर्य्यवर्तः

पुण्यभूमि मध्यविह्वल हिमाचलो ” अतएव समग्र हिन्दू-
 स्थानके “आर्यावर्त ” ना बलिया “भारतवर्ष ”
 वा आर्यादेश बलाई युक्ति युक्त । गोस्वामी महा-
 शय हिन्दी भाषाके “मातृ भाषा ” वा आर्य भाषा”
 आध्या—दिने प्रस्ताव करिग्राहेन ; आम्हा ताहा-
 तेउ सम्यत हईते पारितेहि ना । केन ना
 “आर्यभाषा” बलिले “संस्कृत ” वुझाय ; हिन्दी
 भाषा “बाङ्गाला ” उडिया “ तेलुगु ” आदिर
 न्याय प्रादेशिक भाषा मात्र । हिन्दीके आर्यभाषा
 बलिले “ बाङ्गाला ” तेलुगु आदि कि दोषे उक्त
 संज्ञा लाते वक्षित हईवे ? “ मातृभाषा ” वला
 याईते पारे ना । उहाके पश्चिमोत्तर देश
 निवासीरुद्ध “मातृभाषा” बलिसे पारैन, किञ्च
 समग्र भारतवर्षवासी उहाके मातृभाषा बलिया
 स्वीकार करिबेन ना । “हिन्दू” शब्दर परिवर्ते
 अपर एकटी विशुद्ध शब्द प्रचलित हय, ईहा
 अक्षय गोस्वामी महाशयैर न्याय आम्हादेरउ
 एकाग्र वासना । “हिन्दीभाषा” प्रादेशिक भाषा
 हईलेउ उहा भारतवर्षैर प्राय सर्वत्रई किये
 परिमाणे प्रचलित आछे ओ भारतैर सर्व-
 विभाग वासीई उक्त भाषाय यथारीति कथोप-
 कथन करिते पारैन ओ करिया धाकेन । अज्जना
 आम्हादेर प्रस्ताव ये “हिन्दी” भाषार परिवर्ते
 आर्य भाषा वा मातृभाषा ना बलिया सकलई उहाके
 “आर्य साधारण भाषा बलिया उल्लेख करिते
 पारैन, अथवा अन्य केह यदि अपेक्षाकृत कोन
 सद्भावानुसूल संज्ञा दान करिते पारैन
 तवे आम्हादिगके अग्रग्रेह पूर्वक लिखिले आम्हा
 आनन्द पूर्वक ताहा स्वीकार ओ ग्रहण करिब ।
 “हिन्दुजाति” वा हिन्दुधर्मैर परिवर्ते आर्यजाति
 वा आर्यधर्म, हिन्दूस्थानैर स्थाने “भारतवर्ष ”
 ओ हिन्दीभाषार परिवर्ते “आर्य साधारण भाषा”
 प्रत्येकेर मुख हईते उच्चारित ओ प्रत्येक
 लेखकेर लेखनी हईते विनिःसृत हईले शब्द
 विज्ञानैर प्रतिभाय भारत क्रमशः आर्य भाषापर
 हईवेई हईवे ।

धः प्रः संः

मद ।

(सैयदपुर उः, बिः, सभा हईते प्राप्ता ।)

(पूर्वप्रकाशिते पर)

एवम्-मद सामान्य अभिप्रेत नहे ।

पुण्यभूमिः मध्य विह्वल हिमाचली । ” अतएव हिंदू-
 स्थान का नाम “आर्यावर्त” कहना छोड़ कर “भा-
 रतवर्ष” वा “आर्यदेश” बोलना ही युक्ति युक्त है ।
 गोस्वामीजी “हिंदी” भाषा को “मातृभाषा” वा
 आर्य भाषा” कहलाने चाहते हैं, उसमें भी हम
 एकमत नहीं हो सकते हैं । क्योंकि “आर्यभाषा” कहने
 ही से संस्तर समझी जाती है । “बंगाला” “उडिया”
 “तेलुगु” आदिके न्याई “हिंदी” एक प्रादेशिक
 भाषा मात्र है । यदि “हिंदी” को “आर्यभाषा”
 कहीजाय तो बंगाला, उडिया, तेलुगु आदि कौन
 अपराधसे उक्त संज्ञा से वंचित होगी ? “मातृ-
 भाषा” भी कही न जा सकती है । पश्चिमोत्तरदेश
 निवासियों चाहें तो “मातृभाषा” कह सकते, किन्तु
 समग्र भारतवासियोंने उसको मातृभाषा करके नहीं
 मानेगी । “हिंदी” शब्दके बदले दूसरा कोई एक
 विशुद्ध शब्द चल जाय, अर्थात् गोस्वामीजी के न्याई
 हमारी भी एकांत वासना है । “हिंदीभाषा”
 यद्यपि प्रादेशिक भाषा है, तथापि वह भाषा भारत-
 वर्षके प्राय सर्वत्रही यथा कियत परिमाणसे चली
 छुई है और भारतवर्षके हर विभागके निवासीयोंने
 उसभाषामें यथारीति कथोपकथन कर सकते हैं वो
 कहा करते हैं । इस लिये हमारी प्रस्ताव यह है कि
 “हिंदीभाषा” को “आर्यभाषा” वा “मातृभाषा”
 कहना छोड़कर सब कोई उसको “आर्यसाधारण
 भाषा” कहा वो लिखा करें, अथवा और यदि कोई
 इससे सद्भावानुसूल संज्ञा देसके तो कृपा करके
 हमको लिख भेजे, हम आनन्द पूर्वक उसको स्वीकार
 वो ग्रहण करेंगे । “हिंदू” जाति को “हिन्दुधर्मका
 परिवर्तने “आर्यजाति” वा आर्यधर्म” हिंदूस्थान
 के बदलमें “भारतवर्ष” को “हिंदीभाषा” का स्थान
 में “आर्य साधारण भाषा” हर किसही के मूहस
 उच्चारित वो हरके लिखनेहार की लेखनीसे विनि-
 सृत होनेपर शब्दविज्ञान की प्रतिभा करके भारत-
 वर्ष क्रमशः आर्यभाषापर अवश्यही होगी, इसमें
 संदेह नहीं ।

धः प्रः संः ।

मद ।

(सद्पुर उः, बिः, सभासे प्राप्त)

(पूर्व प्रकाशित के आगे)

एवम्-मद नी कुछ सामान्य ज्ञान कारण

इहार प्रभावे धनाधीन ओ भूपतिगण अहंकारे स्कीत हईया धराके शरार मदृश ज्ञान करिया थाकेन । तौहारा दुर्बलके यज्ञना दिते कृति करेन ना । भूपति अन्याय करिया अपरेर सुन्दर राज्य ग्रहण करिते समुत्सुक हयेंन एवं धनी बाजि अपरेर सामान्य सम्पत्ति स्वीय करतले आनिते कृति करेन ना । अपर अपेक्षा आनि कोन अंशे न्यून हईव ना इत्याकार अहंकार सूचक वाक्य प्रयोग करत, सुरम्य हर्षा निर्माण करिया विविध प्रकार कारु कार्य ताहाके सज्जीकृत ओ नानाप्रकार वर्णेर आलोक मालाय प्रखलित करेन । नानावर्णे चित्र विचित्र करिया ताहार शोभा सम्पादन करेन एवं उतामोत्तम चूनि, पान्ना ओ हीरक द्वारा खचित करिया ताहाके सर्वाङ्ग सुन्दर करिया तोलेन । नित्य नित्य नर्तकी आनिया आनोद प्रमोद, गायक आनिया अलील गीत श्रवण एवं प्रतिदिन समवयस्कगणके लईया कृतमित आमोदे कालक्षेपण ताहार जीवनेर मूख्य उद्देश्य बलिया प्रतीयमान हय । अवशेषे तौहार धर्मभाव एरूप शिथिल हईया उठे ये परमपिता परमेश्वर, याहार कृपाय समग्र सुख सन्तोष करितेछेन, तौहाके एकैकारे विभूत हयेंन । ईश्वर्यमदेर परिणाम अति भयङ्कर हईया उठे । पर कालेतरत कथाई नाई, ईहकालेई ताहार विषमय कल लक्षित हईया थाके । कथित आछे ये कोन भूपति वयस्कगणेर तोषागोद वाक्य एरूप स्कीत हईया- छिलेन ये आपनाते परमेश्वरेर कर्मता आरोपित करिते सङ्कुचित हयेंन नाई । एकदा वयस्कगणे परिवृत हईया कोन जलाशयेर तीरे उपविष्ट हईया आछेन, एमन समये पवन सफालित हओराते, तरङ्ग माला बेगे धावित हईया तौहार आसन स्पर्श करिवार उपक्रम करिल । वयस्कगण ईहा अवलोकन करिया तौहाके सन्तोषन करिया कहिल, हे राजन् ! आपनि प्रहृत कर्मताशाली, किन्तु कि आश्चर्य एही जलाशय अवमानना करिवार उपक्रम करितेछे । ईहा श्रवण करतः राजा क्रोधे अधीर चित ओ अहंकारे उन्नत हईया तरङ्ग मालाके प्रतिनिवृत्त हईते आज्ञा दिलेन । क्रमे वात्या बेगे बहिते लागिल । तरङ्ग माला ओ अग्रसर हईते

मही । इसका प्रभावसे धनाध्यक्ष औ भूपतिगण अहंकारसे फुल्लेझए धरिणी को तुच्छ मानतेहैं । उन्होंने दुर्बलोंकी पीड़ा देनेमें कुछभी घुटी नहीं करते । भूपतिने अन्धाय करके दुसरे के सुन्दर राज्य छिन लेने में उत्सुक रहते, वा धनीक गण दुसरेके सामान्य धन सम्पत्ति अपने हाथ लाने चाहते हैं । दुसरे किसही से मैकिसही रीति कीटा न कीगा, ऐसा अहंकार सूचक वचन कह कर, सुरम्य भवन बना करके नामाभाति के कारिगरिसे उसको सजाते वो मानार'दी रोसनी से उसकी उज्ज्वल करते हैं । नानावर्णके चित्रकी विचित्रता करके उसकी शोभा बढ़ाते हैं औ उत्तमीतम चुन्नी, पान्ना, मोतीयोसे सजाकर उसकी सर्वाङ्ग सुन्दर बनालितेहैं । प्रतिदिन नाचनेवालीकी संगकर सुखदेन करना, गायकों की बोलाकर निन्दित गान श्रवण करना, और सर्वदा इयारीकी साथ लिये मजे तमासे से काल बीतावना उनके जीवनका मुख्य उद्देश्य मालूम पड़ताहै । अन्तमें उसका धर्मभाव ऐसा ठीला हो जाताहै कि परमपिता परमेश्वरका, जिनकी कृपासे वे समग्र सुख भोग कर रहैहैं, एकदम निपट भुल जातेहैं । ऐश्वर्य मदका परिणाम अति भयङ्कर होउठता हैं । परकालकीतो बातही कीडदी, इह कालहीमें उसका विषमय फल लक्षित होता रहता है । कहवत है कि कोई राजा इयारीकी खशाबुदी से ऐसा फूले छप्ये कि वे अपनेको परमेश्वर करके मानने लग्ये । एकदा कमजूलियोंके संग किसी जलाशयके किनारे बैठे रहै इस समय पवन देब चलनेपर तरङ्गमाला ने बड़ा विक्रम करके उनका आसन स्पर्शकरणार्थ धावा मारां । इतना देखकर साथीयो ने उनको समोथन कर बोला महाराज ! बड़ी आश्चर्यकी बात है कि आप ऐसे प्रतापी राजा को जलाशयने अपमान करनेका उद्यम कर रहा है । इतना सुनतेही राजा क्रोधसे अधीर चित्त हो अहंकारसे उन्नत हो कर तरङ्ग मालाको हटने की आज्ञा किये । क्रम क्रम ने वायु और भी अधिक जोरसे चलने लगा । तरङ्ग माला भी अग्रयाने लगी । तब राजाका दर्प पुण्य ऊँचा औ साथही साथ उनकी शान भी उदय ऊँचा । उसही समय उनने साथी योंको तिरस्कार करकीले रे पामरो ! राज प्रवाद केलिये तुमकहां तक—न खुशासोद कियाकरते हो । तत्पश्चात परमेश्वरको पुकार के बोले, हे भगवन् !

লাগিল। তখন রাজার দর্পচূর্ণ হইল, এবং সেই সঙ্গে তাঁহার ক্ষণোদয় হইল। তখন তিনি বয়স্যগণকে ভৎসনা করিয়া কহিলেন যে পামরগণ। রাজপ্রসাদ লাভের জন্য তোমরা কি পর্য্যন্তই না তোষাগোদ করিয়া থাক। তাহার পর, পরমেশ্বরকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন যে ভগবন। তোমার আজ্ঞাতেই বায়ু সঞ্চালিত হইয়া থাকে এবং জলাশয় তোমারই অলুঙ্ঘ্য অরণ্য করে। আমি যেমন অহঙ্কার করিয়াছিলাম তেমনি তাহার ফল পাইলাম। এখন কৃপা করিয়া আমার অপরাধ ক্ষমা কর।

“বিদ্যামদেও” অনেকে উন্মত্ত হইয়া থাকেন। আপনাকে সন্নিধ্যান বিবেচনা করিয়া অনেকে অহঙ্কারে ক্ষীত হইয়েন। অপরকে মূর্থ জ্ঞান করিয়া হেয়জ্ঞান করেন। এবং বলিতে কি তাহাদের মস্তিষ্ক একত্রে বসিতে তাঁহার মনের মধ্যে দ্বার উদ্বেক হয়। আপনি যাহা রচনা করেন তাহাই উৎকৃষ্ট, আপনি যে উপদেশ প্রদান করেন তাহাই গ্রহণ যোগ্য, এবং আপনি যাহা সিদ্ধান্ত করেন তাহাই যুক্তি সম্মত। ইত্যাকার অহঙ্কার পূর্ণভাবে তাঁহার অন্তঃকরণ মধ্যে সঞ্চিত হয়। এই নিমিত্তই দুই জন ব্যক্তি বিদ্যামদে উন্মত্ত হইয়া বাকযুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়েন। কেহ কোন মতে ন্যূনতা স্বীকার করেন না বলিতে কি, তাঁহার যুক্তি অসার তিনি তাহা বুঝিতে পারিয়াও পরাজয় স্বীকার করিতে লজ্জা বোধ করেন। বিদ্যামদ একটি বিশেষ অনিষ্ট উৎপাদন করে। ইহার প্রভাবে কেহই ধর্মের প্রতি শিথিল ভাব প্রদর্শন করেন। কোন ভক্তি-ভাজন ধর্মপরায়ণ ব্যক্তি বিদ্যাতে তাঁহার সমকক্ষ না হইলে তাঁহারা তাঁহার জ্ঞান গর্ভ বাক্য সকল অরণ্য বা গ্রহণ করিতে লজ্জা বোধ করেন। তাঁহারা কহিয়া থাকেন ঈশ্বরের অস্তিত্ব, তাঁহার বিভূতি সকল নিরূপণ এবং পরকালের ভাব তৎকাল হইল জ্ঞাত হইয়াছি। এখন আর এ সকল বিষয়ের আন্দোলন করিয়া কি ফল হইবে? যে বিদ্যা অন্তঃকরণকে উজ্জ্বল করিবে, যাহার প্রভাবে, মন বিনম্র ভাব ধারণ করিবে এবং যাহার অনুশীলনে পরমেশ্বরের প্রতি ভক্তির উদ্বেক হইবে, সেই বিদ্যার দ্বারা যদি বিপরীত ফল উৎপাদন হইল, তাহাকে অকৃতবিদ্য ব্যতীত আর কোন আখ্যা প্রদান করা যাইতে পারে।

বর্তমান সময়ে পদ গৌরব সামান্য পরাক্রম প্রকাশ করিতেছে না, যে মনুষ্য পল্লী মধ্যে অথবা হাভ্যন্তরে মিষ্টভাবী ও বিনয়ী বলিয়া পরিচিত, তিনি কার্যালয়ে প্রবেশমাত্র ভীষণমূর্ত্তি ধারণ ও

আপনীর আশ্রয় করিতে বাধ্যবলী হই যৌ জলাশয় আপনীর আশ্রয়মান কিয়া করতা ঐ। মৈ জীও অহঙ্কার কিয়াথা ত্যৌহী ওসকা ফল পায়া। অব কৃপা করকি মেরা অপরাধ ক্ষমা কীজিয়ে।

“বিদ্যামদ” যে মী কিতনে লোগ উন্মত্ত হী জাতে হৈ। অপনেকী বড়া বিদ্যাবান সমর্থে বহুতের লোগ ফুলে ন সমাতে হৈ। দূসরেকী মূর্খজানকর তুচ্ছ মানতে ঐসা কি ওনকে সাথ একত্রে বৈঠনে মৈ মী ওনকী গুণা বুঝ পড়তি। বিখয় জী কুছ রচনা করতে সীহী ওচম হৈ, খয় জীকুছ উপদেশ দেতে সীহী যত্ন যোগ্য হৈ, খয় জীকুছ সিদ্ধান্ত করতে সীহী যুক্তি যুক্ত হৈ, ইমহাতি অহঙ্কার পূর্ণভাবে ওনকা অন্তঃকরণ মৈ সমাতি হৈ। ইমহী লিয়ে দোপুরুষ বিদ্যামদ সে উন্মত্ত হীকর বাগ্যুত্তরে প্রহত হৌতে হৈ। কীহু কিসহী তরহে ঘট নহী মানতে। ঐসাকি জিনকী যুক্তি নিপট অসার হৈ বে ইতনা জানিভৌ পবাজয় মান নকী লজ্জাবোধ করতে হৈ, বিদ্যামদ সে আর এক বিশেষ ছানিভৌ পছঁচতি হৈ। ইমহী প্রভাবে সে কিসহী কিসহীকা ধর্মভাব মী শিথিল হীজাতা হৈ কীহু ভক্তি-ভাজন ধর্ম-পরায়ণ পুরুষ মী যদি বিদ্যামে ওনকে সমকক্ষ নহ তৌ সে ওন মহাত্মাকী জ্ঞানগর্ভ বচন শুনিবা মানলেনে মৈ লজ্জাবোধ করতে হৈ। ওননে ইমতরহ কহা করতে হৈ, কি ঈশ্বরকে অস্তিত্ব, ওনকী বিমূর্ত্তিয়ার নিরূপণ আর লোককা তত্ততৌ বজ্রত দিন সে জানতে হৈ, তৌফির ওন বিষয়কী চর্চা সে ক্যাছৌগা। জিসবিদ্যানে অন্তঃকরণকৌ উজ্জ্বল করনিবালী হৈ, জিসকৈ প্রভাবে মন বিনম্রভাব ধারণ কিয়া করতা হৈ, জিসকী চর্চা সে ইশ্বরকে আর ভক্তি উপজনিবালী হৈ, ওসহী বিদ্যামে যদি বিপরীত ফল জয়াতৌ ওসকী “অকৃতবিদ্য” কীহুকে আর কৌন আখ্যা দীজা সক্তি হৈ।

বর্তমান কালমৈ “পদ গৌরব” মী কুছ সামান্য পরাক্রম প্রকাশ নহী কর রহা হৈ। জিস পুরুষনে মৈ মৈ বা ঘরমৈ মধুর মাধৌ বী বিনয়ী করকৈ প্রসিদ্ধ হৈ, বহী পুরুষ ফি জব কার্যালয় (অফিস) কৈ

নিম্নস্থ কর্মচারীগণকে অবজ্ঞা করেন। অনেক সময়ে তাঁহাদের উপর অকারণে অত্যাচার করিয়া থাকেন। এবং বলিতে কি, তিনি সহকারীগণ অপেক্ষা শ্রেষ্ঠজীব, এবং প্রকার ভাব প্রকাশ করেন দুঃখের কথা কি কহিব, অপরের প্রতি অত্যাচারকে ভিত্তিস্বরূপ করিয়া তাহার উপর নিজ প্রভুত্ব সংস্থাপন ও উন্নতি করিতে যত্নবান হয়েন। আমাদের বিজাতীয় প্রভুগণের ভাব দেখিয়াত কেহ কেহ অত্যাচারকে তাঁহাদের উন্নতির মৌপান বিবেচনা করেন। প্রভুগণ আড়ম্বর প্রিয়, ধুমধাম দেখিলেই তাঁহারা সন্তুষ্ট হয়েন, সুতরাং যে প্রধান কর্মচারী তাঁহার অধীনস্থ কর্মচারী গণকে তিরস্কার করেন, তিনিই কর্ত্তে দক্ষ ও পুরস্কারের যোগ্য বলিয়া বিবেচিত হয়েন। সকলের ইহা স্মরণ রাখা উচিত যে, মিষ্ট বচনেও শিষ্ট ব্যবহারে যে প্রকার দক্ষিণ কাগ হওয়া যায়, অথবা আচরণে তাহার দশ অংশের একাংশ সংসাধন হয় না। কি সমযোগ্য কি নিম্ন শ্রেণীস্থ সকলকে প্রীতি শৃঙ্খলে বদ্ধ রাখা উচিত। নতুবা কোন প্রকারেই হুচরু ফল উৎপাদন হইতে পারে না। কিছু দিন উত্তম রূপে কার্য্য নিক্ষেপ হইতে পারে, কিন্তু গোপন ভাবে যে বিদেবরূপ তরু নিম্নস্থ কর্মচারীগণের অন্তঃকরণে রোপিত হয় তাহা হইতে পরিণামে বিষময় ফল উৎপন্ন হইয়া থাকে। কেহ বিবেচনা করেন যে, তিনি প্রভুর প্রিয়পাত্র। তিনি যাহা করিবেন তাহাই হইবে। কাহার সাধ্য তাঁহার আজ্ঞা অবহেলা করেন? দুঃখের কথা কি কহিব, কেহই পরিণাম দৃষ্টি করিয়া কার্য্য করেন না। যে প্রভুর বলে বলীয়ান হইয়া এত আশ্বালন করি, তিনি কি চিরকাল এক স্থানে থাকিবেন? এবং যে পদের এত গৌরব করি সে পদ কি চিরস্থায়ী? পদচ্যুত হইলে লোকের নিকট কি ভাবে প্রতীয়মান হইব, তাহা সর্ব্বাণ্ড্রে আলোচনা করা উচিত। আমার এ স্থানে একটি বহুকালের কথা স্মরণ হইল। কোন কর্মচারী তাঁহার আসনের সমক্ষে নিম্ন লিখিত কবিতাটি লিখিয়া রাখিয়াছিলেন।—

“পদহীন হলে পরে বিষম বিপদ।

তাই বলি পদ প্রেয়ে করনাকো মদ ॥

সুখোভিত হইতে হৈ তো ময়'কর মূর্খি'ধারণা' অধীন কর্মচারী'য়' কো' অবজ্ঞা করিতে হইতে হৈ। কিতনে সময়, হৈতু বিনামী' অন্তর্ভ'পর' অত্যাচার কিয়ে করিতে হৈ। এ'সা' কি' বে' অপনেকী' সহকারী'য়'কে' কী'দ' প্রধান জীব' কর'কে' মান'তে। দুঃখ'কী' বাত' ক'য়া' ক'হ'ং, উ'হ'ক'ো' পর' অত্যাচার' কর'কে' প্রভূ'বন' নে' অ'নি' নিজ' উন্নতি' কর' নেক'ো' চাহ'তে'হৈ। হ'মারে' বিজাতীয়' প্রভূ'য়'ক'ো' মা'ব' দেখ'কর' ম'ী' কী'দ' ২' য'হ' স'ো'চ'তে' হৈ' কি' দু'স'রে' পর' অত্যাচার' কর'নে' হ'ী' সে' উন্নতি' হ'ই'তী' হৈ। প্রভূ'গ'ণ' আড়ম্বর'কা' প্রেমী' হৈ, ধুমধাম' ম'চ'ানে' হ'ী' সে' বে' স'ন্তুষ্ট' হ'ই'তে' হৈ, সু'তরা' অন'কে' জ'িস' প্রধান' কর্মচারী' নে' অপ'নে' অধীন' কর্মচারী' য'ক'ো' তিরস্কার' কর'তে' হৈ, উ'হ'ী'ক'ো' কা'র্য্য'নি'পু'ণ' অ'ী' পুরস্কা'র'ক'ো' যোগ্য' কর'কে' সম'ঝে' জা'তে'হৈ। সব'ক'িস'হ'ী' কী' ই'ত'না' স্মরণ' কর'না' উ'চিত' হৈ, জ'ো' মি'ঠা' ব'চন' অ'ী' স'দা'ব'হা'র'সে' জ'িস' মা'তি' কাম' মিল'তা'হৈ' বল'প্রকাশ' কর'নে' সে' উ'স'কা' দ'শা' য'ম'ী' হ'ী'না' ক'ঠিন' হ'ই'ত' হৈ। নিজ' অ'থ'বা' নী'চ' জ'িস' ক'িস'হ'ী' অ'ণী'কা' পুরুষ' ন'হ'ী' সব'ক'ো' প্রেম'কী' ড'োরী'মে' ব'ন্ধন' কর' র'স্ত'না' চাহ'দিয়ে। ন'হ'ী'ত'ো' ক'িস'হ'ী' উপা'য়' মে' সু'চারু' ফল' মিল'নে'বা'লা' ন'হ'ী' হৈ। ক'ি'ছু' দিন' উ'ত্তম' মা'তি' কাম' চল' স'ক্তা' স'হ'ী', কিন্তু' অধীন' কর্মচারী' য'ক'ো' অন্তঃকরণ' মে' গুপ'চুপ' বি'দে'ষ' রূপ' ত'রু' রোপা'জা'তা'হৈ, উ'স'মে' অন্ত'মে' বি'ষ'স'য়' ফল' উ'ত্পন্ন' হ'ই'ত' হৈ। কী'ছু' এ'সা'ম'ী' বি'চা'র'তে'হৈ' ক'ি'বে' প্রমূ'কে' চা'র'হৈ, ব'জ'ো' ক'ি'ছু' কর'ংগে, স'ো'হ'ী' হ'ই'গা। ক'িস'কা' সামর্থ্য' হৈ' কি' অন'কী' আ'শা' ক'ো' ঠা'রে! দুঃখ'কী' বাত' ক'য়া'ক'হ'ং, কী'ছু' অন্ত' বি'চা'র'ক'ো' কাম' ন'হ'ী' কর'তে' হৈ। জ'িস' প্রমূ'কে' বল' সে' বল'বান' হ'ই'ত' ই'ত'না' ত'ড়'প' র'হা'জ'ং, বে' ক'য়া' ব'রা'ব'র' এক' জগ'ত' মে' র'হ'ি'গা ১ অ'ী' জ'িস' পদ' পা'ক'র' ই'ত'না' গ'র্ব্ব' কর' রা'জ'ং ব'জ' পদ'ম'ী' ক'য়া' চি'র'স্থায়ী' হৈ ১ পদ'সূ'ত' হ'ী'নে'সে'ল'োগ'নে' সু'ঝে' ক'ৈ'সা' সম'ঝে'গে, য'হ' বি'চা'র' প'ছ'লে'হ'ী' কর'না' চাহ'দিয়ে। ই'স'স্থান'মে' মে'র' ব'জ'ত' দিন' কী' এক'বা'ত' স্মরণ' পড়'ী। ক'িস'হ'ী' কর্মচারী'নে' অপ'নে' বৈ'ঠ'নে' কা'জ'গ'ত'ক'ো' সমু'খ' ই'স' কবিতা'ক'ো' লি'খ' রাখ' হ'ই'ত' হৈ।

ন করি বড়াই কহু'দোহি'ন বিচারিয়ে

ছোড়'দ'ো' সম্মদ'স'দ' হ'দ' কাল' নে'ছা'রিয়ে ॥

सम्पत्तयः सह सदा विपदा विधान ।

करौना करौना कहु श्रेष्ठतार भान ॥

‘ এই কবিতাটি সকলের অন্তর মধ্যে অঙ্কিত করিয়া রাখা উচিত ।

“ধর্মমদ” সর্কাপেক্ষা অধিক অনিষ্ঠজনক । ইহাতে উন্মত্ত হইয়া এক সম্প্রদায়কে নিন্দাবাদ করিয়া থাকেন । গ্রামিণ সূচক বাক্য সকল কখন, কখন প্রকাশ পায়, কখন অপ্রকাশ্য বক্তৃতায় এবং কখন বা পুস্তকেও প্রকটিত হইয়া থাকে । এক সম্প্রদায় ভুক্ত ব্যক্তি অপর সম্প্রদায়ের ব্যক্তির সহিত বাক্য যুদ্ধ করিয়া থাকেন এবং উভয়ের মধ্যে কটু বচন সকল প্রয়োগ হইয়া থাকে । আমি যে ধর্ম অবলম্বন করিয়াছি ইহাই শ্রেষ্ঠ ধর্ম, ইত্যাকার অহঙ্কার পূর্ণবাক্য প্রয়োগ করিয়া অপরকে অদলভুক্ত করিবার জন্য অগায় উপায় পর্যন্ত অবলম্বন করেন । এবং অণের অবলম্বিত ধর্ম বৈ নিকৃষ্ট ইহা সপ্রমাণ করিতে গিয়া তাঁহার উপাসিত দেবতার কত নিন্দা করিয়া থাকেন । আমি অতি ধার্মিক, এই ভাবে ক্ষীত হইয়া অপর ধর্মাবলম্বীদিগকে অতিশয় ঘৃণা করেন, এবং তাঁহারা সচ্চরিত্র ও মহা মনা হইলেও এক ধর্মান্ধ্রান্ত না হন বলিয়া তাঁহাদের সহিত বাক্যালাপ করিতে ইচ্ছা করেন না । এমন কি পিতা মাতা ও আত্মীয় স্বজন ইত্যাদির দ্বারা বাল্যকাল অবধি বিশেষরূপে উপকৃত হইয়াছেন, তাঁহারা ভিন্ন ধর্মাবলম্বী হইলে তাঁহাদের প্রতি কর্তব্য কর্ম বিস্মৃত হয়েন । অধিক কি বলিব, ঈশ্বর লাভে উন্মত্ত হওয়াও দোষের বিষয় । অবিহিত বা স্বেচ্ছা প্রবৃত্তি সন্ন্যাস ধর্মাবলম্বীগণই তাহার দৃষ্টান্ত স্থল * তাঁহারাও তাঁহাদের কর্তব্য কর্ম উপেক্ষা করিয়া পরম পিতার প্রীতি লাভ করিবার অভিলাষ করেন । কিন্তু ইহা তাঁহাদের বিষম ভ্রম । পিতা মাতার প্রতি, পরিবারের প্রতি, আত্মীয় বন্ধুগণের প্রতি এবং সমাজের প্রতি যাহা যাহা কর্তব্য তাহা উপেক্ষা করিয়া ঈশ্বরকে লাভ করিবার আশা করা ছুরাশামাত্র । অনেকে সংসারে থাকিয়া ধর্ম ধর্ম করিয়া একরূপ উন্মত্ত হয়েন যে, কেবল বক্তৃতার দ্বারা ধর্মপ্রচার

ভুট যহু সম্মদ তেরা আপতকা खनरे

सुभ सुभ देख तुकी भांलि भांलि जानरे ॥

हर किसही को चाहिये कि इस कविताको खुब स्मरण रखे ।

“ धर्म-मद ” सबसे अधिक हानी कारक है । इससे उन्मत्त होकर एक सम्प्रदाय दूसरा सम्प्रदायकी निन्दा किये करते हैं । कभी प्रकाश्य संवाद पत्रमें, कभी प्रकाश्य वक्तृता में, कभी पुस्तक में भी गाली बकते रहते हैं । एक सम्प्रदायकी लोग दूसरे सम्प्रदायोंसे विचारते हैं औ दोनों परस्पर कुवचन भी बीला करते हैं । मैजो धर्मकी अवलम्बन कियाहुं, सोही अच्छ है, इतना अहङ्कार पूर्ण वचन से दूसरेकी अपने सम्प्रदाय में लानेके निमित्त अन्याय उपाय अवलम्बन करना कबूल करते हैं । औ दूसरेके अवलम्बन किये हुए धर्मकी निकृष्टता प्रमाणार्थ उनके उपास्य देवता कोभी कितनी निन्दा करते रहते हैं । अपनी धार्मिकताकी फुला न समाये दूसरे धर्मावलम्बीयों के अत्यन्त घृणा करते हैं औ यदि वे सच्चरित्र औ महामना भीहों तब भी समधर्म होने बिना उनसे वाक्कालाप भी करनेको इच्छा नहीं करते हैं ऐसा कि पितामाता औ आत्म सम्बन्धी गण, जिन्हो ने लड़क पनसे वल्लत उपकार करतेआये, उहोंके ओर भी निज कर्तव्य भूलजाते हैं । अधिक कहा तक कहा जाय, ईश्वर लाभार्थ उन्मत्त होनाभी बड़ादोष करके प्रसिद्ध होता है । अविहित औ स्वेच्छा प्रवृत्त सन्न्यासीयोंही इसका दृष्टांत का (१) स्थल है उहोंने निज २ कर्तव्य धर्मकी उपेक्षा करके परमपिताके प्रेम चाहा करते हैं । किन्तु यह उहोंके विषम भ्रम है । पितामाताके ओर, पुत्र परिवारादिके ओर, मित्र स्वजनोंके ओर और समाजके ओर जिस २ भांति कार्य करना चाहिये, वे सब उपेक्षाकर ईश्वर लाभार्थ आशाकरना दुराशा मात्र है । वल्लतेरेलोग युद्धायममें रहकर “ धर्म ” धर्म ” करके ऐसा उन्मत्त होते हैं कि उनहोंको केवल वक्तृताही मे धर्म प्रचार करनेका टेम्बाजाता है । किन्तु उन्हींको जी और भी गुरुर कार्य काना है, संभूल

(१) छद्ममे प्रवृत्त मैरात्र उदय नीने पर सन्न्यासी विधि नि ध की कर्तव्य हकमें चित समाधान कर सक्ते हैं । इसमें अविदुषार वे निन्दित नहीं ।

*सदये प्रकृत वैराग्योऽय उदय हईले सन्न्यासी विधि नियम परित्याग करिया अक्के चित्त समाधान करिते पावैन, इहाते शास्त्राह्वाने तिनि निमित्त नहैन । धः प्रः २९

करिंते तांहादिगके समुत्सुक देखा याय । किन्तु तांहादेर ये अग्रान्य गुरुतर कार्य आछे तांहा विस्तृत हयैन । अनेके धर्मेर उग्रावताय मार कार्य विस्तृत हईया मुखे धर्मेर आडम्बर करिया थाकेन । मनेर पौडलिकता दूर करी दूरे थाक् बाह्यिक पौडलिकतार जना अधिक बग्रेता प्रकाश करेन । कोन कोन ब्राह्म ईहार दृष्टान्त हल । पिता माता कोन पौडलिक कार्य करिवार जना साहाय्य प्राप्ति करिले तांहा प्राप्ति करी हय ना । एदिके अन्तःकरण पापचित्तय परिपूर्ण एवं मनोमध्ये अहंकार सम्पूर्ण । किन्तु एताव कार्योतेओ प्रकाश पाईया थाके । धर्मेर उग्रावता हईले अधिक आडम्बर लक्षित हय । ईहाओ दोषेर कारण, एवं एही आडम्बरेर वेग अवरोध करिंते ना पारिया अनेके उपधर्मेर आश्रय पाईया थाकेन । उपरे याहा विस्तृत हईल, तन्तिन अनेक विषयेई मदेर कार्य देदीप्यमान आछे । केह रूपेर मद, केह गुणेर मद एवं केह केह कोन सकार्य करियाओ मनोमध्ये अहंकार करिया थाकेन । विनि मच्छरित्र, तिनि अपरेर सहित आपनार तुलना करिया मने मने अहंकार करिया थाकेन । एताव अन्तःकरणे उदय हईया परस्परणेई ज्ञान एतावे विलय प्राप्ति हईया याय । किन्तु ये मदमग्नाता उदपादन करे, सेई मदई विदम भयावह । एमन कि, मदगुणेर मग्नाता ओ अनिष्ट जनक । विनि दयागुणे मग्ना हयैन तिनि दान करिया ए प्रकार मर्क्यास्तु हरेन ये, परिणामे परिवार प्रतिपादन ओ तांहार पक्षे भारबोध हईया उछे । विनि क्रमतागुणे मग्ना हयैन, तिनि अति जघन्य व्यक्तिर प्रति क्रमा प्रकाश करिया, प्रकृत पक्षे निर्दोषी व्यक्तिर उपर अमथा व्यवहार करेन, एवं मतेरओ अप-लाप करेन ।

कोन विषयेई मग्नाता श्रेयकर नह । मद उग्राव हईले आमादेर स्मरण राखा कर्तव्य, आमा कोन प्रकारई अहंकार करिंते पारिया ना । वेहेतु आमा अति निकट जीव एवं यांहा किछु प्राप्ति हईयाछि तांहा जेस्वर प्रमादां । एवं ईहाओ आमादेर स्मरण राखा उचित नै, कांनेर कदाल कबले पतित हईले आमादेर समुद्र अहंकार चूर्ण हईवे

जाते है । वज्जतेरे लोग ऐसेभी है कि धर्मात्म्यता करके सार कार्य भूलकर वाचनिक धुम धाम मचा रहे है । मनकी रची ऊँड़ खूल भूर्ति की सेवा कीटना तो फिनारे रहगयी । वाचरकी मूर्ति पूजा उठावनेके अर्थ अधिक व्यग्रतां देखाते है केह २ ब्राह्म इसके दृष्टांत है । पितामाता मूर्ति पूजा सम्बन्धी कोई कार्य की अर्थ यदि कुछ सहायता चाहे तो ब्राह्म नहीं किया जाता है, फिर देखो तो उनके अन्तःकरण ऐसा है जो पाप चिन्तासे परिपूर्ण औ चित्त अहंकारसे फुलाऊआ है, कार्य कालमें भी ऐसा देख पड़ता है । धर्मकी उन्नतता करके बहुत आडम्बरका प्रकाश होना भी दीपावह है और वज्जतेरे लोग इस आडम्बर की गति रोकनेमें असमर्थ होकर किसही उप धर्मका आश्रय लेलते है । ऊपरमें जितना लिखा गया है उतना छोड़के और भी वज्जतेरे विषयमें मदका कार्य देख पड़ता है । कोई तो रूपलावण्यका मद, कोई तो गुणादिका मद औ कोई २ किसी उत्तम कार्य करके भी अहंकार न समाता है । जो सुचारित है, वे दुसरे की बराबरीसे अपनी बड़ाई करते है, इतनी बातें अन्तःकरण में उठकर जगभरमें ज्ञानका प्रभावसे विलीन हो जाती है ; किन्तु जिसभांति मदने उन्नतताको उत्पादन करता है, वही मदही बड़ा भयंकर है । ऐसाकि, माना सद्गुण की उन्नत ज्ञान जनक है । जोने दया गुणमें उन्नत होता, वे दान करके ऐसा निःस्व होजाते कि अन्तमें उनके स्त्री पुत्रादिको पालन करना भी भार बुझ पड़ता है । जोने क्षमागुण से उन्नत ऊँडा, वे अत्यन्त घृणित पुरुष को और क्षमा प्रकाश करके यथार्थतः निरपराधी व्यक्ति के ऊपर अनुचित व्यवहार करते औ सत्यमें भी बुराई डालते है ।

किसही विषय में उन्नत होना अथियस्कर नहीं मदसे उन्नत होनेपर हमको स्मरण रखना चाहिये जो हम किसही प्रकार से अहंकार नहीं कर सके है, क्योंकि हम सब अति मित्रज जीव है, और जोकुछ मिला है सबही ईस्वरकी कृपा करके जानवा और भी स्मरण करना चाहिये जो कालके कराल कबल में गिरनेसे हमारे समस्त अहंकार कूर्ण हो जागा ।

कि भयानक अत्याचार !!!

गत वर्ष हईते आर्यधर्मावलम्बीगण यावनिक अत्याचारे निरतिशय निर्वातनग्रस्त हईतेछैन । कोमलहृदय आर्य-सन्तानगणेर एकमात्र आशाहल दुर्बलैर बल ब्रिटिशसिंह यदि राजभक्त प्रजापुत्रेण दूरीकरणार्थ दुर्दलन समर्थ बाह्य प्रसारण ना करेन, ताहा हईले आर्यवंशीयवर्गेर गत्यन्तर नाई एवं ब्रिटिश केशरी वीरकुल कलङ्क बलिग्रा सागरान्वरा धरा मण्डले निन्दित हईबेन । मुस्ली इन्द्रमणिर विरुद्धे यवनदिगेर अवस्था अभिव्योगेर विवाद विषाग्निमय विचारकल स्मरण करिले एतनउ हृदयना उपहिता हर । भागलपुर, काशी, मिर्जापुर, जयानपुर, आदि आर्यप्रधान स्थाने गोहत्या जग्य यवनार्थ विग्रहे मर्कटहृदये यवन पक्षपातिहृदयने दुर्बल आर्य प्रजागणेर मनःपीडा जगि-याछे । सम्प्रति आचार सन्वादपत्र पाठे शरीर रोमाञ्चित, हृदय विकम्पित उ मस्तिष्क विधूर्णित हईग्रा उठिन । भागलपुरे आर्य मुसलमानदिगेर मध्ये एकटा हृदय विद्रोह उपहिता हईग्राछे । तथैकार अनुदार प्रकृत क्षुब्धवृत्ति नवाव यवधर्म पक्ष रक्षार्थ आदेश करिग्राछैन ये, आर्यदिगेर देवमन्दिरमाला भूमिशायी उ मूर्तिशुद्धि भय करिते हईवे तदुपरे मुसलमानगण प्रयाव करिग्रा दिवे । अहो ! एतावन् लिखिते उ आमादिगेर लेखनी अपवित्रा हईल । हा कालापाहाड ! तोगार चिर कलङ्कितशक्ति कि एतनउ ए पवित्रधाम परित्याग करे नाई ! अहो ब्रिटिशसिंह आज तोगार नम्रुथे तोगार शान्तिमय राज्ये तोगारई ललित एकटा हृदय युग शिशुर एत विक्रम ! एत दर्प ! एत स्पर्का ! ये तोगार निरीह प्रजापुञ्जेर धर्महानिर मद्दे मद्दे ताहादेर धर्मशोणित पान करिते लागिल । तूमि कि शरणगतगणेर सहायक नउ ! हा भारते-श्वरि ! तोगार सम्राज्यी उपाधि कि केवल आमादिगेरई जग्य ! ईदृश अत्याचारकारीवर्गेर दर्प दलनार्थ नहे ! ! भारत ! तोगार वैधर्म्य, भक्ति उ सेवार कर्तु जग्यई धर्मेर एई दुर्लभा घटितेछे, सावधान, सावधान ! हे परमात्मान ! एई घोर विप्लव काले भारतके मर्कटथा निरुपद्रव करिग्रा देउ ।

क्या भयङ्कर अत्याचार !!!

विगत वर्षसे आर्य धर्मावलम्बीगण यवनोकी अत्याचार से अत्यन्त क्रोधित हो रहे हैं । कोमल हृदय आर्य सन्तानोंकी एकमात्र आशाकी स्थल दुर्बलोंकेवल ब्रिटिशसिंह यदि राजभक्त प्रजा-पुत्रोंके दुःख दूरीकरणार्थ दुर्दलन समर्थ अपने बाहु न पसारेंतो आर्यवंशीयोंकी ओर कुछ भी गति नहीं देख पड़ती है, औ सागरान्वरा वसु-न्धरा ब्रिटिशसिंह को भी “वीर-कुल-कलङ्क” इस भान्ति पूकारतो ऊई निन्दा करती रहेगी । मुस्ली इन्द्रमणिके विरुद्ध में यवनोंने जो अन्याय अभियोग उठायेथे उसका विषाद-विषाग्निमय विचार सिद्धान्त स्मरण करके अवतक भी खेद नहीं समायाजता है । भागलपुर, काशी, मिर्जा-पुर, जौनपुर आदि आर्य प्रधान स्थानोंके जहां जहां गोवधके निमित्त यवनार्थ विग्रह मचाया, उन सर्वत्रही यवनोके ओर पक्षपात देख देख कर दुर्बल आर्यप्रजाओंके मन में बड़ाही खेद का उदय हुआ । फिर सम्वादपत्र पढ़कर हमारे शरीर तो रोमाञ्चित, हृदय विकम्पित औ मस्तिष्क मण्डल विधूर्णित हो उठे हैं । वहावलपुरके आर्य औ मुसलमानोंके मध्य में बड़ी लड़ाई मच गयी । वहांके अनुदार प्रकृति क्षुब्धमति नखावने स्वधर्मपरवर्तार्थ यह आज्ञा दी है, कि आर्योंके देव मन्दिरें गिरायेजावें, मूर्तियाँ तोड़ी जाय औ मुसल-मान उनपर प्रस्ताव कर दें ! ! ! अहो ! इतना लिखते भी हमारी लेखनी अपवित्र हो गयी । हा कालापाहाड ! तेरी चिरकलङ्कित शक्ति क्या अवतक भी इस पवित्र धामको न छोड़ी ? अहो ब्रिटिशसिंह ! तेरे समुख, तेरी शान्तिपूर्ण राज्य में, तेरा पाला हुआ एक लुट्ट मृग-मिश्र का इतना विक्रम, इतना दर्प औ इतना खड्गा है, जो तेरे निर्दोष प्रजा पुञ्जकी धर्महानि के साथही साथ उन्हींके धर्म शोणित पीने लगा ! तु क्या शरणागतोंके सहायक नहीं है । हा भारतेश्वरि ! तेरी “सम्राज्यी” यह उपाधि क्या केवल हमारे ही लिये बनी है ! इन दुराचारियोंके दर्प दल-नार्थनहीं ! ! हे भारत ! तेरी वैधर्म्यभक्ति औ सेवा घट गयी, अस्माक धर्मकी यह दुर्दशा होरही है, सावधान ! ! सावधान ! हे परमात्मान ! इस घोर विप्लवके समय भारतकी सर्वथा उपद्रव शून्य कीजिये ।

রাজকীয় ঘোষণা ।

ক। আমি প্রত্যেককে (উর্দ্ধহস্তে উর্দ্ধঃস্বরে) সম্বোধন করিয়া বলিতেছি যে রাজদ্রোহীদের দমন জন্য আমি নিযুক্ত হইয়াছি। রাজ রাজেশ্বর শ্রীমন্মহারাজের আদেশ রাজলিপিতে (১) প্রকাশিত আছে; শীঘ্র রাজনীতিজ্ঞ অধ্যাপকগণের (২) নিকট রাজবিধি বিদিত হও ও তদনুসারে কার্য করিতে থাক। যে সকল পাপও দোষ প্রতাপ রাজাকে অবজ্ঞা পূর্বক তাঁহার বিরুদ্ধবাদী বা বিদ্রোহী হইবে, আমি তাহাদিগকে ঘোর অন্ধকার-ময় কারাগারে (৩) অবরুদ্ধ রাখিব ও প্রচণ্ড প্রহার দণ্ডে তাহাদিগের উন্নত মণ্ড চূর্ণ করিয়া দিব।

খ। বাহারা রাজমিঃহাসনে বলপূর্বক অগ্ন্যধিরোহণ করিতে চেষ্টা করিবে (২) অথবা রাজ সম্পত্তিতে নিজ অধিকার বিস্তার করিতে বাইবে, (৩) আমি রাজাজ্ঞার প্রবল পদাঘাতে তাহাদিগকে হতচেতন করিয়া ফেলিব।

গ। বাহারা নিয়মিত সময়ে রাজস্ব-সচীবের (৬) নির্ধারিত নিজ নিজোচিত কর (৭) প্রদান না করিবে, আমি তাহাদিগকে প্রজ্বলিত হত্যাশন কুণ্ডে নিক্ষেপ করিব।

ঘ। বাহারা রাজার বা রাজস্ব-সচীবের বা রাজভক্ত প্রজার (৮) বিরুদ্ধে কোন কথার ভ্রমণাও করিবে, আমি তাহাদিগকে কীটাকীর্ণ পুরিষকুণ্ডে অধোগুণ্ডে প্রোথিত করিয়া রাখিব।

সাবধান ! সাবধান !! সাবধান !!!

যমলোক । } রাজানুজ্ঞাকারী
কালরাত্রি } দুর্জয়ন-দর্প-দলন দণ্ডধর বম।

প্রাপ্ত পুস্তক সমালোচনা ।

১। উপনিষদভূক্তয় (শ্রীগোপীচন্দ্রনোপনিষৎ, শ্রীভুলসীমালোপনিষৎ, শ্রীহরিনামোপনিষৎ, শ্রীরাধিকোপনিষৎ)। আশাদিগের বৃন্দাবনস্থ পরম বন্ধু শ্রীকাম্পদ শ্রীযুক্ত রাধাচরণ গোস্বামী মহাশয় কর্তৃক

- (১) প্রতি । (২) বেদবেদান্ত সঙ্গগ্রন্থকথ ।
(৩) গর্ভবাস ও তনোময় নরক ।
(৪) “অহংকর্তা, অহংভোক্তা” ইত্যাকার অভিমান ।
(৫) “স্বীপুত্রাদি আমার” ইত্যাকার বোধ ।
(৬) সৎগুরু । (৭) ভগবৎপ্রাপ্তি । (৮) বাধু মহাত্মাগণ ।

সরকারী টিপ্টোরা ।

ক। মৈ হরকিসহী কী (হাত উঠায়ে উঁচী স্বরমে) প্রকার কর কহতাছঁ জো রাজদ্রোহী দলকা দমনার্থ মৈ, নিয়ত জ্ঞায়া নে। রাজ রাজেশ্বর শ্রীমন্মহারাজ কে আদেশ রাজলিপি মৈ (১) প্রকাশিত হৈ। শীঘ্রহী রাজনীতি কে অধ্যাপকো- (২) কে নিকট রাজবিধি বিদিত হোলো অৌ তদনুসার কার্যপ্রকরতে রহৌ। জিতনে পাপসুদ নে দৌর্দণ্ড প্রতাপ রাজাকো অবজ্ঞা পূর্বক উনকা বিরুদ্ধবাদী বা বিদ্রোহী হোগা, মৈ উনহৌ কো ঘোর অন্বকারময় কারাগার মৈ (৩) বন্দকর রখুজ্জা অৌ প্রবল প্রহার দণ্ড মে উনহৌকে উন্নত মস্তাকৌকো বিচূর্ণকর হুংগা।

খ। জো লোগ বলপূর্বক রাজমিঃহাসন পর স্বয়ং অধিরোহণ করনেকী চেষ্টা করেজ্জ (৪) অথবা রাজসম্পত্তি মৈ নিজঅধিকার বিস্তার করনে চাহেজ্জ (৫) রাজাকো আশ্রয়ানুসার মৈ প্রবল পদাঘাত মে উনহৌকৌ হতচেতন কর ডালুংগা।

গ। জোলোগ নিয়মিত সময় রাজস্ব-সচীব (৬) কে নির্ধারিত নিজ নিজোচিত কর (৭) নহৌ দেজ্জ, মৈ উনহৌকৌ লহরতা জ্ঞায়া জ্ঞাতাশন কুণ্ড মৈ ফেক হুজ্জা।

ঘ। জো লোগ রাজা বা রাজস্ব-সচীব বা রাজভক্ত প্রজা (৮) কে বিরুদ্ধ মৈ কোই এক বাতমী কহেজ্জ মৈ উনহৌকৌ কীড়াঅৌসে ভরা জ্ঞায়া বিষ্টাকুণ্ড মৈ অধোমুখ গাড় রখুজ্জা।

সাবধান ! সাবধান !! সাবধান !!!

যমলোক । } রাজানুজ্ঞাকারী
কালরাত্রি } দুর্জয়ন-দর্প-দলন দণ্ডধর বম।

প্রাপ্ত পুস্তকো'র সমালোচনা ।

১। উপনিষদভূক্তয় (শ্রীগোপীচন্দ্রনোপনিষৎ, শ্রীভুলসীমালোপনিষৎ, শ্রীহরিনামোপনিষৎ, শ্রীরাধিকোপনিষৎ)।—হমারে বৃন্দাবনস্থ পরম মিত্র অধ্যাপক শ্রীযুক্ত রাধাচরণ গোস্বামী

- (১) প্রতি । (২) বেদবেদান্ত সঙ্গগ্রন্থকথ ।
(৩) গর্ভবাস বা তনোময় নরক ।
(৪) “মৈ কর্তা ছঁ” মৈ ভোক্তা ছঁ, ইত্যাকার অভিমান ।
(৫) “স্বীপুত্রাদি সবমে” হৈ, ইত্যাকার বোধ ।
(৬) সৎগুরু । (৭) ভগবৎপ্রাপ্তি । (৮) বাধু মহাত্মাগণ ।

संस्कृत भाषायां प्रकाशित । मूल्य २० मात्र ।
 ईहाते वेदार्थानुसारे 'गोपीशब्दे' संरक्षणी शक्ति
 अर्थात् विनि जीवदिगके नरक ओ मृत्युभय हईते
 रक्षा करेन, 'चन्दन शब्दे' ब्रह्मानन्द, अनाद्या नित्या-
 प्रकृतिर 'आह्लादिनी' नाम्नी प्रधाना शक्तिर नाम
 'राधा' इत्यादि एइरूप अर्थ प्रकाशित हईयाछे ।
 एतदुपनिषद् पाठे अध्यात्म वृन्दावन लीलारइ परिचय
 पाओरा वाय । बाह्य पूजा ओ बाह्य अनुष्ठान अपेक्षा
 ये आध्यात्मिक क्रिया स्फूर्ति अतीव मनोहर, ताहा
 गौडान्दी महाशयैर वहे अनेकेरइ बोधगम्य
 हईवे, एजग्य प्रकाशक आमादेर एकांत धन्य-
 वादाई । आर्यधर्मावलम्बीगण यदि एइरूप उप-
 निषदादि मर्मदा पाठ करेन, ताहा हईले श्रीमद्वा-
 गवत् ओ पुराणधुनिर प्रकृत मर्मावगत हईया आर्य
 प्रतिभा लाभ करिते पावेल ।

२ । फूलवाला (गीतिकाव्य)—गाजीपुरस्य
 श्रीयुक्त बाबु देवेन्द्रनाथ सेन महाशय प्रणीत ।
 मूल्य १० मात्र । रचयिता गोलाप, कदम्ब आदि
 १८टी पुष्पके सम्बोधन करिया ताहादेर भावेर
 सहित अनेक मने मानाधिक रीतिर तुलना करि-
 याछेन किन्तु प्रकृतिर आदरेर सामग्री फूलधुलि
 विधातार विश्वमनोहारिणी शिल्प चातुरिर गुण कीर्तन
 करिले आमरा अपेक्षाकृत सूखी हईताम ।
 कविताधुलि सुललित हईयाछे ।

३ । पार्थिव शिवलिङ्ग पूजनविधि—मुङ्गेर
 आर्यधर्म प्रचारिणी सभार अन्यतर मुख्य सभासद
 अक्षाम्पद श्रीयुक्त कालीप्रसाद चौधुरी महाशय
 कर्तृक प्रकाशित । योग्यपात्रे विनामूल्ये वितरित
 हईतेछे । ईहाते शिवपूजा र अगामी ओ मन्त्रादिर
 विधान, बोध अगमार्थ संस्कृत अंगगमह वदभाषायां
 लिखित हईयाछे । एइ पुस्तकथानि द्वारा अनेक
 नित्य-पूजनपरायण आर्य-सन्तान विशेष उपकृत
 हईवेन । परोपकारार्थ वद, परिश्रम ओ अर्थ-
 व्यादि जन्य प्रकाशक साधारण समाजे धन्यवादाई
 हईयाछेन ।

महाशय से संस्कृत भाषामें प्रकाश किया हुआ ।
 मूल्य १० मात्र है । इस में वेदार्थ के अनुसार
 “गोपी” शब्दका अर्थ संरक्षणी शक्ति, अर्थात्
 जो ने जीवोंको नरक औ मृत्युका भयसे रक्षा की
 करती हैं ; “चन्दन” शब्दका अर्थ ब्रह्मानन्द,
 अनाद्या नित्या प्रकृति की “आह्लादिनी” नाम्नी
 प्रधानाशक्तिका नाम “राधा” लिखी गयी है ।
 इन उपनिषद्ओंके पठनसे अध्यात्म वृन्दावन की
 लीलाही का परिचय मिलता है । गोस्वामी जीके
 यत्नसे इतना हर किमही को बुझ पड़ेगा कि वास्तव
 पूजा औ वास्तव अनुष्ठान की अपेक्षा आध्यात्मिक
 क्रियाको स्फूर्ति अतीव मनोहारिणी है । इस
 लिये प्रकाशक मेरा धन्यवादके योग्य हैं । आर्यधर्मा-
 वलम्बियो यदि सर्वदा इसभान्ति उपनिषदादि पाठ
 करते रहें तो श्रीमद्वागवत् औ पूराणोंके प्रकृत
 अभिप्राय समझकर आर्य प्रतिभा लाभ कर सकेंगे ।

२ । फूल-वाला (गीतिकाव्य) गाजीपुरस्य
 श्रीयुक्त बाबु देवेन्द्रनाथ सेन महाशयनेवनया ।
 मूल्य १० मात्र है । रचनेहारे गुलाब, कदम्ब आदि
 कोई १८ पुष्प की सम्बोधन कर उन्होंनेकी शोभा
 औ भावके साथ अनेक स्थान में सामाजिक
 रीतिका दृष्टान्त देखाये हैं, किन्तु फूलों, जो कि
 प्रकृतिके अति आदरके सामग्री हैं, यदि विधा-
 ताकी विश्वमनोहारिणी शिल्प-चातुरीकागुण-
 कीर्त्तन करती, तो हम औरभी अधिक सुखी होते ।
 कविताओंकी रचना सुललित हुई है ।

३ । “पार्थिव शिवलिङ्ग पूजन विधिः”—
 मुङ्गेर आर्यधर्मप्रचारिणी सभाके अन्यतर मुख्य
 सभासद अक्षाम्पद के योग्य श्रीयुक्त कालीप्रसाद चौधुरी
 महाशय ने प्रकाश किये हैं । योग्य पात्रोंको
 मूल्य लियेविना बांटी जाती है । सामारण के
 बोधसुगमार्थ इस में शिवपूजाकी प्रणाली औ
 मन्त्र आदिके विधान प्रमाण के साथ वङ्गभाषा में
 लिखी गयी । इस पुस्तक करके वङ्गतेरे आर्य-
 सन्तान, जो कि नित्य शिवपूजा करते हैं, भली
 भान्ति उपकृत होंगे । परोपकार के लिये इतना
 यत्न, परिश्रम औ व्यय करनेके अर्थ सर्वसाधारण
 के निकट प्रकाशक महाशय अवश्यही धन्यवादके
 योग्य हैं ।

৩য় বর্ষের মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার ।

শ্রীযুক্ত বাবু পারীমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়	কলিকাতা	৩১/০
.. .. কাশীনাথ চট্টোপাধ্যায়	লক্ষ্মী	৩১/০
.. .. গৌরচন্দ্র রায়	ভগলপুর	৩১/০
.. .. ক্ষেত্রমোহন ভট্ট	কলিকাতা	১১/০
.. .. কৃষ্ণধন মিশ্র	পাকড	১১/০
.. .. তারণবন্ধ ভট্টাচার্য	ভট্টপল্লী	১১/০
.. .. রামচন্দ্র সরকার	ইবোন স্কু	১১/০
.. .. কৃষ্ণকিশোর দত্ত	কেশবপুর (শ্রীহট্ট)	১১/০
.. .. রাসবিহারি ভট্টাচার্য	জামালপুর	১১/০

বিদেশীয় এজেন্টগণের নাম ।

শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	ভাগলপুর
.. .. যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী ।
.. .. ভগবৎ সেন,	লাহোর ।
.. .. পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট ।
.. .. সাতকড়ী বন্দ্যোপাধ্যায়,	কলিকাতা ।
.. .. বিহারীলাল রায়,	জামালপুর ।
.. .. রমেশচন্দ্র সেন,	ঐ
.. .. উপেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,	ঐ
.. .. ভোলানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,	বহরমপুর ।
.. .. রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিকাতা ।

উপরোক্ত এজেন্ট মহোদয়গণকে অন্তঃস্থানীয় গ্রাহক মহোদয়গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব ।

ধর্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী ।

১। যদি কোন ধর্মগ্রন্থ আর্থ্যধর্মের প্রবিশিষ্ট রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টি সাবধান বিবেচনা হইলে, আমন ও উৎসাহসহকারে ধর্ম প্রচারকে প্রকাশ করিব ।

২। ধর্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত প্রত্নাদি মন্ত্রের “আর্থ্যধর্মপ্রচারিণী সভায়,” আমার নামে পাঠাইতে হইবে । পত্র বিয়ারি হইলে, গৃহীত হইবে না ।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মনিঅর্ডারে, পাঠাইবেন । ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন ।

৪। ধর্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১৩ সংখ্যা হইতে ডাকব্যয়-সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইয়াছে ।

উত্তম কাগজে,	বার্ষিক	৩১/০,	প্রতিপত্র ১১/০
মধ্যম	ঐ	২১/০	.. ১০
সাধারণ	ঐ	১১/০	.. ৯/০

মন্ত্রের, আর্থ্যধর্ম-
প্রচারিণী সভা

শ্রী শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন ।
সম্পাদক ।

এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাত্রে মন্ত্রের আর্থ্যধর্ম প্রচারিণী সভায় উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে ।

২য় বর্ষের মূল্যপ্রাপ্তিস্বীকার ।

শ্রীযুক্ত বাবু পারীমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়,	কলকতা	২১/
.. .. কাশীনাথ চট্টোপাধ্যায়,	লক্ষ্মী	২১/
.. .. গৌরচন্দ্র রায়,	ভাগলপুর	২১/
.. .. ক্ষেত্রমোহন ভট্ট,	কলকতা	১১/
.. .. কৃষ্ণধন মিশ্র,	পাকড	১১/
.. .. তারণবন্ধ ভট্টাচার্য,	ভট্টপল্লী	১১/
.. .. রামচন্দ্র সরকার,	ইবোন স্কুল	১১/
.. .. কৃষ্ণকিশোর দত্ত,	কেশবপুর (শ্রীহট্ট)	১১/
.. .. রাসবিহারি ভট্টাচার্য,	জামালপুর	১১/

বিদেশকে এজেন্ট সব্কা নাম ।

শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	ভাগলপুর ।
.. .. যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী ।
.. .. ভগবৎ সেন,	লাহোর ।
.. .. পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট ।
.. .. সাতকড়ী বন্দ্যোপাধ্যায়,	কলকতা ।
.. .. বিহারীলাল রায়,	জামালপুর ।
.. .. রমেশচন্দ্র সেন,	জামালপুর ।
.. .. উপেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,	জামালপুর ।
.. .. ভোলানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,	বহরমপুর ।
.. .. রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিকাতা ।

উপরোল্লিখিত এজেন্ট মহোদয়গণের পাশ তত্তৎ স্থানকে প্রাপ্ত মহোদয়গণ মূল্যাদি দেওঁ মৌঁ পাওঁজ্ঞা ।

ধর্মপ্রচারকসম্বন্ধীয় নিয়মাবলী ।

১। যদি কোঁ ধর্মগ্রন্থ আর্থ্যধর্ম কৌ প্রতিষ্ঠা রক্ষা অঁর প্রচার করনেকৌ নিমিত্ত বঙ্কলা অথবা দেবনাগরী মেঁ বা ইন দুওঁ ভাষাখঁমেঁ কোঁ প্রস্তাব লিখকৌ মেঁজেঁ তোঁ লিখিত বিষয় সাবধান খাঁত হঁনেমেঁ আনন্দ অঁ উত্থাহ সঁহিত ধর্মপ্রচারক মেঁ প্রকাশ কঁয়াজাওঁয়া ।

২। ধর্মপ্রচারক পত্ৰকা মৌল অঁর ইহ পত্ৰসম্বন্ধী পত্ৰাদি সঁজের “আর্থ্যধর্মপ্রচারিণী সমাধেঁ” পত্ৰমেঁ মেঁরে পাওঁ মেঁজনে হঁওঁয়া । পত্ৰ বঁরিং হঁওঁতো নহঁ লঁয়া জাওঁয়া ।

৩। মৌল্য সম্ববতঃ পোষ্টাল মনি অঁর্ডার করকৌ মেঁজনা । যদি ডাক টিকিট মেঁ মেঁজেঁ তোঁ আধ আনঁয়া টিকিট করকৌ মেঁজ দেওঁ ।

৪। ধর্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১৩ সংখ্যাসে ডাককর সঁহিত অঁগ্রিম বার্ষিক মৌল তৌন প্রকার হঁয়া ।

উত্তম কাগজপর,	বার্ষিক	২১/	প্রতিসংখ্যা ১১/
মধ্যম	..	২১/	.. ১০
সাধারণ	..	১১/	.. ৯/

সঁজের, আর্থ্যধর্ম-
প্রচারিণী সমাধা ।

শ্রী শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন
সম্পাদক ।

এই পত্ৰ হঁর পূর্ণিমা মেঁ সঁজের আর্থ্যধর্মপ্রচারিণী সমাধেঁ উত্থাহসে প্রকাশিত হঁওঁয়া হৈ ।



“एक एव स्रष्टृर्हन्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समन्वाशं सर्वमन्यत्तु गच्छति ॥”

“एक एक स्रष्टृर्हन्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समन्वाशं सर्वमन्यत्तु गच्छति ॥”

३य भाग । } शकाब्दाः १८०२ ।
४२ संख्या । } चैत्र—पूर्णिमा ।

३य भाग । } शकाब्दाः १८०२ ।
४२ संख्या । } चैत्र—पूर्णिमा ।

परमार्थ सार ।

(पूर्व प्रकाशिते पर ।)

नानाविधवस्तुनां वर्णान्त्रे यथामलः ।

स्फटिकः तद्रूपपाधेऽगभावितस्तु भावं विभुर्धत्ते ॥ १७ ॥

येमन निर्मल स्वच्छ स्फटिके नील, पीत, लोहि-
तादि वर्णैर प्रतिविम्ब पड़िले स्फटिकके तत्तद्ग-
युक्त बोध হয়, তরুণ গুণোপহিত দেহের ভাব
বিশুদ্ধ আত্মাতে প্রতিবিম্বিত হয় মাত্র । বাস্তবিক
আত্মা নির্মল, নিগুণ ও ভাবাতীত ।

গচ্ছতি গচ্ছতি সলিলে

দিনকরবিস্ব স্থিতেস্থিতিংযাতি ।

অন্তঃকরণে গচ্ছতি

গচ্ছত্যাত্মা পিতৃদাদিহ ॥ ১৭ ॥

যেমন প্রবাহিত সলিলে সূর্য্যবিস্ব প্রবাহিতবৎ
ও স্থির জলে সূর্য্য বিস্বও স্থির বোধ হয়, তরুণ
জীবের মনশ্চাক্ষর্য জন্ম আত্মাকে বিচলিত ও মনঃ
স্থির হইলেই আত্মা স্থির বলিয়া অনুভূত হইয়া
থাকে । বস্তুতঃ আত্মা অতীব স্থির ।

परमार्थ सार ।

(पूर्व प्रकाशितके आगे)

नानाविधवस्तुनां वर्णान्त्रे यथा मनः ।

स्फटिकः तद्रूपपाधेऽगुणभावितस्य भावं विभुर्धत्ते ॥ १७ ॥

जैसा निर्मल स्वच्छ स्फटिक पर नील, पीत,
लोहितादि वर्णोंका प्रतिविम्ब गिरनेसे स्फटिक
को उसही वर्णयुक्त बोध होता है, तद्रूप सत्व, रजः,
आदि गुणयुक्त शरीरहीके भाव समूह विशुद्ध
आत्मा में प्रतिविम्बित होते हैं, वास्तविक आत्मा
सदा ही निर्मल निर्गुण औ भावातीत है ।

गच्छति गच्छति सलिले

दिनकरविस्वस्थिते स्थितिं याति ।

अन्तःकरणे गच्छति गच्छत्यात्मा

पितृददिह ॥ १७ ॥

जैसा बहता झर्रा जलमें सूर्य्य विस्व जोभी
बहता झर्रा औ स्थिर जल में सूर्य्य विस्वको भी
स्थिर बोध होता है, तद्रूप जीवका मनकी चञ्च-
लता के हेतु आत्माको भी चञ्चल औ मनःस्थिर
होने ही से आत्माको स्थिर बुझ पड़ता है । वस्तुतः
आत्मा सदैव स्थिर है ।

राज्ञरदृष्टोऽपि यथा शशिविम्बस्यः प्रकाशते जगति ।
सर्वगतोऽपि तथा आबुद्धिस्थोऽपि दृष्टतामेति ॥१८॥

राज्ञ सहसा काहारो दृष्टिगोचर होय ना, किन्तु
येमन उहा चन्द्रमाके संस्पर्ग करिले जगत् उहार
परिचय पाय तद्रूप आत्मा सर्वगत हईयाँ' सक-
लेर अगम्यः किन्तु यथन निर्मल बुद्धि द्वारा विचारित
ओ प्रतीत होयन, तथनई मनुष्य ताँहाके धारणा
करिते পারে ।

सर्वगतं तन्निरूपमद्वैतं तच्छेत्तमा गम्यं ।

यद्वुद्धिगतं ब्रह्मोपलक्ष्यते शिष्यबोध्यं तत् ॥१९॥

बुद्धि यथन ताँहाके अनुपम ओ अद्वितीय बलिया
बुद्धिते पारिवे, तथनई सेई सर्वगतात्मा चिन्तनमे
उज्ज्वलरूपे प्रकाशित हईबेन ।

मन कथनई ताँहाके प्रकाश करिते পারে ना,
किन्तु बुद्धि निर्मल ओ सूक्ष्मतर विचारशील हईले,
तिनि निज महिमाय मनोमये अयं प्रकाशित
हईया थाकेन ।

आदर्शमलरहिते यद्वद्रूपस्विच्छिन्ने लोके ।

आलोकयति तथा आ विशुद्धबुद्धौ स्वमात्मानम् ॥२०॥

येमन निर्मल दर्पणे जीव निज प्रकृत प्रति-
विम्ब देखिते पाय, तद्रूप विशुद्ध बुद्धि द्वारा आत्मा
स्वरूपोपलक्षि करिते পারে ।

बुद्धिमनोऽहंकारास्तन्मात्रेन्द्रियगणा सम्युतगणाः ।

संसारसर्गपरिरक्षणक्षयः प्राकृता हेयाः ॥ २१ ॥

बुद्धि, मन, अहंकार, शब्दादि विषय, इन्द्रिय ओ
महाभूतगणपूर्ण संसारेर उत्पत्ति, रक्षा ओ प्रल-
यादि समस्तई माया रचित, एजन्य उहा सर्वतो-
भावे परित्यज्य ।

उत्पत्ति ह्रास, बुद्धि, परिवर्तन, क्षयादि वृत्त
वस्तु मात्रेई असत् । याहा निरन्तर एकतावे वर्त-
मान थाके ना ताहा सुखद ओ परमोपकार जनक
हईलेओ परिणाम भयङ्कर । एज्ज धीमानगण नाश-
शील संसारे ममता प्रकाश करिवेन ना ।

धर्माधर्मौ सुखदुःखकल्पना स्वर्गनरकवासश्च ।

उत्पत्तिनिधनवर्णाश्रमाः न सन्तीह परमार्थे ॥ २२ ॥

धर्म वा अधर्म, सुख वा दुःख कल्पना, स्वर्ग नर-
कादि वास, जन्म, मरण, वर्णाश्रम विभागादि कोन
द्वैत वस्तु परमात्माते अवस्थिति करे ना । तिनि
भावातीत, अवस्था रहित, अथग, एक स्वरूप
नित्य वर्तमान रहियाछेन ।

राज्ञरदृष्टोऽपि यथा शशिविम्बस्यः प्रकाशते जगति ।
सर्वगतोऽपि तथा आबुद्धिस्थोऽपि दृष्टतामेति ॥१८॥

राज्ञने जैसा कभी किसही की दृष्टि पर न
आती किन्तु जब वह चन्द्रमाकी स्पर्श करता तबही
सारी संसार उसकी पहचान लेते तद्रूप आत्मा
सब किसही स्थानमें रहे भी किसही के गम्य
नहीं हैं, किन्तु जब निर्मल बुद्धि करके विचारे
जांगे औ भाषित होंगे, उसही समय मनुष्य उनको
धारण कर सक्ता है ।

सर्वगतं तन्निरूपमद्वैतं तच्च चेतसागम्यम् ।

यद्वुद्धिगतं ब्रह्मोपलक्ष्यते शिष्यबोध्यं तत् ॥ १९ ॥

जबही बुद्धि उनको उपमासे रहित औ अद्वि-
तीय करके समझ सकेगी तबही उन सर्वत्र टहरे
ऊँच आत्मा चित्तके मध्य में उज्ज्वल रूपसे प्रका-
शित होंगे ।

मन उनको कभी प्रकाश नहीं कर सक्ता है,
किन्तु यदि बुद्धि निर्मल औ सूक्ष्म तत्वको विचा-
रने वाली होतो ये स्वयं निज महिमा करके मनके
मध्यमें देखाइ देते हैं ।

आदर्शमलरहिते यद्वद्रूपस्विच्छिन्ने लोके ।

आलोकयति तथा आ विशुद्धबुद्धौ स्वमात्मानम् ॥२०॥

जैसा निर्मल दर्पण में लोगोंने अपना अपना
प्रतिविम्ब को देखता है, तद्रूप विशुद्ध बुद्धि करके
जीव अपना स्वरूपको अनुभव करसक्ता है ।

बुद्धिमनोऽहंकारास्तन्मात्रेन्द्रियगणा सम्युतगणाः ।

संसारसर्गपरिरक्षणक्षयः प्राकृता हेयाः ॥ २१ ॥

बुद्धि, मन, अहंकार, शब्दादि विषय, इन्द्रिय
औ महाभूतगणसे पूर्ण संसार की उत्पत्ति, रक्षा,
औ प्रलयआदि सबही कुछ माया की रचना हैं,
अस्मात् ये सब सर्वथा परित्यज्य हैं ।

उत्पत्ति, ह्रास, परिवर्तन, परिवर्तन, क्षय
आदि युक्त वस्तुमात्र ही असत् है । जो पदार्थ
निरन्तर एकरस वर्तमान नहीं रहता, वह सुख-
दायी औ परमोपकारी क्यों नहीं परन्तु वह अन्त
में भयजनक है । इसलिये बुद्धिमान लोगोंको इस
नाशशील संसारमें ममता नहीं फैलाना चाहिये ।
धर्माधर्मौ सुखदुःखकल्पना स्वर्गनरकवासश्च ।

उत्पत्तिनिधनवर्णाश्रमाः न सन्तीह परमार्थे ॥२२॥

धर्म वा अधर्म, सुख वा दुःखकी कल्पना, स्वर्ग
नरकादिमें वास, जन्म, मरण, वर्णाश्रमविभाग आदि
कोइ द्वैतवस्तु परमात्मानमें नहीं हैं । वे भावातीत,
अवस्था रहित, अखण्ड एकरस वर्तमान हैं ।

मृगत्रया वायुदकं शुक्ले रजतं भुजगोरज्ज्वा ।
तैमिरिकचन्द्रयुगवद्वाण्डमखिलं जगद्रूपम् ॥ २३ ॥

येमन मृगत्रयाय जलद्रम, शुक्तिकाय रजतद्रम,
रज्जुते सर्पद्रम ओ तैमिरिके विचन्द्र द्रम हईया
थाके तद्रूप एही जगद्रूपि द्रम-विदृष्टित मात्र ।

(क्रमशः ।)

टाक चिन्तावली ।

४ । शास्त्रे कथित आछे ये दान करिवार
समय “आमि दान करितेछि” एरूप अहंकार
करिवे ना, एवं याहा किछु दान करिवे, ताहा येन
आर केह जानिते ना पारे । शास्त्रे एही गृह
कथार गुरु उद्देश्य चिन्ता करिलाम । सिद्धांत एही
हईल ये ये वस्तुते याहार अन्न नाई, से ताहाके
आमार बलिते अथवा काहाके ओ दान करिते
पारे ना । संसारे आसिया आमि याहा किछु
भोग करि, तत्तावई जेभरें । एथाने आसि-
वार समय वा एथान हईते वाईवार समय किछि-
यात्रा ओ आनिते वा लईया वाईते पारि ना ।
ताहार वस्तु ताहाके समर्पण (धर्मार्थ दान) करिव
मात्र । यथन आमार द्रव्य किछुई दिलां ना तथन
“आमि दान करितेछि” एभाव अतीव अन्धाय ।
तिनि आमाके देह, प्राण, मन, विद्या, बुद्धि, धन
आदि कत शत द्रव्य भोग करिते दिशाछेन, किन्तु
आमि ताहाके आमार भोग्यवस्तु सामान्यांश मात्र
समर्पण करिया थाकि । ताहार समस्त द्रव्य यथन
सम्पूर्णरूपे दिते पारिलाम ना, तथन अनन्योपाय
हईया लज्जावनत चित्ते निज कृती स्वीकार पूर्वक
करयोडे ताहार निकट क्रमा प्रार्थना करिया
गोपने दान कराई श्रेयः, केन ना अन्धे जानिते
पारिले आमाके चौर, कृतघ्न ओ विश्वासघातक
बलिषा गृणा करिवे ।

५ । ईक्षुके निष्पेक्षण कराय मधुर रस निर्गत
हईल, रस ओ अत्युच्च सन्ताप सह करिल बलिया
गुड़ हईया अपेक्षाकृत स्मिके हईया उठिल, गुड़
द्रुसह निपीड़ने अपेक्षाकृत मूल्यवान् खाँड़ हईया
दाड़ाईल तत्परे विहित विधाने संशोधित हईया
गुल्ल, निर्मल ओ अति मधुर चिनि प्रसूत हईल ।

साधक ! तूमि ईक्षुर न्याय यदि धर्मर जन्य

मृगट्रयायामुदकं शुक्ले रजतं भुजगो रज्ज्वाम् ।

तैमिरिकचन्द्रयुगवद्वाण्डमखिलं जगद्रूपम् ॥ २३ ॥

जैसे मृगट्रयामें जल का भ्रम होता, जैसे
सूतिमें चाँदी का भ्रम होता है, जैसे रज्जु में सर्प-
बुद्धि होती है, तिमिरीके जैसे दो चन्द्रमा बोध
होना वैसे ही आत्म सत्ता में जगत् सबको एक
भ्रमरूप करके जानना । (शेष आगे ।)

चारुचिन्तावली ।

४ । शास्त्रकी कहनी है, कि दान करने के
समय “मैं दान करता हूँ” ऐसा अभिमान न
करना, औ जो कुछ दोगे सो भी जैसा और कोई
न जान सके । शास्त्रकी इस गूढ़वात का गुह्य
अभिप्रायको चिन्ता किया । सिद्धान्त यही ऊँचा
कि जिस वस्तुपर जिस किसीका कुछ अधिकार
नहीं है, वह उस वस्तुको अपना बोलने अथवा
किसीको दे नहीं सकता है । संसार में आकर मैं
जो कुछ भोग करता हूँ, वे सबही ईश्वर के हैं ।
यहां आने वा यहां से जाने के समय न कुछ साथ
लाने वा लेजाने सक्ता हूँ । उन्हींके द्रव्य उन्हींको
समर्पण (धर्मार्थ दान) करना मात है । जब
मेरा द्रव्य कुचही नहीं दिया, तब “मैं दान
करता हूँ” ऐसा कहना अतीव अन्याय है । वे
सुभको देह, प्राण, मन, विद्या, बुद्धि, धन आदि
कितनेसे द्रव्य भोगने को दे दिये हैं, किन्तु मैं
अपने भोग्य वस्तुओंमें से सामान्यांशमात्र उनको
समर्पण किया करता हूँ । उनके सारे द्रव्य जब मैं
पूरा नहीं दे सका, तो दूसरा उपाय क्या,
लाचारी से लजाया ऊँचा चित्तमें अपना दोष
मानकर करजोड़े उनके निकट क्रमा प्रार्थना
करके गोपन में दान करना ही श्रेयः है, क्योंकि
दूसरा कोई जानगा तो सुभे चौर, कृतघ्न औ
विश्वासघातक करके घृणा करते रहेंगे ।

५ । जलको पिस निगाड़ानेसे मधुररस निकल
आया, रस फिर अत्युष्ण अग्निका तापको सहने
पर उससे सुमिष्ट गुड़ बन गया है, दुःसह निपीड़न
सह्य करके गुड़ और भी अधिक मूल्यका योग्य
खाँड़ हो जाता है, तदनन्तर विहित विधिसे संशो-
धित ऊँच शुभ्र, निर्मल औ अति मधुर चिनि
बन गया ।

साधक ! आप यदि धर्म साधनके अर्थ जलके

निर्धातनग्रस्त ह०, ताहा हईले रसस्वरूप नारायणेर रूपालाभ करिते पारिबे, अतःपर तपस्यापे ताहाके चिदम्बानन्द स्वरूप अनुभव करिबे, तदनन्तर समाधि साधना द्वारा तोमार प्राकृतिक भाव विस्मिक्त हईया गेले आन्त्र सत्तार उपलब्धि हईबे, अवशेषमे तूर्यावस्थाय निर्मल ब्रह्म स्वरूपह लाभ करिबे ।

धर्मप्रचारकेर गम्भीरोक्ति ।

सतेजे अग्रसर हईते हईले पश्चादावर्तन करहि स्वाभाविक रीति । उन्नतिई भगवानेर निज हस्ताक्षरित आदेश । “उर्कदिके आईम” भगवानेर स्नेहपूर्ण एहि स्मधूर सन्तापन ब्रह्माण्डेर प्रत्येक हृदये आघात करितेछे । प्रकृति सर्वथा उन्नतिर दिक्के परिचालित हईतेछे । ये जगतीय वस्तुनिचय व्यवहारवशां कालक्रमे क्रय प्राप्ति हईया याय अथवा क्षय हईवार संभावना आछे एवं प्रत्यक्ष प्रमाण समूह याहार विस्तृत वर्णनाकाले निःशेषित हईया माय अथवा याहार उद्भेजनाय मनुष्यहृदये एकटी आभासुरिक विप्लव घटाईया ताहाके क्रमशः उर्कदिके आकर्षण करिते ना पारै, मनुष्येर अधिष्ठान भूमि एहि गम्भीर प्रकृति-राज्य कथन तादृश सामान्य उपकरणे विनिर्मित हईते पारै ना । भगवानेर विश्वव्यापि प्रकृतिर असीम प्रतीपादन करितेछे । आमादिगेर बहिष्छूः अप्रकृतदर्शी बलिया आगरा अति क्षुद्र ० मलिन हईया रहियाछि । अन्तश्छूः निकट सकलई ब्रह्म, सकलई महान्, सकलई अपरिमी, एवं एहि विशाल जड़जगन्मण्डल एकमात्र अद्वितीय चैतन्य सत्तार परिपाटी परिचय दितेछे ० विश्वेर प्रत्येक परमाणुई सेई महती शक्तिर अस्तित्वेर ईक्षीत करितेछे । येमन पूत्र पितार परिचायक सेई रूप चैतन्यसत्ता जड़ जगतेर प्रसवित हईया जीवेर निकट परिचित हईयाछेन । जड़ जगत् एकटी प्रकाश छाया विशेष हईया महान् भास्वर ज्योतिर ईक्षीत करिया दितेछे ।

जड़ जगत् ध्यानावलम्बी धारि ग्राय सौम्य, येन प्राचीन तापसेर न्याय मस्तक अवनत करिया वक्त्र-श्ले हस्तद्वय आवद्ध करत दण्डायमान रहियाछेन । सेई व्यक्तिई स्थी ० धन्य मिनि जड़जगतेर एहि

समान निर्यातन सहिये, तो रसस्वरूप नारायण की लपलाभा कर सकियेगा, अनन्तर तपस्वरूप तावसे उनका चिदम्बानन्द स्वरूप अनुभव की जियेगा, तत्पश्चात् समाधि साधन से आपके प्राकृतिकभाव मिटजाने से आत्मसत्ताकी उपलब्धि होगी, अन्तमें तूर्यावस्था प्राप्त होनेसे निर्मल ब्रह्म स्वरूपको लाभ की जीयेगा ।

धर्मप्रचारककी गम्भीरोक्ति ।

तेजसे अग्रस्था होना हो तो पीछे हटना चाहिये । “उन्नति” ही भगवान का निज हस्ताक्षरित आदेश है । “ऊपर लठ आओ” भगवान का स्नेहपूर्ण यह सरस सम्भाषण वाक्य ब्रह्माण्ड के हर एक हृदयमें चोट मार रहा है । प्रकृति सर्वथा उन्नतिके ओर चलाई जाती है । जगतका जितना द्रव्य व्यवहार वश होकर नष्ट हो जाता है, अथवा नष्ट होनेकी संभावना रखता है, जिसका विस्तार वर्णन के समय प्रत्यक्ष प्रमाण समूहकी अवधि लग जाती है अथवा जिसकी उत्तेजनासे मनुष्यके हृदय में एक कोई आभ्यन्तरिक विस्फव मचाकर उसकी स्मृति स्मृति ऊपर नहीं उठावने सक्ता है, यह गम्भीर प्रकृतिराज्य, जो मनुष्यकी अधिष्ठान भूमि है, उस भान्ति सामान्य उपकरणों से कभी नहीं बन सक्ता है । भगवानके सारो विश्वव्यापी ऊर्ध्व शक्ति प्रकृति का असीमत्व की प्रतिपादन कर रही है । हमारे बाहर के दो आखें अप्रकृत विषय को देखने हारे हैं, इसलिये हम सब अति लुब्ध और मलिन हो गये हैं । ज्ञान-नेत्रके निकट सब ही कुछ महान्, सब ही कुछ अपरिमी और इस विशाल जड़ जगन्मण्डल एक मात्र अद्वितीय चैतन्य सत्ताका सुन्दर परिचय दे रहा है और विश्वके हर एक परमाणुने उस महती शक्तिका अस्तित्वकी इसारा कर रही है । जैसा पुत्र करके पिताका परिचय मिलता है, उस ही रीति चैतन्य सत्ता भी जड़जगत की प्रसव करनेवाली करके जीवोंके निकट परिचित ऊर्ध्व है । जड़-जगत कोई एक प्रकाण्ड छायामात्र होके महान् भास्वर ज्योतिकी इसारा से देखाय देता है ।

ध्यानावलम्बी धारिके समान यह जड़-जगत बड़ा सौम्य और गम्भीर है । जैसाकि प्राचीन तापसेके न्याई शिर झुकाये वज्रस्थलपर होनी चाह आइ कर खाइ हैं । वही मुख सुखी और धन्य

गम्भीर भावे विमुख हईया परम देवतार पूजा करिते शिक्षा করেন। विनि সেই अनिर्वचनीय महान् चैतन्यो विषय यत अधिक चिन्ताशीलतार सहित धारण করেন, তিনি ততই অবাক হইয়া জড় জগতের প্রকৃতি ধারণ করিতে থাকেন। জড়ের অভ্যন্তরে দৃষ্টি সঞ্চালন করিলে ভগবানকে আমরা অতি-দূরস্থ কারণ বলিয়া মনে করি কিন্তু যখন বুদ্ধি ও বিজ্ঞান কৌশলে তাঁহাকে প্রকাশ করিতে প্রবৃত্ত হই, তখনই আমাদিগের ভাষা ও চিন্তা পরাস্ত হইয়া যায় এবং তখনই “যতো বাচা নিবর্ত্তন্তে অপ্ৰাপ্য মনসা সহ” এই শ্রুতিমার বাক্যের গম্ভীর ইঙ্গিত প্রমাণীকৃত হয়। যখন আমরা চিন্তার অনাক্রান্ত শক্তি কর্তৃক পরিচালিত হই, তখন আমাদিগের অন্তঃকরণে স্বভাবতঃ এই দুইটি প্রশ্নের উদয় হইয়া পাকে, যে এই প্রকাণ্ড জড়-জগৎ কোথা হইতে সমুদ্ভূত হইল এবং কোথায়ই বা ইহার চরমাবসান হইবে। পরকণ্ঠেই আবার হৃদয় মধ্যে নানাবিধ চিন্তার উচ্ছাস উঠিয়া এই প্রশ্নের গূঢ় রহস্য বুঝাইয়া দিবার চেষ্টা করে এবং ইহাই শিক্ষা দেয় যে ভগবান্ প্রত্যেক বস্তু সত্তার এক মাত্র অধিষ্ঠাতা এবং তিনি কেবল জ্ঞান, প্রেম বা শক্তি মাত্র নহেন, তিনিই ব্যক্তি ও তিনিই সমষ্টি।

যে লোকাভিগ মহা অব্যক্ত ভাবে বিশ্ব ব্যাপিয়া আছে, যাঁহাকে অবলম্বন করিয়া বিশাল ব্রহ্মাণ্ড অবস্থিতি করিতেছে ও যাঁহার জীবন্ত সত্তার প্রভাবে সমস্ত প্রাণী জীবিত রহিয়াছে, সেই মহান্ পরম পুরুষ প্রকৃতির অন্তরালে থাকিয়া, সমস্ত কার্যের সন্ধিধান করিতেছেন। তিনি একস্বরূপ, তাঁহার নিরীকতা কেহ নাই। তিনি বাহিরে থাকিয়া আমাদিগকে পরিচালনা করেন না, তিনি আধ্যাত্মিক প্রভাবে আমাদিগের মধ্যে ওতঃ প্রোতঃভাবে বর্তমান থাকিয়া তাঁহার অপূর্ব কৌশলময় কার্য সাধন করিতেছেন। জগতে জীব প্রসূত না হইলে, প্রকৃতির সদাশ্রিতের অধিকারী কে হইত? যদি জীবের সৃষ্টি না হইত তবে জড়-জগতের অস্তিত্বের প্রয়োজন থাকিত কি না সন্দেহ স্থান। তিনি একরূপ কৌশলে আমাদিগকে প্রকৃতিরাজ্যের অধীন করিয়া দিয়াছেন যে বহির্জড়জগৎ ছায়া মাত্র হইলেও উহা আমাদিগের নিকট সত্য বলিয়া প্রতীয়মান হইতেছে এবং উপভোগের সামগ্রী হইয়া রহি-

হে, जो महात्मा जड़-जगत का इस गम्भीर भाव से मोहित हुए परम देवताकी पूजा करनेकी शिक्षा करते हैं। उन अनिर्वचनीय महान् चैतन्यके तत्त्व जो अज्ञातक अधिक चिन्ताशीलता से धारण करते हैं, वे तत्पनेही बाक्यमूल्य हुए जड़-जगतकी प्रकृति प्राप्त होते हैं। जड़का अन्तर्गतमें दृष्टिचलने से हमलोग भगवानकी अति दूरस्थ कारण करके समझते हैं, किन्तु जब बुद्धि औ विज्ञान का कौशल से उनके तत्त्व प्रकाश करने में प्रवृत्त होते हैं तब ही हमारी भाषा औ चिन्ता-हार मानती है औ तबही श्रुति में लिखी हुई “यतो वाचा निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह” इस गम्भीर इसारास प्रमाण होजाती है। जब हमलोग चिन्ताकी अतीत शक्तिसे चलाये जाते हैं, तब हमारे अन्तःकरण में दो प्रश्न आपही आप उठा करते हैं। वे यह हैं कि ‘यह प्रकाण्ड जड़ जगत कहाँसे उत्पन्न हुआ औ कहाँ इसकी समाप्ति होगी। फिर भट हृदयके मध्य में नाना भान्ति चिन्ताका तरङ्ग उठ उठ कर इन प्रश्नका गूढ अभिप्राय समझाने की चेष्टा की करती औ यही शिक्षा देती है, कि भगवान् प्रत्येक वस्तु की सत्त्वा में विराज करने वाले हैं, औ वे केवल ज्ञान, प्रेम वा कोई एक शक्ति मात्र नहीं किन्तु वेही व्यक्ति औ वेही समष्टि हैं।

जिस अलौकिक सत्त्वा अव्यक्त भावसे विश्वको व्यापी हुई विराज करती है, जिनको आश्रय करके यह विशालब्रह्माण्ड ठहरा हुआ है, औ जिनकी जीवन्त रूप सत्त्वाका प्रभावसे समस्त प्राणी जीवित रहे हैं, वही महान् परमपुरुष प्रकृतिके आड में रहकर समस्त कार्यका सन्धिधान कर रहे हैं। वे एक स्वरूप हैं, उनके खटा कोई नहीं। वे बाहर में कहीं विराज कर हम सबको नहीं चलाते हैं। वे आध्यात्मिक प्रभावसे हमसबके मध्यमें ओतःप्रोत करके विद्यमान रहकर उनका अपूर्व कौशल से पूर्ण कार्यसाधन कर रहे हैं। संसार में यदि जीवोंकी सृष्टि न होती, तो प्रकृति का सदाश्रित का द्रव्य कौन भोग करते? यदि जीवोंकी सृष्टि नहीं होती, तो इस जड़-जगतका अस्तित्वका कुछ प्रयोजन रहता कि नहीं सो भी सन्देह का स्थल है। वे इस भान्ति कौशल से हम सबको अपनी प्रकृति राज्यके अधीन कर रहे हैं, जो बाहरका यह जड़-जगत छाया रूप मिथ्या होने पर भी हमारे सामने वह सत्य वृत्त पड़ता है, औ उपभोग की सामग्री हुआ रहता है। उनकी अनन्त

याहें। তাঁহার অনন্ত মহিমা প্রভাবে আত্মাতে অনেকাধিক আশ্চর্য্য শক্তিসমূহ নিহীত করিয়া রাখিয়াছেন। সময়ে সময়ে তত্ত্বাবতেরই অবস্থা কোশলে জড়-জগৎ কখন সত্যবৎ কখন বা মিথ্যা প্রতীত হয়। অহো বিভো! আশ্চর্য্য তোমার কীৰ্ত্তি! আশ্চর্য্য তোমার মহিমা!! আমি ক্ষুদ্র ধূলিকণা হইয়া তোমার বিষয় কি চিন্তা করিব।

যেমন ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র নবীন তরুরাজি অবনীবন্ধে স্পর্শোভিত থাকে, সেইরূপ জীব তাঁহারই সত্বাতে অধিষ্ঠান করিয়া পরিবর্দ্ধিত হইতেছে। কোন ব্যক্তি আত্মার শক্তির সীমা নির্ণয় করিতে পারে? কে বলিতে পারে, যে তাঁহার সীমা এই পর্য্যন্ত, ইহার পরে স্বতন্ত্র রাজ্য, সেখানে তাঁহার প্রবেশাধিকার নাই? হে জীব! তোমার অমর আত্মাকে একবার উত্তেজিত করিয়া সত্যের পূর্ণ ভাণ্ডারে প্রবেশ করিতে দেও, দেখিবে তাহার জানিবার কিছুই অবশিষ্ট থাকিবে না এবং সৃষ্টিকর্তার শক্তি সকল লাভ করিতে থাকিবে। এই সময়ে মানবাত্মার অপরিণীত ক্ষমতার ইয়ত্তা করা যায় না। বিশ্ব-সংসারে ইহার প্রচুর দৃষ্টান্ত দেখিতে পাওয়া যায়। পরমাত্মার সহিত গুঢ় যোগই কেবল মনুষ্যকে দেবতা করিতে পারে এবং স্বর্ণোন্মচনী (চাবি) স্বরূপ হইয়া স্বর্গের দ্বার উন্মোচন করিয়া দেয়। যে চৈতন্য শক্তির প্রভাবে জড়জগৎ প্রকাশিত-সেই শক্তির প্রভাবেই মনুষ্য শরীর সূচিত হইয়াছে। এই অচৈতন্য জড়-জগতে সেই চৈতন্য স্বরূপ পরমাত্মা ওতঃপ্রোত রূপে বর্তমান থাকিয়া তাহার চেতনা সম্পাদন করিয়াছেন। সেই মহান চৈতন্য সহ আত্মার যোগ সিদ্ধ হইলে মনুষ্য জড়-জগৎকে বশীভূত করিতে পারে। জড়-জগৎ যোগীর দাসত্ব শৃঙ্খলে আবদ্ধ থাকে। জড়জগতের শক্তি সমূহ যোগীর শরীরকে অভীভূত করিতে পারে না। সূর্য্য হইতে সামান্য অগ্নিকণা পর্য্যন্ত জড়জগতের সমস্ত তেজ যোগীর তেজের ছায়াবৎ প্রতীতি হইয়া থাকে। জগজ্জগতের স্তম্ভ দুঃখ-রাশি যোগীর অব্যাহত প্রশান্ত হৃদয়ে কিছুমাত্র আঘাত করিতে পারে না। তিনি তাঁহার অন্তর্ভূত মহতী শক্তি হইতে আবশ্যকীয় সমস্ত সামগ্রী প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। যে ব্যক্তি বিধিবিহিত প্রসিদ্ধ পথ পরিত্যাগ করিয়া নীচ ভাবে নিজকল্পিত পন্থাবলম্বন

মহিমা কা প্রভাবে আত্মায়ে বজ্রতের আশ্চর্য্য শক্তি সমূহ নিহীত কর রছে হৈ। সময় সময় মেন তন সবহী কী অবস্থা কা কৌশল করকে অগত কী কথী সত্য, কথী মিথ্যা প্রতীত হোতা হৈ। অহী বিভী! আশ্চর্য্য হৈ তেরী কীৰ্ত্তি! আশ্চর্য্য হৈ তেরী মহিমা!! মৈ তো এক সামান্য ধূলিকী কণিকা মাত্র হুঁ, তেরা তত্ত্ব কী চিন্তা মৈ ক্যা করছা!

জৈ ছোট ছোট হরে হরে তরুরাজি ধরিত্রীপর যোভায়মান দেখ পড়তে হৈ, তস মান্নি জীব সমূহ তনকী সত্ত্বা মৈ বিরাজ কর দৃষ্টিকী প্রামদ্যহীতে হৈ। কৌন সা পুছত হৈ, জী আত্মাকী শক্তিকী সীমা নিরূপণ কর যত্না? কৌন কহ সত্ত্বা সীমা যহা হী তক হৈ ইসকা অনন্তর স্বতন্ত্র রাজ্য হৈ, অহা তনকা প্রবেশাধিকার নহী? হে জীব! তেরে অমর আত্মাকী একবার উন্মোচন কর সত্যতাকা পূর্ণভাণ্ডার মৈ প্রবেশ করনে দো, দেখোগে তনকে জাননেকে যোগ্য কুছ মী বাঁকী নহী রহেগী অী সৃষ্টি করনে হারেকী শক্তিয়ে বহ লাভ করনে রহেগে। ইসহী সময় মৈ মানবাত্মা কী অপরিণীত সামর্থ্যকী ইয়ত্তা নহী কী জাতী হৈ। সংসার মৈ ইসকা দৃষ্টান্ত বহুত মিলতে হৈ। পরমাত্মাকী সাথ নিগূঢ় যোগ হী কেবল মনুষ্যকী দেবতা বনা দে সত্ত্বা হৈ অী সুবর্ণীকোষনী (সোনেকী কুঁজী) রূপ জড় স্বর্গকী দরবাজে খুল দেতা হৈ। জিস চৈতন্য শক্তিকা প্রভাবে জড়-জগত প্রকাশিত হৈ, তস হী শক্তিকা প্রভাবে মনুষ্য শরীর সূচিত হুয়া। ইস অচৈতন্য জড়জগত মৈ বহী চৈতন্য স্বরূপ পরমাত্মা আতঃ প্রৌতরূপ বিদ্যমান রহকর ইসকীস চৈতন্য কর দিহে হৈ। তন মহান চৈতন্যকে সহিত আত্মাকী সংযোগ হোনেহে মনুষ্য ইস জড়জগত কী বশীভূত কর সত্ত্বা হৈ। জড়জগত যোগীকা দাসত্বরূপ জিম্বিরহে বন্দা রহতা হৈ। জড়জগত কী শক্তি সমূহ যোগীকা শরীর মৈ অসর নহী কর সক্তি হৈ। সূর্য্যহে लेकर অগ্নিকী সামান্য ফুলগী তক জড়জগত কা সমস্ত তেজ যোগীকা তেজকে নিকট জায়াকী সমান বুদ্ধ পড়তা হৈ। জড়জগত কী সুখ দুঃখ রাশি যোগীকে অব্যাহত প্রশান্ত হৃদয় মৈ কুছ মী খোট নহী মার সত্ত্বা হৈ। যে আপনী অন্তর্ভূত মহতী শক্তি হৈ নিজ প্রয়োজন যোগ্য সমস্ত হী লাভ করনে হৈ। জিস পুছতনে বিধিবিহিত প্রসিদ্ধ পথ ছাড় করকে নীচ রীতিহে

पूर्वक ब्रह्म निकेतने अग्रसर हईते याय, से बाल्किःअश्वरेर निकट परिचित हईते पावे ना। जड़जगत के कोन वस्तुई ताहार अनुज्जाधीन ना हउयाते से बाल्कि सकलैरई निकट अपरिचित थाके। ताहार निकटे जीव जन्तुर भाषा कलरव पुर्ण बलिया बोध हय एवम् अति निरीह गुण ओ मेघ शिष्टो ताहाके देखिया दूरे पलायन करे एवम् से कोन हिंअ जन्तुर समक्षे उपस्थित हईले, ताहार शरीर थणु विथणु करिया तक्षण करिया फेले। आमादिगेर एहीरूप शोचनीय अवस्था पर्यालोचना करिया देखिले, हृदय व्याकुल हईया उठे। विशुद्ध आत्मार सहित अपरिचित थाकाई एही दुर्दशार मूल। दिन दिन आमादेर अवस्था आरओ बलिन हईया पड़ितेछे।

हा मनुष्य! तूमि संसारेर एकमात्र मार वस्तुके उपेक्षा करिया क्षयशील सुख सम्पत्ति लाभ करत चतुर बलिया प्रतिपत्ति लाभ करिते चाओ! तूमि कि जान ना वे अवशेषे समस्तई परित्याग पूर्वक मृत्यु कराल कबले प्रवेश करिते हईवे। मानव! तूमि पवित्रात्मा हईया निज सहाय अभिरमण करिते शिक्षा कर। जन्मजरा, मृत्यु आदि तोमाके भय प्रदर्शन करिते पारिवे ना। आनन्द सह पूर्णानन्द सहाय विलीन हईया याईवे। एकार्णव सलिले अनन्त शय्या तोमार चिरविश्राम स्थान हईवे।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः हरि ॐ।

मतिहारी आर्यधर्म प्रचारिणी सभा
वरहरौगस्थित धर्मोत्साहि
श्रीमान् आर्थोरी कांदजी
प्रसादेर वक्तुता।

धर्म काशके कहे! ये समस्त कायिक वाचनिक, ओ मानसिक क्रिया जीवनयात्रा निर्व्वाहार्थ अनुष्ठित हय तत्तावतई धर्म मध्ये परिगणित। तं समस्त आचार स० ओ अस० भेदे धर्म ओ अधर्म एही छई संज्ञा प्राणु हईयाछे, परहिंसा परधन हरण, राग द्वेषादिर वशीकृत हईया अपरेर अनिष्ट चेकी आदि वेदबोधित पात्र विरुद्ध कार्य कलाप

निज कल्पित पथसे ब्रह्म निकेतन में गमनार्थ आग्रहा होता है, वे ईश्वर के निकट नहीं परिचित हो सक्ता है। जड़जगत का किसही वस्तुने जो उनकी आज्ञा न मानी, इससे वह सब किस-हीके निकट अपरिचित रहा। जानवारी का हरतरह की भाषा उसके निकट कलरव पूर्ण बुझ पडती है, और अत्यन्त निर्दोष शृंग औ मेघ शायक भी मारे डरके उनके निकटसे दूर भागता है, औ वह यदि कोई हिंस्र जानवार के निकट जाय तो उसका शरीर को खण्ड विखण्ड करके भोजन कर डालता है। हम सबकी इस भांति दुर्दशा विशेषरूप विचारने से चित्त विकल हो उठता है। विशुद्ध आत्मासे विन पट्टचान रहना जानाही इस दुर्दशाका मूल है। दिन पर दिन हम सबकी अवस्था और भी मलीन होती जाती है।

हा मनुष्य! तु संसारके एक मात्रसार पदार्थ को उपेक्षा कर नाशमान सुख सम्पद् पाकरके आपनी चतुराई की प्रतिष्ठा चाता है। तु क्या नहीं जानता है जो अन्त में समीको छोड़ कर बल्युका कराल कबलमे पैठने पड़ेगा? मानव तु पवित्रात्मा बने अपनि सत्त्वामें अभिरमण करने शिखले; जन्मजरा मरणादि तुभको फिर डरवाने नहीं सकेछे। आनन्दके साथ पूर्णानन्द सत्त्वामें विलीन हो जागा। एकार्णव सलिलमें अनन्तशय्या तेरा नित्य आराम की स्थान बनेगी।

ओं शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः! हरि ओ।

मतिहारी आर्यधर्मप्रचारिणी सभा में
वड़हरवाके धर्मोत्साहि श्रीमान्
आखोरी कान्दजी प्रसाद की
वक्तुता।

धर्म किसको कहते हैं? कायिक वाचिक मानसिक क्रियाको जो धारण किया जाय वह धर्म है। वह धर्माधर्म व्यवस्था करके दो प्रकार का है। अधर्म उसे कहते हैं जो वेदशास्त्रादिसे बहिर्मुख कर्म है। यथाहिंसा, परधन परदारादिमें लीलुपता रागद्वेषादि करके परहानि का बलादि। धर्म परापर भेदोहे दो प्रकार का है। तथा अपर धर्म

अधर्म बलिया अभिहित हईया থাকे । धर्म ओ आचार पर ओ अपर एतद्विभागयुक्त । ऐशानीश भेदे अपर धर्म ओ छई प्रकार । ये देशाचार सनातन काल हईते कोन देशे प्रचलित থাকिया तत्रन्ध जनगणेर स्त्रुथ रूढ़ि ओ छूथ दूर करिया आसितेछे, ताहा अनौश वा जीवधर्म बलिया प्रसिद्ध एवं दम, दया, दानादि यावत् कार्य सर्वत्र समतावे चिरदिन प्रशंसनीय बलिया परिगणित ताहाई “ऐशधर्म” बलिया उक्त हईया থাকे । बहिरिन्द्रियादि संगेगेर नाम “दम” । प्राणी मात्रेरई छूथ दूरीकरणेछार नामई “दया” । “दान” छई भागे विभक्त । प्रथम “तात्कालिक” अर्थात् सामयिक छूथ निवारण, यथा क्षुधार्तके अन्नदान, उलङ्गके वस्त्रदान, असमर्थ वास्तिके कन्यादाय, यज्ञोपवीतादिता साहाय्य दान इत्यादि द्वितीय, जन्मावधि विद्यादान, यथा— श्रीकमलनयनाचारी शास्त्री बलियाछेन “विद्या दानां शान्ति दानं द्वितीयम्” तं संसिद्धिः पुस्तकादि प्रदानात् इत्यादि । याचकके प्रार्थना मत धन दान करिलेओ ताहा निःशेषेसर सज्ज सज्ज छूथेर आशङ्का आछे, किन्तु विद्यादान करिले तन्द्वारा अर्थोपार्जनैर शक्ति ओ शुभकर्मे प्रवृत्ति ओ पापाचारे निरुद्धि जन्मे एवं सदसद्विवेकेर उदय हय. अतएव विद्यादानई सर्वप्रधान दान बलिया गण्य ।

एकणे “परधर्म” मन्त्रेद्वे प्रणिधान करा याउक । “स वै पूमान् परोधर्मः यत्र भक्तिरदो-कजे” अर्थात् भगवत्तरणारविन्दे एकान्त भक्ति करके परधर्म कहै । उन्नत सेवा द्वारा प्रीति उपपादनैर नामई भक्ति । याँहार ये वस्तु नाई, तँहाके ताहा प्रेम पूर्वक उपहार देओयार नाम सेवा । अतएव ऐश्वर्ये एमन कि पदार्थ नाई, याहा दान करिले, तिनि प्रसन्न हईबेन । याँहार कटाक्षमात्रेई कुवेर धनाधिकारी हईल, सेई कमलाई अयत्त वाहार चरण कमल सेवाय निरत, तँहार तुल्य धनी आर के आछे । तिनि धनादि लाभे सल्लुके हयैन ना । सौन्दर्य ओ तँहाके आकर्षण करिते पावै ना, केन ना तँहार अपूर्व शोभाय विमोहित हईया “कान्ति” तँहार चरणश्रय करिया रहि-याछे । विद्या द्वाराओ तँहाके सल्लुके करा याय ना केन ना, वेद तँहार सहज श्रम अरूप ओ अयत्त सरस्वती वाँहार पूर्णज्ञान वर्णनाय पराभव श्रीकार

ईशानीय भेद करके दो रीति रखता है । अनीय नाम जीव धर्म देशाचार को कहैके जो जिस देश में सनातन से उत्तम रीति चली आती हो, जिससे लोग सुख मानें, किसीको दुःख न होय । ईश धर्म उसे कहते हैं जो सब देश सबकाल में एक रस है, यथा दमन, दया, दान यह तीन बात सर्वत्र उत्तम गिनी जाती है । दमन इन्द्रियोंको नियन्त्रण करना जो घर धन पददारादि को आकांक्षा न करे । दया, जिससे किसी प्राणीको दुःख न होय । दान दो प्रकार प्रथम तात्कालिक, जो तत्काल दुःख निवारण करना जैसे भूखे को अन्न देना, नङ्गेको वस्त्र देना, किसी अशक्तको आवश्यक शुभकर्म में सहाय्य करना यथा कन्यादान वर्णसंस्कारादि करा देना । द्वितीय जन्मावधि वह विद्यादान है, यथा श्रीकमलनयनाचारी शास्त्रीजीका वचन है, “विद्या दानाश्चिदानं द्वितीयम्” तं संसिद्धिः पुस्तकादि प्रदानात् । तात्पर्य यह है, कि धन कितना ही दिया जाय उसके निश्चेष होने ही तक सुख है और विद्या जन्मपर्यन्त अयाची कर देती है, उपार्जन की शक्ति देती है, शुभकर्म में प्रवृत्त अधर्म्मे निवृत्त कराती है, कर्त्ता भर्त्ता भले बुरेको पहचानेकी बुद्धि देती है, अतएव यह दानसर्वोपर है ।

अवरुद्धा परोधर्म ! सबै पुंसानपरो धर्मः यत् भक्तिरधोज्ज्वल आघात परे धर्म वही है, जो भगवत्तरणारविन्द में भक्ति होय । भक्ति क्या पदार्थ ? उत्तम सेवा करके प्रसन्न करना, वह सेवा क्या वस्तु है ? जो वस्तु उस को न होय सो देना । अब विचार करना चाहिये कि परमेश्वरके क्या नहीं, है जिसके देनेसे वह प्रसन्न होगा, धन ? नहीं क्योंकि जिसकी प्रथमा शक्ति श्रीदेवी हैं जिसकी कोर कटाक्षसे कुवेरने धनाधिकार पाया है, वही चरण कमलकी सेवा में लीन रहती है, फिर उससे धनवान और कौन हो सकता है ! सौन्दर्य ? नहीं क्योंकि वही श्री-जी-कान्ति स्वरूप सबमें व्याप्त है सुखारविन्द को देखती भूला रहगी है, तो उससे सुन्दर दूसरा कौन होगा ! विद्या ? यह भी नहीं । क्योंकि वेद जिसके सहज ग्रास हैं, श्री द्वितीया शक्ति भूदेवी सरस्वती विद्या दायिनी विद्यारूप सब में व्याप्त है, सो सदा चामर ग्राहिणी सामवेद करके श्रुति की करती हैं तब

पूर्वक सदा चामर हस्ते सामवेद द्वारा तौहार स्तुति गान करिया থাকेन । बलविक्रम ७ तौहाके प्रसन्न करिते পারে ना, केन ना तौहार तृतीया शक्ति भगवती दुर्गा दुर्जय दैत्य दल दलन करिया तौहारई अपरिमीम शक्तिर गुणगान करिया থাকेन । अस्त्र शस्त्र द्वाराई वा कि हईवे, समस्त अस्त्र बाहार तेज्ज्वर अंश मात्र पाईयाई तीक्ष्ण धार हईयाछे । सेई सुदर्शन तौहार हस्ते सुशोभित, अतएव तदपेक्षा शस्त्रधारी आर के हईवे । मैत्र सामन्त द्वारा ७ तौहार प्रीति उपपादनर आशा नाई, केन ना विश्वक्सेन बाहार सेनापति, बाहार वेद शिखर स्फुटने त्रिलोक स्त्रिर रहियाछे, नतुवा हयतो परस्पर आघात प्रतिघाते समस्त विचूर्ण हईया गइत । अनन्त बाहार शय्या, बाहार कुंठकारे अलयानल प्रज्वलित हय, अतएव तदपेक्षा श्रेष्ठ सेनानी के ? एकणे देखा याउक तौहार नाई कि । बुबिलाम तौहार मन नाई । तौहार मन सदैव भक्त मञ्जु विहार करिया থাকे । तौहाके मन अर्पण करिलेई तनि प्रसन्न हईते पाऐन । किन्तु आमादिगेर मन येरूप मलिन, ताहाओतो तौहाके अर्पण करिते माहस हय ना । वेदोक्त क्रिया अनुष्ठान करिले, एई मलिन मन निर्मल हईते पाऐर, अतएव हे आर्या वक्रगण ! एकणे आम्ह, आम्हरा सनातन सद्धर्म प्रवृत्त थाकिया, चित्तर पवित्रता विधान पूर्वक उहा भगवच्छरणारविन्द समर्पण करि ।

एतन्मतिहारी आर्याधर्म प्रचारिणीसभाके पर ७ अपर उभयविध धर्मर प्रचारार्थ यत्नशील ७ विद्यार्थीगणके सहायता पूर्वक विद्या दान करिते प्रवृत्त देखिया एवं सर्वसाधारणके भक्तिर उद्दीपक सद्धर्म कर्मर उपदेश दान करिते वक्रपरिकर अवगत हईया, शत शत धन्यवाद दितेछि ।

हे धर्मसेतुरक्षक भगवन् ! एतन् सभार सभागण येन तोमार अभय पदकमले प्रगाढ भक्ति पूर्वक निज निज उन्नति ७ निर्मल मति लात करिते पाऐन ।

उससे विद्यावान कौन ! बल, पराक्रम ४ ? यह भी नहीं, क्योंकि उसकी तृतीया शक्ति नीला देवी दुर्गा, भगवती हैं ? जिन्होंने कैसे कैसे वीरोंको वध करनेमें पल मारने का विलम्ब न किया, सो नीला गिहाने वैठी वीणा लिए यश गाया करती हैं फिर उससे महावली कौन कहा जा सकता है ? अस्त्र शस्त्र ५ ? यह भी नहीं, क्योंकि एक सुदर्शन जी में सबही शस्त्रास्त्र निर्गत और उनके अंश कला हैं तहां उससे अधिक और कौन शस्त्रधर होगा ? सेना ६ ? यह भी नहीं क्योंकि विश्व क्सेन जिसके सेना पति हैं, जिसके वेदशिखरस्पन्द से लोक सब वर्त्तमान हैं नहीं तो आपुस में ठोंकर खाके फुट जावें । शेष जिसकी शय्या है, जिसका फुंकार महाप्रलयकी अग्नि है, फिर उससे बड़ा सेनेश दूसरा कौन है । तब क्या उसको नहीं है ? केवल मन उसको नहीं है । क्योंकि उसका मन सदा भक्तोंके साथ रहता है, अतएव मन ही के देनेसे वह प्रसन्न हो सकता है, तब यह मैलामन उसको देनेके योग्य है ? नहीं, क्योंकि मलीन वस्तु भेंट नहीं होता और न कोई ग्रहण करता तब यह मन स्वच्छनिर्मल कैसे होय ? वेद शास्त्रोक्त कर्म धर्म करने से । तस्मात् हे आर्यवन्धुगण ! अपने सनातन सद्धर्ममें प्रवृत्त होके सत्क्रिया से अन्तःकरण की शुद्धि करके मनको भगवच्छरणारविन्द में लगावो ।

अब मैं इस मोतिहारी आर्यधर्मप्रचारिणी सभासदोंको वक्त २ धन्यवाद देता हूं, जहां परापर दोनों धर्मका प्रचार अच्छी प्रकारसे हो रहा है, विद्यादान भी होता है, जो विद्यार्थी लोग आप लोगकी सहायतासे विद्याध्ययन करते हैं, और शुभकर्म धर्मोपदेश भी होता है । जो भक्तिका पहिला साधन अवण ही है । हे धर्मसेतु संरक्षक भगवान नारायण ! इन सभासदोंकी उन्नति सद्धर्म में मति निज पदपद्म में रति भली भान्ति से दें ।

शुक-गीताभाष्य ।

(काण्पूरस्थ अकास्पद त्रियुक्त महेन्द्रनाथ घोषाल महाशय के निकट हईते प्राप्त ।)

भगवद्भक्त प्रह्लाद भगवत् श्रेष्ठ कृष्णदेवपा-
रमपुत्र शुकदेवके नमस्कार पूर्वक जिज्ञासा
करियाछिलेन ये, हे प्रभो ! नितान्त निर्जन
निकुञ्जस्थ सुखामने समानीन हरपार्वतीर तद्भक्तसंवाद
आपनि विदित आछेन, अतएव सेहै गुह्य रहस्य
वाक्या करिया आमार अवण, मन पवित्र ओ परि-
शुद्ध करुन ।

शुक कहिलेन, हे महापत ! मे सकल
अद्भुत असाधारण कथा आकर्षण करिले मनुष्येर
अन्तःकरणे प्रथमतः विम्वय (तदनन्तर निश्चय)
बुद्धिर उदय হয় । अजस्र अतीव सावहित ओ हस-
माहित चित्ते तत्तावत् अवण करा उचित ।

प्रह्लाद । मुने ! भवादृश आपु वक्तार उप-
देशाश्रयारे कार चित्ते क्लेशे संशय कण्टक अव-
शिके धाकिते पारे ? अतएव हे गुरो ! आपनि
वर्णना करुन, आनि एकान्त चित्ते मर्मावधारण
करिव ।

शुक । हे प्रह्लाद ! तत्तावत् वाग्-रहस्य
काम क्रोधादियुक्त अथच काम क्रोधादि विहीन,
आनन्दपूर्ण, अथच निरानन्ददायक, निर्मल अथच मल-
शुद्ध । वत्स ! निर्मल दर्पणे येमन मलिन मुख
प्रतिबिम्बित হয়, सेहैरूप ममल (रक्त मांस निर्मलित
शोक मोहादि पूर्ण) अन्तःकरण विना ज्ञानिगण
निर्मल वस्तु दर्शने समर्थ हयैन ना । अतएव निर्मल
वस्तु मलशुद्ध एवं मलिन वस्तु निर्मलतायुक्त, ईहाई
सिद्धान्त वाक्य । हे शास्त्र ! ऐहिके सेहै “शिव-
शरीर-सम्वाद” कहितेछि, अवधान कर ।

पार्वती कहिलेन, हे नाथ ! यथन चन्द्र, सूर्य,
जल ओ मूल, गङ्गादि तीर्थ, विप्रादि जातिभेद, पशु
शैव, वीर, दिव्य आदि आचार, सिद्धान्त, कोल
प्रभृति भावेर अभाव छिल, तथन काहै हईते,

शुक-गीताका भाष्य ।

(काण्पूरस्थ अकास्पद त्रियुक्त महेन्द्रनाथ घोषाल महाशय के निकट से पाया ।)

भगवानके परमभक्त प्रह्लाद जीने भागवतोंके
श्रेष्ठ लक्षणहैपायनके पुत्र श्रीशुकदेव जी को नम-
स्कार पूर्वक पूछे कि हे प्रभो ! नितान्त निर्जन
निकुञ्ज में सुखामन पर समासीन हरपार्वतीके
तत्त्व आपको माली भान्ति विदित हैं, अतएव वही
गुह्य रहस्य वर्णन कर मेरे अवण मनको पवित्र औ
परितृप्त कीजिये ।

शुकदेव बोले, हे महापत ! वे सब अद्भुत
असाधारण बातोंके सुनने से मनुष्यके अन्तःकरण
में पहले विम्वय (तदनन्तर निश्चय) बुद्धि उदय होती
है । इसलिये अत्यन्त सावधानता पूर्वक अध्यायन
लगाये उन सबको सुनना चाहिये ।

प्रह्लाद । हे मुने ! आपके सहस्र आप्तवक्ताके
उपदेश रूप अक्षती किनारेके साम्हने किसके
चित्तक्षेत्र में संशयरूपी काण्टा वच सकता है ।
अतएव हे गुरो ! आप वर्णन करते रहिये, मैं
एकान्त चित्तता से उनका अभिप्राय समझता
रहूंगा ।

शुक । हे प्रह्लाद ! उन वचनोंके तत्त्व काम
क्रोधादिसे युक्त अथच कामक्रोधादिसे रहित,
आनन्दसे पूर्ण अथच निरानन्ददायक, निर्मल
अथच मलयुक्त है । हे वत्स ! निर्मल दर्पण में
जिस रीतिपरछाई गिरती है, उसही तरह समल
(रक्त मांसादिसे बना झुआ, शोक मोहादिसे पूर्ण)
अन्तःकरण विना ज्ञानी भी निर्मल वस्तुको दर्शन
करने में समर्थ नहीं होते हैं । अतएव निर्मल
वस्तु मलसे युक्त औ मलिन वस्तु निर्मलतासे पूर्ण
यही सिद्धान्त करके जानना । हे शान्त ! अब
वह “शिव शङ्करीका संवाद” मैं कहता हूँ, दत्त-
चित्त रहो ।

पार्वती बोली, हे नाथ ! मुझे यह बताईये
कि जव चन्द्र, सूर्य, जल औ स्थल, गङ्गा आदि
तीर्थ, विप्र आदि जातिभेद, पशु, शैव, वीर, दिव्य
आदि आधार, सिद्धान्त कौल आदि भाव नहीं थे,

कोशाय, किं चिह्नं द्वारां सृष्टिकार्या आरम्भं ह्य, एता-
वत् आमाके बल । तूमीहि विश्वेन आदि एवम् परि
नामे तावत् तोमातेहि प्रवेशं करिने, अतएव
तूमी तिम एतत्प्रश्नेन मनीषीन समाधानं आरंभे
करिषे ।

एतच्छब्दे शङ्कर बलिलेन, हे परमेश्वरि !
दर्शनादि क्रिया विशिष्टे चक्षुरादि पञ्च ज्ञानेन्द्रियं
वचनादि क्रियाविशिष्टे वागादि पञ्च कर्मेन्द्रियं युक्तं
एहि शरीरहि “उत्पत्तिमान्” शब्दे सर्वत्र गृहीतं
हईयाछे । इहाहि विश्वं, इहाहि जगत्, इहाहि ब्रह्माण्डं
एवम् इहाहि भवसंसार, अतएव इहाहि एकादशे-
न्द्रियं मनो बल्लभं ओ मूर्तिरं कारणं स्वरूपं । एहि
देहेन उत्पत्ति, स्थिति, लय, द्वारां सृजन, पालन,
संहार, व्यवहारसिद्धं हईतेछे । एहि मनं यथं
संयतं हयें, तथं इन्द्रियादिरं लयं हईयां थाके ।
हे शङ्करि ! येमन जलेन अभावं हईले, वृक्षादिरं
हारा वृक्षादिहे लयं पाईयां नाय, तद्रूपं क्रिया
अभावे इन्द्रियगणं मनो विलीनं हईयां थाके ।
मनोविलयेन नामहि अव्यक्तं भावः । मनं हईतेहि
भावं उत्पन्नं ह्य, मनोहेहि आवारं लीनं हईयां
नाशं प्राप्नुं ह्य । इन्द्रिययुक्तं मनो भावे-आचारं,
आचारं क्रिया एवम् क्रियां हईते तावत् स्थूलं अव-
यवजगत्कार्यं दृष्टं हईयां थाके । येमन आकाशे
शब्दं ओ शब्दे आकाशं, वृक्षे बीजं ओ बीजे वृक्षं
प्रत्यक्षं ह्य तद्रूपं क्रियाजन्यं जगत् एवम् जगत्हि
समस्तं क्रियां बीजं स्वरूपं । अतएव हे भामिनि !
मनोजातं इन्द्रियं मनो मनो अधिष्ठानं निमित्तं द्वैत-
भावोत्पत्तिं ह्य, आत्मप्रतिबिम्बरूपं मनो द्विधा-
कारे प्रजापतिं हयें, तद्विन्नं विश्वोत्पत्तिरं अन्तः
कोनं कारणं नाहि । अद्वैते वैतथानं केवलं
मनो कल्पना व्यतीतं आरंभं किछुहि नहे ।

शुक । हे प्रह्लाद ! शिव वाक्येन तावत्पर्या
एहि ये एकादश स्थानीय मनो परमाणु, स्थूलं अणु
सूक्ष्म, तावयुक्तं हईयां तावयुक्तं महेश स्वरूपं ।

उस समय किन्से, कौन स्थान में, कौन चिह्न करके
सृष्टिका प्रारम्भ हुआ । आप ही विश्व के मूल हैं
और अन्त में सब कुछ आप ही में प्रवेश करेगा
अतएव आपके बिना इस प्रश्न का समीचीन समा-
धान फिर और किससे बनेगा ।

इसका उत्तर में शङ्कर बोले, कि, हे परमे-
श्वरि ! यह शरीर, जो कि दर्शनादि क्रियाविशिष्ट
पञ्चः आदि पञ्चज्ञानेन्द्रिय और वचनादि क्रियावि-
शिष्ट वाक् आदिपञ्च कर्मेन्द्रियसे युक्त है, सर्वत्र
“उत्पत्तिमान्” शब्द करके लिया गया है । इस
हीको विश्व करके, इसहीको जगत् करके, इस-
हीको ब्रह्माण्ड वो इसही को भवसंसार करके
मानना अतएव यही मनका, जो कि एकादश
इन्द्रिय करके प्रसिद्ध है, बन्धन और मोक्षका
कारण स्वरूप है । इस देह की उत्पत्ति, स्थिति
और लय करके सृजन, पालन, और संहार का
व्यापार सिद्ध होता है । यह मन जब संयत
होता है, उस समय इन्द्रियसमूह भी लय हो
जाते हैं । हे शङ्करि ! जैसा जलका अभाव
हीनेसे वृक्ष आदिका प्रतिबिम्ब वृक्ष आदि में लीन
हो जाता है, उसही तरह क्रिया का अभाव होने
इन्द्रियगण भी मन में विलीन हो जाते हैं ।
“मनका जो विलय” होना, उस ही को “अव्यक्त
भाव” करके मानो । “भाव” मनहीसे उत्पन्न
होता, फिर मनही में लीन होकर नाशको प्राप्त
होता है । इन्द्रियोंसे युक्त मनका “भाव” करके
आचार, आचार करके क्रिया, और क्रिया करके
समस्त स्थूल अवयव-जगत् कार्य देख पड़ता है ।
क्रिया करके जगत और जगतही समस्त क्रियाका
बीज रूप है, जैसा कि मानो आकाश में शब्द और
शब्द में आकाश, वृक्ष करके बीज और बीज करके
वृक्ष प्रत्यक्ष होता है । अतएव हे भामिनि ! मनसे
उत्पन्न इन्द्रियोंके मध्य में मनका अधिष्ठान करके
द्वैत भावकी उत्पत्ति होती है, आत्म प्रतिबिम्ब
स्वरूप जो मन है, सो ही द्विधा हुए प्रजापति
बनते, इतना छोड़के विश्वोत्पत्तिका दूसरा कोई
कारण नहीं है । अद्वैत में द्वैत बुद्धि होना जो है, सो
केवल मनकी कल्पना छोड़के और कुछ ही
नहीं है ।

शुक । हे प्रह्लाद ! शिवजी की वचनोंके
तात्पर्य यह है, कि, एकदश स्थानीय मनही परम
असङ्ग, स्थूल अथवा सूक्ष्म, भावयुक्त हुए भी भाव-

मनई विश्वेर आधार, अर्क। ओ पुरुषपदवाचा (पुनर अधिकारी) सन्देह नाई। येमन नदीर तटभेदे जलैर भेद तद्रूप ज्ञान ओ कर्मन्दि-येर भेद द्वारा मनोमय परमात्मा सदसद्गुणे विभक्तवत् अनुभूत हयैन मात्र। येमन देहे देही ओ देहीते देह संयुक्त हईले सृष्टि अनुभव हय, तद्रूप मनै सर्वभूत ओ सर्वभूते मन संयुक्त हईले, जगत् प्रतीति हईया থাকे। अतएव मन ईन्द्रिय अथवा देह देहीर परस्पर सहायता विना एकेर विद्यमानतार सम्भावना वा प्रमाण नाई, सुतरां अवक्तव्य।

शङ्करी बलिलेन, हे परमेश ! तूमि कहिले, संयोगकेई कारण बलिया निश्चय कर, संयोगई भावातीत वस्तु ; किन्तु सेई संयुक्त भावातीत भाव हईते एई समस्त भिन्न भिन्न भाव नैचित्र कि प्रकार हईल। अङ्कुरोत्पन्न प्रयुक्त वृक्षजात फल हईते बीजोत्पत्ति हय ईहाई प्रसिद्ध आछे किन्तु विना अङ्कुरे बीजेर सद्भाव कि प्रकारे संभव। हे देव ! निष्कामके कामनायुक्त बलार न्याय ईहा नितान्त असम्भत, ए कथाय आमि कि प्रकारे विश्वास स्थापन करिते पारि। एक एकाकार मात्र नित्य हईले, विविधाकार केन हईवे ? एकत्र नित्य हईले, द्वितीयत्वं कोथाय ? पुनः, द्वितीयत्वेर नित्यता सत्त्वे एकत्र किरूपे प्रतिपन्न हईवे ? संख्येय ना थाकिले, संख्यावाचक शब्द ओ हईत ना, अतएव यथन संख्यावाचक शब्द आछे, तथन संख्येय वस्तु ओ आछे। यथन संख्यावाचक शब्द अनेक, तथन संख्येय वस्तु ओ अनेक स्वीकार करिते हईवे, सुतरां एकत्वेर सर्वथा अभाव बोध हईतेछे, अतएव वृक्ष परतन्त्र बीजेर न्याय द्वैत तत्वेर नित्यता प्रयुक्त भावातीत अद्वैत तत्त्व केवल शून्य गर्भ शब्दमात्र बलिया, आशङ्का हईतेछे तदर्थ हे महेश ! “आमि” “तूमि” के कोथा हईते ओ केन एथाने जन्म हईल, एतावत् विशेष करिया वर्णन कर।

सुक्त मन्त्रके स्वरूप हैं। मनही जो विश्वका आधार, स्रष्टा औ पुरुष पदवाच्य (पुर का अधि-कारी) हैं, इस में सन्देह नहीं। जैसी नदी की, किनारा का भेद करके जलका भेद मात्ता जाता है, तद्रूप ज्ञान औ कर्मन्द्रियोंके भेद करके मनोमय परमात्माने कभी सत कभी असत गुण युक्त करके मालूम पड़ते हैं। जैसा देहसे देही औ देहीसे देहका संयोग होनेसे, सृष्टि देख पड़ती है, उसही भान्ति मनसे समस्त भूत औ समस्त भूतोंसे मनका संयोग होनेसे जगत प्रतीति होती रहती है। अतएव मन, इन्द्रिय अथवा देहसे देही की परस्पर सहायता विना केवल मात्र एक पदार्थकी विद्यमानता की सम्भावना वा प्रमाण नहीं, सुतरां अवक्तव्य है।

शङ्करी बोली, हे परमेश ! आपने बताया कि संयोगही की कारण करके निश्चय मानो, संयोगही भावातीत वस्तु है ; किन्तु उस संयुक्त भावातीत भावसे इतनी भिन्न भिन्न भाव-विचित्रता कहाँ उत्पन्न हुई है ! अङ्कुर करके उत्पन्न प्रफुल्ल वृक्षका फल से बीजकी उत्पत्ति होती, यही प्रसिद्ध किन्तु विना अङ्कुरके बीज का सद्भाव कैसे होगा ! हे देव ! निष्काम की कामनायुक्त कहना जैसा न्याय-विरुद्ध है, यह भी वैसाही है। इस बातको मैं कैसे विश्वास कर सकूँ। यदि केवल एकाकार ही नित्य हो तो नाना भान्तिके रूपकों कर सम्भव होगा ? यदि एकत्व ही सत्य ऊँचा तो द्वितीयत्व फिर कहाँ रहा ! पुनः देखाजाय तो द्वितीयत्व कि नित्यता रहने से एकत्व का कुछ प्रमाण ही नहीं। संख्याके योग्य पदार्थ रहे विना संख्या-वाचक शब्द भी नहीं रहता, अतएव जब संख्या-वाचक शब्द रहा तो अवश्यही संख्या का वस्तु भी है। जब संख्यावाचक शब्द भी वज्रत से है, तो संख्याके वस्तु भी अनेक मानना चाहिये, सुतरां एकत्व का अभाव बोध होता है, अतएव वृक्ष पर-तन्त्र बीजके समान द्वैत तत्वकी नित्यता का कारण अब यह आशङ्का होती है, जो भावातीत अद्वैत तत्व केवल शून्य-गर्भ एक शब्दमात्र है, तस्मात् हे महेश ! “मैं” “तुम” आदि कहाँसे वो क्यों यहाँ जन्म लिये इसका विशेष विवरण वर्णन कीजिये।

शुकदेव बलिलेन, हे भक्तप्रेष्ठ प्रह्लाद ! शङ्करी এই সকল প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিয়া, স্মৃশুণা হইলেন। আমি বিহঙ্গরূপে বিশ্ব রক্ষে বসিয়া। রুমভ-বাহনের তীব্রদ্বার্তাই শ্রবণ করিয়াছিলাম। এত-দ্বিবরণ শ্রবণে প্রহ্লাদ আশ্চর্য্য হইয়া বলিলেন হে মহামতে ! অক্লান্ত সর্ব্বাণিকে প্রযুগু জানিয়াও মহা-দেব বিশ্রাম করেন নাই, ইহার কারণ কি ! শুক-দেব আনন্দাত্ত-পূর্ণনেত্রে গদগদ স্বরে কহিলেন, হে প্রহ্লাদ ! এই জন্যই আমি পূর্বে তোমায় বলিয়াছিলাম যে, এই গুহ্যতম আশ্চর্য্যরহস্য অতীব বিস্ময়কর, অকল্প্য বোধগম্য হয় না। হে ধীর ! পূর্ণানন্দ-স্বরূপ নিষ্কিয় সদাশিব সর্ব্বদাই এই ভাবাভাব ছন্দময় সংসারজালকে আকাশের ন্যায় শূন্য দর্শন করেন, অতএব যন্ত্রাকৃষ্ট শব্দের ন্যায় বিনা আয়ামেও পূর্ব্বদারক তত্ত্ব প্রদত্ত সাক্ষ করিতে নিরন্তর হয়েন নাই। তিনি যে অনাহত নিত্য-ধ্বনাত্মিক শব্দে অবস্থিতি করেন, সেই শব্দই প্রাণতন্ত্র বোলে ইন্দ্রিয়-কনিত হইয়া বিশ্বমণ্ডলে, বর্ণাত্মিক ও বাহ্য বিষয়াত্মিক হইয়া থাকে। সেই শব্দময় প্রমোত্তর একগুণে শ্রবণ কর।

(ক্রমশঃ ।)

প্রাপ্ত পুস্তক সমালোচনা।

১। সামবেদ-সংহিতা।—অঙ্কাম্পদ ত্রীযুক্ত পণ্ডিত সত্যব্রত সামশ্রমী মহাশয় কর্তৃক প্রতি নামে ১২৮ পৃষ্ঠায় এক এক খণ্ড প্রকাশিত হই-তেছে। কলিকাতা মানিকতলা ষ্টিট, ঘোষের লেন, ১৬ নং সত্য যন্ত্রালয়ে প্রাপ্য। মূল্য প্রতি দ্বাদশ খণ্ডের অগ্রিম প্রেরণ ব্যয় সহ ১০ দশ টাকা। আমরা ইহার প্রথম খণ্ড প্রাপ্ত হইয়াছি। প্রথম খণ্ড স্বর চিহ্নাদি সহিত ছন্দ আর্চিক, মূক্ত বিবরণ গেয় গান, বাঙ্গালা টীকা, সায়াণাচার্য্য রূত “বেদার্থ প্রকাশ” নামক সংস্কৃত ভাষ্য, ভাঁষ্যের বঙ্গানুবাদ

শুকদেব বলেন যে ভক্তকে যে প্রহ্লাদ ! শঙ্করী ইতনী বার্তে পুঙ্কর অব সো গযী, উস সময় মৈ বিহঙ্ককা রূপ লিয়ে উএ বেলকে ব্জপর বৈট কর মহাদেব কী সব কুচ্ বান্টি অবণ কিয়া থা। ইতনা সুনকর প্রহ্লাদ আশ্চর্য্যমান কর বলেন কি, হে মহামতে ! ক্রোড় স্থিত পার্বতী কী সোতী উই দেখকর মী মহাদেব জী জী চুপ নহী রহে, ইসকা কারণ ক্যা ? আনন্দকী আশুখোষে মরে উএ আঙ্কে শুকদেব গল্পদ বচন সে বলে, হে প্রহ্লাদ ! তুমকী ইসহী লিয়ে মৈনে পহলেহী কহ রখা কি যহ যুচ্চতম আশ্চর্য্য রহস্য অতীব বিস্ময়জনক হৈ, অকল্পাত বুম নহী পড়তা হৈ। হে ধীর ! পূর্ণানন্দ স্বরূপ সমস্ত ক্রিয়াবর্জিত সদাশিব ইস ভাব আঁ অभाव रूप हन्ध से युक्त संसार समूह को सदा ही आकाश के समान शून्य देखते हैं, अतएव वे पहले का आरम्भ किया ऊँचा तत्त्व प्रसङ्ग समाप्त किये बिना नहीं ठहरे, जैसा कि यंत्रसे निकलता ऊँचा शब्द ओताका अभावसे बन्ध नहीं होता है। जो अनाहत नित्यध्वनि से मिले ऊँच शब्द में वे विराजते हैं, वही शब्द प्राण तन्त्रके लगसे इन्द्रिय से वजता ऊँचा, विश्वमण्डल में वर्णात्मिका वो वाह्य विषयात्मिका होती रहती है। उस शब्द-मय प्रश्न और उत्तर अब श्रवण करो।

(शेष आगे ।)

प्राप्तपुस्तकोंकी समालोचना।

१। सामवेद संहिता।—अङ्काके योग्य आयुक्त पण्डित सत्यव्रत सामश्रमी महाशयके द्वारा प्रतिमास १२८ पृष्ठामे एक एक खण्ड छपकर निकल रहा है। कलकत्ता मानिकतला स्ट्रीट घोषेज लैन, १६ नम्बर, सत्ययन्त्रालय में मिलता है। बारह बारह खण्डका डाककर सहित मूल्य दश रूपये है। हम इसके प्रथम खण्ड पा चुके। सुर स्वरके चिह्न आदि दिया ऊँचा छन्द आर्चिक, (मन्त्रका विवरण, गेय गान, वङ्गभाषा में टीका, सायणाचार्य्यरूत “वेदार्थ प्रकाश” नाम संस्कृत

गोभिल गृहसूत्र और वैदिक समालोचना ऐहिक रूप प्रणालीते लिखित होइयाछे । सामश्रमी महाशय ईतिपूर्वैयै यजुर्वेद संहितादि अनुवाद और प्रकाश द्वारा पण्डित और साधारण जनसमाजे विपुल प्रति-पत्ति लात करियाछेन । तादृश वेदज्ञ पण्डित आज काल बङ्गदेशे देखिते पाओया याय ना । ताँहार धर्मोद्देश, सद्बुद्धि और मानुवाद वेदार्थ प्रचार बङ्गदेशेर मोताग्य लक्षण सूचित करि-याछे । ताँहार युक्ति और विचार पूर्ण अनुवाद पाठे आमरा ताँहाके अन्तरेर सहित साधुवाद ना दिया थाकिते पारिलाम ना । वर्तमान भारतवर्षे वेदार्थेर प्रचुर चर्चाभाव प्रयुक्त ये भयङ्कर धर्मविप्लव उपस्थित होइयाछे, आशा करि जेदृश पुस्तकादि प्रचारे ताँहा अनेकांशे अपनीत होइबे । परि-श्रान्त पाश्च यथन तृष्णाकुल होय, तथन पथपार्श्ववर्ती धातु प्रतीतिपूर्ण जलपानेओ पराङ्मुख होय ना, किन्तु ईहार फल अति विषम और विषम । तद्रूप वर्तमान धर्मविप्लव काले अनेक वेदार्थानुसन्धि महात्मा वेदज्ञान लाते उपरान्तर विहीन होइया ईउरोपीय वैदिक मोक्षमूलर आदि पण्डितमण-लीर अप्रकृतार्थवाद पूर्ण वैदिक समालोचनाके अज्ञान हिर करत, तदर्थानुगामी होइया, वेदे विप-रीत भावेर आरोप करितेछेन एवं तदनुसारे ग्रन्थ प्रकाश और वक्तृतादि द्वारा जनसमाजे वेदार्थेर व्याभिचार प्रचार पूर्वक आर्यदिगेर शास्त्रशिरोमणि वेदेर अनर्थादा करितेछेन, सामश्रमी महाशय वैदिक समालोचना द्वारा वेदके एही घोर विपद होइते रक्षा करिते सद्य होइयाछेन “सुतरां उक्त प्रस्तावे ३ वेद किं चारि वेद ? कोन् वेद प्रथम ? आर्यदिगेर आदि वास स्थान निर्णय, आदिकाले ईश्वर भाव और विज्ञानेर चर्चा किरूप छिल, पृथिवीर कतदूर पर्यन्त ताँहारा अवगत छिलेन, मन्त्र, सूत्र, मण्डलादिर उद्पत्ति काल, ऋषि, देवता, आर्य, अश्वर, दस्यु, दास, शूद्र, प्रभृतिर परिचय एवं मूत्र, मूत्रवर्षाति और ताँहादेर सहित आर्यदिगेर

भाष्य, भाष्यकी वङ्गभाषा में उल्था) गोभिल गृहसूत्र और वैदिक समालोचना आदि प्रथम खण्ड में लिखा हुआ है । यजुर्वेद संहिता आदिका अनुवाद और प्रकाश करके सामश्रमी जी इसके आगे ही पण्डित और साधारण जन समाज में विपुल अर्थ को लाभ किये । वे से वेदज्ञ पण्डित आज काल बङ्ग देश में नहीं आते हैं । उनके धर्मोद्देश, सद्बुद्धि और अनुवाद सहित वेदार्थका प्रचार से वङ्ग देशका शुभ लक्षण सूचित होता है । उनकी युक्ति और विचारसे पूर्ण अनुवाद पढ़कर हम उनकी अन्तःकरण से साधुवाद दिये बिना नहीं रह सकते हैं । वर्तमान भारतवर्ष में वेदार्थकी प्रचुर चर्चा का अभाव से जो भयङ्कर धर्म-विप्लव मच गया, अब आशा की जाती है, कि इस भान्ति पुस्त-कादि का प्रचार से वङ्गत सा गोल माल मिट जाके परिश्रम से थका हुआ राही जब मारे पियास के व्याकुल होता उस समय पथके किनारे की खादा का दुर्गन्धिमयजल पीने में भी विमुख नहीं होता है, किन्तु इसका अन्तफल अत्यन्त बुरा और दुःखदायी है । उस भान्ति वर्तमान धर्मविप्लव क समय वङ्गत से वेदार्थके खोजानेहार महात्मा वेदसम्बन्धी ज्ञानप्राप्तिके लिये दुशरा कुछ उपाय देखे बिना युरोपके वैदिक मोक्ष मूलर आदि पण्डितोंकी वैदिक समालोचनाके जो की अमूल्य अर्थवादसे पूर्ण है, निर्मूल समझके तदर्थके अनुसार वेदोंपर विपरीत भाव लगा रहे हैं, और उस रीतिसे पुस्तक का प्रकाश और वक्तृतादि करके जनसमाज में वेदार्थ का व्यभिचार प्रचार पूर्वक आर्यजनोंके शास्त्र-शिरोमणि-स्वरूप वेदकी अनर्थादा कर रहे हैं । हमारे सामश्रमी जी वैदिक समालोचनाके द्वारा वेदको इस घोर विपदसे रक्षा करने के अर्थ सत्यतः ऊये हैं । सुतरां उस प्रस्ताव में वङ्गतेरे सारगर्भ आशय लिखे जायेङ्गे, जैसा कि वेद तीन है, या चार ? उनमें कौन वेद प्रथम है ? आर्यजनोंके आदि निवासस्थान कहाँ था ? आदिकाल में उन सबके ईश्वर सम्बन्धी भाव और विज्ञानकी चर्चा किस भान्ति थी ? पृथ्वीका कितना दूरतक उन लोगोंका मालुम था, मन्त्र, सूत्र, मण्डलादि और उत्पत्तिक काल, ऋषि,

विक्रम प्रकाश प्रभृति बहूतर मारगर्भ विनय क्रमे
आलोचित हईवे ।” आगरा आशा करि, भारत
हिंतेनी महात्मा मात्रेई वेद-संहितार एहक
श्रेणीभूत हईया । यथासाध्य सहायता करिया
वेदमर्याद करिवेन ।

२ । कल्याणकल्पतरु ।—श्रीयुक्त बाबु केदारनाथ
दत्त प्रणीत ओ तत्कर्तृक कलिकता (जोड़ासाँको)
हरिभक्ति प्रदायिनी मन्त्रा हईते प्रकाशित ।
पुस्तक खानि आदोपास्त पदो लिखित । ईश्वर
वर्ण वर्ण कविर विनय, भक्ति, भाव-गम्भीरता आदिर
मोगक प्रीति हउया गाय । यदि एही पुस्तक खानि
आर्या-धर्म-मत-मनुक-मणि योग ओ अभेद वादादिके
तिरस्कार ना करिया, सरल धर्मभावे विरचित हईत,
ताह हईले एतएपाळे वर्तमान आर्यामणली निश्च-
यई अति उपादेय भक्ति-भाव लाभ पूर्वक विग-
लित रुदय हईतेन । अन्यमतके तिरस्कार काले
यदि कवि तीव्र युक्तिज्ञान विस्तार करिया, निज
मतेर प्राधान्य रक्षा करिते पारितेन, ताह
हईलेओ, आगरा झुक हईताम ना । राधाकृष्ण-
रागेर उच्छास ओ “वैष्णव-चरण-परायणताई”
ह्वार तिरस्कारेय अवर्तक । ताँहार निपि-
नैपुण्ये श श्रद्धता, बहदशीता ओ प्रवीणताओ परि-
चय पाओया गाय । पुस्तकखानि आदोपास्त पाठ
करिया आगरा ताँहार भगवत्-परायणताओ जन्य
आनन्दित, एमन कि स्थाने स्थाने कविहृदयेर
कोमल भावणुलिर पवित्रगन्धे विमोहितओ हई-
याछि । यदि कोन धर्मात्मा साम्प्रदायिक भाव-
वर्जित हईया, पुस्तकखानि अध्ययन करेन, तवे
तिनि निःसन्देहई “कल्याणकल्प-तरु” सुशीतल
छाया ओ उपादेय फललाभ करिवेन । वैष्णव
मात्रेई पुस्तक खानिके अमूल्य कथाभरण बोधे
समादरे ग्रहण करिवेन ।

देवता, आर्य, असुर, दस्यु, दास, शूद्र आदिका
परिचये, श्री क्लृप्, क्लृप्का वास, उन्हींपर
आर्यलोग किस भान्ति पराक्रम देखाये थे । हम
आशा करते हैं, कि भारतहितैषि, हरेक महा-
त्माही वेद-संहिता के ग्राहक बने श्री यथासामर्थ्य
सहायता कर वेदकी मर्यादा रखेङ्गे ।

२ । कल्याणकल्पतरु ।—श्रीयुक्त बाबु केदार
नाथ दत्त का बनाया हुआ, श्री उन्हींका व्यय
करके कलकत्ता (जोड़ासाँको) हरिभक्ति प्रदायिनी
सभासे प्रकाश किया गया । पुस्तक की रचना आदि
से लेकर अन्त पर्यन्त वङ्गभाषा पद्य में हैं । इसका
हरएक वर्णसे कविकी विनति, भक्ति श्री भावकी
गम्भीरता का सुगन्ध पाया जाता है । यदि यह
पुस्तक आर्य-धर्म-मतके शिरसाग्रमणि योग श्री
अभेद वाद आदि की तिरस्कार किये बिना केवल
सरल धर्म भावसे लिखी जाती, तो निश्चय ही
इसका पठन से वर्त्तमान आर्य मण्डली अतीव
रसाल श्री मधुर भक्ति भावको लाभ करते श्री
हृदय द्रवीभूत होता । दूसरा मतको तिरस्कार
करने का समय यदि कविने सुतीक्ष्ण, युक्तिज्ञान
पसारकर निज मतके श्रेष्ठत्व रक्षाकर सकें, तो
भी हम दुःखी न होते । “राधाकृष्णानुराग का
उच्छास” श्री वैष्णव-चरण-परायणता ही उनकी
इस भान्ति तिरस्कार करने की प्रवृत्ति दी हैं ।
उनकी लिखने की निपुणता से शास्त्रज्ञता, वङ्ग-
दर्शीता, श्री प्रवीणता का भी विशेष परिचय
मिलता है । इस पुस्तक की आदि से लेकर अन्त
तक पढ़कर हम उनकी भगवत्-परायणता के लिये
आनन्दित, श्री स्थान स्थान में कविके हृदयका
कोमल भावोंके पवित्र गन्धसे विमोहित भी हुए ।
यदि कोई महात्मा साम्प्रदायिक भाव छोड़ कर
इस पुस्तककी पढ़े, तो वे निःसन्देह ही “कल्याण
कल्पतरु” की सुशीतल छाया श्री उपादेय फल
पावेंगे । वैष्णव मात्रही इस पुस्तकको अनमूल कण्टा-
भरण समझे आदर पूर्वक ग्रहण करेङ्गे ।

বিদেশীয় এজেন্টগণের নাম ।

ঈশ্বর বাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	ভাগলপুর
„ „ যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী ।
„ „ জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর ।
„ „ পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট ।
„ „ সাতকড়ী বন্দ্যোপাধ্যায়,	কলিকাতা ।
„ „ বিহারিলাল রায়,	জাগলপুর ।
„ „ রমেশচন্দ্র সেন,	ঐ -
„ „ উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	ঐ -
„ „ ভোলানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,	বহরমপুর ।
„ „ রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম ।

উপরোক্ত এজেন্ট মহোদয়গণকে তত্ত্বাবধানীয় গ্রাহক মহাশয়।
গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রার্থ্য হইব ।

ধর্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী ।

১। যদি কোন ধর্মগ্রন্থ আর্থ্যধর্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও
প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই
কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টি
সংরক্ষণ বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহসহকারে ধর্ম
প্রচারকে প্রকাশ করিব ।

২। ধর্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি মুদ্রের
“আর্থ্যধর্মপ্রচারিণী সভার,” আমার নামে পাঠাইতে হইবে ।
পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না ।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মনিঅর্ডারে, পাঠাইবেন ।
ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্ক আনা মূল্যের টিকিট
প্রেরণ করিবেন ।

৪। ধর্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১৩ সংখ্যা হইতে ডাকমাণ্ডলী
সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইয়াছে ।

উত্তম কাগজে,	বার্ষিক	৩১/০, প্রতিখণ্ড ১৮/০
মধ্যম ঐ	„	২১/০ „ ১০
সাধারণ ঐ	„	১১/০ „ ৮/০

মুদ্রের, আর্থ্যধর্ম- }
প্রচারিণী সভা } শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন ।
সম্পাদক ।

এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুদ্রের আর্থ্যধর্ম প্রচারিণী
সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে ।

বিদেশী এজেন্ট মহাশয় নাম ।

ঈশ্বর বাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	ভাগলপুর
„ „ যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী ।
„ „ জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর ।
„ „ পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট ।
„ „ সাতকড়ী বন্দ্যোপাধ্যায়,	কলিকাতা ।
„ „ বিহারিলাল রায়,	জাগলপুর ।
„ „ রমেশচন্দ্র সেন,	জাগলপুর ।
„ „ উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	জামায়াত ।
„ „ ভোলানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়,	বহরমপুর ।
„ „ রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম ।

উপরোক্ত এজেন্ট মহোদয়গণকে পাশ তত্ত্বাবধান
গ্রাহক মহাশয়গণ মূল্যাদি দেও মৈ পাছকরা ।

ধর্মপ্রচারকসম্বন্ধী নিয়মাবলী ।

১। যদি কোঁ ধর্মগ্রন্থ আর্থ্যধর্ম কী প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও
প্রচার করণে নিমিত্ত বঙ্গলা অথবা দেবনাগরী মে বার্ষিক
দোঁ মাধাধর্মে কোঁ প্রস্তাব লিখকোঁ মেঁ তো লিখিত বিষয়
সংরক্ষণ প্রাত হোঁনে আনন্দ ও উৎসাহ সহিত ধর্মপ্রচারক
মেঁ প্রকাশ ক্রিয়াজায়াগা ।

২। ধর্মপ্রচারক পত্রিকা মৌল ওঁর দুধ পত্রসম্বন্ধী
পত্রাদি সঙ্কেত “আর্থ্যধর্মপ্রচারিণী সভাকোঁ” পত্রে মেঁ
পাশ মেঁজনে হোঁগা । পত্র বেরিঁ হোঁতো নহী লিয়া জায়াগা ।

৩। মৌল্য সম্বতঃ পোষ্টাল মনি অর্ডার করকোঁ মেঁজনা ।
যদি ডাক টিকিট মেঁ মেঁজোঁ তো আধ আনিয়া টিকিট করকোঁ
মেঁজ দেঁ ।

৪। ধর্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১২ সংখ্যাসে ডাককর বহির্ভূত
অধিম বার্ষিক মৌল তিন প্রকার জায়া ।

উত্তম কাগজপত্র,	বার্ষিক	২১/০	মতিহারী ।
মধ্যম „	„	২১/০	„
সাধারণ „	„	১১/০	„

সঙ্কেত, আর্থ্যধর্ম- }
প্রচারিণী সভা । } শ্রীশ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন
সম্পাদক ।

এই পত্র হর পূর্ণিমা মেঁ সঙ্কেত আর্থ্যধর্মপ্রচারিণী
সভাকোঁ উৎসাহে প্রকাশিত হোঁয়া হে ।

